

A DESCRIPTIVE CATALOGUE
OF THE
SANSKRIT MANUSCRIPT
IN THE
GOVERNMENT ORIENTAL MANUSCRIPTS
LIBRARY, MADRAS.

BY
The late M. SESHAGIRI SASTRI, M.A.,
AND
M. RANGACHARYA, M.A., RAO BAHADUR,
CURATOR, GOVERNMENT ORIENTAL MSS. LIBRARY; AND PROFESSOR OF SANSKRIT AND
COMPARATIVE PHILOLOGY, PRESIDENCY COLLEGE.

PREPARED UNDER THE ORDERS OF THE GOVERNMENT OF MADRAS

VOL. I.—VEDIC LITERATURE.
THIRD PART.

M A D R A S :
PRINTED BY THE SUPERINTENDENT, GOVERNMENT PRESS.

1905.

CONTENTS.

CLASS I.—VEDIC LITERATURE.

ii.—UPANIŠADS (267).

| | Name of the work. | Numbers. | Pages. |
|---|-------------------|------------|----------------------------|
| Akṣamālikōpaniṣad | | 246, 247 | 267, 269 |
| Akṣyupaniṣad | | 248, 249 | 270, 271 |
| Atharvaśikhōpaniṣad | | 250 to 256 | 272, 273, 274, 275 |
| Atharvaśira-upaniṣad | | 257 to 263 | 276, 277, 278 |
| Advayatārakōpaniṣad | | 264, 265 | 278, 279 |
| Adhyātmōpaniṣad | | 266, 267 | 279, 280 |
| Annapūrṇōpaniṣad | | 268, 269 | 281, 282 |
| Amṛtanādōpaniṣad | | 270 to 272 | 282, 283 |
| Amṛtabindūpaniṣad | | 273 to 277 | 284, 285, 286 |
| Avadhūtōpaniṣad | | 278, 279 | 286, 287 |
| Avyaktōpaniṣad | | 280, 281 | 287, 288 |
| Ātmaprabōdhōpaniṣad | | 282 to 286 | 288, 289, 290, 291 |
| Ātmōpaniṣad | | 287, 288 | 291, 292 |
| Āruṇikōpaniṣad | | 289 to 297 | 292, 293, 294, 295, 296 |
| Itihāsoṇiṣad | | 298, 299 | 296, 297 |
| Īśāvāsyōpaniṣad | | 300 to 309 | 298, 299, 300, 301 |
| Īśāvāsyōpaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | | 310, 311 | 302, 303 |
| Īśāvāsyōpaniṣadbhāṣyatippaṇam | | 312 to 315 | 303, 304, 305 |
| Īśāvāsyōpaniṣaddīpikā | | 316 | 305 |
| Īśāvāsyōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | | 317, 318 | 306, 308 |
| Īśāvāsyōpaniṣadbhāṣyam by Veṅkatanātha | | 319 | 308 |
| Ekakṣarōpaniṣad | | 320 to 322 | 310, 311 |
| Aitarēyōpaniṣad | | 323 to 329 | 311, 312, 313, 314 |
| Aitarēyōpaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | | 330, 331 | 314, 315 |
| Aitarēyōpaniṣadbhāṣyatippaṇam | | 332 | 317 |
| Aitarēyōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | | 333 | 318 |
| Kāthavallyupaniṣad | | 334 to 341 | 320, 321, 322 |
| Kāthavallyupaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | | 342 to 344 | 322, 323 |
| Kāthōpaniṣadbhāṣyatippaṇam | | 345 | 323 |

ii.—UPANIŠADS (267)—continued.

| Name of the work. | Numbers. | Pages. |
|---|--------------------|---------------------------------|
| Kāthakōpaniṣadbhāṣyatippapaṃ | 346 | 324 |
| Kāthavallyupaniṣaṭṭika | 347 | 325 |
| Kāthakōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha... .. | 348 | 325 |
| Kāthōpaniṣad | 349, 350 | 327, 328 |
| Kalisantārakōpaniṣad | 351 to 354 | 329, 330 |
| Kātyāyanōpaniṣad | 355 | 330 |
| Kālagṇirudrōpaniṣad | 356 to 371 | 331, 332, 333, 335, 336, 337 |
| Kuṇḍikōpaniṣad | 372, 373 | 337, 338 |
| Kṛṣṇōpaniṣad | 374, 375 | 338, 339 |
| Kēnōpaniṣad | 376 to 386 | 339, 340, 341, 342 |
| Kēnōpaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | 387, 388 | 342, 344 |
| Talavakārōpaniṣadbhāṣyatippapaṃ | 389 | 344 |
| Kēnōpaniṣadbhāṣyatippapaṃ | 390 to 392 | 345, 346 |
| Talavakārōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | 393, 394 | 346, 347 |
| Kaivalyōpaniṣad | 395 to 410 | 348, 349, 350, 351, 352 |
| Kaivalyōpaniṣaddīpikā | 411 to 413 | 352, 353, 354 |
| Kaulōpaniṣad | 414 | 354 |
| Kauṣṭhakyupaniṣad | 415 to 417 | 355, 356 |
| Kṣurikōpaniṣad | 418 to 421 | 356, 357, 358 |
| Gaṇapatyupaniṣad | 422 to 424, 427 | 358, 359, 362 |
| Gaṇeśōpaniṣad | 425, 426 | 361 |
| Garuḍōpaniṣad | 428 to 435 | 362, 363, 364, 365 |
| Garbhōpaniṣad | 436 to 445 | 366, 367, 368 |
| Gayatryupaniṣad... .. | 446 | 368 |
| Gōpālātāpanīyōpaniṣad | 447 to 449 | 370, 371 |
| Gōpālōpaniṣad | 450 | 372 |
| Chāndōgyōpaniṣad | 451 to 463 | 372, 373, 374, 375, 376 |
| Chāndōgyōpaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | 464 to 467 | 376, 377, 378 |
| Chāndōgyōpaniṣatprakāśikā | 468 | 378 |
| Chāndōgyōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | 469 | 379 |
| Jabalōpaniṣad | 470 to 475 | 382, 383 |
| Jabālyupaniṣad | 476, 477 | 384 |
| Tarasārōpaniṣad | 478, 479 | 385 |
| Turīyācittāvadadhūtōpaniṣad | 480 to 482 | 386, 387 |
| Tejōbindūpaniṣad | 483 to 485 | 387, 388 |
| Taittirīyōpaniṣad | 486 to 504 | 389, 390, 391, 392, 393, 394 |

ii.—UPANIŠADS (267)—continued.

| Name of the work. | Numbers. | Pages. |
|--|------------|---------------|
| Taittirīyōpaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | 505 to 507 | 395, 396 |
| Taittirīyōpaniṣadvyākhyā | 508 | 397 |
| Taittirīyōpaniṣadvyākhyā Vanamālā | 509, 510 | 397, 398 |
| Taittirīyōpaniṣaddīpikā | 511 | 399 |
| Taittirīyōpaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | 512 | 400 |
| Taittirīyōpaniṣadbhāṣyam by Rāṅgarāmanujamuni | 513 | 402 |
| Taittirīyōpaniṣadvyākhyā (Āgamāmṛtam) | 514 | 403 |
| Taittirīyōpaniṣallaghutīkā | 515 | 404 |
| Taittirīyōpaniṣadvyākhyā (Laghudīpikā) | 516 | 406 |
| Taittirīyōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | 517 | 407 |
| Tripādvibhūtimahānārāyaṇōpaniṣad | 518, 519 | 408, 410 |
| Tripurātāpanīyōpaniṣad | 520 to 523 | 410, 411, 412 |
| Tripurātāpinyupaniṣad | 524 | 412 |
| Tripurōpaniṣad | 525 to 528 | 413, 414, 415 |
| Tripurōpaniṣabhāṣyam | 529 | 415 |
| Trisīkhibrahmaṇōpaniṣad | 530 to 534 | 418, 419 |
| Dakṣiṇāmūrtiyupaniṣad | 535 to 538 | 420, 421 |
| Dattātrēyōpaniṣad | 539, 540 | 422 |
| Darśanōpaniṣad | 541, 542 | 423 |
| Dēvyupaniṣad | 543 to 547 | 424, 425 |
| Dvayōpaniṣad | 548, 549 | 425, 426 |
| Dhyanabindūpaniṣad | 550 to 552 | 426, 427, 428 |
| Nadabindūpaniṣad | 553, 554 | 428, 429 |
| Nārada-parivrajakōpaniṣad | 555 to 558 | 429, 430, 431 |
| Nāradoṣpaniṣad | 559 | 431 |
| Nārāyaṇatāpinyupaniṣad | 560 | 432 |
| Nārāyaṇōpaniṣad | 561 to 569 | 433, 434, 435 |
| Nirālambōpaniṣad | 570 to 574 | 436, 437 |
| Nirvāṇōpaniṣad | 575, 576. | 438, 439 |
| Nṛsimhatāpinyupaniṣad | 577 to 580 | 439, 440, 441 |
| Nṛsimhatāpinyupaniṣadbhāṣyam | 581 to 587 | 444, 445, 446 |
| Nṛsimhatāpinyupaniṣaddīpikā | 588 | 446 |
| Nṛsimhatāpinyupaniṣadvivarāṇam | 589 | 447 |
| Pañcabrahmōpaniṣad | 590, 591 | 449, 450 |
| Pañcōkaraṇōpaniṣad | 592 | 450 |
| Parabrahmōpaniṣad | 593, 594 | 451, 452 |
| Paramahamsa-parivrajakōpaniṣad | 595 to 597 | 452, 453 |
| Paramahamsōpaniṣad | 598 to 603 | 454, 455 |
| Paramahamsōpaniṣaddīpikā | 604 | 456 |
| Pāśupatabrahmōpaniṣad | 605, 606 | 456, 457 |
| Pañgalōpaniṣad | 607, 608 | 457, 458 |
| Paippalādōpaniṣad | 609 | 458 |
| Prāśnōpaniṣad | 610 to 617 | 459, 460, 461 |

ii.—UPANIŠADS (267)—continued.

| Name of the work. | Numbers. | Pages. |
|--|------------|----------------------------|
| Prāśnōpaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | 618, 619 | 461, 462 |
| Prāśnōpaniṣadbhāṣyatippaṇam | 620 | 462 |
| Prāśnōpaniṣadbhāṣyavivaraṇam | 621 | 463 |
| Prāśnōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | 622, 623 | 464, 466 |
| Prāṇāgnihōtrōpaniṣad | 624 to 626 | 466, 467 |
| Bahvrcōpaniṣad | 627, 628 | 467, 468 |
| Brhājjabālōpaniṣad | 629 to 632 | 468, 469, 470 |
| Brhadāranyakōpaniṣad | 633 to 643 | 470, 471, 472, 473, 474 |
| Brhadāranyakōpaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | 644 | 474 |
| Brhadāranyakabhāṣyatīka | 645, 646 | 476, 477 |
| Brhadāranyakōpaniṣadvyākhyā | 647 | 477 |
| Brhadāranyakōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | 648 | 478 |
| Brahmavidyōpaniṣad | 649 to 654 | 480, 481, 482 |
| Brahmōpaniṣad | 655 to 663 | 483, 484, 485 |
| Brahmōpaniṣaddīpikā | 664 to 666 | 485, 486 |
| Bhāsmajabālōpaniṣad | 667 to 669 | 486, 487, 488 |
| Bhavanōpaniṣad | 670 to 675 | 488, 489, 490, 491 |
| Bhikṣukōpaniṣad | 676 to 678 | 492 |
| Maṇḍalabrāhmaṇōpaniṣad | 679, 680 | 493 |
| Mantrikōpaniṣad | 681 to 683 | 494, 495 |
| Mahānārāyaṇōpaniṣad | 684 to 688 | 495, 496 |
| Mahāvāk्यōpaniṣad | 689, 690 | 497 |
| Mahōpaniṣad | 691 to 693 | 498, 499 |
| Māṇḍūkyōpaniṣad | 694 to 703 | 499, 500, 501, 502 |
| Māṇḍūkyōpaniṣadbhāṣyam by Śaṅkarācārya | 704 | 502 |
| Māṇḍūkyōpaniṣadbhāṣyatippaṇam | 705, 706 | 504, 505 |
| Māṇḍūkyōpaniṣaddīpikā | 707 | 506 |
| Māṇḍūkyōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | 708, 709 | 507, 508 |
| Muktikōpaniṣad | 710 to 712 | 508, 514 |
| Muṇḍakōpaniṣad | 713 to 718 | 514, 515, 516 |
| Muṇḍakōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | 719 to 721 | 517, 518 |
| Muṇḍakōpaniṣadbhāṣyatippaṇam | 722, 723 | 518, 519 |
| Muṇḍakōpaniṣadbhāṣyam by Ānandatīrtha | 724, 725 | 519, 521 |
| Muḍgalōpaniṣad | 726, 727 | 521, 522 |
| Maitrāyaṇyōpaniṣad | 728 to 730 | 522, 523, 524 |
| Maitrēyōpaniṣad | 731, 732 | 524, 525 |
| Yājñavalkyōpaniṣad | 733, 734 | 525, 526 |
| Yōgakūṇḍalyupaniṣad | 735, 736 | 526, 527 |
| Yōgacūḍamāṇyupaniṣad | 737 to 739 | 528, 529 |
| Yōgatattvōpaniṣad | 740 to 745 | 529, 530, 531 |

ii.—UPANIŠADS (267)—continued.

| Name of the work. | Numbers. | Pages. |
|--|------------|---------------------------------|
| Yogasīkhōpaniṣad | 746 to 748 | 531, 532, 533 |
| Rahasyōpaniṣad | 749 to 752 | 533, 534, 585 |
| Rāmatāpinyupaniṣad | 753 to 761 | 535, 536, 537, 538, 539, 540 |
| Rāmatāpinyupaniṣadvyakhyā by Viśvōśvara and Bhaṭṭa | | |
| Mudgala Sūri | 762 | 540 |
| Rāmatāpinyupaniṣadvyakhyā by Nāgēśvarasūri | 763 | 542 |
| Rāmatāpinyupaniṣadvyakhyā (Padayōjika) by Rāmāyati ... | 764, 765 | 544, 546 |
| Rāmarahasyōpaniṣad | 766, 767 | 546, 547 |
| Rudrahridayōpaniṣad | 768, 769 | 548, 549 |
| Rudrākṣajābalōpaniṣad | 770 to 773 | 549, 550, 551 |
| Līṅgadharaṇōpaniṣad | 774 | 551 |
| Vajrapañjarōpaniṣad | 775 | 552 |
| Vajrasūcyupaniṣad | 776 to 782 | 553, 554, 555, 556 |
| Varāhōpaniṣad | 783 to 786 | 556, 557, 558 |
| Vasudevōpaniṣad | 787 to 790 | 558, 559 |
| Śarabhōpaniṣad | 791, 792 | 559, 560 |
| Śāthyayāniyōpaniṣad | 793, 794 | 561, 562 |
| Śāṇḍilyōpaniṣad | 795, 796 | 562, 563 |
| Śārirakōpaniṣad | 797 to 803 | 563, 564, 565 |
| Śvētāśvatarōpaniṣad | 804 to 809 | 566, 567, 568 |
| Śvētāśvatarōpaniṣaddīpikā | 810 | 568 |
| Sannyāsōpaniṣad | 811 to 813 | 569, 570 |
| Sarasvatīrahasyōpaniṣad | 814, 815 | 571 |
| Sarvasārōpaniṣad | 816 to 820 | 571, 572, 573 |
| Sāmarahasyōpaniṣad | 821 | 573 |
| Sāvitrīyupaniṣad | 822, 823 | 575, 576 |
| Sītōpaniṣad | 824, 825 | 576, 577 |
| Sudarsanōpaniṣad | 826 | 577 |
| Subalōpaniṣad | 827 to 829 | 577, 578 |
| Subalōpaniṣadvyakhyā | 830 | 579 |
| Sūryatāpinyupaniṣad | 831 | 581 |
| Sūryōpaniṣad | 832 to 834 | 582, 583 |
| Saubhāgyalakṣmyupaniṣad | 835, 836 | 583, 584 |
| Skandōpaniṣad | 837 to 840 | 584, 585, 586 |
| Hamsōpaniṣad | 841 to 850 | 586, 587, 588, 589 |
| Hayagrivōpaniṣad | 851, 852 | 589, 590 |

A DESCRIPTIVE CATALOGUE OF THE SANSKRIT MANUSCRIPTS.

PART III.

CLASS I.—VEDIC LITERATURE.

ii. Upaniṣads.

No. 246. अक्षमालिकोपनिषत्.

AKṢAMĀLIKŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $12\frac{1}{4} \times 7\frac{3}{4}$ inches. Pages, 7. Lines, 20 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, new. Complete.

This is in the second of the two volumes of Upaniṣads here and these were transcribed in 1843 from the palm-leaf manuscript original described under the next number.

Begins on fol. 34b. The other works herein are:—

| | Fol. | | Fol. |
|--------------------------|------|-------------------------|------|
| Śārīrakōpaniṣad .. | 1a | Adhyātmōpaniṣad .. | 65b |
| Yōgaśikhōpaniṣad .. | 2a | Kuṇḍikōpaniṣad .. | 70a |
| Turiyātītāvadhūtōpaniṣad | 21b | Sāvitryupaniṣad .. | 72a |
| Sannyāsōpaniṣad .. | 23a | Ātmōpaniṣad .. | 73a |
| Paramahamsaparivrāja- | | Pāśupatabrahmōpaniṣad | 75b |
| kōpaniṣad .. | 31a | Parabrahmōpaniṣad .. | 80b |
| Avyaktōpaniṣad .. | 38a | Avadhūtōpaniṣad .. | 82b |
| Ēkākṣarōpaniṣad .. | 41b | Tripurātāpanōpaniṣad .. | 85a |
| Annapūrṇōpaniṣad .. | 42a | Dēvyupaniṣad .. | 96b |
| Sūryōpaniṣad .. | 61a | Tripurōpaniṣad .. | 98b |
| Akṣyupaniṣad .. | 62b | Kaṭhōpaniṣad .. | 100b |

| | Fol. | | Fol. |
|--------------------------|------|----------------------------|------|
| Bhāvōpaniṣad .. | 103 | Yājñavalkyōpaniṣad .. | 160a |
| Rudrahṛdayōpaniṣad .. | 105b | Varāhōpaniṣad .. | 162a |
| Yōgakuṇḍalyupaniṣad .. | 108b | Śātyāyaniyōpaniṣad .. | 177b |
| Bhasmajābālōpaniṣad .. | 117b | Hayagrīvōpaniṣad .. | 181a |
| Rudrākṣajābālōpaniṣad .. | 124b | Dattātrēyōpaniṣad .. | 183b |
| Gaṇapatyupaniṣad .. | 128a | Gāruḍōpaniṣad .. | 185b |
| Darśanōpaniṣad .. | 129b | Kalisantārakōpaniṣad .. | 189b |
| Tārasārōpaniṣad .. | 141a | Jabālyupaniṣad .. | 190a |
| Mahāvāk्यōpaniṣad .. | 143a | Saubhāgyalakṣmyupaniṣad .. | 194b |
| Pañcabrahmōpaniṣad .. | 144a | Sarasvatirahasyōpaniṣad .. | 195a |
| Prānāgnihōtrōpaniṣad .. | 146a | Bahvr̥cōpaniṣad .. | 199a |
| Gōpālatāpinyupaniṣad .. | 148a | Muktikōpaniṣad .. | 200a |
| Kṛṣṇōpaniṣad .. | 157a | | |

Treats of the rosary of beads called Akṣamālīkā. This word is made up of Akṣa a bead and Mālīkā a rosary.

Beginning :

ओं वाङ्मे मनसीति शान्तिः ।

अथ प्रजापतिर्गुहं पप्रच्छ । भो ब्रह्मन्क्षमालाभेदविधिं ब्रूहीति ।
सा किलक्षणा कतिभेदा अस्याः कानि सूत्राणि कथञ्चिदनाप्रकारः के
वर्गाः का प्रतिष्ठा केषाधिदेवता किं फलमेति । तद्गुहः प्रत्युवाच ।
प्रवालमौक्तिकरफटिकशङ्खजताष्टापदचन्दनपुत्रजीविकाब्जो(ब्जा)रुद्राक्ष
इति.

End :

प्रातर्धीयानो रात्रिकृतं पापन्नाशयति । सायमधीयानो दिवसकृतं
पापं नाशयति । तत्सायं प्रातः प्रयुञ्जानः पापोऽपापो भवति । एवमक्षमा-
लिकया जप्तो मन्त्रस्तद्यस्तिद्धिकरो भवतीत्याह भगवान् गुहः प्रजापति-
मित्युपनिषत् ॥

Colophon :—

अक्षमालिकोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 247. अक्षमालिकोपनिषत्.

AKṢAMĀLIKŌPANISAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, 19½ × 2½ inches. Pages, 3.
 Lines, 12 on a page. Character, Telugu. Condition, good.
 Appearance, not old.

Complete.

This codex contains 98 Upaniṣads out of the 108 commonly enumerated, the 10 Upaniṣads called Daśōpaniṣad being those that are omitted.

Same as the last.

Begins on fol. 133a. The other works herein are :—

| | Fol. | | Fol. |
|--------------------------|------|-----------------------------|------|
| Brahmōpaniṣad .. | 1a | Sarvasārōpaniṣad .. | 42b |
| Kaivalyōpaniṣad .. | 1b | Nirālambōpaniṣad .. | 43b |
| Jabālōpaniṣad .. | 2a | Rahasyōpaniṣad .. | 44b |
| Śvētāśvatarōpaniṣad .. | 3a | Vajrasūcyupaniṣad .. | 46a |
| Hamsōpaniṣad .. | 6a | Tējōbindūpaniṣad .. | 46b |
| Ārunikōpaniṣad .. | 7a | Nādabindūpaniṣad .. | 56b |
| Garbhōpaniṣad .. | 7b | Dhyānabindūpaniṣad .. | 57b |
| Nārāyaṇōpaniṣad .. | 8a | Brahmavidyōpaniṣad .. | 60a |
| Paramahamsōpaniṣad .. | 8b | Yōgatattvōpaniṣad .. | 61b |
| Amṛtabindūpaniṣad .. | 9a | Ātmaprabōdhōpaniṣad .. | 64a |
| Amṛtanādōpaniṣad .. | 9b | Nāradaparivrajakōpaniṣad .. | 65a |
| Atharvasīra-upaniṣad .. | 10b | Trisikhibrahmaṇōpaniṣad .. | 74a |
| Atharvasikhōpaniṣad .. | 12b | Sitōpaniṣad .. | 77b |
| Maitrāyaṇyōpaniṣad .. | 13a | Yōgacūdāmaṇyupaniṣad .. | 78b |
| Kauṣītakyupaniṣad .. | 15b | Nirvāṇōpaniṣad .. | 81a |
| Brhājjabālōpaniṣad .. | 21a | Maṇḍalabrahmaṇōpaniṣad .. | 82a |
| Nṛsimhaṭāpinyupaniṣad .. | 26a | Dakṣiṇāmūrtiyupaniṣad .. | 84a |
| Kālāgnirudrōpaniṣad .. | 35a | Śarabhōpaniṣad .. | 85a |
| Maitrēyōpaniṣad .. | 35b | Skandōpaniṣad .. | 85b |
| Subālōpaniṣad .. | 37b | Tripādvibhūtimahānārāya- | |
| Kṣurikōpaniṣad .. | 41b | nōpaniṣad .. | 86a |
| Mantrikōpaniṣad .. | 42a | Advayatārakōpaniṣad .. | 97a |

| | Fol. | | Fol. |
|---------------------------|------------------|--------------------------|------------------|
| Rāmarahasyōpaniṣad .. | 97 _b | Tripurōpaniṣad .. | 152 _a |
| Ramatāpinyupaniṣad .. | 101 _b | Kathōpaniṣad .. | 152 _b |
| Vāsudēvōpaniṣad .. | 105 | Bhāvōpaniṣad .. | 153 _b |
| Mudgalōpaniṣad .. | 106 _a | Rudrahṛdayōpaniṣad .. | 154 _b |
| Śaṇḍilyōpaniṣad .. | 107 _a | Yāgakunḍalyupaniṣad | 155 _b |
| Paingalōpaniṣad .. | 111 _a | Bhasmajābālōpaniṣad .. | 158 _b |
| Bhikṣukōpaniṣad .. | 113 _b | Rudrākṣajābālōpaniṣad | 161 _a |
| Mahōpaniṣad .. | 113 _b | Gaṇapatyupaniṣad .. | 162 _b |
| Śārirakōpaniṣad .. | 123 _a | Darsanōpaniṣad .. | 163 _a |
| Yōgasikhōpaniṣad .. | 123 _b | Tārasārōpaniṣad .. | 167 _b |
| Turiyātītavadhūtōpaniṣad | 129 _b | Mahāvākyōpaniṣad .. | 168 _a |
| Saunyasōpaniṣad .. | 130 _a | Pañcabrahmōpaniṣad .. | 16 _b |
| Paramathanasaparivrajakō- | | Prāṇāgnihōtrōpaniṣad .. | 169 _b |
| paniṣad .. | 132 _a | Gōpālataṭpinyupaniṣad .. | 170 _a |
| Avyaktōpaniṣad .. | 134 _b | Kṛṣṇōpaniṣad .. | 174 _b |
| Ēkāksarōpaniṣad .. | 135 _b | Yājñavalkyōpaniṣad .. | 175 _b |
| Annapūrṇōpaniṣad .. | 136 _a | Varāhōpaniṣad .. | 176 _b |
| Akṣyupaniṣad .. | 141 _b | Śātyāyanīyōpaniṣad .. | 182 _a |
| Adhyātmōpaniṣad .. | 142 _a | Hayagrīvōpaniṣad .. | 183 _a |
| Kuṇḍikōpaniṣad .. | 143 _b | Dattātrēyōpaniṣad .. | 183 _b |
| Sāvitrīyupaniṣad .. | 144 _a | Gāruḍōpaniṣad .. | 184 _b |
| Ātmōpaniṣad .. | 144 _a | Kalisantārakōpaniṣad .. | 185 _b |
| Pāśupatabrahmōpaniṣad | 145 _a | Jābālyupaniṣad .. | 185 _b |
| Parabrahmōpaniṣad .. | 146 _a | Saubhāgyalakṣmyupaniṣad | 186 _a |
| Avadhūtōpaniṣad .. | 147 _a | Sarasvatyupaniṣad .. | 187 _a |
| Tripurātāpinyupaniṣad | 147 _b | Bahvr̥cōpaniṣad .. | 188 _a |
| Dēvyupaniṣad .. | 151 _b | Muktikōpaniṣad .. | 188 _b |

No. 248. अक्षुपनिषत्.

AKṢYUPANIṢAD.

Substance, paper. Size, 12½ × 7½ inches. Pages, 7. Lines, 19 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new. Complete.

Begins on fol. 62b. For other works herein see No. 246.

It contains a prayer called Cākṣuṣmāti Vidyā addressed to the sun-god Sūryanārāyaṇa.

Beginning :

ओं सह नाववत्सिति शान्तिः ॥

अथ हंसाकृतिर्भगवानादित्यलोकं जगाम । तत्रादित्यन्नत्वा चाक्षु-
ष्मतीविद्यया तमस्तुवत् । ओं नमो भगवते श्रीसूर्यायाक्षितेजसे नमः ।
ओङ्क्षोराय नमः । ओं महासेनाय नमः । ओं तमसे नमः । ओं रजसे
नमः । ओं सत्याय नमः । असतो मा सद्गमय । तमसो मा ज्योतिर्गमय ।
मृत्योऽमृतङ्गमय । उष्णो भगवान् शुचिरूपः हंसो भगवान् शुचिरूपः
प्रीतिरूपः एवञ्चाक्षुष्मतीविद्यया स्तुतस्सूर्यनारायणस्तुप्रतिोऽब्रवीत्.

End :

तस्मात् सर्वं परित्यज्य तत्त्वानिष्ठो भवानघ ।

अविद्यातिमिरातीतं सर्वाभाव(स)विवर्जितम् ॥

आनन्दममलं शुद्धं मनोवाचामगोचरम् ।

प्रज्ञानघनमानन्दं ब्रह्मास्मीति विभावयेत् ॥

इत्युपनिषत्.

Colophon ;—अक्षुपनिषत्समाप्ता ॥

No. 249. अक्षुपनिषत्.

AKṢYUPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, 19½ × 2½ inches. Pages, 2. Lines,
12 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, not old.

Begins on fol. 141*b*. For other works herein see No. 247.

Same as the last.

Complete.

No. 250. अथर्वशिखोपनिषत्.

ATHARVAŚIKHŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, 12½ × 7¾ inches. Pages, 3. Lines, 20 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Complete.

This is the first of the two volumes already referred to under No. 244.

Begins on fol. 26*a*. The other works herein are :—

| | Fol. | | Fol. |
|--------------------------|-------------|------------------------------|--------------|
| Brahmōpaniṣad .. | 1 <i>a</i> | Kālāgnirudrōpaniṣad .. | 77 <i>a</i> |
| Kaivalyōpaniṣad .. | 2 <i>b</i> | Maitrēyōpaniṣad .. | 78 <i>a</i> |
| Jābālōpaniṣad .. | 4 <i>a</i> | Subālōpaniṣad .. | 83 <i>b</i> |
| Śvētāśvatarōpaniṣad .. | 6 <i>a</i> | Kṣurikōpaniṣad .. | 93 <i>a</i> |
| Hamsōpaniṣad .. | 13 <i>a</i> | Mantrikōpaniṣad .. | 94 <i>b</i> |
| Āruṇikōpaniṣad .. | 14 <i>a</i> | Sarvasārōpaniṣad .. | 95 <i>b</i> |
| Garbhōpaniṣad .. | 15 <i>b</i> | Nirālambōpaniṣad .. | 98 <i>a</i> |
| Nārāyaṇōpaniṣad .. | 17 <i>a</i> | Rahasyōpaniṣad .. | 100 <i>b</i> |
| Paramahamsōpaniṣad .. | 18 <i>a</i> | Vajrasūcyupaniṣad .. | 104 <i>b</i> |
| Amṛtabindūpaniṣad .. | 19 <i>b</i> | Tejōbindūpaniṣad .. | 106 <i>a</i> |
| Amṛtanādōpaniṣad .. | 20 <i>b</i> | Nāda-bindūpaniṣad .. | 130 <i>b</i> |
| Atharvasīra-upaniṣad .. | 22 <i>b</i> | Dhyānabindūpaniṣad .. | 133 <i>b</i> |
| Atharvasīkhōpaniṣad .. | 26 <i>a</i> | Brahmavidyōpaniṣad .. | 140 <i>b</i> |
| Kauṣitakyupaniṣad .. | 27 <i>b</i> | Yōgatattvōpaniṣad .. | 146 <i>b</i> |
| Brhāj jābālōpaniṣad .. | 37 <i>a</i> | Ātmaprabōdhōpaniṣad .. | 153 <i>b</i> |
| Atharvasīkhōpaniṣad .. | 41 <i>b</i> | Nārada-parivrajakōpaniṣad .. | 156 <i>b</i> |
| Maitrāyanyupaniṣad .. | 42 <i>a</i> | Trisīkhibrahmaṇōpaniṣad .. | 181 <i>a</i> |
| Kauṣitakyupaniṣad .. | 47 <i>b</i> | Sitōpaniṣad .. | 190 <i>a</i> |
| Brhāj jābālōpaniṣad .. | 51 <i>a</i> | Yōgacūḍāmanyupaniṣad .. | 193 <i>a</i> |
| Nṛsimhatāpinyupaniṣad .. | 57 <i>b</i> | Nirvāṇōpaniṣad .. | 200 <i>a</i> |

| | Fol. | | Fol. |
|--------------------------|---------|--------------------|---------|
| Maṇḍalabrāhmaṇōpaniṣad | 201b | Rāmatāpinyupaniṣad | .. 254a |
| Dakṣiṇāmurtiyupaniṣad | .. 207a | Vāsudēvōpaniṣad | .. 265a |
| Śarabhōpaniṣad | .. 209a | Mudgalōpaniṣad | .. 267a |
| Skandōpaniṣad | .. 211b | Śāṇḍilyōpaniṣad | .. 269b |
| Tripādvibhūtimahānārāya- | | Pañgalōpaniṣad | .. 281b |
| nōpaniṣad | .. 212b | Bhikṣukōpaniṣad | .. 289a |
| Advaya-tāra-kōpaniṣad | .. 242b | Mahōpaniṣad | .. 289b |
| Rāmarahasyōpaniṣad | .. 245a | | |

Treats of the superiority of Śiva and of the sanctity of the syllable Om.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः

अथ हैनं पैप्पलादोऽङ्गिरास्सनकुमारश्चाथर्वाणमुवाच । भगवन् किमादौ प्रयुक्तं ध्यानं ध्यायितव्यं किन्तद्ध्यानं को वा ध्याता कश्च ध्येयः । स एभ्योऽथर्वा प्रत्युवाच । ओमित्येतदक्षरमादौ प्रयुक्तं ध्यानं ध्यायितव्यमित्येतदक्षरं परं ब्रह्मास्य पादाश्चत्वारो वेदाश्चतुष्पादेवमक्षरं परं ब्रह्म.

End :

सर्वध्यानयोगज्ञानानां तत्कृतमोङ्कारो वेद पर ईशो वा शिव एको ध्येयः शिवङ्करस्सर्वमन्त्रपरित्यज्य समाप्ताथर्वाशिवैतामयीत्य द्विजो गर्भं वासाद्विमुक्तो विमुच्यत इवोन्तत्सत् ॥ सह नाव वत्विति शान्तिः ॥

No. 251. अथर्वशिखोपनिषत्.

ATHARVAŚIKHŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, 19½ × 2½ inches. Pages, 2. Lines, 12 on a page Character, Telugu. Condition, good. Appearance, not old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 12b. For other works herein see No. 245.

No. 252. अथर्वशिखोपनिषत्.

ATHARVĀSIKHÔPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $14\frac{1}{2} \times 1\frac{3}{4}$ inches. Pages, 5. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 42a. For other works herein see No. 217.

There is another copy of the same work on fol. 59a extending over 4 pages. The beginning is wanting.

Complete.

Same as the last.

No. 253. अथर्वशिखोपनिषत्.

ATHARVĀSIKHÔPANISAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $14\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{4}$ inches. Page, 1.

Lines, 11 on a page. Character, Nandināgari. Condition, injured.

Appearance, old.

Begins on fol. 8a. For other works herein see No. 203.

Complete. Same as the last.

No. 254. अथर्वशिखोपनिषत्.

ATHARVĀSIKHÔPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16 \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 4. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete. Same as the last.

Begins on fol. 34a. The other works herein are :—

Mahānārāyaṇōpaniṣad 1a, Kaivalyōpaniṣad 29a, Atharvaśira-upaniṣad 30b, Śvetaśvatarōpaniṣad 35b, Paramarahasyasivatattva-vidyōpaniṣad 41a, Skandōpaniṣad 43a, Kālāgnirudrōpaniṣad 43b, Hamsaparamahamsōpaniṣad 44a, Nārāyaṇōpaniṣad 45a.

No. 255. अथर्वशिखोपनिषत्.

ATHARVAŚIKHŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $14\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 9 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 93a. The other works herein are Jñānavāsiṣṭha-sārasamuccayaḥ 1a, Śaṅkaravijayaḥ 89a, Atharvaśira-upaniṣad 91a, Gaṇapatyupaniṣad 98a, Śaṭpadistōtram 99a.

No. 256. अथर्वशिखोपनिषत्.

ATHARVAŚIKŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 76b. The other works herein are :—

Īśāvāsyōpaniṣad 1a, Talavakārōpaniṣad 2a, Kathavallyupaniṣad 4a, Praśnōpaniṣad 10b, Muṇḍakōpaniṣad 15a, Māṇḍūkyaōpaniṣad 18b, *ibid.* 20a, Chāndōgyōpaniṣad 22a, Brhadāranyōpaniṣad 52a, Brahmōpaniṣad 61a, Kaivalyōpaniṣad 61b, Jābālōpaniṣad 62a, Śvetaśvatarōpaniṣad 63b, Atharvaśira-upaniṣad 68a, Paramahamsōpaniṣad 70a, Āruṇikōpaniṣad 70b, Garbhōpaniṣad 71b, Nārāyaṇōpaniṣad 73a, Hamsōpaniṣad 73b, Amṛtabindūpaniṣad 74b, Amṛtanādōpaniṣad 75a, Kālāgnirudrōpaniṣad 77b, Skandōpaniṣad 78a, Sarvasārōpaniṣad 78b, Śārīrakōpaniṣad 80a, Rahasyōpaniṣad 81a, Kṣurikōpaniṣad 83b, Vāsudēvōpaniṣad 84a, Chāndōgyōpaniṣad 85a, Ātma-bōdhaḥ 86a, Vākya-vṛttiḥ 88b, Dṛgdr̥śyavivēkaḥ 91a.

No. 257. अथर्वशिरउपनिषत्.

ATHARVAŚĪRA-UPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $12\frac{1}{4} \times 7\frac{3}{4}$ inches. Pages, 8. Lines, 22 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new. Complete.

Begins on fol. 226. For other works herein see No. 250.

This treats of the attributes pertaining to Śiva who is herein taught to be the supreme being.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

देवा ह वै स्वर्गं लोकमगमन् । ते देवा रुद्रमष्टच्छन्को भवानिति ।
सोऽब्रवीत् अहमेकः प्रथममासं वर्तामि भविष्यामि च नान्यः काश्चिन्मतो
व्यतिरिक्त इति ।

End :

अस्य मूर्धानमस्य संशिरया(गीर्णो)थर्वा हृदयश्च मन्मस्तिष्कादूर्ध्वं
प्रेरयन् पवमानोऽथर्वशीर्ष्णस्तद्वाथर्वशिरो देवकोशस्तमुद्धि(त्थि)नस्तत्प्रा-
णोऽभिरक्षतु । श्रियमन्नमथो मनः श्रियमन्नमथो मनो विद्यामन्नमथो
मनो विद्यामन्नमथ(थो) मनो मोक्षमन्न(मथो मनो मोक्ष)मन्नमथो मन इत्यो
सत्यमुपनिषत् ॥

Colophon :—अथर्वशिरोपनिषत्समाप्ता.

No. 258. अथर्वशिर उपनिषत्.

ATHARVAŚĪRA-UPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $19\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages, 5.
Lines, 10 on a page. Character, Telugu. Condition, good.
Appearance, old.

Begins on fol. 10b. For other works herein see No. 247.

Complete.

Same as the last.

No. 259. अथर्वशिरउपनिषत्.

ATHARVAŚIRA-UPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size $14\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 11. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 37a. For other works herein see No. 217.

Complete.

Same as the last.

No. 260. अथर्वशिरउपनिषत्.

ATHARVAŚIRA-UPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $14\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 12 on a page. Character, Nandināgari. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 6a. For other works herein see No. 203.

Complete.

Same as the last.

No. 261. अथर्वशिरउपनिषत्.

ATHARVAŚIRA-UPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 8. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 30b. For other works herein see No. 254.

Complete.

Same as the last.

No. 262. अथर्वशिर उपनिषत्.

ATHARVAŚIRA-UPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $14\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages, 8.
Lines, 10 on a page. Character, Telugu. Condition, good.
Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 94a. For other works herein see No. 255.

No. 263. अथर्वशिर उपनिषत्

ATHARVASIRA-UPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 4. Lines, 7 on
a page. Character, Telugu. Condition good. Appearance, old.
Complete.

Begins on fol. 68a. For other works herein see No. 256.

Complete.

No. 264. अद्वयतारकोपनिषत्.

ADVAyatĀRAKŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $12\frac{1}{4} \times 7\frac{3}{4}$ inches. Pages, 6. Lines, 22 on a
page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 242b. For other works herein see No. 250.

Complete.

Salvation is herein declared to result from the realization of
the one Absolute Being, the practice of the Yōga being the means
whereby he is to be realized.

Beginning:

पूर्णमद इति शान्तिः.

अथात अद्वयतारकोपनिषदं व्याख्यास्यामः । यतिने जितेन्द्रियाय
शमादिषड्गुणपूर्णाय चित्स्वरूपोऽहमिति सदा भावः सन् सम्यङ्निमीलिताक्षः

किञ्चिदुन्मीलिताक्षो वान्तर्दृष्ट्वा भूदहरादुपरि सच्चिदानन्दतेजःकूटरूपं
परं ब्रह्मावलोकयन् तद्रूपो भवति.

End :

गुरुरेव परं ब्रह्म गुरुरेव परा गतिः ।

गुरुरेव परा विद्या गुरुरेव परायणः ॥

गुरुरेव परा काष्ठा गुरुरेव परं धनम् ।

यस्मात्तदुपदेष्टासौ तस्माद्गुरुरो गुरुः ॥

इति यस्तदुच्चारयति तस्य संसारमोचनं भवति । सर्वजन्मकृतं
पापं तत्क्षणादेव नश्यति । सर्वान्कामानवाप्नोति सर्वपुरुषार्थसिद्धिर्भवति
य एवं वेदेत्युपनिषत् ।

Colophon :—अद्वयतारकोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 265. अद्वयतारकोपनिषत्.

ADVAYATĀRAKŌPANISAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $19\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{8}$ inches. Pages, 2.

Lines, 12 on a page. Character, Telugu. Condition, good.

Appearance, old.

Begins on fol. 97a. For other works herein see No. 247.

Complete.

Same as the last.

No. 266. अध्यात्मोपनिषत्.

ADHYĀTMŌPANISAD.

Substance, paper. Size, $12\frac{1}{4} \times 7\frac{3}{4}$ inches. Pages, 10. Lines, 19 on
a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 65b. For other works herein see No. 246.

Complete.

This explains that doctrine of the Vedānta according to which Nārāyaṇa is the all pervading soul of the universe which is thus conceived to constitute his body, the idea of the unity between him and the universe being mainly arrived at in this manner.

Beginning :

ओं पूर्णमद इति शान्तिः ॥

अन्तः शरीरे निहितो गुहायामज एको नित्यमस्य पृथिवी शरीरम् ।
यः पृथिवीमन्तरे सञ्चरन् यं पृथिवी न वेद । यस्यापः शरीरं योऽपो-
ऽन्तरे सञ्चरन् यमापो न विदुः ।

End :

अकर्तृहमभोक्ताहमविकारोऽय(ह)मव्यायः ।

शुद्धबोधस्वरूपोऽहं केवलोऽहं सदाशिवः ॥

एतां विद्यामपान्तरात्माय ददौ । अपान्तरात्मो ब्रह्मणे ददौ । ब्रह्मा
घोराङ्गिरसे ददौ । घोराङ्गिरा रैकाय ददौ । रैको रामाय ददौ । राम-
स्तर्वेभ्यो भूतेभ्यो ददौ । इत्येवं निर्वाणानुशासनं वेदानुशासनं वेदानु-
शासनमित्युपनिषत् ॥

Colophon :—अध्यात्मोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 267. अध्यात्मोपनिषत्.

ADHYĀTMŌPAṆIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $19\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3.
Lines, 14 on a page. Character, Telugu. Condition, good.
Appearance, not old.

Begins on fol. 142a. For other works herein see No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 268. अन्नपूर्णोपनिषत्.

ANNAPŪRNŌPANISAD.

Substance, paper. Size, $12\frac{1}{4} \times 7\frac{3}{4}$ inches. Pages, 38. Lines, 20 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 42b. For other works herein see No. 246. Complete.

Brahma explains to Nidāgha the five kinds of illusion on account of which the universe becomes variedly manifest; and as a means for the attainment of the knowledge of the unity of the self with the Brahman inculcated in the Advaita Vedānta, the Annapūrṇa-mantra is taught.

Beginning:

ओं भद्रं कर्णेभिः श्रित्वा शान्तिः ॥

निदाघो नाम योगीन्द्रो ऋभुं ब्रह्मविदां वरम् ।

प्रणम्य दण्डवद्भूमावुत्थाय स पुनर्भुनिः ॥

आत्मतत्त्वमनुब्रूहीत्येवं प्रपच्छ सादरम् ।

क्रिमोपासनया ब्रह्मस्तीदृशं प्राप्तवानिति ॥

मां(तां)मे ब्रूहि महाविद्यां मोक्षसाम्राज्यदायिनीम् ।

End:

अन्तः सर्वपरित्यागी बहिः कुरु यथागतम् ।

चित्तसत्ता परं दुःखं चित्तत्यागः परं सुखम् ॥

अतश्चित्तं चिदेकात्मा नय क्षयमेवेदनात् ।

दृष्ट्वा रम्यमरम्यं वा स्थेयं पाषाणवत्समम् ॥

एतावतात्र यत्नेन जितो भवति संसृतिः ।

वेदान्ते परमं गुह्यं पुराकल्पप्रचोदितम् ॥

नाप्रशान्ताय दातव्यं नापुत्राय शिष्याय वै पुनः । अन्नपूर्णोप-
निषदं योऽधीते गुर्वनुग्रहात् ॥ स जीवन्मुक्तां प्राप्य ब्रह्मैव भवति
स्वयमित्युपनिषत् ॥ पञ्चमोऽध्यायः

Colophon:—अन्नपूर्णोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 269. अन्नपूर्णोपनिषत्.

ANNAPŪRNŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $19\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages, 11.
Lines, 13 on a page. Character, Telugu. Condition, good.
Appearance, not old.

Begins on fol. 136a. For other works herein see No. 247.

Complete.

Same as the last

No. 270. अमृतनादोपनिषत्.

AMṚTANĀDŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $12\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Pages, 5. Lines, 21 on
a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance,
new.

Begins on fol. 20b. For other works herein see No. 250.

Complete.

This describes how Mōkṣa is attained by the practice of the
Yōga, and the rules for practising Yōga and Prāṇāyāma are inci-
dentally explained.

Beginning :

सह नाववात्ति शान्तिः

शास्त्राण्यधीत्य मेधावी अभ्यस्य च पुनः पुनः ।

परमं ब्रह्म विज्ञाय उल्कावत्तान्यथोत्सृजेत् ॥

ओङ्काररथमारुह्य विष्णुं कृत्वाय सारथिम् ।

ब्रह्मलोकपदान्वेषी रुद्राराधनतत्परः ॥

End :

आपाण्डर उदानश्च व्यानो ह्यर्चिस्तमप्रभः ।

यस्येदं मण्डलं भित्वा मारुतो यदि मूर्धनि ॥

यत्र यत्र त्रियेद्वापि न स भूयोऽभिजायते । न स भूयोऽभिजायत
इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—अमृतनादोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 271. अमृतनादोपनिषत्.

AMṚTANĀDŌPANISAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $19\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 11 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, not old.

Begins on fol. 96. For other works herein see No. 247.

Complete.

Same as the last.

No. 272. अमृतनादोपनिषत्.

AMṚTANĀDŌPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 4. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

The colophon called it Amṛtōpaniṣad which probably stands for the full name.

Begins on fol. 75a. For other works herein see No 256.

No. 273. अमृतविन्दूपनिषत्.

AMṚTABINDŪPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $7\frac{1}{2} \times 12\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 21 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 19b. For other works herein see No. 250.

Complete.

Brahman is represented as an attributeless principle of consciousness and Nirōdha is mentioned to be the cause of the manifestation of the universe.

Beginning:

सह नाववत्विति शान्तिः ॥

मनो हि द्विविधं प्रोक्तं शुद्धश्चाशुद्धमेव च ।

अशुद्धं कामसङ्कल्पं शुद्धं कामविवर्जितम् ॥

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।

बन्धाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं स्मृतम् ॥

End:

ज्ञाननेत्रं समाधाय चोद्धरेद्ब्रह्मवत्परम् ।

निष्कलं निश्चलं शान्तं तद्ब्रह्माहमिति स्मृतम् ॥

सर्वभूताधिवासं यद्भूतेषु च वसत्यपि ।

सर्वानुग्राहकत्वेन तदस्म्यहं वासुदेवः

तदस्म्यहं वासुदेव इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—अमृतबिन्दूपनिषत्समाप्ता ॥

No. 274. अमृतबिन्दूपनिषत्.

AMṚTABINDŪPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śritāla). Size, $19\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{8}$ inches. Pages, 2. Lines, 11 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, not old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 9a. For other works herein see No. 247.

No. 275. अमृतबिन्दूपनिषत्.

AMṚTABINDŪPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 2. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 74b. For other works herein see No. 256.

No. 276. अमृतबिन्दूपनिषत्.

AMṚTABINDŪPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $18 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 2. Lines, 11 on a page. Character, Grantha. Appearance, very old. Condition, much injured.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 38a. The other works herein are : Kāṭhavalīyupaniṣattikā 1a, Kaivalyōpaniṣad 38b, Saccidānandasvarūpa-

vicārah 40a, Bōdhāryā 45a, Karmibhaktajñānināmprāyascittābhavaḥ 48a, Vedāntasangrahaḥ 49b, Kālagñirudrōpaniṣad 50b, Brahmōpaniṣad 51b, Āruṇikōpaniṣad 53a, Kēnōpaniṣad 54a, Māṇḍūkyōpaniṣad 55b, Paramahamsōpaniṣad 56b, Isāvāsyōpaniṣad 57b, Nārādōpaniṣad 58b, Sarvasārōpaniṣad 59a, Hastāmalakaślōkāḥ 60b, Daśaślōkī 61b, Garbhōpaniṣad 62a, Prasnōpaniṣad 63b, Muṇḍakōpaniṣad 63b, Aitarēyōpaniṣad 72b, Brhadāranyakōpaniṣad 75b, Kathavallyupaniṣad 87b, Śvētāsvatarōpaniṣad 93b, Mahāsankalpah 96a,

No. 277. अमृतबिन्दुपनिषत्.

AMṚTABINDŪPANIṢAD

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 2. Lines, 9 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 1b. The other works herein are: Bhikṣūpaniṣad 1a, Jābālōpaniṣad 2a, Āruṇikōpaniṣad 3b, Paramahamsōpaniṣad 4a, Uttaragītāvyākhyā 5a, Yōgaviṣayaḥ 19a.

No. 278. अवधूतोपनिषत्.

AVADHŪTŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $7\frac{1}{4} \times 12\frac{1}{4}$ inches. Pages, 6. Lines, 19 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Complete.

Begins on fol. 82b. For other works herein see No. 246.

Gives the definition of Avadhūta and the state of his mind as a jīvanmukta.

Beginning :

ओं सह नाववत्ति शान्तिः ।

अथ हंसाकृतिर्भगवन्तमवधूतं दत्तात्रेयं परिसमेत्य पप्रच्छ । भगवन्
कोऽवधूतः तस्य का स्थितिः किं लक्ष्म किं संसरणमिति । तं होवाच भग-
वान् दत्तात्रेयः परमकारुणिकः

अक्षरत्वाद्दरेण्यत्वाद्भूतसंसारबन्धनात् ।

तच्चमस्यादिलक्ष्यत्वादवधूत इतीर्यते ॥

End :

अहो ज्ञानमहो ज्ञानमहो सुखमहो सुखम् ।

अहो शस्त्रमहो शस्त्रमहोगुरुरहो गुरुरिति ॥

यइदमधीते सोऽपि कृतकृत्यो भवति सुरापानात्पूतो भवति स्वर्णस्ते-
यात्पूतो भवति ब्रह्महत्यात्पूतो भवति कृत्याकृत्यात्पूतो भवति एवं
विदित्वा स्वेच्छाचारपरो भूयादौ सत्यमित्युपनिषत् ॥

Colophon :—अवधूतोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 279. अवधूतोपनिषत्.

AVADHŪTŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, 19½ × 2½ inches. Pages, 2.

Lines, 13 on a page. Character, Telugu. Condition, good.

Appearance, not old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 147a. For other works herein see No. 257.

No. 280. अव्यक्तोपनिषत्.

AVYAKTŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, 12½ × 7½ inches. Pages, 7. Lines, 21 on

a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance,
new.

Complete.

Begins on fol. 38a. For other works herein see No. 246.

Treats of Avyaktavidyā and of the Mantrarāja which is associated with it.

Beginning:

आप्यायन्त्विति शान्तिः ॥

पुरा किलेदं न किञ्चनासीन्न द्यौरासीन्नान्तरिक्षं न पृथिवी केवलज्योतीरूपमनाद्यनन्तमनष्वस्थूलमरूपं रूपवद्विज्ञेयं ज्ञानरूपमानन्दमयमासीत् तदनन्यत्तद्वेधा भूत् । हरितमेकं रक्तमपरं तत्र यद्रक्तं तत्पुंसोरूपमभूत् । यद्धरितं तन्मायायाः । तौसमागच्छतः ।

End:

न च पुनरावन्ति । न चेमां विद्यामश्रद्धानाय ब्रूयात् । नासूयावने नानूचानाय नाविष्णुभक्ताय नानृतिने नातपसे नादान्ताय नाशान्ताय नादीक्षिताय नाधर्मशीलाय न हिंसकाय नाब्रह्मचारिण इत्येषोपनिषत् ॥

Colophon :—अव्यक्तनृसिंहोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 281. अव्यक्तोपनिषत्.

AVYAKTÔPANISAD.

Substance, palm-leaf (Śritāla). Size, $19\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages. 3.

Lines, 13 on a page. Character, Telugu. Condition, good.

Appearance, not old.

Complete. Same as the last.

Begins on fol. 134b. For other works herein see No. 247.

No. 282. आत्मप्रबोधोपनिषत्.

ÂTMAPRABÔDHOPANISAD.

Substance, paper. Size, $7\frac{3}{4} \times 12\frac{1}{4}$ inches. Pages, 7. Lines, 19 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Complete.

Begins on fol. 153b. For other works herein see No. 250.

Chiefly treats of the nature of Praṇava as denoting Nārāyaṇa.

Beginning :

ओं वाङ्मे मनसीति शान्तिः ।

प्रत्यगानन्दं ब्रह्म पुरुषं प्रणवस्वरूपमकारउकारमकार इति ।
अक्षरं प्रणवं तदेतदोमिति । यमुक्त्वा मुच्यते योगी जन्मसंसारबन्धनात् ।
ओं नमो नारायणाय शङ्खचक्रगदाधराय । तस्मादो नमो नारायणायेति
मन्त्रोपासको वैकुण्ठभवनं गमिष्यति ।

End :

स्वल्पापि दीपकाणिका बहुलं नाशयेत्तमः ।

स्वल्पोऽपि बोधो महतीमावेद्यां नाशयेत्तथा ॥

कालत्रये यथा सर्पो रज्जौ नास्ति तथा मयि ।

अहङ्कारादिदेहान्तं जगन्नास्त्यहमद्वयः ॥

चिद्रूपत्वान्न मे जाज्यं सत्यत्वान्नानृतं मम ।

आनन्दत्वान्न मे दुःखमज्ञानाद्भाति सत्यवत् ॥ इति

आत्मप्रबोधोपनिषदं मुहूर्तमुपासित्वा न च पुनरावर्तते न च पुनरा-
वर्तते इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—आत्मप्रबोधोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 283. आत्मप्रबोधोपनिषत्.

ĀTMAPRABŌDHŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, 19½ × 2½ inches. Pages, 3.

Lines, 13 on a page. Character, Telugu. Condition, good.

Appearance, old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 64a. For other works herein see No. 247.

No. 284. आत्मप्रबोधोपनिषत्.

ĀTMAPRABŌDHĪPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, 12 × 1½ inches. Pages, 3. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Complete.

Begins on fol. 29a. The other works herein are Rudranyāsaḥ 1a, Rahasyōpaniṣad 7a, Sarvasārōpaniṣad 10a, Nārāyaṇōpaniṣad 13a, Vajrasūcyōpaniṣad 14b, Śārīrōpaniṣad 16a, Yōgatattvōpaniṣad 18a, Garbhōpaniṣad 20a, Āruṇikōpaniṣad 22b, Kaivalyōpaniṣad 24a, Kēnōpaniṣad 26b, Kālāgnirudrōpaniṣad 31a, Māṇḍūkyōpaniṣad, 32a, Sarvasārōpaniṣad 36a, Hamsōpaniṣad 39a, Nārāyaṇōpaniṣad 41b.

The version in this manuscript differs from the previous one in that the latter continues the Upaniṣad after अमृतत्वञ्च गच्छति for 4 pages, while the present one finishes the Upaniṣad with this passage, as may be seen from the extract given below :

End:

यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिन्लोके स्वरहितं तस्मिन्नेहि पवमानामृते लोके
अक्षीयते अमृते लोके अक्षीयते । अमृतत्वञ्च गच्छत्यमृतत्वञ्च गच्छत्योन्नमः॥
आत्मप्रबोधोपनिषदं मुहूर्तमुपासित्वा न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते ।
ओं तत्सदिति ॥

Colophon :—आत्मप्रबोधोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 285. आत्मप्रबोधोपनिषत्.

ĀTMAPRABŌDHŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $18\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 2. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 48*b*. The other works herein are *Maitrāyaṇīya-brāhmaṇōpaniṣad* 1*a*, *Kauṣītaki-brāhmaṇōpaniṣad* 10*a*, *Brhājja-bālōpaniṣad* 23*b*, *Subālōpaniṣad* 37*a*, *Kṣurikōpaniṣad* 46*a*, *Mantrōpaniṣad* 47*a*, *Mahōpaniṣad* 49*a*, *Nṛsimhatāpinyupaniṣad* 50*b*, *Yōga-sikhōpaniṣad* 59*a*, *Vāsudēvōpaniṣad* 59*a*, *Pranavōpaniṣad* 60*b*, *Trisikhībrāhmaṇōpaniṣad* 61*a*, *Āruṇikōpaniṣad* 64*a*, *Rudrākṣajābālōpaniṣad* 64*b*, *Dhyānabindūpaniṣad* 66*a*, *Bhasmajābālōpaniṣad* 66*b*.

No. 286. आत्मप्रबोधोपनिषत्.

ĀTMAPRABŌDHŌPANIṢAD.

Substance, country-paper. Size, $9 \times 5\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 10 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, tolerably new.

Complete.

Begins on fol. 129*b*. For other works herein see No. 180.

Same as the last. The Śānti here given is सह नाववतु.

No. 287. आत्मोपनिषत्.

ĀTMŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $12\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Pages, 5. Lines, 18 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 73b. For other works herein see No. 246.

Complete.

The quality and nature of Ātman, Antarātman and Paramātman are described.

Beginning:

ओं भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

अथाङ्गिरास्त्रिविधः पुरुषोऽजायत । आत्मान्तरात्मा परमात्मा
चेति । त्वक्चर्ममांसरोमाङ्गुल्यष्टवंशनखगुल्फोदरनाभिमेढूकट्यूरुकपोल-
श्रोत्रधूललाटबाहुपार्श्वशिरोऽक्षीणि भवन्ति जायते म्रियत इत्येष आत्मा ॥

End:

न निरोधो न चोत्पत्तिर्न बन्धो न च साधकः ।

न मुमुक्षुर्न वै मुक्त इत्येषा परमार्थता ॥ इत्युपनिषत् ॥

Colophon:—आत्मोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 288. आत्मोपनिषत्.

ĀTMŌPANISAD.

Substance, palm-leaf (Śritāla). Size, 19½ × 2½ inches. Pages, 3.

Lines, 13 on a page. Character, Telugu. Condition, good.

Appearance, old.

Complete. Begins on fol. 144a. For other works herein see No. 247.

No. 289. आरुणिकोपनिषत्.

ĀRUNIKŌPANISAD.

Substance, paper. Size, 12½ × 7½ inches. Pages, 3. Lines, 21 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 14a. For other works herein see No. 250.

Complete.

Prajāpati teaches his son, Āruni, that asceticism, *i.e.*, Sannyāsa leads to salvation only when it is associated with the knowledge of the self, and explains the duties of ascetics.

Beginning:

आप्यायन्त्विति शान्तिः ॥

आरुणिः प्राजापत्यः प्रजापतेर्लोकं जगाम । तं गत्वोवाच । केन भगवन् कर्माण्यशेषतो विमृजानीति । तं होवाच प्रजापतिस्तव पुत्रान् भ्रातृन् बन्धादीन् शिखायज्ञोपवीतं यागं सूत्रं स्वाध्यायश्च भूलोकभुव-
ल्लोकभुवर्लोकमहोलोकजनोलोकतपोलोकसत्यलोकश्चातलवितलमुतलपा-
तालरसातलतलातलमहातलब्रह्माण्डश्च विमृजेद्दण्डमाच्छादनं कौपीनं
परिग्रहेच्छेषं विमृजेच्छेषं विमृजेत् ॥

End:

स खल्वेवं यो विद्वान् सोपनयनादूर्ध्वं स तानि प्राग्वा त्यजेत् पितरं
पुत्रमग्न्युपवीतं कर्म कलत्रञ्चान्यदपीह यतयो भिक्षार्थं ग्रामं प्रविशन्ति
पाणिपात्रमुदरपात्रं वा ओं हि ओं हिं हि (ओं हीति) एतदुपनिषदं
विन्यसेद्विद्वान् य एवं वेद । पालाशं बैल्वमौदुम्बरं दण्डं मौञ्जं मेखलां
यज्ञोपवीतञ्च त्यक्त्वा शूरो य एवं वेद । तद्विष्णोः परमं पदम् । सदा पश्यन्ति
सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्यं वो जागृवांसस्तमिन्धते ।
विष्णोर्यत्परमं पदम् । इत्येवं निर्वाणानुशासनं वेदानुशासनं वेदानुशासन-
मित्युपनिषत् ॥

Colophon :—आरुणिकोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 290. आरुणिकोपनिषत्.
ĀRUNIKŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $19\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages, 5. Lines, 11 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 7a. For other works herein see No. 247.

Complete.

Same as the last.

No 291. आरुणिकोपनिषत्.
ĀRUNIKŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $12 \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 3. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, fair. Appearance, new.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 22b. For other works herein see No. 284.

No. 292. आरुणिकोपनिषत्.
ĀRUNIKŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $12\frac{1}{2} \times 1$ inch. Pages, 5. Lines, 4 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 157a. The other works herein are : Bṛhadāraṇyakōpaniṣad 1a, Chāndōgyōpaniṣad 12a, Nirālambōpaniṣad 19a, Īśāvāsyōpaniṣad 21a, Kēnōpaniṣad 22a, Muṇḍakōpaniṣad 24a, Māṇḍūkyōpaniṣad 25a, Kaivalyōpaniṣad 26a, Pañcīkaraṇavārtikam 28a, Śālagrāmamantraḥ 33a, Māṇḍūkyōpaniṣaddīpikā 34a, Māṇḍūkyōpaniṣad 38a, Māṇḍūkyōpaniṣatkārikā 39a, Hastāmalakavyākhyā 41a, Pañcīkaraṇavārtikavyākhyā 54a.

The following verse is found in the beginning of the Upaniṣad in this codex:—

ओम् ॥ वामनेन्द्रोऽयमभवत् साक्षाद्दामन एव सः ।
तद्व्याप्राप्तविज्ञानो वामनोऽभवमप्यहम् ॥

No. 293. आरुणिकोपनिषत्.

ĀRUNIKŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 15a. For other works herein see No. 116.

No. 294. आरुणिकोपनिषत्.

ĀRUNIKŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $17 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 2. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 64a. For other works herein see No. 285.

No. 295. आरुणिकोपनिषत्.

ĀRUNIKŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $18 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, very old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 53a. For other works herein see No. 276.

No. 296. आरुणिकोपनिषत्.

ĀRUNIKŌPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 3. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 70*b*. For other works herein see No. 256.

No. 297. आरुणिकोपनिषत्.

ĀRUNIKŌPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 2. Lines, 9 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Same as the last.

Begins on fol. 3*b*. For other works herein see No. 277.

No. 298. इतिहासोपनिषत्.

ITIHĀSŌPANISAD.

Pages, 11. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 228*b*. of the MS. described under No. 199.

This is said to belong to the Yajurveda and bears the marks of a later addition to Vedic literature. A certain king named Vṛṣadarvi of the Śibi family is taught by a Puruṣa issuing from the sun what benefits result from the study of Itihāsa; and this Puruṣa also teaches him certain rules of conduct, specially dealing with what has to be observed in the performance of the Śrāddha ceremony. He is granted five boons, and it is herein enjoined that this upanīṣad is to be repeated during Śrāddha ceremonies at the time when the Brahmins take food.

Beginning:

वृषादर्विकुलं ह वै शिविकुलं बभूव । तस्यायमितिहासः कुलविद्या
बभूव । तद्यो ह स्मेममधीते । स ह स्म राजा भवति । स किञ्चित् प्राप्यान्त-
र्हितः । सोऽब्रवीत् । यो मामितिहासं ग्राहयेत् । वरमस्मै दद्यामिति । ततो
ब्राह्मणः संयोगं संयुज्येत् । तमादित्यात्पुरुषो भास्करवर्णो निष्क्रम्य
त(स) एनं ग्राहयाञ्चकार । तमष्टच्छत् कोऽसीति । वा वृषादर्विरिति ।
तस्माद्य इममितिहासमधीते । आदित्यलोके स कामचारी भवति । तस्माद्य
इममितिहासमुपनीतो माणवको गृहीयात् । गृहीत्वाथ ब्राह्मणाञ्छ्रावयेत्
मेधावी भवेत् । वर्षशतं च जीवेत् ।

End:

अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा वर्षशतं च जीवेत् । वृद्धो वसूनि
पुरोवाच । पुत्रेभ्यः परमं निधिम् । एतद्बोधनमार्याणां मन्त्राश्चैव व्रतानि
च । नमो नमो मन्त्राश्चैव व्रतानि च नमो नमः ॥ ओ नमः ॥
वृषाकूपोऽरण्यस्य तिष्ठति तिलज्योतिस्त्रिंशत् ॥

No. 299. इतिहासोपनिषत्.**ITIHĀSĒPANIṢAD.**

Substance, palm-leaf. Size, $8\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 33. Lines, 6
on a page. Character, Grantha. Appearance, not old. Condi-
tion, slightly injured.

Complete. Same as the last, the end being different.

End:

नमो नमो मन्त्राश्चैव व्रतानि च नमो नमः । एतत्सकलं ब्रह्म
प्रणवस्तुतिः काण्वशाखे पारयेतीतिहासोपनिषत् । श्राद्धकाले विशेषेण
पितृणान्दत्तमक्षयम् । मनोजव आयमानो आया तरत् परम् । दिवं सुपर्णं
गत्वा या सोमं . . . महत् । सुपर्णोसि गरुत्मान् दिवं गच्छ सुवः
पवि(त । वृषाकू)पस्तिलज्योतिस्त्रिंशत् । वृषादर्वि सुवः पत ॥

No. 300. ईशावास्योपनिषत्.
ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 16 × 1½ inches. Pages, 2. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Appearance, old. Condition, good.

Complete.

Begins on fol. 17a.

The other works herein are :—Kēnōpaniṣad (1a), Kāṭhaval-lyupaniṣad (3a), Śārīrakōpaniṣad (8b), Praśnōpaniṣad (9b), Vajrasū-cyupaniṣad (15a), Māṇḍūkyōpaniṣad (16a), Kaivalyōpaniṣad (18a),—Brahmōpaniṣad (19b), Paramahamsōpaniṣad (21a), Garbhōpaniṣad (22b), Chāndōgyōpaniṣad (24b.)

This Upaniṣad teaches the omnipenetrativeness and other qualities and characteristics of the Supreme Being and the insufficiency of either works (karma) or knowledge (jñāna) alone to lead to mōkṣa.

Beginning :

पूर्णतः(मदः)पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते । पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण-
मेवावशिष्यते ॥ ओं शान्तिः ३ ॥ ओम्

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्चिज्जगत्यां जगत् ॥

तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद्धनम् ॥

End :

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमउक्तिं विधेम ।

Colophon—

ईशावास्योपनिषत्समाप्ता ।

No. 301. ईशावास्योपनिषत् .
ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 10 on a page.

Complete.

Begins on fol. 9b. of the MS. described under No. 180.

No. 302. ईशावास्योपनिषत्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $8\frac{1}{2} \times 5\frac{1}{2}$ inches. Pages, 2. Lines, 13 on a page. Character, Telugu. Appearance, new. Condition, worm-eaten.

Complete.

Begins on fol. 1a.

The other works herein are :—Kēnōpaniṣad (1b), Īśāvāsyōpaniṣadbhāṣyaṭippaṇam (4a), Īśāvāsyōpaniṣadbhāṣyam (12a), Talavakārōpaniṣatpadabhāṣyam (20a), Talavakārōpaniṣadvākyavivarāṇam (37a), Talavakārōpaniṣatpadabhāṣyaṭippaṇam (52a), Talavakārōpaniṣadvākyavivarāṇaṭippaṇam (60a), Kathavallyupanīṣad (76a), Praśnōpaniṣad (82a), Praśnōpaniṣadbhāṣyam (86a), Muṇḍakōpaniṣad (112a), Muṇḍakōpaniṣadbhāṣyam (116a), Māṇḍūkyōpaniṣad (140a, 141a), Māṇḍūkyōpaniṣadbhāṣyam (142a), Gauḍapādakārikābhāṣyaṭikā (198a), Aitarēyōpaniṣad (337a), Taittirīyōpaniṣad (342a), Taittirīyōpaniṣadbhāṣyam (349a).

No. 303. ईशावास्योपनिषत्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 57b of the manuscript described under No. 276.

No. 304. ईशावास्योपनिषत्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $18\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Page, 1. Lines, 8 on a page. Character, Telugu. Appearance, old. Condition, much injured.

Complete.

Begins on fol. 105a.

The other works herein are :—Aitar̥yōpaniṣad (1a), Br̥hadāraṇyakōpaniṣad (13a), Chāndōgyōpaniṣad (66a), Kēnōpaniṣad (105b), Kāṭhavalīyupaniṣad (106a), Praśnōpaniṣad (109a), Muṇḍakōpaniṣad (111a), Taittirīyōpaniṣad (115a).

No. 305. ईशावास्योपनिषत्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 10 × 1½ inches. Pages, 4. Lines, 19 on a page. Character, Grantha. Appearance, old. Condition, slightly injured.

Complete.

Begins on fol. 18a.

The other works herein are :—Sudarśanapāñcajanyapratisthāvidhiḥ (1a), Mūlamantradaśayōjanā (4a), Nārāyaṇōpaniṣad (7a), Yājñōpavitapratisthāvidhiḥ (10a), Hayagrīvōpaniṣad (12a), Deśikōpaniṣad (13a), Sudarśanōpaniṣad (13a), Dvayōpaniṣad (13b), Viṣṇupūjākārikā (14a), Pañcasamskāravidhiḥ (15a), Īśāvāsyōpaniṣadbhāṣyam (20a), Guruparamparāstōtram (41a).

No. 306. ईशावास्योपनिषत्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 16 × 1½ inches. Pages, 2. Lines, 7 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, old.

Complete.

There is another copy of this same work beginning on fol. 23b, of the Ms. in 3 pages of 5 lines to a page.

Begins on fol. 5a, and 23b. The other works herein are :—

Br̥hadāraṇyakōpaniṣad (1a) (6a), Nṛsimhatāpinyupaniṣad (14a), Taittirīyōpaniṣad (24a), Aitar̥yōpaniṣad (32a), Rāmātāpinyupaniṣad (34a), Paramahamsōpaniṣad (39b), Chāndōgyōpaniṣad (40a), Br̥hadāraṇyakōpaniṣad (47a).

No. 307. ईशावास्योपनिषत्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size $18 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 2. Lines, 7 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance o'd.

Complete.

Begins on fol. 20a. The other works herein are:—

Rāmatāpin̄ upaniṣad (1a), Rāmāyaṇam (11a), Kēnōpaniṣad (21a), Praśnōpaniṣad (22b), Kathavally upaniṣad (27b), Kālāgni-rudīpaniṣad (33a), Sōmavāravratamāhatmyam (34a), Jaimini-bhāratam (44a).

No. 308. ईशावास्योपनिषत्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD,

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a, of the MS. described under No. 256.

Complete.

No. 309. ईशावास्योपनिषत्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $8\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Pages, 4. Lines, 12 on a page. Character, Dēvanāgarī. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 3b. The other works herein are:—

Īśāvāsyōpaniṣadbhāṣyam (1a), Talavakārōpaniṣadbhāṣyam (5a), Talavakārōpaniṣad (7b), Praśnōpaniṣadbhāṣyam (9a), Praśnōpaniṣad (11a), Māṇḍūkyōpaniṣadbhāṣyam (15a), Māṇḍūkyōpaniṣad (22a), Muṇḍakōpaniṣadbhāṣyam (24b), Muṇḍakōpaniṣad (32a), Chāndō-gyōpaniṣadbhāṣyam (39a).

Complete.

End :

Colophon :

इति याज्ञीयोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 310. ईशावास्योपनिषद्भाष्यम्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 16. Lines, 14 on a page.

Complete.

Begins on fol. 12a. of the MS. described under No. 302.

A commentary on the Īśāvāsyōpaniṣad by Śaṅkarācārya according to the Advaita school.

Beginning :

ईशा वास्यमित्यादयो मन्त्राः कर्मस्वविनियुक्ताः । तेषामकर्मशेष-
स्यात्मनो याथात्म्यप्रकाशकत्वात् । याथात्म्यश्चात्मनः शुद्धत्वापापवि-
द्धत्वैकत्वनित्यत्वाशरीरत्वसर्वगतत्वादि वक्ष्यमाणं कर्मणा विरुद्ध्यत इति
युक्त एवैषां कर्मस्वविनियोगः । न ह्य(ह्ये)वल्लक्षणमात्मनो याथात्म्यमुत्पाद्यं
विकार्यमाण्यं संस्कार्यं वा कर्तुं भोक्तुं वा येन कर्मशेषता स्यात् . . .

एवमुक्ताभिधेयसंबन्धप्रयोजनान् मन्त्रान् संक्षेपतो व्याख्यास्यामः ।
ईशा ईष्ट इतीदृ तेन ईशा ईदृ ईशिता परमेश्वरः परमात्मा सर्वस्य । स
हि सर्वमीष्टे सर्वजन्तूनामात्मा सन् तेन स्वेनात्मना ईशा वास्यमाच्छाद-
नीयम् । किम् । इदं सर्वं यत्किञ्च यत्किञ्चित् जगत्यां पृथिव्यां जगत्तत्सर्वं
स्वेनात्मना परमात्मना प्रत्यगात्मतया अहमेवेदं सर्वमिति परमार्थसत्त्वरूपे-
णानृतमिदं सर्वमाच्छादनीयम् ।

End :

अमृतत्वमश्नुत इत्यापेक्षिकममृतत्वं विद्याशब्देन परमात्मविद्याग्रहणे
हिरण्मयादिना द्वारमार्गादियाचनमनुपपन्नं स्यात्तस्माद्यथाव्याख्यात एव
मन्त्राणामर्थ इत्युपरभ्यते ॥

Colophon :

इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीगोविन्दभगवत्पादपूज्यपादशि-
ष्यस्य श्रीशङ्करभगवतः कृतावीशावास्यभाष्यं समाप्तम् ॥

No. 311. ईशावास्योपनिषद्भाष्यम्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size, $17\frac{1}{4} \times 1\frac{3}{4}$ inches. Pages, 14. Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, fresh.

The commentary of Śaṅkarācārya on the Īśāvāsyōpaniṣad.

Complete.

Begins on fol. 1a. The other works herein are :—

Talavakārōpaniṣadbhāṣyam (8a), Talavakārōpaniṣadvākyārthavivaraṇam (21a), Kāṭhavalīyupaniṣadbhāṣyam (32a), Praśnōpaniṣadbhāṣyam (57a), Muṇḍakōpaniṣadbhāṣyam (73a).

No. 312. ईशावास्योपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢADBHĀṢYATIPPANAM.

Substance, palm-leaf. Size, 16×1 inches. Pages, 30. Lines, 5 on a page. Character, Grantha. Appearance, old. Condition, good.

Complete.

A gloss on Śaṅkarācārya's commentary on Īśāvāsyōpaniṣad by Śivānandayati, whose name, however, is not to be found in this codex but is mentioned in another copy of the same work (*vide* extract under No. 314).

Begins on fol. 1a. The other works herein are :— Talavakārōpaniṣatpadabhāṣyatiṭṭippanam (15b), Talavakārōpaniṣadvākyārthabhāṣyatiṭṭippanam (30a), Kāṭhavalīyupaniṣadbhāṣyatiṭṭippanam (56a), Muṇḍakōpaniṣadbhāṣyatiṭṭippanam (71a), Kāṭhavalīyupaniṣadbhāṣyam (87a), Muṇḍakōpaniṣadbhāṣyam (126b).

Beginning:

येनात्मना परेणेशा व्याप्तं विश्वमशेषतः ।

सोऽहं देहद्वयीसाक्षी वर्जितो देहतद्रुणेः ॥

ईशा वास्यामित्यादिमन्त्रान्व्याचिख्यासुः भगवान् भाष्यकारः तेषां कर्मशेषत्वशङ्कां तावदुच्यदस्यति तथा हि । कर्मजडाः के चनं मन्यन्ते स्म ईशावास्यमित्यादयो मन्त्राः कर्मशेषाः मन्त्रत्वात् । इषे त्वेत्यादिमन्त्रवत् । अतः प्रयोजनाद्यभावादव्याख्येया इति तान् प्रत्याह ईशा वास्यामित्यादय इति । इषे त्वेति शाखामाच्छिनत्तीत्यादिवन् विनियोजकप्रमाणादर्शनात् प्रकरणान्तरत्वाच्चेत्यर्थः

End:

अतो मुख्यार्थे बाधाद्रौणार्थग्रहणं युक्तमित्यर्थः । यस्मादर्थान्तरं न सङ्गच्छते तस्मादित्युपसंहारः ।

ईशाप्रभृतिभाष्यस्य शाङ्करस्य प्रमात्मनः ।

मन्त्रोपकृतिसिद्धयर्थं प्रणीतं टिप्पणं स्फुटम् ॥

No. 313. ईशावास्योपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

ĪŚĀVĀSYŌPANĪṢADBHĀṢYATĪPPAṆAM.

Pages, 15. Lines, 14 on a page.

Complete.

Begins on fol. 4a of the Ms. described under No. 302.

A copy of the work noticed under the above No.

No. 314. ईशावास्योपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

ĪŚĀVĀSYŌPANĪṢADBHĀṢYATĪPPAṆAM.

Substance, palm-leaf. Size, 17½ × 1½ inches. Pages, 14. Lines, 7 on a page. Character, Grantha. Appearance, old. Condition, much injured.

Complete.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Talavakārō-
paniṣatpadabhāṣyaṭippaṇam (8a), Dakṣiṇāmūrtistōtram with com-
mentary (16a).

Another copy of the work noticed in No. 312.

In this codex a colophon at the end of the work attributes
the gloss to Śivānandayati. It runs thus :—

भगवत्पादभाष्यस्य भावगम्भीरवेदिना ।
शिवानन्दयतीशेन टिप्पणं कृतमादरात् ॥

No. 315. ईशावास्योपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢADBHĀṢYATIPPANAM.

Substance, palm-leaf. Size, 15½ × 1¼ inches. Pages, 22. Lines,
6 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured.
Appearance, not quite recent.

Complete.

Same as above.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Kēnōpaniṣat-
padabhāṣyaṭippaṇam (12a), Kēnōpaniṣadvākyaivivaraṇaṭippaṇam
(25a), Kāthakōpaniṣadbhāṣyaṭippaṇam (49b), Muṇḍakōpaniṣad-
bhāṣyaṭippaṇam (67a).

No. 316. ईशावास्योपनिषद्दीपिका.

ĪŚĀVĀSYŌPANIṢADDĪPIKĀ.

Substance, palm-leaf. Size, 17½ × 1½ inches. Pages, 10. Lines,
7 on a page. Character, Nandināgari. Condition, slightly injured.
Appearance, old.

This is a gloss on the Upaniṣad by Śaṅkarānanda, pupil of
Ānandatmā.

Begins on fol. 184 a. The other works herein are Māṇḍū-
kyōpaniṣadbhāṣyaṭikā (1a), Brahmōpaniṣaddīpikā (40a), Kaivalyōpa-

niṣaddipikā(45a), Atharvaśira-upaniṣaddipikā (51a), Jābālōpaniṣaddipikā(64a), Paramahamsōpaniṣaddipikā (71b), Nṛsimhātāpinyupaniṣadbhāṣyam (79a), Śvetaśvatarōpaniṣadvivaraṇam (101a), Brahmōpaniṣaddipikā (183a), Gōvindaṣṭakam (189a), Gōvindaṣṭakatikā (189b).

Beginning :

ईशावास्यादयो मन्त्रा विनियुक्ता न कर्मणि ।

प्रमाणाभावतस्तेषां कुर्वे व्याख्यामकारगाम् ॥

ईशा ईष्टे इति ईश्वर (ईष्ट्) आनन्दात्मा तेन ईशा आवास्यम् आच्छादनीयं निवासयोग्यं वा इदं विविधप्रत्ययगम्यं सर्वं निखिलं सर्वशब्दार्थमाह यत्किञ्चेति जगत्यां ब्रह्माण्डकटाहभूमौ जगत् चेतना-चेतनात्मकम् ईश्वर एवेदमिति बुद्धिः करणयित्वर्थः तद्वृद्धचुपाये साधनमाह तेन

End :

उपास्यां देवतां संप्राप्त्य कर्मसाधनव(भू)तां देवतां प्रार्थयते । अग्रे हे अग्रे नय प्रापय सुपथा सम्यङ्मार्गेण राये स्मरणार्थम् अस्मान् समु-च्चयानुष्ठातृन् विश्वानि देव हे देव वयुनानि कर्माणि ज्ञानानि विद्वान् जानन् युयोधि वियोजय अस्मत् विनाशय उपासकेभ्यः जुहुराणं कुटिलम् एनः पापं भूयिष्ठाम् अतिशयेनाधिकां ते तुभ्यं नमउक्तिं नमस्कारोक्तिं विधेम विधास्यामः सर्वदा कुर्म इत्यर्थः एतम् अपैतम् ।

Colophon :

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यानन्दात्मपूज्यपादशिष्यश्रीशङ्करानन्दभगवतः कृतौ ईशावास्योपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥

No. 317. ईशावास्योपनिषद्भाष्यम्.

ĪŚĀVĀSYŪPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 6. Lines, 10 on a page.

Complete.

Begins on fol. 12b of the MS. described under No. 31.
This is the commentary of Ānandatīrtha in the metrical form
according to the Dvaita school of Vedānta as taught by him.

Beginning :

नित्यानित्यजगद्धात्रे नित्याय ज्ञानमूर्तये ।
पूर्णानन्दाय हरये सर्वयज्ञभुजे नमः ॥
यस्माद्ब्रह्मेन्द्ररुद्रादिदेवतानां श्रियोऽपि च !
ज्ञानस्फूर्तिस्तदा तस्मै हरये गुरवे नमः ॥

स्वायम्भुवो मनुरेतैर्मन्त्रैर्भगवन्तमाकूतिसूनुं यज्ञनामानं विष्णुं तुष्टाव ।
स्वायम्भुवस्स्वदौहित्रं विष्णुं यज्ञाभिधं मनुः ।
ईशावास्यादिभिर्मन्त्रैः तुष्टावावहितात्मना ॥

* * * *

भागवते चायमर्थ एवोक्तः ईशस्य आवास्यम् ईशावास्यं जगत्यां
प्रकृतौ तेन ईशेन त्यक्तेन दत्तेन भुञ्जीथाः स्वतः प्रवृत्तावत्यशक्तत्वादी-
शावास्यमिदं जगत्

End :

जुहुराणम् अस्मानल्पीकुर्वत् युयोधि वियोजय
यदस्मान् कुरुतेऽत्यल्पांस्तदेनोऽस्मद्वियोजय ।
नयनो मोक्षवित्तायेत्यस्तौदचज्ञं मनुस्वराट् ॥
इति स्कान्दे युयुर्वियोग इति धातुः
भक्तिज्ञानाभ्यां भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम ।
पूर्णशक्तिचिदानन्दश्रीतेजस्पष्टमूर्तये ।
ममाभ्यधिकमित्राय नमो नारायणाय ते ॥

Colophon :

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यविरचितमीशावास्योपनिषद्भा-
ष्यं समाप्तम् ॥

No. 318 ईशावास्योपनिषद्भाष्यम्.
ĪŚĀVĀSĪYŌPANĪṢADBHĀṢYAM.

Pages, v. Lines, 12 on a page.

Complete; same as the last.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 309.

No. 319. ईशावास्योपनिषद्भाष्यम्.
ĪŚĀVĀSĪYŌPANĪṢADBHĀṢYAM.

Pages, 39. Lines, 8 on a page.

Complete. Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 305.

A commentary on the Īśāvāsyōpaniṣad according to the Viśiṣṭādvaita school by Vēṅkaṭanātha; generally known by the name of Vēdāntācārya or Vēdāntadēśika.

Beginning :

श्रीमान् वेङ्कटनाथार्यः कवितार्किककेसरी ।
वेदान्ताचार्यवर्यो मे सन्निधत्तां सदा हृदि ॥
येनावास्यमिदं सर्वं चेतनाचेतनात्मकम् ।
विशुद्धसद्गुणैघं तं वासुदेवमुपास्महे ॥
सर्वेशानस्सहजमहिमा सर्वभूतान्तरात्मा
सर्वान्दोषान् स्वयमतिपतन् सर्वविद्यैकवेद्यः ।
कर्माध्यक्षः कलुषशमनः कोऽपि मुक्तोपमोग्यः
सिद्धोपायस्स्फुरति पुरुषो वाजिनां संहितान्ते ॥
ईशावास्यमिदं सर्वमित्यादिर्यदनूच्यते ।
शिष्यं प्रति गुरोरेतत् ब्रह्मविद्यानुशासनम् ॥

संभूतोदाहृतं सर्वं विनियोगपृथक्त्वतः ।

विद्यार्थं स्यादिति व्यक्तं निबद्धोऽस्य तदन्ततः ॥

तत्र प्रथममचिद्विकाराधिष्ठितस्य स्वतन्त्रात्मभ्रमादिपरिजिहीर्षया सर्वस्य परमपुरुषायत्तस्वरूपस्थितिप्रवृत्तिमभिप्रेत्याह ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगदिति । इदं तत्तत्प्रमाणसिद्धमीश्वरव्यतिरिक्तं चिदचिदात्मकं “ज्ञाज्ञौ द्वावजावीशानीशौ” इत्यादिषु जीवात् अत्यन्त-विलक्षणतया प्रख्यातेन सर्वनियन्त्रा पुरुषोत्तमेनावस्यं व्याप्यमित्यर्थः.

End:

एवं परतत्त्वताद्विभूतियोगतदुपासनातद्विशेषान् सङ्गृह्य संहितेयं समपूर्यत ॥ 18 ॥

व्यक्ताव्यक्ते वाजिनां संहितान्ते

व्याख्यामित्थं वाजिवक्त्रप्रसादात् ।

वैश्वामित्रो विश्वमित्रं व्यातानी-

द्विद्वच्छात्रप्रीतये वेङ्कटेशः ॥

अभेदं भोक्तृणामथ च भविनामेव परतां

तथा भेदाभेदं जिनसुगतनीतीश्च जगति ।

असंपाद्यां मुक्तिं भवभयमलीकं च पठता-

मसावीशेत्यादि (न) कथमनुवाकः प्रतिभटः ॥

Colophon:

इति कवितार्किकसिंहस्य सर्वतन्त्रस्वतन्त्रस्य श्रीमेद्वेङ्कटनाथस्य मम नाथस्य वेदान्ताचार्यस्य कृतिषु ईशावास्यभाष्यं संपूर्णम् ॥

परमैकान्तिपुत्रेण प्रसन्नेनाज्ञबुद्धिना ।

लिखितं तु मया पूर्णं (९) भाष्यमीशावास्यस्य नामतः ॥

No. 320. एकाक्षरोपनिषत्.

ĒKĀKṢARŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 21 on a page.

Complete. Begins on fol. 41b of the work described under No. 246.

As the name signifies, this Upaniṣad treats of the one syllable ओम्, which, it is declared, manifests the attributes, such as the immortality, omnipotence and unity of the Supreme Soul.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः.

एकाक्षरं त्वक्षरेतोऽसि सोमे सुषुम्नया चेह दृढी न एक ।
त्वं विश्वभूर्भूतपतिः पुराणः पर्जन्य एको भुवनस्य गोप्ता । विश्वे
निमग्नः पदवीः कवीनां त्वज्जातवेदो भुवनस्य नाथः ।

End :

त्वं भूर्भुवस्त्वस्त्वं हि स्वयंभूरथ विश्वतोमुखः । य एवं नित्यं
वेदयते गुहाशयं प्रमुं पुराणं सर्वभूतं हिरण्मयम् । हिरण्मयं बुद्धि-
मतां परां गतिं स बुद्धिमान् बुद्धिमतीत्युपनिषत् ॥

Colophon :

एकाक्षरोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 321. एकाक्षरोपनिषत्.

ĒKĀKṢARŌPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 13 on a page.

Complete.

Begins on fol. 135b of the MS. described under No. 247.

No. 322. एकाक्षरोपनिषत्.

ĒKĀKṢARŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $12\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 3. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Incomplete. Full of errors.

Begins on fol. 16b. The other works herein are Muṇḍakōpaniṣad (1a), Kaivalyōpaniṣad (9a), Vedāntagranthaḥ (11a), Mahāvākyaṛthavivaraṇam (12b), Brahmapindūpaniṣad (15a), Tejōbindūpaniṣad (15b), Dhyānakramaḥ (18a), Praṇavamantṛaḥ (19a), Bhāgavatam (22a), Āturasannyāsavidhiḥ (33a), Vyāsapūjāvidhiḥ (35a), Kramasannyāsavidhiḥ (38a), Śvetaḥkṛtūpaniṣad (47a), Mṛttikāśnānam (59a), Bhāgavatadharmāḥ (59b).

No. 323. ऐतरेयोपनिषत्.

AITAREYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $17\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 5. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Appearance, new. In good order.

Complete.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Aitarēyōpaniṣad-bhāṣyam (3b).

This Upaniṣad is one of the Daśōpaniṣads and forms part of the Āraṇyaka of the R̥gvēda and consists of Adhyāyas 4 to 7 of the second Prāśna.

It teaches that Ātman is the cause of the manifested universe, that the knowledge of Ātman which leads to salvation is the result of renunciation, and that the nature of Ātman is consciousness though variously thought of.

Beginning :

आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीन्नान्यत्किञ्चन मिषत्स ईक्षत
 लोकान्नु सृजा इति । स इमाँल्लोकान्सृजताम्भो मरीचिर्मरमापोऽदोऽम्भः
 परेण दिवं द्यौः प्रतिष्ठान्तरिक्षं मरीचयः पृथिवीं मरो या अधस्तात्ता
 आपः । स ईक्षते मे नु लोकान् लोकपालान्नु सृजा इति

End :

स एतेन प्रज्ञानात्मनास्माल्लोकादुत्कम्यामुष्मिन् स्वर्गे लोके सर्वान्
 कामानाप्त्वामृतः समभवत् समभवत् ॥ ७ ॥ वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठितेति
 शान्तिः आत्मा वै षट्

Colophon :

आत्मषट्कं समाप्तम् ॥

No. 324. ऐतरेयोपनिषत्.

AITARĒYŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 10 on a page. Correct. Slightly injured.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 189.

Complete.

No. 325. ऐतरेयोपनिषत्.

AITARĒYŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 8 on a page. Appearance, very old.

Complete.

Begins on fol. 72b of the MS. described under No. 276.

No. 326. ऐतरेयोपनिषत्.

AITARĒYŌPANIṢAD.

Pages, 23. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 304.

This codex contains the whole of the second Praśna of the Āraṇyaka.

The second and third Praśnas of the Aitarēya-Āraṇyaka are known by the general name of Upaniṣad, sometimes as Bahvr̥cōpaniṣad or Mahaitarēyōpaniṣad, while Adhyāyas 4 to 7 of the second Praśna are more particularly named as the Aitarēyōpaniṣad. Hence the MS. under notice gives the whole of the second Praśna as the Aitarēyōpaniṣad; and it is for the same reason obviously that the commentary on this Upaniṣad by Śaṅkarācārya deals with the whole of the second Praśna, as may be seen from No. 331.

Beginning :

भूमिमुपस्पृशेदग्र इदा . . सन्दृशि । भद्रं क . . .
 युः । वाङ्मे मनसि प्रतिष्ठिता ।
 . . . ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः । एष पन्था एतत्कर्मेतद्रूपै-
 तत्सत्यं तस्मान्न प्रमाद्येत्

No. 327. ऐतरेयोपनिषत् .

AITARĒYŌPANIṢAD.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Complete.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 139.

The Śānti given herein is that which begins with भद्रं कर्णेभिः

No. 328. ऐतरेयोपनिषत् .

AITARĒYŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 12 on a page.

Complete.

Begins on fol. 337a of the MS. described under No. 303.

No. 329. ऐतरेयोपनिषत् .

AITARĒYŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 306.

No. 330. ऐतरेयोपनिषद्भाष्यम् .

AITARĒYŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 30. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 36 of the MS. described under No. 323.

This is a commentary on the AitarĒyōpaniṣad by Śaṅkarācārya according to the Advaitavēdānta.

Beginning :

नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो नमो गुरुभ्यो
वंशक्राप्तिभ्यः । परिसमाप्तं कर्म सह परब्रह्मविषयज्ञानेन । एषा कर्मणो
ज्ञानस्य परा गतिरुक्ततद्विज्ञानद्वारेण उपसंहृतत्वात्सत्यं ब्रह्म प्रा-
णाख्यमेव कतम एको देव इति एष एको देव एतस्यैव प्राणस्य सर्वे
वेदा विभूतयः

End :

स वामदेव्योऽन्यो वा एतमेतं यथोक्तं ब्रह्म वेद प्रज्ञानात्मना ।
एतेनैव प्रज्ञानात्मना पूर्वं विद्वांसो अमृता अभूवन् । तथायमपि विद्वा-
नेतेनैव प्रज्ञे(ज्ञा)नात्मना अस्माच्छोकादुत्क्रम्येत्यादि व्याख्यातम् । अस्मा
च्छोकादुत्क्रम्यामुष्मिन्स्वर्गे लोके सर्वान् कामानाप्त्वामृतस्समभवदित्यो
मिति.

Colophon :

इति श्रीमद्भोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यश्रीमत्परमहंसपरिव्राजका
चार्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवत्पादस्य कृतौ बह्वृचब्राह्मणोपनिषद्भाष्यं सम्पूर्ण-
म् ॥

No. 331. ऐतरेयोपनिषद्भाष्यम् .

AITARĒYĪPANIṢADBHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size $17\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 115. Lines, 6 on a page. Character, Teluga. Condition, fair. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 55a. The other work herein is Brahmasūtra-bhāṣyavyākhyā (1a).

The commentary of Śaṅkarācārya on the whole of the second Praśna out of the five Praśnas of the Rgvedāraṇyaka. It is, however, stated on page 117 of the India Office Library Catalogue that 'according to Śaṅkāra, Ait., Ār., 4-7 constitute the *Aitareyo-panishad*' Extracts from the Upaniṣad portion of the commentary as also from the other portion are given below :—

Beginning :

ओम् एष पन्था इत्याद्या बह्वृचब्राह्मणोपनिषत्तस्या इदं विवरणमत्यल्प-
ग्रन्थं सुरवावबोधार्थमारभ्यते । उपनिषदित्युपनिपूर्वस्य सदेः किबन्तस्य
विशरणगत्यवसादनार्थस्य रूपमाचक्षते । विशेषेण चोपनिषच्छब्दवाच्या-
त्मविद्या तादर्थ्याद्ग्रन्थोऽप्युपनिषत् देहस्यामात्मविद्यायां तात्पर्येणोपात्ततया
वर्तते । आत्मविद्यानिष्ठानामनुविद्यादिसंसारबीजदोषमवसादयति विनाश-
यति । परं चात्मानं निगमयति अवबोधयति । गर्भजन्मजरारोगादींश्च नि-
शातयति इत्यत इयमात्मविदचोपनिषत्तदुपकारकत्वात्प्राणादिविद्यानाम
प्युपनिषत्त्वम् । सोऽयमात्मविद्याविकरणायैष पन्था इत्यादिग्रन्थो व्याचि-

ख्यासितः । तस्यास्य कर्मकाण्डेन सह संबन्धोऽभिधीयते । सर्वोऽप्ययं वेदः
प्रत्यक्षानुमानाभ्यामनवगतेष्टानिष्टप्राप्तिप्रकाशनपरः

* * * *

द्विर्वचनमुक्तप्रस्तावपरिसमाप्तिप्रदर्शनार्थमिति ।

इत्यैतरेयोपनिषद्विवरणे तृतीयोऽध्यायः

पूर्वाध्याये परिसमाप्तं कर्म सह परब्रह्मविषयविज्ञानेन सैषा कर्मणो
ज्ञानसहितस्य परा गतिः उक्तविज्ञानद्वारेण उपसंहृता । एतत्सत्यं ब्रह्म
प्राणारूपमेष एको देव एतस्यैव प्राणस्य सर्वे देवा विभूतयः एतस्य प्राण-
स्यात्मभावं गच्छन् देवता अपि यान्ति इत्युक्तम् । सोऽयं देवताप्यलक्षणः
परः पुरुष एष मोक्षस्त चायं यथोक्तेन ज्ञानकर्मसमुच्चयसाधनेन प्राप्तव्यो
नातः परमस्तीत्येके प्रतिपन्नाः । तान् निराचिकीर्षुरुत्तरं केवलात्मविद्यावि-
धानार्थमात्मा वा इत्याह । कथं पुनरसंबन्धिकेवलात्मज्ञानविधानार्थं
उत्तरो ग्रन्थः इति गम्यते अन्यार्थानवगमान् ।

* * * *

अहो विचारणपूर्वं यस्मादिदमित्येव यत्साक्षादपरोक्षं ब्रह्म सर्वान्तर-
मपश्यन्नपरोक्षेण तस्मादिदं पश्यतीतिन्द्रो नाम परमात्मा इन्द्रो ह वै नाम
प्रसिद्धो लोके ईश्वरस्तमेवमिन्द्रं संतमिन्द्र इति परोक्षाभिधानेनावक्षते
ब्रह्मविदस्संव्यवहारार्थं पूज्यतमत्वान् प्रत्यक्षनामग्रहणभयात् । तथा हि
परोक्षप्रियाः परोक्षनामग्रहणप्रिया इव एवं हि यस्माद्देवाः किमु सर्वदे-
वानामपि देवो महेश्वरः । द्विर्वचनं प्रकृताध्यायपरिसमाप्तार्थम् ॥

इत्यैतरेयोपनिषद्विवरणे चतुर्थोऽध्यायः

End :

तथैतेनैव प्रज्ञानात्मना पूर्वं विद्वांसो अमृता अमवन् ॥ तथायमपि
विद्वानेतेनैवास्माद्धांकादुत्कम्य अमुष्मिन्स्वर्गे लोके सर्वान्कामानाप्त्वामृत-
स्तमभवदित्यामिति व्याख्यातम् ॥

Colophon :

इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्य-
श्रीमच्छंकरभगवतः कृतौ बहुचब्राह्मणोपनिषद्भाष्ये द्वितीयारण्यकं
समाप्तम् ।

षष्ठे तैत्त्वविद्यां परिसमाप्य सप्तमे शान्तिकरमन्त्रं पठति वाङ्मे
मनसीत्यादि यथोक्ततत्त्वविद्याग्रन्थपाठे प्रवृत्ता मदीया वाक् सर्वदा मनसि
प्रतिष्ठिता मनसा यद्यच्छब्दजातं विवक्षितं तदेव पठति मनश्च मदीयं
वाचि प्रतिष्ठितं यद्यद्विदयाप्रतिपादकत्वेन वक्तव्यं शब्दजातमस्ति तदेव
मनसा विवक्ष्यते । एवमन्तोऽन्यानुगृहीते वाङ्मनसे विदयाग्रन्थं साकल्ये-
नावधारयितुं शक्नुतः ।

*

*

*

*

पूर्वसाधनकाले शिष्याचार्ययोः पालनं प्रार्थितम् । इदानीं फल-
कालेऽपि प्रार्थ्यते शिष्यस्याविदयातात्पर्यनिवृत्तिः । अनेन मन्त्रपाठेन
विदयोत्पत्तेः पुरा विदयाप्रतिबन्धकाः विघ्नाः परिह्रियन्ते । अवनु वक्तार-
मित्यभ्यासोऽध्यायसमाप्त्यर्थः ।

इति द्वितीयारण्यके शान्तिपाठविवरणं समाप्तम् ।

विकारिनामसंवत्सरं श्रावणबहुलद्वादशी मंगळवारे देवीमानेन
खड्गो-ॐ ॥ इत्यष्टाङ्गः ॥

No. 332. ऐतरेयोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

AITARĒYŌPANIṢADBHĀṢYATĪPPANAM.

Substance, paper. Size, 11 × 9 inches. Pages, 31. Lines, 16 on a
page. Character, Dvānāgarī. Condition, good. Appearance,
new.

Complete.

A gloss on the commentary of Śaṅkarācārya on the Aitar-
yōpaniṣad by Jñānāmṛta-yati. This gloss is here seen to form
part of Śāyaṇācārya's Vēdārthaprakāśa, dedicated to his brother

Mādhava. The current idea that Śaṅkara took much help from others in composing his Vedic commentaries is clearly borne out by the inclusion of this gloss in his *Vēdārtha-prakāśa*.

Begins on fol. 21a. The other works herein are Candranārāyaṇīyam (1a), Praśnōpaniṣadbhāṣyaṭippaṇam (37a), Praśnōpaniṣadbhāṣyaṭippaṇam (53a), Rājayōgasūtrabhāṣyam (93a).

Beginning :

ओम् आत्मा वा इत्याद्युत्तरग्रन्थेन ब्रह्मविद्यैवोच्यत इति परिशेषयितुमुत्तरमनुवदति परिसमाप्तमिति । यच्च यावच्च कर्मजातं परब्रह्मविज्ञानञ्च श्रुत्यन्तरेषु श्रुतं तत् सर्वमत्र नोक्तमित्यत आह एषेति । फलत उक्तमित्यर्थः । इदानीं पूर्वपक्षं दर्शयति तत्सत्यमिति ।

End :

अहमेव परं ब्रह्म ब्रह्मैवाहं न संशयः ।

संसारो मे तमोरूपो नासीदस्ति भविष्यति ॥

Colophon :

इति श्रीमदुत्तमामृतपूज्यपादाशिष्यस्य ज्ञानामृतयतेः कृतौ श्रीमदैतरेयोपनिषद्भाष्याटिप्पणे प्रथमारण्यकं समाप्तम् ॥

अवतु वक्तारमित्यभ्यासोऽध्यायपरिसमाप्त्यर्थः द्वितीयारण्यकपरिसमाप्त्यर्थश्च ॥

इति साधारणा (सायणा)चार्थविरचिते माधवीये वेदार्थप्रकाशे ऐतरेयारण्यके सप्तमोऽध्यायः ॥

No. 333. ऐतरेयोपनिषद्भाष्यम्.

AITARĒYŌPANISADBHĀṢYAM.

Substance, paper. Size, 8½ × 4½ inches. Pages, 70. Lines, 15 on a page. Character, Dēvanāgarī. Condition, slightly injured. Appearance, old.

A portion is wanting in the beginning.

By Ānandatīrtha, according to the Dvaita school of Vēdānta.

Beginning (in the MS. as it is) :

न च सर्वमतीत्याश्रतो सर्वमुक्तस्य मुक्तेरन्यत्र कामो विद्यते । सर्वलो-
काधिकं च मुक्तिं विना नान्यत् । तस्मान्मुक्तैरपि भगवान् अमुक्तैरपि
सर्वोत्तमत्वेन चिन्त्य इति सिद्धम् ॥

पुरुषस्थे पञ्चभूते पञ्चभूतो हरिस्स्थितः ।

प्रद्युम्नादिस्वरूपेण ज्योतिरादौ पृथक् पृथक् ॥

स एव च पुनर्वायौ पञ्चधावस्थितः प्रभुः ।

प्राणादिरूपे वसति ह्यनिरुद्धादिरूपवान् ॥

अनिरुद्धश्च प्रद्युम्नः तथा सङ्कर्षणः प्रभुः ।

वासुदेवो नारायणः पञ्चरूप इति क्रमात् ॥

पञ्चरूपोऽपि भगवान् यस्माद्वायौ विशेषतः ।

स्थितस्तेन च खादिभ्यो वायुरेव विशिष्यते ॥

अत एव पृथिव्यादिस्वरूपा मनआदयः ।

देवाः प्राणाश्रिता नित्यं गच्छन्ति प्राणमन्वापि ॥

पृथिवीमयं मनस्तत्र शेषवीरशिवेन्द्रकाः ।

कामानिरुद्धौ देवगुरुर्मनो देवास्तचन्द्रकाः ॥

श्रोत्रमाकाशरूपश्च मित्रधर्मजलाधिपाः ॥

End :

ईशानासस्तूर्यश्च निगूढान्निर्गुणोक्तिभिः ।

त्रेतायां द्वापरे चैव कलौ चैते क्रमात्रयः ॥

एतेषां परमो विष्णुः नेता सर्वेश्वरेश्वरः ।

स्वयंभूर्ब्रह्मसंज्ञोऽसौ परस्मै ब्रह्मणे नमः ॥ इति च ।

पूर्णागण्यगुणोदारधाम्ने नित्याय वेद्यसे ।

अमन्दानन्दसान्द्राय प्रेयसे विष्णवे नमः ॥

Colophon :

इति श्रीआनन्दतीर्थविरचितश्रीमन्महैतरेयोपनिषद्भाष्ये अष्टमो-
ऽध्यायः ।

शुक्लनामसंवत्सरे उत्तरायणे शिशिरऋतौ माघमासे शुक्लपक्षे
एकादश्यां गुरुवासरे व्यासदादाचार्येण लिखितं श्रीमन्महैतरेयोप-
निषद्भाष्यं समाप्तम् ।

No 334. कठवह्युपनिषत्.

KATHAVALLYUPANIṢAD.

Pages, 15. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 25b of the MS. described under No. 180.

Mṛtyu or the god of death teaches to Nacikētas the fruitless-
ness of worldly pleasures, the greatness of eternal freedom and
the immortal and blissful nature of Ātman.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः । उशान् ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसन्द-
दौ । तस्य ह नचिकेता नाम पुत्र आस । तं ह कुमारः सन्तं दक्षिणासु
नीयमानासु श्रद्धा विवेश । साऽमन्यत ।

पीतोदका जग्धतृणा दुग्धदोहा निरिन्द्रियाः ।

अनन्दा नाम ते लोकास्तां स गच्छति ता ददत् । . .

End :

मृत्युप्रोक्तां नचिकेतोऽथ लब्ध्वा विद्यामेतां योगसिद्धिं च कृत्स्नाम् ।
ब्रह्म प्राप्तो विरजोऽभूद्धिमृत्युरन्योऽप्येवं यो विदथाध्यात्ममेव ॥ ओ
शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

Colophon :

कठवह्यी समाप्ता ॥

No. 335. कठवह्युपनिषत्.

KATHAVALLYUPANIṢAD.

Pages, 12. Lines, 13 on a page.

Complete.

Begins on fol. 76a of the Ms. described under No. 302.

No. 336. कठवह्युपनिषत्.

KATHAVALLYUPANIṢAD.

Substance, palm-leaf Size, $17 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 9. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Complete.

The Śānti given in this codex is that which begins with मद्रं कर्णेभिः and is thus different from that in No. 334.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Kāṭhavalī-upaniṣadbhāṣyam (6a), Taittirīyōpaniṣad (30a).

No. 337. कठवह्युपनिषत्.

KATHAVALLYUPANIṢAD.

Pages, 13. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 87b of the MS. described under No. 276.

No. 338. कठवह्युपनिषत्.

KATHAVALLYUPANIṢAD.

Pages, 7. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 106a of the MS. described under No. 304.

No. 339. कठवह्युपनिषत्.

KATHAVALLYUPANIṢAD.

Pages, 11. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 27b of the MS. described under No. 307.

No. 340. कठवह्युपनिषत्.

KATHAVALLYUPANIṢAD.

Pages, 14. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 256.

Complete.

No. 341. कठवह्युपनिषत्.

KATHAVALLYUPANIṢAD.

Pages, 13. Lines, 6 on a page.

The Upaniṣad is contained on fol. 3 to 7, 14 and 16b of the MS. ; and this has been described under No. 300.

Complete. Same as the last.

✓

No. 342. कठवह्युपनिषद्भाष्यम्.

KATHAVALLYUPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 48. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 336.

The commentary is by Śaṅkarācārya.

Beginning :

उशन्ह वै वाजश्रवसः सर्ववेदसन्ददौ । अथ काठकोपनिषद्-
 छीनां सुखप्रबोधनार्थमल्पग्रन्था वृत्तिरारभ्यते । सदेर्धातोर्विशरणगत्य-
 वसादनार्थस्योपनिषदस्य न्वि(कि)प्प्रत्ययान्त्य(न्त)स्य रूपमुपनिष-
 दिति । उपनिषच्छब्देन व्याचिर्यासितग्रन्थप्रतिपाद्यवेद्यवस्तुविषया वि-
 द्योच्यते ।

End :

किञ्च तेजस्विनोरावयोः यदधीतं तत्स्वधीतमस्तु । अथ वा तेजस्विनौ
 आवाभ्यां यदधीतं तत्तत्र तेजस्वि वीथिवदस्त्वित्यर्थः । मा विद्विषावहे ।

शिष्याचार्यावन्योन्यं प्रमादकृतान्याय्याध्ययनाध्यापनदोषनिमित्तं दोषं मा
करवावहा इत्यर्थः । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः इति द्विवेचनं सर्व-
दोषशयनार्थम् । इत्योमिति ॥

Colophon :

इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंसपरिव्राजका-
चार्यवर्यस्य शङ्करभगवत्पादस्य कृतौ काठकोपनिषद्भाष्ये षष्ठवल्ली
समाप्ता ॥

No. 343. कठवह्युपनिषद्भाष्यम्.

KATHAVALLYUPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 79. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 87a of the MS. described under No. 312.

By the same author. This begins as follows:

ओं नमो वैवस्वताय मृत्यवे ब्रह्मविद्याचार्याय नचिकेतसे च । अथ
काठकोपनिषद्ब्रह्मीनां &c.

The colophon is काठकोपनिषत्षष्ठवल्लीविवरणं समाप्तम् ॥

No. 344. कठवह्युपनिषद्भाष्यम्.

KATHAVALLYUPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 50. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 311.

Complete. Same as above.



No. 345. कठोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

KATHŌPANIṢADBHĀṢYATIPPANAM.

Pages, 30. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 56a of the MS. described under No. 312.

This is a gloss on Śaṅkara's commentary on the Upaniṣad by Śivānanda as may be inferred from the colophon in another copy of the same work noticed under the next number.

Beginning :

धर्माधर्माद्यसंस्पृष्टं कार्यकारणवर्जितम् ।

कालादिभिरपच्छिन्नं ब्रह्म यत्तन्नाम्यहम् ॥

यस्ताक्षात्कृतपरमानन्दो यावदधिकारं यास्ये पदे वर्तमानोऽकर्तृ-
ब्रह्मात्मतानुभवबलतो भूतयातनादिदोषैरलितस्वभाव आचार्यो वरप्रदा-
नेन परब्रह्मात्मैकत्वविद्यामुपदिदेश । यस्मै चोपदिदेश ताभ्यां नमस्कु-
र्वन्नाचार्यभक्तेर्विद्याप्राप्यङ्गत्वं दर्शयति नमो वैवस्वतायेति ॥ अथ-
शब्दो मङ्गलार्थः । चिकीर्षितं प्रतिजानीते काठकेति

End :

आत्मानं देहमधिकृत्य वर्तते इत्यध्यात्मानं(मं) प्रत्यक्सवरूपं ब्रह्म प्राप्य
विमृत्युर्भवतीति नान्यरूपमर्चिरादिमार्गगम्यं प्राप्य संयोगस्य वियोगाव-
सानत्वादित्यर्थः ॥ एवंशब्दस्य विद्शब्देन तदा सम्बन्ध एवविदिति ॥

Colophon :

इति शाङ्करस्य काठकोपनिषद्भाष्यस्य टिप्पणमिदं समाप्तम् ॥
ओं ॥

✓

No. 346. काठकोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

KĀTHAKOPANISADBHĀṢYATĪPPANAM.

Pages, 35. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 49b of the MS. described under No. 315.

Complete. Same as above excepting the end.

End :

एवंशब्दस्य विच्छब्देन सह सम्बन्ध इति एवविदिति ।

Colophon :

इति शाङ्करस्य काठकोपनिषद्भाष्यस्य टिप्पणं समाप्तम् ।

पाशीकृतात्मसंसृतिराशिच्छेदप्रवृत्तचित्तानाम् ।

कोशीकृतसुकृतानां काशीप्राप्तिर्भवेन्नृणां लोके ॥

भगवत्पादभाष्यस्य भावगाम्भीर्यवेदिना ।

शिवाचानन्दयतीशेन टिप्पणं कृतमादरात् ॥

This last stanza is, however, found at the beginning of the work also.

No. 347. कठवह्व्युपनिषट्टीका.**KATHAVALLYUPANIṢATṬĪKĀ.**

Pages, 74. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 276.

Seven leaves are wanting in the beginning. It is so much damaged that the commentary cannot be identified. The final passage runs as follows :—

गुरुणा न सम्यग्व्याख्यातमिति शिष्यस्यापरितोषः शुश्रूषा न समीचीनेति गुरोरपरितोषः तदुभयं मा भूदित्यर्थः तेषां त्रयाणामुपशमाय ईश्वरानुस्मरणपूर्वकं त्रिशशान्तिः पश्यते ।

Colophon :

कठवह्व्युपनिषट्टीका समाप्ता ॥

No. 348. काठकोपनिषद्भाष्यम्.**KĀTHAKOPANIṢADBHĀṢYAM.**

Pages, 41. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 32.

Complete.

The commentary of Ānandatīrtha in verse on the Kāṭhavalīy-upaniṣad.

Beginning :

नमो भगवते तस्मै सर्वतः परमाय ते ।

सर्वप्राणिहृदिस्थाय वामनाय नमो नमः ॥

अग्नौ विष्णुं सदा ध्यायन् त्रिणेऽग्निं नाचिकेतकम् ।

यः श्रयीत स तु प्राप्य स्वर्गं तत्र भयातिगः ॥

उप्य मन्वन्तरं कालममृतत्वं भजेत् क्रमात् ।

इति ब्रह्मसारे ॥

इच्छन् वाजश्रवो भक्त्या ददौ सर्वस्वदक्षिणाम् ।

औद्दालकब्राह्मणेभ्यो ददौ गाश्च निरिन्द्रियाः ॥

मान्दत्वापि न ते गावो दातव्या ईदृशा इति ।

उवाच पुत्रस्तं बालस्तं शशापेति (पपि) ता[स्]स्वयन् ॥

स्व(स)जगाम यमं बालो ब्रह्मचारी यमस्य तु ।

पत्न्या सम्पूज्यमानोऽपि जग्राहाव्यादिकं न तु ॥

आगते तु यमे प्राह यमं सादकमाहर ।

इत्युक्तः स यमस्तन्तु सम्पूज्यादाद्वरत्रयम् ॥

सौमनस्यं पितुश्चैवं नाचिकेनाग्निगं हरिन् ।

मुक्ते स्थितञ्च तं विष्णुमिति प्राशद्वरत्रयम् ॥

इति गतिसारे ।

अभ्यूत्वादग्निनामासौ नाचिकेनाग्निगो हरिः ।

लोको विष्णुरनन्तस्य तद्ज्ञानान्नित्य आप्यते ॥

प्रतिष्ठा सर्वलोकस्य स विष्णुस्सर्वहृद्गः ।

स एष लोदि . . तं ज्ञात्वा मुच्यते ध्रुवम् ॥ इति च ।

या इष्टिकाः या इष्टिका देवताः ।

इष्टिकान्देवताविष्णुषष्ठ्युत्तरशतत्रिकम् ।

यथावदेव विज्ञाय मुच्यते कर्मबन्धनात् ॥

त्रिभिरेत्य सन्धिन्देवैरविरुद्धः वेदोक्तप्रमाणेन भगवत्तत्त्वादिकं जान-
न्नित्यर्थः । त्रिकर्मकत् यज्ञदानतपःकर्ता ।

यज्ञदानतपःकर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत् । इति वचनात् ।

त्रयमेतद्या इष्टिका इत्यादि ।

End :

यस्यात्मा शरीरम् । य आत्मानमन्तरो यमयतीति च । जनानां हृदये
त्यक्त्वाच्च जीवात्पृथक्शरीरीति सिद्धम् ।

देहाङ्गुष्ठमितो देहे जीवाङ्गुष्ठमितो हृदि ।

जीवस्य स तु विज्ञेयो जीवाङ्गुष्ठममुक्तयं । इति च ।

संसारी शरीरेणाभेदो वादिना केनापि नाङ्गीकृतः न च लोक-
सिद्धः जनानामिति भेदात् । न जीवोऽङ्गुष्ठमात्रः अतो विष्णोर्जीवाङ्गेद
उक्तः । अतः सर्वोत्तमो विष्णुरिति सिद्धम् ।

नमो भगवते तस्मै विष्णवे प्रभविष्णवे ।

यस्याहमात्मा आत्मेभ्यो यो ममात्तमस्तदा ॥

Cclophon :

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यविरचितं काठकोपनिषद्भाष्यं
समाप्तम् ॥

No. 349. कठोपनिषत्.

KATHŪPANIṢAD.

Complete.

Begins on fol. 100b of the MS. described under No. 246.

The colophon wrongly gives to the work the name of *Narōpaniṣad*. It treats of the ascetic life of *sannyāsa* and incidentally describes the attributeless nature of the Supreme Being.

Beginning :

सह नाववाप्ति शान्तिः ॥ देवा ह वै भगवन्तमब्रुवन् अधीहि
भगवन् ब्रह्मविद्यां स प्रजापतिरग्रवीन् सशिखा(न) केशाम्(न्) निष्कृष्य
विसृज्य यज्ञोपवीतं निष्कृष्य पुत्रन्दट्वा त्वं ब्रह्मा त्वं यज्ञः वषट्कार-
स्त्वोङ्कारस्त्वं त्वाहा त्वं स्वधा त्वं दाता त्वं विधाता । अथ पुत्रो
वदति ॥

End :

सर्वोपाधिविनिर्मुक्तं स्वात्मानम्भावयेत्सुधीः ।
एवं चो वेद तच्चेन ब्रह्मभूयाय कल्पते ॥
सर्ववेदान्तसिद्धान्तसारं वच्मि यथार्थतः ।
स्वयं मृत्वा स्वयं भूत्वा स्वयमेव वशिष्यते ॥
इत्युपनिषत् ॥

Colophon :

नरोऽनिषत्समाप्ता ॥

No. 350. कठोपनिषत्.

KATHŪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 13 on a page.

' Begins on fol. 152*b* of the MS. described under No. 247.
Complete. Same as the last.

No. 351. कलिसन्तारकोपनिषत्.

KALISANTĀRAKŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 22 on a page.

Complete.

Begins on fol. 189*b* of the MS. described under No. 246.

Nārada is herein taught by Brahma the means whereby salvation is attained in the kali age ; this means being the repetition of the following three names of the Supreme Being viz., Hari, Rāma and Kṛṣṇa sixteen times.

Beginning:

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

कलिजाबालिसौभाग्यरहस्यऋचमुक्तिका ।

द्वापरान्ते नारदो ब्रह्माणं जगाम कथं ब्रह्मन् गां पर्य-
टन् कलिं सन्तरेयमिति । स होवाच ब्रह्मा । साधु पृष्टोऽस्मि सर्व-
श्रुतिरहस्यं गोप्यं तच्छृणु येन कलिसंसारं तरिष्यसि

End:

पितृदेवमनुष्याणामपकारात् पूतो भवति सर्वधर्मपात्त्यागपापाना-
त्सद्यः शुचितामाप्नुयात् सद्यो मुच्यते सद्यो मुच्यत इत्युपनिषत्

Colophon:

कलिसन्तरणोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 352. कलिसन्तारकोपनिषत्.

KALISANTĀRAKŌPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 185 *b* of the MS. described under No. 247.

No. 353. कलिसन्तारकोपनिषत्.
KALISANTĀRAKŌPANISAD.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 4 b of the MS. described under No. 180 where in it is named as Tāarakabrahmōpaniṣad.

No. 354. कलिसन्तारकोपनिषत्.
KALISANTĀRAKŌPANISAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Complete. Same as the last.

Begins on fol. 58b of the MS. described under No. 276 where in it is wrongly named as Nārādōpaniṣad.

No. 355. कात्यायनापनिषत्.
KĀTYĀYANŌPANISAD.

Substance, paper. Size, $7\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{4}$ inches. Pages, 14. Lines, 14 on a page. Character Telugu. Condition, injured. Appearance, old. The leaves are fragile.

Incomplete ; Brāhmanas 1 and 2 complete.

Begins on fol. 6a. The other work herein is Nārādōpaniṣad.

This Upaniṣad describes the process of the evolution of the mind, of the various organs of sense and of the objects of the senses from the first Being which is conceived to be at the same time eternal, non-existent and indescribable.

Beginning:

पूर्णमद इति शान्तिः । नेव वा इदमग्रे समासीन्नेव सदासि
वासिदिव त इदमग्रे नेवासीत्तद्धकतेन्मनस एवासः । १ ।

End:

ता वा एता एकविंशबृहत्य एकविंशो वै स्वर्गो लोको बृ-
हस्स्वर्गो लोकस्तद्देशे स्वर्गं लोकमभिसंपद्यते । एकविंशस्तोमं बृहतीं
च छन्दः । १९ ।

इति द्वितीयं ब्राह्मणम् ॥

No. 356. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRŌPANISAD.

Pages, 3. Lines, 20 on a page.

Complete.

Begins on fol. 77a of the MS. described under No. 250.

Kālāgnirudra explains to Sanatkumāra the efficacy of besmear-
ing the forehead with sacred ashes and mentions how it is to be
done.

Beginning:

सह नाववत्विति शान्तिः । अथ कालाग्निरुद्रोपनिषत् । संवर्त-
कोऽग्निऋषिरनुष्टप् छन्दः । श्रीकालाग्निरुद्रो देवता । कालाग्निरुद्र-
प्रीत्यर्थं जपे विनियोगः । अथ कालाग्निरुद्रं भगवन्तं सनत्कुमारः
पप्रच्छ । अधीहि भगवन् त्रिपुण्ड्रविधिं सतत्त्वं किं द्रव्यं कियत्स्थानं
कति प्रमाणं का रेखाः के मन्त्राः का शक्तिः किं दैवतं कःकती
किं फलमिति चैतं होवाच भगवान् कालाग्निरुद्रः

End:

स सततं सकलरुद्रमन्त्रजापी भवति स सकलभोगान् मुञ्क्ते देहं
त्यक्त्वा शिवसायुज्यमेति न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्तत इत्याह भगवान्
कालाग्निरुद्रः । यस्त्वेतद्वाधीते सोऽप्येवमेव भविष्यतीत्यो सत्यमित्युप-
निषत् ॥

Colophon:

कालाग्निरुद्रोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 357. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.
KĀLĀGNIRUDRÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Complete.

Begins on fol. 35 *a* of the MS. described under No. 247.

No. 358. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.
KĀLĀGNIRUDRÔPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Complete.

Begins on fol. 16 *b* of the MS. described under No. 202.

No. 359. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.
KĀLĀGNIRUDRÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Complete.

There is herein another copy of the work beginning on fol. 72*a*. These are full of errors, and in the beginning the names of the R̥sis (sages), &c. are not given.

Begins on fol. 10*a* of the MS. described under No. 217.

No. 360. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.
KĀLĀGNIRUDRÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Complete.

Begins on fol. 24*a* of the work described under No. 139.

No. 361. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRÔPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 10a of the MS. described under No. 203.

Complete.

No. 362. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 43b of the MS. described under No. 254.

This too does not give at the commencement the names of the R̥sis, &c.

No. 363. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRÔPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Complete. In good condition.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 284.

No. 364. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 50b of the MS. described under No. 276.

No. 365. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRÔPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $17\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 2. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance not old.

Complete. The usual Śānti is not here given.

Begins on fol. 119a. The other works herein are :—

| | Fol. | | Fol |
|--------------------------|------|---------------------------|------|
| Samhārabhairavamantraḥ | 1a | Nakulivāgīśvarīmantraḥ | 90a |
| Ādityahr̥īayam .. | 1b | Nakulibhuvanēśvarīman- | |
| Tricārghyapradānam.. | 3a | traḥ | 90a |
| Sūryanārāyaṇakavacam | 4a | Mālāpañcākṣarīmantraḥ | 90a |
| Nāmatrayāmantraḥ .. | 5a | Bālātripuravāgīśvarīman- | |
| Viṣṇupañjaranyāsaḥ .. | 6a | traḥ | 91a |
| Sudarśanamāmantraḥ .. | 12b | Mālātripurasundarīmantraḥ | 91a |
| Hanūmatkavacam .. | 14b | Nandanōdyānapūjā .. | 92a |
| Rāmacandramantraḥ.. | 16b | Lakṣmībhuvanēśvarīman- | |
| Śīvaliṅganirṇayaḥ .. | 17a | traḥ.. .. | 94a |
| Uttaragītā .. | 17b | Pañcadaśīsampulīkaraṇa- | |
| Garbhagītā .. | 24a | lakṣmīsūktam .. | 95a |
| Viṣṇuśahasranāmabhāṣyam | 26a | Mahālakṣmīṇṣimbhāman- | |
| Gāyatrikavacaḥ .. | 79a | traḥ | 96a |
| Viṣṇupūjāvidhānam .. | 80a | R̥syādinyāsaḥ .. | 96a |
| Kūṭyōgaḥ .. | 81b | Karasaṁdhiṇyāsaḥ .. | 96a |
| Brāhmanuhūrtavidhiḥ | 83a | Pañcadaśākṣarīmāhātri- | |
| Dēvipūjāvihī .. | 83a | purāsundarīmantracājāḥ | 97a |
| Mātrkāmantraḥ .. | 86a | Śōḍaśanityāmantradhyanam | 98a |
| Akṣaranyāsaḥ .. | 86a | Śuddhaśaktimālāmantraḥ | 100a |
| Akṣamālāprakāraḥ .. | 86a | Caturvīmśatimahārājōpa- | |
| Nyāsapraṇava .. | 87a | cārāḥ | 101a |
| Ōṅkāramantran̐yāsaḥ | 87a | Śaktiśmōmalāmantraḥ | 103a |
| Bhuvanēśvarīmantraḥ | 87a | Śuddhaśivamālāmantraḥ | 105a |
| Cintāmaṇīmantraḥ .. | 88a | Kiṁkiṇīstavaḥ .. | 106a |
| Prapañcamātrkāśarasvatī- | | Śāntipāṭhaḥ .. | 106a |
| bijam | 88a | Śrīcakranyāsaḥ .. | 108a |
| Brahmavāgīśvarīmantraḥ | 89a | Śōḍaśyaṣṭōttarasata- | |
| Lakṣmīganapatīmantraḥ | 89a | nāmāni | 113a |
| Mahāganapatīmantraḥ | 89a | Skandōpaniṣad .. | 116a |

| | Fol. | | Fol. |
|----------------------|------|-----------------------|------|
| Nārāyaṇōpaniṣad .. | 116a | Āruṇōpaniṣad .. | 128a |
| Amṛtabindūpaniṣad. . | 117a | Praṇavōpaniṣad .. | 129a |
| Śārirōpaniṣad .. | 117a | Haṁsōpaniṣad .. | 129a |
| Yōgatattvōpaniṣad .. | 118a | Sandhyāvidhiḥ .. | 132a |
| Vajrasūcyupaniṣad .. | 120a | Mahāsaktinyāsaḥ .. | 141a |
| Brahmavillakṣaṇam .. | 121a | Ghaṭikāparāyaṇavidhiḥ | 145a |
| Kaivalyōpaniṣad .. | 121a | Mūlasūtram .. | 146a |
| Kēnōpaniṣad .. | 122a | Gāyatrihṛdayam .. | 155a |
| Sarvasārōpaniṣad .. | 124a | Brahmāstram .. | 159a |
| Māṇḍūkyōpaniṣad .. | 125a | Gāyatrīstōtram .. | 159a |
| Garbhōpaniṣad .. | 125a | Tripurasuṅgarīpūjāvi- | |
| Brahmōpaniṣad .. | 126a | duānam .. | 161a |

No. 366. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 12 × 1½ inches. Pages, 4. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete. No śānti is given here.

Begins on fol. 1a. The other works herein are:—

Māṅgalahāratislōkaḥ (3a), Vibhūtidvāraṇam (4a), Rudrākṣa-dvāraṇam (6b), Śivapūjāvidhiḥ (8a), Śivanamaskāraśtūtiḥ (13a), Līṅgāṣṭakam (13b).

No. 367. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRŌPNIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 7½ × 1½ inches. Pages, 5. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Complete.

Begins on fol. 1a. The other works herein are :—

Sāmbabhujaṅgastōtram (3b), Mr̥tyuñjayamānasastōtram (7b),
Bhavanimānasastōtram (16b).

No. 368. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 33a of the MS. described under No. 307.

Complete.

No. 369. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRŌPANIṢAD.

Substance. palm-leaf. Size, $11\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 3. Lines, 8
on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance,
old.

Begins on fol. 49b. The other works herein are :—Bhagavad-
gītā (1a), Rāmakavaca (45a), Rāmadvādaśanāmastōtram (145b),
Sāmbaśivastōtram 46a, Navaratnamālikāstōtram 46b, Kaivalyōpa-
niṣad 49a, Atharvaśikhūpaniṣad 51a, Atharvasīra-upaniṣad 52b,
Cidambaranāṣanastōtram 58a.

Complete.

No. 370. कालाग्निरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 77b of the MS. described under No. 258.

No. 371. कालाग्रिरुद्रोपनिषत्.

KĀLĀGNIRUDRÔPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 3. Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 16a. The other works herein are: Chandôvicitisûtram 1a, Sarvapṛsthāptōryāmam 5a, Pratihārasûtram 6a, Saurâṣṭākṣarimantraḥ 16a.

No. 372. कुण्डिकोपनिषत्.

KUṆDIKÔPANISAD.

Pages, 5. Lines, 19 on a page.

Complete.

Begins on fol. 70a of the MS. described under No. 246.

This teaches that mental purity is essential for the attainment of salvation even in the case of ascetics who live the life of renunciation.

Beginning :

ओम् । आप्यायन्त्विति शान्तिः

ब्रह्मचर्याश्रमेऽक्षीणे गुरुशुश्रूषणे रतः ।

वेदान्तीत्यानुज्ञात उच्यते गुरुणाश्रमी ॥

दारमाहृत्य सट्टशमग्रिमाधाय शक्तिः ।

ब्राह्मीमिष्टि यजेत्तातामहंरात्रेण निर्वपेत् ॥

End :

निष्क्रियोऽस्म्यविकारोऽस्मि निष्कलोऽस्मि निराकृतिः ।

निर्विकल्पोऽस्मि नित्योऽस्मि निरालम्बोऽस्मि निर्द्वयः ॥

सर्वात्मकोऽहं सर्वोऽहं सर्वातीतोऽहमव्ययः ।
 केवलखण्डबोधोऽहं स्वानन्दोऽहं निरन्तरः ॥
 स्वमेव सर्वतः पश्यन् मन्यमानः स्वमद्वयम् ।
 स्वानन्दमनुमुञ्जानः निर्विकल्पो भवाम्यहम् ॥
 गच्छन् तिष्ठन्नुपविशन् शयानो वान्यथापि वा ।
 यथेच्छया वसेद्विद्वानात्मारामस्तदा मुनिः ॥ इत्युपनिषत् ।

Colophon :

इति कुण्डिकोपनिषत्समाप्ता.

No. 373. कुण्डिकोपनिषत्.

KUNḌIKOPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 15 on a page.

Complete.

Begins on fol. 143b of the MS. described under No. 247.

No. 374. कृष्णोपनिषत्.

KṚṢṆOPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 21 on a page.

Complete.

Begins on fol. 157a of the MS. described under No. 246.

Teaches that Kṛṣṇa is an incarnation of Viṣṇu like Rāma.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः

महाविष्णुं सच्चिदानन्दलक्षणं रामचन्द्रं दृष्ट्वा सर्वङ्गसुन्दरं मुन-
 यो वनवासिनो विस्मिता बभूवुस्तं होचुर्नोऽवद्यमवतारान्वै गण्यन्ते ।
 आलिङ्गामो भवन्नमिति

End :

तदेतद्वेदानां रहस्यं तदेतदुपनिषदां रहस्यमेतदधीयानस्सर्वक्रतुफलं
लभते शान्तिमेति मनःशुद्धिमेति सर्वार्थफलं लभते य एवं वेद
देहबन्धाद्विमुच्यते इत्युपनिषत् । हरिः ओम् ॥

Colophon :

कृष्णोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 374. कृष्णोपनिषत्.

KRṢṆĪOPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 12 on a page.

Complete.

Begins on fol. 174b of the MS. described under No. 247.

No. 376. केनोपनिषत्.

KENĪOPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Complete.

Blank spaces are left here and there in the MS. perhaps owing to its having been copied from another injured MS.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 300.

This teaches that the Brahman is the foundation and the life-giver of all beings and that all their physical and mental activities proceed from Him as the source of all power, and that the Brahman is to be known only in this manner.

Beginning :

आप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्पाणिच(क्प्राणश्च)क्षुः श्रोत्रमथो
बलमिन्द्रियाणि च सर्वाणि सर्वं ब्रह्मोपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्याम्मा मा
ब्रह्म निराकरोदनिराकरणमस्त्वनिराकरणं मेऽस्तु तदात्मनि निरस्ते
य उपनिषत्सु धर्मास्ते मायि सन्तु ते मायि सन्तु । ओं शान्तिः

शान्तिः शान्तिः ॥ केनेषितं पतति प्रैषितं मनः । केन प्राणःप्रथम
प्रैति युक्तः ।

End :

यो वा वि (ए) तामेवं (वेदा) अपहत्य वामानमनन्ते (पाप्मान-
मनन्ते) स्वर्गलोके ज्येये प्रातिष्ठति ॥

Colophon :

केनोपनिषत्समाप्ता

No. 377. केनोपनिषत्.

KĒNĒPANISAD.

Pages, 5. Lines, 12 on a page.

Complete.

Begins on fol. 74 of the MS. described under No. 180.

No. 378. केनोपनिषत्.

KĒNĒPANISAD.

Pages, 4. Lines, 15 on a page.

Complete.

Begins on fol. 14 of the MS. described under No. 302.

No 379. केनोपनिषत्.

KĒNĒPANISAD.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 22a of the MS described under No. 202.

No. 380. केनोपनिषत्.

KĒNŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 16 on a page.

Complete.

Begins on fol. 26b of the MS. described under No. 284.

No 381. केनोपनिषत्.

KĒNŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 54a of the MS. described under No. 276.

No. 382. केनोपनिषत्.

KĒNŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 105b of the MS. described under No. 304.

No. 383. केनोपनिषत्.

KĒNŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 10 × 1½ inches. Pages, 6. Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, new.

Complete.

Begins on fol. 1a. The other works herein are: Mauktikōpaniṣad (4a), Mahānārāyaṇōpaniṣad (19a).

No. 384. केनोपनिषत्.

KĒNŌPANISAD.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 307.

No. 385. केनोपनिषत्.

KĒNŌPANISAD.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 2a of the MS. described under No. 256.

It is here called Talavakārōpaniṣad. It forms the 9th Adhyāya of the Talavakāra Brāhmaṇa of the Sāma Vēda.

No. 386. केनोपनिषत्.

KĒNŌPANISAD.

Pages, 4. Lines, 13 on a page.

Complete.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 309.

Same as the last.

No. 387. केनोपनिषद्भाष्यम्.

KĒNŌPANISADBHĀṢYAM.

Pages, 64. Lines, 14 on a page.

Complete.

As the book is bound wrongly, it has to be read reversely from the end to the beginning.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 302.

The Upaniṣad is herein also called Talavakārōpaniṣad.

The commentary on this Upaniṣad consists of two parts; the first part relates to the explanation of the words of the text and the second (fol. 37a), to the meaning of the sentences.

By Śaṅkarācārya.

Beginning of the Padabhāṣyam or word-commentary :

केनेषितमित्याद्योपनिषत्परब्रह्मविषया वक्तव्येति नवमस्याध्यायस्या-
रम्भः प्रागेतस्मात्कर्माण्यशेषतः परिसमापितानि समस्तकर्माश्रयभूतस्य
च प्राणस्योपासनान्युक्तानि कर्माङ्गसामविषयाणि च ।

End :

अपहत्य पाप्मानं अविद्याकामकर्मलक्षणं संसारबीजं विधूयानन्ते
स्वर्गलोके सुखात्मके ब्रह्मणीत्येतदनन्त इति विशेषणात् न त्रिविष्टपो-
ऽनन्तशब्दार्थ औपचारिकोऽपि स्यादित्यत आह ज्येये इति। ज्येये ज्यायसि
सर्वमहत्तरे स्वे आत्मनि मुख्य एव प्रतितिष्ठति न पुनः संसारमापद्यत
इत्यभिप्रायः ।

Colophon :

इति श्रीमच्छङ्करभगवत्पादकृतं तलवकारोपनिषत्पदभाष्यं समा-
प्तम् ॥

Beginning of the Vākyaavivaraṇam or sentence-exposition :

समाप्तं कर्मात्मभूतप्राणविषयं विज्ञानं कर्म चानेकप्रकारं ययोर्विक-
ल्पसमुच्चयानुष्ठानादक्षिणोत्तराभ्यां सृतिभ्यामावृचनावृत्ती भवतः । अत
ऊर्ध्वं फलनिरपेक्षज्ञानकर्मसमुच्चयानुष्ठानात् कृतात्मसंस्कारस्योच्छिन्नात्म-
ज्ञानप्रतिबन्धस्य द्वैतविषयदोषदर्शिनो निर्ज्ञाताशेषबाह्यविषयत्वात् सं-
सारबीजमज्ञानमुच्चिच्छित्सतः प्रत्यगात्मविषयजिज्ञासोः केनेषितमित्याद्या-
त्मतत्त्वविज्ञानाय अयमध्याय आरभ्यते ।

End :

सर्ववेदान्तवेद्यं ब्रह्म आत्मत्वेनावगम्य तदेव ब्रह्म प्रतिपद्यत
इत्यर्थः ॥

Colophon :

इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यपरमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीशङ्कराचार्यभगवतः कृतौ तलवकारोपनिषत्क्षुद्रविवरणे वाक्यविवरणं
समाप्तम् ॥

No. 388. केनोपनिषद्भाष्यम्.
KENÔPANISADBHÂŠYAM.

Pages, 49. Lines, 9 on a page.

Complete in two parts, viz., Padabhāṣya (8a) and Vākyaavivarṇa
(21a).

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 311.

Same as the last.

No. 389. तलवकारोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

TALVAKĀRÔPANISADBHÂŠYA-TIPPANAM.

Pages, 81. Lines, 5 on a page.

Complete

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 312.

A gloss on Śaṅkarācārya's Bhāṣya of the Talavakārôpaniṣad by
Śivānandayati as made out from the colophon in the MS. des-
cribed under No. 392.

This also is like the Bhāṣya divided into 2 parts, viz.,

पदभाष्यटिप्पणम् (15b) वाक्यार्थप्रधानटिप्पणम् (30a).

Beginning :

यच्छ्रोत्रादेरधिष्ठानं चक्षुर्वागाद्यगोचरम् ।

स्वतोऽध्यक्षं परं ब्रह्म नित्यमुक्तं भवामि तत् ॥

केनेषितमित्यादिकां तलवकारशाखोपनिषदं व्याचिख्यासुर्भगवा-
न्माप्यकारोऽहंप्रत्ययगोचरस्यात्मनः संसारित्वादसंसारिब्रह्ममात्रेऽस्योप-
निषत्प्रतिपाद्यत्वासम्भवान्निर्विषयत्वादव्याख्येयत्वमाशङ्क्याहंकारसाक्षिणः
संसारित्वग्राहकप्रमाणाविषयत्वात् ब्रह्मताप्रतिपादने विरोधासंभवात् सवि-
षयत्वादव्याख्येयत्वं प्रतिजानीते केनेषितमित्याद्येति ।

End :

यत्कैवल्यं निर्गुणविद्याफलं तत्पूर्वोक्तमिहोपसंह्रियत इत्याह । यो वा
एवमित्यादिना ।

योऽसौ सर्वेश्वरो विष्णुः सर्वात्मा सर्वदर्शनः ।

शुद्धो बोधाम्बुधिः साक्षात् सोऽहं नित्योऽभयप्रभुः ॥

Colophon :

इति शाङ्करस्य तलवकारोपनिषत्पदभाष्यस्य टिप्पणं समाप्तम् ॥

Beginning of the Vakyavivaranaṭikā :

प्रयत्नाद्यन्तरेणैव मनआदेः प्रवर्तकम् ।

विदिताविदितान्यत्वसिद्धं ब्रह्माहमद्वयम् ॥

केनेषितमित्यादिकां सामवेदशाखाभेदब्राह्मणोपनिषदं पदशो व्या-
ख्यायापि न तुतोष भाष्यकारः शारीरकैर्न्यायैरनिर्णीतार्थत्वादिति न्याय-
प्रधानैः श्रुत्यर्थसङ्ग्राहकैर्वाक्यैर्व्याचिख्यासुः पूर्वकाण्डेन सम्बन्धमभिधि-
त्सुः पूर्वकाण्डार्थं संक्षेपतो दर्शयति समाप्तमिति ।

End :

ब्रह्मेति वेदः तन्मूलत्वात्तदाश्रयतपआदीनि वेदाङ्गानि अन्ते य-
स्याः ।

सत्यकामः स्वयं सिद्धः सर्वेशो यः स्वशक्तिः ।

स एवान्तः प्रविष्टोऽहमुपास्यः सर्वदेहिनाम् ॥

Colophon :

इति केनेषितभाष्यस्य वाक्यार्थप्रधानस्य टिप्पणमिदं समाप्तम् ।

No. 390. केनोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

KĒNĪPANIṢADBHĀṢYATĪPPANAM.

Pages, 48. Lines, 14 on a page.

Complete.

Begins on fol. 52a of the MS. described under No. 302.

The second part begins on fol. 60a.

Same as the last.

No. 391. केनोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

KĒNŌPANIṢADBHĀṢYATIPPANAM.

Pages, 16. Lines, 8 on a page.

Padabhāṣya is complete.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 314.



No. 392. केनोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

KĒNŌPANIṢADBHĀṢYATIPPANAM.

Pages, 76. Lines, 6 on a page.

Complete. The gloss on the second part begins on fol. 25 a.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 315.

This MS. contains the following additional stanza at the end.

भगवत्पादभाष्यस्य भावगाम्भीर्यवोदिना ।

शिवानन्दयतीशेन टिप्पणं कृतमादरात् ॥



No. 393. तलवकारोपनिषद्भाष्यम्.

TALAVAKARŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 5. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 23b of the MS. described under No. 31.

This is a metrical commentary on the Upaniṣad by Ānanda-tīrtha.

Beginning :

अनन्तगुणपूर्णत्वादगम्याय सुरैरपि ।
 सर्वेष्टदात्रे देवानां नमो नारायणाय ते ॥
 वैजयन्तीसमासीनमेकान्ते चतुराननम् ।
 विष्णोर्विविदिषुस्तत्त्वं पर्यष्टच्छत्सदाशिवः ॥
 यदिदं पुरुषावश्यं तत्र तत्र पतेन्मनः ।
 केन तत्प्रेरितं याति प्राणस्सर्वोत्तमस्तथा ॥
 चक्षुः श्रोत्रं तथा वाचं को देवो विजये जयेत् ।
 इति षष्ठस्तदा ब्रह्मा प्राह देवमुमापतिम् ॥
 ध्यात्वा नारायणन्देवं सर्वाधारमनूपमम् ।
 सर्वज्ञं सर्वशक्तिञ्च सर्वदोषविवर्जितम् ॥
 यः प्राणस्य प्रणेता च चक्षुरादेश्च सर्वशः ।
 अगम्यस्सर्वदेवैश्च परिपूर्णत्वहेतुतः ॥
 प्राणादीनां प्रणेता च सर्ववेत्ता च सर्वशः ।
 सर्वोत्तमश्च सर्वत्र स विष्णुरिति धार्यताम् ॥

End :

ऋग्यजुस्सामाथर्वाख्या पाश्चरात्रञ्च भारतम् ।
 मूलरामायणञ्चैव पुराणं भगवत्परम् ॥
 वेदा इत्युच्यते साङ्गिः शिक्षाद्यं स्मृतयस्तथा ।
 अङ्गानि सत्यं मीमांसा तद्विद्यायतनत्रयम् ॥ इति विद्यानिर्णये ।
 यश्चिदानन्दसच्छक्तिसम्पूर्णो भगवान्परः ।
 नमोऽस्तु विष्णवे तस्मै प्रेष्ठाय प्रेयसाञ्च मे ॥

Colophon :

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाचार्यविरचितं श्रीमत्तलवकारोप-
 निषङ्गाख्यं समाप्तम् ।

No. 394. तलवकारोपांनेषद्भाष्यम्.

TALAVAKĀRŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 6. Lines, 13 on a page.

Complete.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 309

Same as the last.

No. 395. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 21 on a page.

Complete.

Begins on fol. 2b of the MS. described under No. 250.

This Upaniṣad teaches that salvation is to be attained only by realising that Śiva or Nilakantha of innumerable attributes and powers is identical with the attributeless Self.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

अथाश्वलायनो भगवन्तं परमेष्ठिनं परिसमेत्योवाच । अधीहि
भगवन्ब्रह्मविद्यां वरिष्ठां सदा सद्भिः सेव्यमानां निगृढां यथाचिरात्स-
र्वपापं व्यपोह्य परात्परं पुरुषमुपैति विद्वान् । तस्मै स होवाच
पितामहश्च श्रद्धामक्तिध्यानयोगादवेहि । न कर्मणा न प्रजया धनेन
त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः । परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजते
यद्यतयो विशान्ति ॥

End :

अनेन ज्ञानमाप्नोति संसारार्णवनाशनम् ।

तस्मादेवं विदित्वैनं कैवल्यं फलमश्नुते ॥

कैवल्यं फलमश्नुत इति ।

Colophon :

कैवल्योपनिषत्समाप्ता

No. 396. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 1*b* of the MS. described under No. 247.

No. 397. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYÔPANISAD.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Complete.

Begins on fol. 27*a* of the MS. described under No. 139.

No 398. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYÔPANISAD.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 12*a* of the MS. described under No. 217. There is another copy of this work beginning on fol. 47*a* of this MS.

No. 399. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Complete.

Begins on fol. 1*a* of the MS. described under No. 203.

No. 400. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYÔPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.⁴

Complete.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 300.

No. 401. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYÔPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $11\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 8. Lines, 4 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 4a. The other works herein are :—

Brahmôpaniṣad (1a), Jâbâlôpaniṣad (7b), Âtmabôdhaprakaraṇam (13a), Kṛṣṇâṣṭôttaraśatanâmasatôtram (24a), Taittiriyoṇiṣad (27a), Vaiśvadēvavidhih (45a), Gāyatrihṛdayam (48a), Aṣṭākṣarimantraḥ (56a), Gitagōvindam (57a), Balarāmāyaṇam (66a), Nārāyaṇâṣṭākṣarimantraḥ (75a), Darśasthālīpākavidhih (83b).

No. 402. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYÔPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Complete.

Begins on fol. 26a of the MS. described under No. 292.

No. 403. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYÔPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Incomplete.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 322.

No. 404. कैवल्योपनिषत्.
KAIVALYÔPANISAD.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Complete. Same as the last.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 284.

No. 405. कैवल्योपनिषत्.
KAIVALYÔPANISAD.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 254.

No. 406. कैवल्योपनिषत्.
KAIVALYÔPANISAD.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 116.

No. 407. कैवल्योपनिषत्.
KAIVALYÔPANISAD.

Pages, 3. Lines, 12 on a page.

Complete.

Begins on fol. 38b of the MS. described under No. 276.

Fol. 39a is left unwritten.

No. 408. कैवल्योपनिषत्.
KAIVALYÔPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $7\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{8}$ inches. Pages, 7. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old. Complete.

Begins on fol. 37a. The other works herein are :—

| | Fol. | | Fol. |
|----------------------------|------|------------------------|------|
| Pañcakrōṣayātrāmañjarī .. | 1a | Śanaīscarastōtram .. | 21a |
| Dakṣiṇāmūrtikavacam .. | 7a | Gaṅgāstōtram .. | 24a |
| Gāyatrīrāmāyaṇam .. | 11a | Śivakavacam .. | 27a |
| Lakṣmīhṛdayam .. | 15a | Nārāyaṇōpaniṣad .. | 42a |
| Astrōpasamharanamantrah .. | 17a | Śivakavacam .. | 47a |
| Varuṇapūjākramah .. | 19a | Āśvalāyanabrahmayajña- | |
| Santanagōpalamantrah .. | 20a | prayōgaḥ .. | 53a |

No. 409. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 48a of the MS. described under No. 369.

No. 410. कैवल्योपनिषत्.

KAIVALYŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 61b of the MS. described under No. 256.

Same as the last.

No. 411. कैवल्योपनिषद्दीपिका.

KAIVALYŌPANIṢADDĪPIKĀ.

Substance, palm-leaf. Size, 16½ × 1½ inches. Pages, 19. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Fol. 10 has lost a bit of about 4 inches length on the left side.

Complete.

Begins on fol. (9a). The other works herein are :— Dōvistōtram (1a), Rāmastōtram (3a), Gōvindāṣṭakam (5a), Caṭuṣlōkāḥ

(7a), Aparōkṣānubhūtiḥ (18a), Pañcakōśavivēkaḥ (24), Vāsudēva-
maṇanam (28a).

A commentary according to the Advaita Vēdānta system of
philosophy by Śaṅkarānanda, pupil of Ānandāśrama.

Beginning :

कैवल्याख्योपनिषद् कैवल्यार्थावबोधिनीम् ।

व्याख्यास्ये केवलस्तेन केवलात्मा प्रसीदन्तु ॥

भगवती श्रुतिः मानेव सुखप्रतिपत्त्यर्थं कञ्चन आश्वलायनमुग्गी-
कृत्याख्यायिकामवतारयति ब्रह्मविद्यायामास्तिक्यं जनयितुम् । अथ
साधनचतुष्टयसंपन्नन्तरमाश्वलायनः ऋग्वेदाचार्यः भगवन्तं पूजावन्तं
परमेष्ठिनं सर्वोत्कृष्टस्थाननिवासिनं परिसमेत्य शास्त्रीयेण विधिना
समीपमागत्य उवाच । अधीहि मदनुग्रहार्थं स्मर भगवन् हे समग्रधर्म-
ज्ञानवैराग्यैश्वर्ययशःश्रीमन् ब्रह्मविद्यां ब्रह्मणो देशकालवस्तुपरिच्छिन्न-
शून्यस्य विद्या बुद्धिस्तत्साक्षात्कारकारणम्

End :

एवं परमात्मानं कैवल्यं केवलस्यात्मनो भावः कैवल्यं तत्फलं
पुरुषाभिलाषविषयं सर्वपुरुषार्थसमाप्तिभूतम् अश्नुते प्राप्नोति कैवल्यं
फलमश्नुते व्याख्यातं पदाभ्यासमु(उ)पनिषत्समाप्त्यर्थः ।

Colophon :

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकार्यानन्दाश्रमपूज्यपादशिष्यशङ्करा-
नन्दभगवतः कृतिः कैवल्योपनिषद्दीपिका समाप्ता ।

No. 412. कैवल्योपनिषद्दीपिका.
KAIVALYOPANISADDĪPIKĀ.

Substance, paper. Size, 10 $\frac{3}{4}$ × 8 $\frac{1}{2}$ inches. Pages, 20. Lines, 18
on a page. Character, Dēvanāgarī. Condition, good. Appearance,
new.

Complete.

Begins on fol. 83a. The other works herein are : Śrutigītā-vyākhyā (1a), Gōvindāṣṭakāṭikā (43a), Rāmapaddhatī (55a), Brahmōpaniṣaddīpikā (73a).

This is a copy made in 1898 from the MS. described in the next number.

No. 413. कैवल्योपनिषद्दीपिका.

KAIVALYŪPANIṢADDĪPIKĀ.

Pages, 12. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 45a of the MS. described under No. 316.

Same as the last.

No. 414. कौलोपनिषत्.

KAULŪPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 10 on a page.

Complete.

Begins on fol. 56b of the MS. described under No. 180.

This Upaniṣad teaches that salvation is attained by knowledge and lays down certain rules of conduct for the guidance of those who seek salvation.

Beginning.

शन्नः कौलिका । शन्नो वारुणी । शन्नः शुद्धिः । शन्नो-
ऽग्निः । शन्नः सर्वं समभवत् । नमो ब्रह्मणे । नमो अस्त्वग्रये । नमः
पृथिव्यै । नमोऽद्भ्यः । नमो वायवे । नमो गुरुभ्यः । त्वमेव प्रत्य-
क्षं सैवासि । त्वमेव प्रत्यक्षं सैवासि । तां वदिष्यामि । ऋतं वदि-
ष्यामि । सत्यं वदिष्यामि । तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् ।
अवतु वक्तारम् । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः । अयातो धर्मजिज्ञासा ।
ज्ञानं बुद्धिश्च । ज्ञानं मोक्षैककारणम् । बुद्धिरेव पारमार्थिकं बीजम्
मोक्षसर्वज्ञतासिद्धिः ।

End :

यदि ज्येष्ठं न मन्येत दीप्यन्ते नन्दने वने ॥ हरिः आम् ॥ शन्नः
कौलिका . . .

Colophon :

इति कौलोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 415. कौषीतक्युपनिषत् .

KAUŚĪTAKYUPANIṢAD.

Pages, 27. Lines, 21 on a page.

Complete.

This is written in two portions. The first portion goes on up to the 2nd Khaṇḍa of the 2nd Adhyāya and occupies 7 pages from fol. (47b), and the second portion contains the rest of the 2nd Adhyāya as well as the 3rd and 4th Adhyāyas in 20 pages from fol. 27b.

Begins on fol. 27b and 47b of the MS. described under No. 250.

As the MS. was copied from the one noticed under No. 247 in which the leaves were wrongly arranged, the work has been copied in different places irregularly and has become interspersed with other Upaniṣads.

The Saguna and Nirguna forms of worship and the nature of the Supreme Being are described and explained.

Beginning :

वाङ्मे मनसीति शान्तिः

चित्रो है व गार्ग्ययिनिर्यद्यमाण आरुणि वव्रे । सहपुत्रं श्वेतकेतुं
प्रजिघाय याजयेति तं हासीनं पप्रच्छ । गौतमस्य पुत्रास्ते संवृतं लोके
यस्मिन्नाषास्यस्य महो बोध्या लोके वाग्यसीति । स होवाच नाहमेत-
द्वेद । हन्ताचार्यं पृच्छानीति स ह पितरमासाद्य पप्रच्छेति मा प्राक्षीय कथं
ब्रवाणीति स होवाचाहमप्येतं न वेद सदस्येव वयं स्वाध्यायमधीत्य पारा-
महे यं नः पठेदथेत्युभौ गमिष्याव इति

End :

स यदा वि(व्य)जिज्ञपदथ हत्वासुरान् विजित्य सर्वेषां भूतानां
श्रैष्ठ्यं स्वाराज्यमाधिपत्यं पर्येति तत एवैवम् (अथो एवैनं) विद्वान् सर्वेषां
भूतानां श्रैष्ठ्यं स्वाराज्यमाधिपत्यं पर्येति य एवं वेद वेद (?) य एवं
वेद

Colophon :

चतुर्थोऽध्यायः

कौषीतक्युपनिषत् समाप्ता ॥

No. 416. कौषीतक्युपनिषत्.

KAUŚĪTAKYUPANIṢAD.

Pages, 11. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 15*b* of the MS. described under No. 247.

Complete.

No. 417. कौषीतक्युपनिषत्.

KAUŚĪTAKYUPANIṢAD.

Pages, 28. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 10*a* of the MS. described under No. 285.

Complete.

No. 418. क्षुरिकोपनिषत्.

KṢURIKOPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 19 on a page.

Complete.

Begins on fol. 93*a* of the MS. described under No. 250.

The practice of Yōga is explained at some length; and it is here declared to be capable of cutting like a razor the endless cord of Samsāra.

Beginning:

सह नाववर्त्विनि शान्तिः

क्षुरिकां संप्रवक्ष्यामि धारणां योगसिद्धये ।
 यां प्राप्य न पुनर्जन्म योगयुक्तस्य जायते ।
 वेदतत्त्वार्थविहितं यथोक्तं हि स्वयम्भुवा ।
 निश्शब्ददेशमास्थाय तदासनमवस्थितः ॥
 कूर्मोऽङ्गानीव संहत्य मनो हृदि निमध्य (निरुध्य) च ।
 मात्राद्वादशयोगेन प्रणवेन शनैः शनैः ॥
 पूरयेत्सर्वमात्मानं सर्वद्वारं निरुध्य च ।

End :

छिन्नपापस्तदा जीवस्संसारं तरते सदा ।
 यथा निर्वाणकाले तु दीपो दग्ध्वा लयं ब्रजेत् ॥
 तथा सर्वाणि श(क)र्माणि योगी दग्ध्वा लयं ब्रजेत् ।
 प्राणायामः सुतीक्ष्णेन मात्राधारेण योगवित् ॥
 वैराग्योपलघुष्टेन छिच्चा तन्तुं न बध्यते ॥ इत्युपनिषत् ॥

Colophon :

क्षुरिकोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 419. क्षुरिकोपनिषत्.

KṢURIKŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 41b of the MS. described under No. 247.

No. 420. क्षुरिकोपनिषत्.

KṢURIKŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 46a of the MS. described under No. 285.

No. 421. क्षुरिकोपनिषत्.

KṢURIKÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 83b of the MS. described under No. 256.

No. 422. गणपत्युपनिषत्.

GAṆAPATYUPANISAD.

Pages, 4. Lines, 18 on a page.

Complete.

Begins on fol. 128a of the MS. described under No. 216.

This Upaniṣad identifies the Supreme Being with Gaṇapati and teaches the Gaṇapati-Mantra and the Gaṇapati-Gāyatri as the means of attaining Mōkṣa.

Beginning :

ओं मद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः

ओ लं नमस्ते गणपतये । त्वमेव प्रत्यक्षं तत्त्वमसि । त्वमेव केवलं कर्तासि । त्वमेव केवलं धर्तासि । त्वमेव केवलं ब्रह्मासि । त्वं साक्षादात्मासि ।

End :

यो मोदकसहस्रेण यजते स सर्वं लभते । अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा सूर्यवर्चस्वी भवति । सूर्यग्रहणे महानद्यां प्रतिमासन्निधौ वा जप्त्वा सिद्धमन्त्रो भवति । महापापात्प्रमुच्यते । महादोषात्प्रमुच्यते स सर्वविद्भवति स सर्वविद्भवति य एवं वेदेत्युपनिषत् ॥

Colophon :

गणपत्युपनिषत्समाप्ता ॥

No. 423. गणपत्युपनिषत्.

GAṆAPATYUPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Complete.

Begins on fol. 162*b* of the MS. described under No. 247.

No. 424. गणपत्युपनिषत्.

GAṆAPATYUPANIṢAD.

Substance, paper. Size, 9 × 7 inches. Pages, 5. Lines, 13 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

The Śānti in this MS. is सह नाववतु.

Begins on fol. 137*b*.

The other works herein are :—

| | Fol. | | Fol. |
|---|-------------|--|-------------|
| Madanagōpālasandhyāvidhi- prakriyā. | 1 <i>a</i> | Dvādaśāryāstōtram .. | 12 <i>b</i> |
| Dhāraṇagōpālavidhiprakriyā | 1 <i>b</i> | Mantrāvalistōtram .. | 13 <i>b</i> |
| Madanagōpāladvādaśaksara- nyāsaḥ | 3 <i>b</i> | Cakrāvalistōtram .. | 15 <i>b</i> |
| Mūrtipañjaranyāsaḥ .. | 4 <i>b</i> | Rāsmimālāstōtram .. | 19 <i>a</i> |
| Aṣṭamahīṣīnyāsaḥ .. | 5 <i>a</i> | Ābharanadēvatāstutiḥ .. | 22 <i>a</i> |
| Kēśavādīnyāsaḥ .. | 5 <i>a</i> | Mātāṅgīstōtrapuspāñjalīḥ | 25 <i>b</i> |
| Karaṇanyāsaḥ | 6 <i>b</i> | Vārāhīstōtravidhiḥ .. | 27 <i>b</i> |
| Tattvanyāsaḥ | 6 <i>b</i> | Dēvisahasranāmastutiman- trāḥ. | 30 <i>b</i> |
| Ratnagōpālākramah .. | 7 <i>a</i> | Saubhāgyakavacaḥ .. | 37 <i>a</i> |
| Madanagōpālāstōtram .. | 9 <i>b</i> | Stōtrapuspastutiṣaubhāgya- hṛdayam. | 41 <i>b</i> |
| Gōpālōpaniṣad | 11 <i>a</i> | Tripurasundarīstōtram .. | 43 <i>a</i> |
| Pādukāstōtram | 12 <i>a</i> | | |

| | Fol. | | Fol. |
|----------------------------------|---------------|---------------------------------|--------------|
| Mahābhāṇanyāsaḥ .. | 51 <i>b</i> . | Mahāsudarśana prakaraṇam | 187 <i>a</i> |
| Mantrasamputastutiḥ .. | 52 <i>a</i> | Gurustōtram | 190 <i>a</i> |
| Paryāyamantrasamputa- | 52 <i>b</i> | Āmnāyastavaḥ .. | 192 <i>a</i> |
| stutiḥ. | | Laghuśyāmalāmantraḥ | 114 <i>a</i> |
| Mantrasamputastutiḥ .. | 54 <i>b</i> | Tripurasundaripūjāvidhā- | 195 <i>a</i> |
| Mantrasamputastutiḥ .. | 55 <i>b</i> | nam. | |
| Devīsandhyāvidhiḥ .. | 57 <i>a</i> | Bandī-ekākṣarīprakara- | 200 <i>a</i> |
| Dēvimantranyāsaḥ .. | 59 <i>a</i> | nam. | |
| Dēvyakṣaranyāsaḥ .. | 59 <i>b</i> | Bālānyāsapaddhatiḥ .. | 202 <i>a</i> |
| Pospāñjalīḥ | 63 <i>b</i> | Nṛsiṃhamantraḥ .. | 205 <i>a</i> |
| Smarādimātrkā | 65 <i>b</i> | Ākarṣaṇahanūmanman- | 236 <i>a</i> |
| Kautukayōgaḥ | 67 <i>a</i> | traḥ. | |
| Dēvāñjanavidyā .. | 73 <i>b</i> | Laghucakrapaddhatiḥ | 206 <i>b</i> |
| Nidhidarśanāñjanam .. | 79 <i>b</i> | Sarasvatistōtram .. | 209 <i>a</i> |
| Kārtavīryārjunam .. | 81 <i>b</i> | Āścaryāśtōttaraśatanāma- | 213 <i>a</i> |
| Siḥuvamantrakalpa .. | 84 <i>a</i> | stōtram. | |
| Aghōrāstrānusthānavidhiḥ | 89 <i>b</i> | Dakṣiṇāmūrtistavaḥ with | 217 <i>a</i> |
| Vaidikāghōramantraḥ .. | 92 <i>a</i> | commentary. | |
| Bijākṣaraṇi | 92 <i>b</i> | Taittirīyōpaniṣaddīpikā | 245 <i>a</i> |
| Khadgarāvaṇam | 99 <i>b</i> | Śuddhadakṣiṇāmūrtiman- | 248 <i>b</i> |
| Varṇanighaṇṭh .. | 102 <i>b</i> | traḥ. | |
| Śrividyaīśaṣyōpanyāsaḥ | 112 <i>a</i> | Sāmbadakṣiṇāmūrtiman- | 252 <i>b</i> |
| Śrividyārātnasūtradīpikā | 116 <i>a</i> | traḥ. | |
| Dakṣiṇāmūrtisahasranāma- | 139 <i>a</i> | Bālāpaddhatiḥ .. | 256 <i>b</i> |
| stōtram. | | Samviccūlinimantraḥ .. | 257 <i>a</i> |
| Rājārājēśvarīyōganirṇayaḥ | 153 <i>a</i> | Bālāhrdayam | 258 <i>a</i> |
| Mantrākṣarasapramāṇanir- | 154 <i>a</i> | Bālāmālā | 261 <i>b</i> |
| nayaḥ. | | Bālāstavaḥ | 263 <i>b</i> |
| Pañcadaśīmūlamantravyā- | 158 <i>a</i> | Bālākavacaḥ | 264 <i>b</i> |
| khyā. | | Bālākavacaḥ | 267 <i>a</i> |
| Pañcadaśīkalyāṇastavaḥ | 164 <i>a</i> | Siddhārikōṣṭhanirṇayaḥ | 271 <i>b</i> |
| Rājārājēśvarīcakrastutiḥ | 168 <i>a</i> | Pañcacakranīrdeśaḥ .. | 272 <i>b</i> |
| Lalitātrīśatistōtram .. | 170 <i>b</i> | Rajassvalāstōtram .. | 275 <i>b</i> |
| Rājārājēśvarīkavacaḥ .. | 186 <i>a</i> | Bhairavamantraḥ .. | 280 <i>b</i> |

No. 425. गणेशोपनिषत्.

GAṆĒŚŌPANISAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 45a of the MS. described under No. 217.

This is the same as Gaṇapatyupaniṣad excepting that the final passage is slightly different.

End :

यो लाजैर्यजति स यशोवाग्भवति । यो मोदकसहस्रेण यजति
स वाञ्छितमवाप्नोति । यस्ताज्यसमिद्धिर्यजति स सर्वान्कामान्नुपते सर्व-
ान्कामान्नुपते । इत्युपनिषत् ॥

• Colophon :

इति श्रीमहागणेशोपनिषत्समाप्ता ।

No. 426. गणेशोपनिषत्.

GAṆĒŚŌPANISAD.

Substance, paper. Size, $9\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Pages, 4. Lines, 18 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

The Śānti given in this codex viz., सह नाववत्विति शान्तिः is different from that of the two preceding copies.

Begins on fol. 63b. The other works herein are: Kāmakalānidbiḥ with commentary (1a), Śivakarmāṇṇam (53a), Vāmācārasiddhānta-saṅgrahaḥ (55a), Dikṣāprakaranaṁ (56a), Gaṇēśaṣṭōttaraśatanāmavalih (61a), Lakṣmīgaṇēśamantraḥ (65a), Gaṇēśamantrakṣaristōtram (65b), Gaṇēśakavacaḥ (68a), Gaṇēśaratnamālā (70b), Gaṇēśaśrīlāmantraḥ (71a), Viḡḡnēśaṣṭōttaraśatanāmastōtram (72a), Gāyatrihṛdayam (73a). Divyamaṅgalādhyānam (78a).

No. 427. गणपत्युपनिषत्.

GAṆAPATYUPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Complete.

Begins on fol. 98a of the MS. described under No. 255.

No. 428. गारुडोपनिषत्.

GĀRUDŌPANIṢAD.

Pages, 8. Lines, 22 on a page.

Complete.

Begins on fol. 185b of the MS. described under No. 246.

Brahmā is made to teach herein the Gāruḍa - Mantra as an antidote for snake bites.

Beginning :

• भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः

ओं गारुडब्रह्मविद्यां प्रवक्ष्यामि । यां ब्रह्मविद्यां नारदाय प्रो-
वाच नारदो बृहत्सेनाय बृहत्सेन इन्द्रायेन्द्रो भरद्वाजाय भरद्वाजो जीव-
त्कामेभ्यः शिष्येभ्यः प्रायच्छत् । अस्याः श्रीमहागरुडब्रह्मविद्याया
गायत्री छन्दः । श्रीभगवान् महागरुडो देवता । श्रीमहागरुडप्री-
त्यर्थे मम सकलविषनाशनार्थे जपे विनियोगः । ओं नमो भगवते अङ्ग-
ष्ठाभ्यां नमः । .

End :

य इमां ब्रह्मविद्याममावास्यायां पठेत् शृणुयाद्वा यावज्जीवं न हिंसन्ति
सर्पाः । अष्टौ ब्राह्मणान् ग्राहयित्वा तृणेन मोचयेत् शतं ब्राह्म-
णान्ग्राहयित्वा चक्षुषा मोचयेत् सहस्रं ब्राह्मणान्ग्राहयित्वा मनसा

मोचयेत् । सपं जलेन मुञ्चति तृणेन मुञ्चति काष्ठान्मुञ्चतीत्याह
मगवान् ब्रह्मेत्युपनिषत् । हरिः ओम् ॥

Colophon :—गारुडोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 429. गारुडोपनिषत्.

GĀRUDŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 3. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 11a. The other works herein are: Nṛsimhasa-
hasranāmastōtram (1a), Garuḍadaṇḍakam (12b), Dēvibr̥dayam
(14a), Dēvikavācam (14b), Jvairauṣadham (19a).

There is a slight difference in the arrangement of the parts.
Unlike the work noticed in the last number the portion dealing with
the Ṛṣi, Chandas, Dēvatā, &c., is placed before the portion dealing
with the succession of teachers by whom this Upaniṣad has been
handed down.

No. 430. गारुडोपनिषत्.

GĀRUDŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 6. Lines, 6 on
a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.
Complete.

Begins on fol. 36a. The other works herein are: Prātassma-
raṇīyastōtram (1a), Kadāvastōtram (2a), Gṛhanirmāṇavidhiḥ
(3a), Gṛhapravēśaprayōgaḥ (4a), Sarpabaliḥ (7a), Śrāddhavidhiḥ
(14a), Vadhvañjalihōmaḥ (27a), Bhartṛvaśyādiprayōgaḥ (28a)
Śāntikalpaḥ (31a), Mṛttikāśaucavidhiḥ (33b), Gaṇḍūśavidhiḥ (34a),
Ācamanaavidhiḥ (34b), Brahmaṛajūnaprayōgaḥ (38b), Agastyāṣṭa-
kam (40a), Viśvanāthāṣṭakam (40b), Āyusyaḥomāprāyōgaḥ (41b).

Prayōgakarikā (43a), Gōtrapravarakhaṇḍaḥ (45a), Prayōgakarikā (55a), Agnimukha (57a), Kadalivivāhaḥ (59a), Āśirvadaḥ (61a), Mrtyulāṅgūlamantraḥ (62b), Palāśahōmaḥ (64a), Trimūrtistōtram (66a), Rāmamaṅgalastōtram (67b), Nāgabaliḥ (69a), Sūryōparāga-prāyaścittaḥ (70a), Mahāsankalpāḥ (73a), Śivasūtih (77a), Jayantyarghyam (78a), Śivarātryarghyam (79a), Sōmavārārghyam (79b), Dvādaśārghyam (80a), Mahālayavidhiḥ (80a), Uvibhāryāgnisandhānam (82a), Pumsavanasimantaprayōgaḥ (85a) Parjanyaḥomāḥ (89a), Darśapūrṇamāsasthālipakāḥ (92b), Dadhy-aūjalihōmaḥ (94a), Grahayajñavidhiḥ (97a), Citrabaliḥ (99a), Mr̥ttikāsnānavidhiḥ (100a).

The Śānti given in this codex is सह नावव्रत्विनि शान्तिः॥

The colophon is इत्याथर्वणे गरुडोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 431. गरुडोपनिषत्.

GĀRUDŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Complete.

There is no Śānti given in this codex and the colophon runs thus :

इत्यथर्वणरहस्ये गरुडोपनिषदः(त्)समाप्तः (प्ता) ।

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 116.

No. 432. गरुडोपनिषत्.

GĀRUDŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 18½ × 1½ inches. Pages, 2. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old. Complete.

The colophon runs thus : इत्यथर्वणवेदे गरुडोपनिषत्समाप्ता । मद्रं कर्णेभिः शान्तिः ॥

Begins on fol. (41a). The other works herein are : Sandhyā-vandanabhāṣyam (1a), Dakṣiṇāmūrti-stavavyākhyā (29a), Ēkaślōka-vyākhyā (38a), Tryambakamantraḥ (42a), Maṇikarnikāstavaḥ (42b), Gaṅgāṣṭakam (43a), Rāmastōtram (44a), Ātmabōdhaprakāraṇam (45a), Haristutivyākhyā (48a), Nārāyaṇōpaniṣad (81a), Aīharvaśira-upaniṣad (81b).

No. 433. गारुडोपनिषत्.

GĀRUDŌPANISAD.

Pages, 3. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 184b of the MS. described under No. 247.

No. 434. गारुडोपनिषत्.

GĀRUDŌPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 6. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 5a. The other works herein are : Śivakavacam (1a), Indrākṣistōtram (3a), Annapūrṇāstavaḥ (5a), Āgrāyaṇa sthālīpikāḥ (10a), Kṛṣṇayajurvedabrahmaṇam (Praśnas 1 to 3 in the 3rd Aṣṭaka, 62 pages) (11a), Taittirīyōpaniṣad (42a).

No. 435. गारुडोपनिषत्.

GĀRUDŌPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $18 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 2. Lines, 7 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 85a. The other works herein are : Śricakralakṣaṇam (1a), Śiṣyalakṣaṇam (41a), Śricakralakṣaṇam (44a), Nirvāṇadaśakam (80a), Narasimhadaśakam (81a), Bhavānibhuj-aṅgaprayāstastōtram (82a), Sarasvatīpūjavidhānam (83a), Darśa-tarpaṇam (86a).

No. 436. गर्भोपनिषत्.

GARBHÔPANISAD.

Pages, 4. Lines, 21 on a page.

Complete.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 250.

The anatomy and the physiology of the human body, as known to the author, are herein described and explained in a somewhat curious and general manner.

Beginning:

सह नाववत्विति शान्तिः ।

पञ्चात्मकं पञ्चसु वर्तमानं षडाश्रयं षड्गुणयोगयुक्तम् ।

तं सप्तधातुं त्रिमलं त्रियोनिं चतुर्विधाहारमयं शरीरम् ॥

भवति पञ्चात्मकमिति कस्मात्पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशमित्य-
स्मिन्पञ्चात्मके शरीरे का पृथिवी का आपः किं तेजः को वायुः
किमाकाशमिति

End:

षोडश पार्श्वदन्तपटलान्यष्टोत्तरमर्मशतमशीतिसन्धिशतं नव-
स्नायुशतमष्टसहस्ररोमकोट्यो हृदयपलान्यष्टौ द्वादशपला जिह्वा पित्तं
प्रस्थं कफस्याढकं शुक्लं कुडपं मेदः प्रस्थौ द्वावानीय तन्मूत्रपुरीषयोर-
हरहः पानपरिमाणम् । पैप्पलादं मोक्षशास्त्रं परितमाप्तमित्युप-
निषत् ।

Colophon:—गर्भोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 437. गर्भोपनिषत्.

GARBHÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Complete.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 247.

No. 438. गर्भोपनिषत्.

GARBHÔPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Complete.

Begins on fol. 36a of the MS. described under No. 139.

No. 439. गर्भोपनिषत्.

GARBHÔPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Complete.

Begins on fol. 52a of the MS. described under No. 217.

No. 440. गर्भोपनिषत्.

GARBHÔPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 22b of the MS. described under No. 303.

There is no Śānti either in the beginning or in the end.

No. 441. गर्भोपनिषत्.

GARBHÔPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 6 on a page.

Complete.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 284.

No Śānti is given.

No. 442. गर्भोपनिषत्.

GARBHÔPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 25a of the MS. described under No. 116.

No Śānti is given.

The copyist's name is mentioned as Mādirāju Kṛṣṇamma and he requests his readers (in a Telugu Padyam) to pass over the errors committed in writing.

No. 443. गर्भोपनिषत्.

GARBHŌPANISAD.

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

Complete.

Begins on fol. 62a of the MS. described under No. 276.

The Śānti herein given is मद्रं कर्णेभिः

No. 444. गर्भोपनिषत्.

GARBHŌPANISAD.

Pages, 6. Lines, 10 on a page.

Complete.

Begins on fol. 132b of the MS. described under No. 180.

No Śānti is given.

No. 445. गर्भोपनिषत्.

GARBHŌPANISAD.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Complete.

Begins on fol. 71b of the MS. described under No. 256.

No. 446. गायत्र्युपनिषत्.

GĀYATRYUPANISAD.

Substance, paper. Size, 12½ × 8 inches. Pages, 3. Lines, 23 on a page. Character. Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Fols. 62 to 179 are fragile.

Begins on fol. 154a. The other works herein are: *Saundaryalaharivyākhyā* (1a), *Hanūmanmālāmantraḥ* (62b), *Śāmbhavavidyā* (64a), *Gurukavacam* (66b), *Prānapratisthāmantraḥ* (68a), *Antarmātrkābahirmātrkānyāsaḥ* (69a), *Navadurgāpūjāvidhānam* (70a), *Rājarājēśvariṣṭḍaśībrahmavidyā* (73a), *Mṛtyuñjayatryambakamantraḥ* (98a), *Tryambakarudrakavacam* (98b), *Nilakaṇṭhābaḍabānālastōtram* (100a), *Āvahantikalpāḥ* (101a), *Indrākṣistōtra-kalpāḥ* (106a), *Gāyatrikalpāḥ* (108b), *Gāyatrī-Sāvitrī-Sarasvatīśāpavimōcanamantraḥ* (134a), *Gāyatrijātāmṛtasūtakamantraḥ* (134b), *Gāyatrikavacam* (135a), *Gāyatrīsahasranāmastōtram* (136a), *Gāyatristavarājāḥ* (141a), *Gāyatripāñjaram* (143b), *Gāyatrihrdayam* (150b), *Gāyatriyaṣṭōttaraśatanāmasōtram* (155b), *Gāyatribhujāṅgaḥ* (157a), *Tricakalpāḥ* (158a), *Sūryanārāyaṇapūjā* (165b), *Saptāryāstōtram* (169b), *Dvādaśāryāstōtram* (178a), *Ādityahṛdayam* (170b), *Sūryasahasranāmastōtram* (172b), *Mahāsaurāṣṭākṣari-mantraḥ* (179a), *Anāṅgarāṅgam* (181a).

This Upaniṣad explains the meaning and importance of the syllables making up the Gāyatri prayer.

Beginning :

भूमिरन्तरिक्षं ज्योतिरित्यष्टावक्षराण्यष्टाक्षरं ह वा एकं गायत्र्याः
पदमेव । एतदु हैवास्या एतत् स यावदेषु त्रिषु लोकेषु तावद्धि जयति ।
योऽन्या एतदेवं पदं वेद ॥ १ ॥

End :

तस्याग्निरिव मुखं यदि ह वा अपि खल्विदा अग्रावभ्याद-
घाति सर्वमेतत्संदहति एवं हैवं विद्वद्यद्यपि बह्विदं पापं कुरुते
सर्वमेतत्संसायं शुद्धः पूतोऽजरोऽमृतस्सम्भवति शुक्रारण्यकजपो गाय-
त्र्याश्च विशेषतः सर्वपापहरात्येतदेते रुद्रैकादिशिनी मना ॥ ९ ॥

Colophon :—हरिः ओ तत्सदित्यथर्वणरहस्ये गायत्र्युपनिषत्समाप्ता ॥

No. 447. गोपालतापनीयोपनिषत्.

GOPĀLATĀPANIYŌPANISAD.

Pages, 19. Lines, 24 on a page.

Begins on fol. 148a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad gives the meaning of the word Kṛṣṇa and explains the Kṛṣṇamantra and the worship of Kṛṣṇa and establishes his purity and perfection.

Beginning :

ओं भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः

गोपालतपनं कृष्णं याज्ञवल्क्यं वराहकम् ।

शाठ्यायनी हयग्रीवं दत्तात्रेयं च गारुडम् ॥

सच्चिदानन्दरूपाय कृष्णायास्त्रिष्टकर्मणे ।

नमो वेदान्तवेद्याय गुरवे बुद्धिसाक्षिणे ॥

ओं मुनयो ह वै ब्राह्मणमूचुः । कः परमो देवः कुतो मृत्युर्बिभेति । कस्य विज्ञानेनाखिलं विज्ञातं भवति । येनेदं विश्वं संसरतीति तदु होवाच ब्राह्मणः । कृष्णो वै परमं दैवतं गोविन्दान्मृत्युर्बिभेति । गोपीजनवल्लभज्ञानेनैतज्ज्ञानं भवति । स्वाहेदं विश्वं संसरतीति

End :

अजन्नेज,देकं मनमो जवीयो नैनं देवा आमुवन् पूर्वमर्षदिनि तस्मात् कृष्ण एव परमो देवस्तं ध्यायेत् तं रसयेत् तं यजेत् तं भजेत् । ओं तत्सदित्युपनिषत् ॥

Colophon — गोपालपूर्वतापनीयोपनिषत्समाप्ता ॥

Beginning of Uttaratāpini (Fol. 151a).

एकदा हि ब्रजस्त्रियस्तकामाः शर्वरीमुषित्वा सर्वेश्वरं गोपालं
कृष्णमूचिरे उवाच ताः कृष्णः अमुकस्मै ब्राह्मणाय भैक्षं दातव्य-
मिति दूर्वाससेति कथं यास्यामो जलं तीर्त्वा यमुनाया यतः श्रेयो
भवति कृष्णेति ब्रह्मचारीत्युक्त्वा मार्गं वो दास्यति

End :

कर्तृत्वं सर्वभूतानामन्तर्धाने बभूव सः ।

ब्रह्मणे ब्रह्मपुत्रेभ्यो नारदात्तु श्रुतं मुने ॥

तदा प्रोक्तं तु गान्धर्वी(र्वे)गच्छ त्वं स्वालयान्तिकम् ।

Colophon —गोपालोत्तरतापिन्युपनिषत्समाप्ता ॥

No. 448. गोपालतापनीयोपनिषत्.
GOPĀLATĀPANĪYŌPANISAD.

Pages, 10. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 170a of the MS. described under No. 247.

Complete.

Same as the last.

No. 449. गोपालतापनीयोपनिषत्.
GOPĀLATĀPANĪYŌPANISAD.

Pages, 24. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 47a of the MS. described under No. 139.

Complete.

In the beginning there is the following Ślōka which does not occur in the MSS. already described.

अन्तर्हृदि नियन्तारं बहिश्च गुरुरूपिणम् ।

उभयत्रापि कृष्णारूपं वन्दे देवं कृपानिधिम् ॥

In the end the colophon runs thus:— इत्याथर्व(ण)रहस्ये गोपालो-
त्तरतापनीयोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 450. गोपालोपनिषत्.

GŌPĀLŌPANISAD.

Pages, 3. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 424.

Complete.

This Upaniṣad teaches the omnipresence of the Supreme Being as denoted by the names Gōpāla and Kṛṣṇa.

Beginning:

ओं प्राणात्मने तत्सद्भूर्भुवस्स्वस्तस्मै प्राणात्मने नमो नमः ओं
कृष्णायादिवह्निभायेत्यन्तम् । ओं भूर्भुवस्स्वस्तस्मै नमो नमः ।

End:

ब्रह्मणे ब्रह्मपुत्रेभ्यो नारदाय श्रुतं तदा ।
तथा प्रोक्तं तु गान्धर्वे गच्छन्तु मुनयोऽन्तिकम् ॥

Colophon :—

इति सर्वोपनिषदि गोपालतापिन्युत्तरभागः ।
कृष्णः करोतु माङ्गल्यं मम मङ्गलहेतुकः ।
सोऽपि मङ्गललिप्ताङ्गस्तर्वमङ्गलनाग्रजः ॥
वह्निबीजनापादो (नाथो) नो गोपालो लोकपालकः ।
नन्दनो नन्दगोपस्य कुर्याद्भिर्मर्थिसम्पदम् ॥

No. 451. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANISAD.

Pages, 77. Lines, 11 on a page.

Contains the 8 Prapāthakas of the Upaniṣad.

Begins on fol. 185a of the MS. described under No. 58.

Complete.

After pointing out the two different results accruing from the practice of Karma, according as it is or is not associated with the knowledge of certain Vidyās, the Upaniṣad explains the nature of

the highest knowledge to be attained and examines the various means of securing it.

Beginning :

अप्यायन्तु ममाङ्गानि वाक्प्राणश्चक्षुश्श्रोत्रमथो बलमिन्द्रियाणि
च सर्वाणि सर्वं ब्रह्मौपनिषदं माहं ब्रह्म निराकुर्यां मा मा ब्रह्म
निराकरोदनिराकरणमस्त्वनिराकरणम्मे अस्तु तदात्मनि निरते य
उपनिषत्सु धर्मास्ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु शान्तिः । ओम् । ओमित्येतद-
क्षरमुद्गीथमुपासीतोमिति ह्युद्गायाति । तस्योपव्याख्यानमेषां भूतानां
पृथिवी रसः पृथिव्या आपो रसोऽपामोषधयो रस ओषधीनां पुरुषो
रसः पुरुषस्य वाग्रसो वाच ऋग्रसः ।

End :

आचार्यकुलाद्वेदमधीत्य यथाविधानं गुरोः कर्मातिशेषेणामिसमा-
वृत्य कुटुम्बे शुचौ देशे स्वाध्यायमधीयानो धार्मिकान्विदधदात्मनि
सर्वेन्द्रियाणि संप्रतिष्ठाप्यार्हिसन् सर्वभूतान्दन्यत्र तीर्थेभ्यः स खल्वेवं
वर्तयन्वावदायुषं ब्रह्मलोकमभिसम्पद्यते न च पुनरावर्तते न च पुनराव-
र्तते ॥ 15 ॥ आप्यायन्तु . . . मयि सन्त्विति शान्तिः ॥ 16 ॥

Colophon :— अष्टमोऽध्यायः छान्दोग्यम् । 8 अध्यायाः । 155
खण्डाः । उपनिषत्समाप्ता ॥

“ Copied by Venkatasubban.”

No. 452. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 11 × 1½ inches. Pages, 164. Lines, 7
on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured.
Appearance, old.

Complete.

Same as the last.

No. 453. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Pages, 14. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 293.

Contains only the 8th Adhyāya.

No. 454. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $18\frac{1}{2} \times 1\frac{5}{8}$ inches. Pages, 79. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 143a. The other work herein is Chāndōgyō-paniṣadbhāṣyam (1a).

Complete.

No. 455, छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16 \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 64. Lines, 9 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Brahmasūtram (34a).

Incomplete.

The last Khaṇḍa in the eighth Adhyāya is wanting.

No. 456. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 40a of the MS. described under No. 306.

Contains the sixth Adhyāya only.

No. 457. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Pages, 78. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 66a of the MS. described under No. 304.

Complete.

No. 458. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $10\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 110. Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Bṛhadāraṇyakōpaniṣad 56a.

Complete.

No. 459. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, 17×2 inches. Pages, 29. Lines, 16 on a page. Character, Grantha. Condition, fair. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Vijñānēśvarīyam (16a).

Breaks off in the 10th Khanda of the 7th Adhyāya.

No. 460. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Pages, 120. Lines, 5 on a page.

Breaks off in the 6th Adhyāya.

Begins on fol. 102a of the MS. described under No. 59.

No. 461. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Pages, 54. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 22a of the MS. described under No. 256.

Complete.

Between the sixth and the seventh Adhyāyas there are three interpolated leaves written on in Grantha character and containing the whole of the Aitareyōpaniṣad.

No. 462. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Pages, 67. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 65.

Complete.

No. 463. छान्दोग्योपनिषत्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 16 × 1½ inches. Pages, 119. Lines, 7 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Prāṇagnibhōtr̥stīḥ (61a).

Complete.

✓

No. 464. छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size, 18 × 1½ inches. Pages, 212. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

This is a commentary on the Upaniṣad according to the Advaita school by Śaṅkarācārya.

Beginning:

ओमित्येतदक्षरमित्यष्टाध्यायी छान्दोग्योपनिषत् । तस्याः संक्षे-
पतोऽर्थजिज्ञासुभ्यः ऋजुविवरणमल्पग्रन्थमिदमारभ्यते । तत्र सम्बन्धः
समस्तं कर्माधिगतं प्राणादिदेवताविज्ञानसहितमर्चिरादिमार्गेण ब्रह्म-
प्रतिपत्तिकारणं केवलं च कर्म धूमादिमार्गेण चन्द्रलोकप्रतिपत्तिकारणं
स्वभावप्रवृत्तानां च मार्गद्वयपरिभ्रष्टानां कष्टाधोगतिरुक्ता । न चो-
पयोर्मार्गयोरन्यतरस्मिन्नपि मार्गे आत्यन्तिकी पुरुषार्थसिद्धिरिति ।
अतः कर्मनिरपेक्षमद्वैतात्मविज्ञानं संसारगतित्रयहेतूपमर्देनैव वक्तव्य-
मित्युपनिषदारभ्यते ।

ओमित्येतदक्षरं परमात्मनोऽभिधानं नेदिष्ठं तस्मिन् हि प्रयुज्यमाने
स प्रसादति प्रियनामग्रहण इव लोकस्तदिहेति (परं) युक्तमभिधा-
यकत्वाद्व्यावृत्तं शब्दस्वरूपमात्रं प्रतीयते । तथा चार्चादिवत् पर-
स्यात्मनः प्रतीकं सम्पद्यते

End:

ब्रह्मलोकमभिसम्पद्य ततो मुच्यते नावर्तते पुनस्तस्माच्चागमनमा-
शङ्क्य गमनात्ततो नावर्तत इत्युच्यते । द्विरभ्यास उपनिषद्विद्या-
परिसमाप्त्यर्थः ॥

Colophon :

इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य*परमहंसपरिव्राजकाचार्य-
श्रीशङ्करभगवतः कृतौ छान्दोग्योपनिषद्विवरणेऽष्टमप्रपाठकः समा-
प्तः ।

The transcription was completed at 12 o'clock on Sunday the
3rd of Kārtika (November and December) of the Ānanda year.

No. 465. छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम्.

CHĀNDŌGYŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 283. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 454.

Another complete copy of the commentary of Śaṅkarācārya-

“The Upaniṣadbhāṣyam was written by Kōḍali Rāmayyagāru on account of Venkannanāyaka and was finished on the 30th Pūṣya Bahula of the year Yuva.” A slip in the MS. dates it 1815 A.D.

No. 466. छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम्.
CHĀNDŌGYŌPANISADBHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size, $10\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 72. Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, not new.

Two stray Ślōkas are added at the end.

Contains VI Adhyāya complete. Same as the last.

No. 467. छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम्.
CHĀNDŌGYŌPANISADBHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 202. Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Same as the last.

No. 468. छान्दोग्योपनिषत्प्रकाशिका.
CHĀNDŌGYŌPANISATPRAKĀŚIKĀ.

Substance, palm-leaf (Śritāla). Size, $11\frac{3}{4} \times 2$ inches. Pages, 216. Lines, 18 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

By Raṅgarāmānujamuni, a follower of Rāmānuja.

Beginning :

शुक्लाम्बरधरं & शान्तये ॥
अतसीगुच्छसच्छायमक्षितोरस्थलं श्रिया ।
अञ्जनाचलशृङ्गारमञ्जलिर्मम गाहताम् ॥
श्रीशैलपूर्णवंशाब्धिकौस्तुभस्य जगद्गुरोः ।
श्रीमतस्तावयार्यस्य चरणौ शरणं मजे ॥

श्रीतातगुरुसेवाप्तवेदान्तयुगलाशयः ।

वात्स्यानन्तगुरुः श्रीमान् श्रेयसे मेऽस्तु भूयसे ॥

यत्सेवावैभवाल्लब्धा मया परमहंसता ।

तमहं शिरसा वन्दे परकालमुनीश्वरम् ॥

व्यासं लक्ष्मणयोगीन्द्रं प्रणम्यान्मान् गुरुनपि ।

छन्दोगोपनिषद्वाक्यां करवाणि यथामति ॥

ब्रह्मविद्यौपयिकं कर्माङ्गविषयमादावुपासनमुपादिश्यते । हरिः
ओम् ॥ ओमित्येतदक्षरमुद्गीथमुपासीत ॥ उद्गीथभक्तचवयवभूतमांमि-
त्येतदक्षरमुपासीतेत्यर्थः ॥

End :

तदात्मानि निरते ये उपनिषत्सु धर्माः ते मयि सन्तु ते मयि सन्तु
सर्वा ब्रह्मोपनिषदमधीत्य मदीयान्यङ्गानि इन्द्रियादीनि च वर्धन्तां ब्रह्म-
णश्च मम च परस्परनिराकरणं मा भूत् । अनैकरस्यं मा भूत् । एक-
रस्यमेव भूयात् । आत्मज्ञरामानुजस्त मुनिराद्रियताम्मदुक्तिम् ॥

Colophon :

इति श्रीमद्वेदान्तरामानुजमुनिचरणारविन्दचञ्चरीकस्य भारद्वाजपर-
मैकान्तिश्रीनिवासार्यसेवासमधिगतशारीरकमीमांसाभाष्यहृदयस्य पर-
कालमुनिकृपालब्धपरमहंसस्य श्रीरङ्गयमानुजमुनेः कृतिषु छान्दोग्यो-
पनिषत्प्रकाशिका समाप्ता ॥

The copying of this manuscript is herein said to have been com-
pleted by the 29th Āvaṇi of the Khara year.

No. 469. छान्दोग्योपनिषद्भाष्यम्.

CHĀNDÖGYOPANISĀDBHĀṢYAM.

Pages, 116. Lines, 12 on a page.

Complete.

Begins on fol. 39a of the MS. described under No. 309.

The commentary of Ānandatīrtha on the Chāndōgyōpaniṣad
in accordance with the Dvaita school.

Beginning :

अत्युद्विक्तविदोषस्तत्सुखमहाज्ञानैकतानप्रभा-
 सर्वप्राभवशक्तिभोग(विल)सत्सारात्मदिव्याकृतिम् ।
 सृष्टिस्थाननिरोधनित्यनियतिज्ञानप्रकाशाद्यति-
 ध्वान्तामोक्षविमोक्षदं हरिमजं नित्यं सदोपास्महे ॥
 हयग्रीवमुखोद्गीर्णगीर्भिर्देवी रमापतिम् ।
 अस्तुवद्विस्तृतगुणं भोगिप्रस्तरशायिनम् ॥

ओमितिनामकमक्षरं सर्वसन्निहितत्वादेतत् । उच्चत्वाद्गीतत्वात्
 सर्वस्थानत्वाच्चोद्गीथं भगवन्तमुपासीत । उक्तं च महासंहितायाम् ।

हयग्रीवोद्गीथवाक्यै रमा देवी रमापतिम् ।
 ओमित्येतन्मुखैरेवमस्तुवत्सामवेदगैः ॥ इति
 ओं नामानमुपासीत तदर्थगुणपूर्वकम् ॥
 ओतत्वादवनान्मानादधिकोच्चत्वकारणात् ॥
 आनन्दादोजसश्चैव भरणादोमुदाहृतः । इति समन्त्रये ।
 ओतमस्मिन् जगत्सर्वमत्युच्चैश्चारिवलैर्गुणैः ।
 इत्योमिति सदोपास्यः सोऽक्षरः पुरुषोत्तमः ॥
 उच्चत्वाद्गीयमानत्वात्स्थानादुद्गीथ उच्यते ।
 ओमित्येनं समुद्दिश्य ह्युद्गाता गायति स्फुटम् ॥
 विष्णोरोमिति नाम्नोऽस्य व्याख्यानमधिकोच्चता ।
 अकारेणाधिकं प्रोक्तमुकारेणोच्चमुच्यते ॥
 तथा मितं सर्ववेदैर्मकारेणाभिधीयते ।
 अधिकोच्चमितं ज्ञानमोमित्यस्यार्थ ईरितः ॥
 तदेतत्परमत्वं तु यथाक्रममुदीर्यते ।
 देवतानुक्रमज्ञाश्च विष्णोः परमताविदः ॥

एकान्तिनस्ते विज्ञेया यथाक्रमपरास्तथा ।
 अस्मादसावुच्च इति क्रमस्यान्तर्गतं हरिम् ॥
 एकमेव तु ये विद्युस्ते ह्येकान्तिन ईरिताः ।

End:

स उत्तमः पुरुष इति तस्य जीवादुत्तमत्वश्रुतेश्च अपरपुरुषापे-
 क्षया ह्युत्तमपुरुषशब्दो भवति अन्यथा उत्तमशब्द एव स्यात् “उत्तमः
 पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्युदाहृतः” इति च

ब्रह्मेशानादिभिर्देवैर्यत्प्राप्तुं नैव शक्यते ।

तद्वत्स्वभावः कैवल्यं स भवान् केवलो हरे ॥

परा मात्रया तन्वा वृधान न ते महित्वमन्वश्रुवन्ति ।

इदं ज्ञानमपाश्रित्य मम साधर्म्यमागताः ॥

सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चितेति । एतमानन्दमयमा-
 त्मानमुपसङ्कम्य । इमांल्लोकान् कामान्नीकामरूपानुसञ्चरन् । न यत्र भाया
 किमुतापरे हरेरनुव्रता यत्र सुरासुरार्चिताः । कृष्णो मुक्तैरिज्यते वीतमोहः
 इत्यादेश्च स तत्र पर्येति जक्षन् क्रीडन् रममाणः स्त्रीभिर्वा यानैर्वा
 ज्ञातिभिर्वा नोपजनं स्मरन्निदं शरीरमित्यत्रापि भेदेनावस्थानश्रुतेः उप-
 शब्दादन्तशब्दाच्च मुक्तस्य परं ज्योतिस्समीपावस्थानावगतेश्च । न
 च जीवमात्रं देवा उपासते ऊर्जं पृथिव्या भक्तायोरुगायमुपासते इति
 हि श्रुतिः भेदैदृष्ट्याभिमानेन निस्तङ्गेनापि कर्मणा इत्यादेश्च ।

भूतैर्बहद्भिर्ग इमाः पुरो विभुः

निर्माय शते तदमूषु पूरुषः ।

भुङ्क्ते गुणान् षोडश षोडशात्मकः

सोऽलं कृषीष्ट भगवान् वचांसि मे ॥

इत्यादौ भगवत एव इन्द्रियभोगोक्तेश्च नृ(ऋ)तं पिबन्तौ सुकृतस्य
 लोके गुहां प्रविष्टौ परमे परार्थ इति च । श्रीः

No. 470. जाबालोपनिषत्.

JĀBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 4*a* of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad deals with a particular kind of Yogic meditation in which the aspirant is asked to concentrate his vision on the junction-point of the nose and the eyebrows and to repeat the Śatarudrīya prayer; it further deals with the Sannyāsa āśrama or the religious life of asceticism and describes the Sannyāsin who deserves to be called a Paramahansa.

Beginning :

पूर्णमद इति शान्तिः ॥ बृहस्पतिरुवाच याज्ञवल्क्यं यदनु कुरुक्षेत्रं
देवानां देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनमति(वि)मुक्तं वै कुरुक्षेत्रं देवानां
देवयजनं सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदनं तस्माद्यत् कचन गच्छति तदेव मन्ये-
ती(ते)दं वै कुरुक्षेत्रम् ।

End :

प्रयत्नो(तो) निर्ममः शुक्लध्यानपरायणोऽध्यात्मनिष्ठा(ष्ठ)शुभाशुभ-
कर्मनिर्मूलनपरः सन्न्यासेन देहत्यागं करोति स परमहंसो नामेत्युपनिषत् ।

Colophon :—जाबालोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 471. जाबालोपनिषत्.

JĀBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 2*b* of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 472. जाबालोपनिषत्.

JĀBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 10. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 7b of the MS. described under No. 401.

Complete. Another copy.

The Śānti-pāṭha is not given.

No. 473. जाबालोपनिषत्.

JĀBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 5a of the MS. described under No. 203.

Complete.

Another copy. No Śānti-pāṭha is given.

No. 474. जाबालोपनिषत्.

JĀBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 62b of the MS. described under No. 256.

Complete. The Śānti-pāṭha is not given.

Another copy.

No. 475. जाबालोपनिषत्.

JĀBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 2a of the MS. described under No. 277.

Complete. Another copy.

The Śānti-pāṭha is not given.

No. 476. जाबाल्युपनिषत्.

JĀBĀLYUPANISAD.

Pages, 4. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 190a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad explains the terms Paśu and Pati as used by the Pāśupatas; and the wearing of Vibhūti is herein taught to be capable of leading to the acquisition of the knowledge which is essential for attaining salvation.

Beginning :

आप्यायन्त्विति शान्तिः ॥

अथ हैनं भगवन्तं जाबालिं पैप्पलादिः पप्रच्छ भगवन्मे ब्रूहि परम-
तत्त्वरहस्यं किं तत्त्वं को जीवः कः पशुः क ईशः को मोक्षोपाय इति । स
तं होवाच साधु पृष्टं सर्वं निवेदयामि यथाज्ञातमिति ।

End :

स सर्वदेवान् ध्यातो भवति स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति स सकल-
रुद्रमन्त्रजापी भवति न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्तत इत्यो सत्यमित्युप-
निषत् ॥

Colophon :—जाबाल्युपनिषत्समाप्ता ॥

No. 477. जाबाल्युपनिषत्.

JĀBĀLYUPANISAD.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 185b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 478. तारसारोपनिषत्.
TĀRASĀRĪPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 141a of the MS. described under No. 246.

Complete.

Though the first Khaṇḍa in this Upaniṣad is identical with that of Jābālōpaniṣad, the two Upaniṣads do not agree from the second Khaṇḍa onwards.

This Upaniṣad teaches that the Nārāyaṇaṣṭakṣaramantra is a mystic prayer-formula possessing the power of leading human souls to salvation, when men use it in the practice of yogic meditation.

Beginning :

ओं पूर्णमद इति शान्तिः ।

बृहस्पतिरुवाच याज्ञवल्क्यं यदनु कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषां
देवानां ब्रह्मसदनं तस्माद्यत् कचन गच्छेत्तदेव मन्येतेतीदम् ।

End:

योऽहमेव श्रीपरमात्मा नारायणस्स भगवान् तत्परः परः पुरुषः पुराण-
पुरुषोत्तमो नित्यशुद्धबुद्धसत्यपरमानन्दानन्ताद्वयपरिपूर्ण ब्रह्मैवाहं रामोऽसि
भूर्भुवस्सुवस्तस्यै वै नमो नमः । एतदष्टविधमन्त्रं योऽधीते
नारायणपदमवाप्नोति । य एवं वेद । तद्विष्णोः परमं पदम् । . .
विष्णोर्यत्परमं पदमित्युपनिषत् ।

Colophon :—सामवेदस्तृतीयः पादः तारसारोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 479. तारसारोपनिषत्.
TĀRASĀRĪPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 167b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 480. तुरीयातीतावधूतोपनिषत्.

TURIYĀTĪTĀVADHŪTĪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 216 of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad explains the nature and conduct of the Avadhūta who, in respect of freedom from worldly attachments, is conceived to have risen even above the utter selflessness of the life of the ordinarily approved Saṁnyāsa or asceticism.

Beginning :

तुरीयातीतसन्न्यासपरिव्राजाक्षमालिका ।

अव्यक्तैकाक्षरं पूर्णसूर्याक्ष्यध्यात्मकुण्डिका ॥

ओं पूर्णमद इति शान्तिः ॥

अथ तुरीयातीतावधूतानां कोऽयं मार्गस्तेषां का स्थितिरिति पितामहो भगवन्तं पितरमादिनारायणं परिसमेत्योवाच । तमाह भगवान्नारायणो योऽयमवधूतमार्गस्थो लोके दुर्लभतरो न तु बाहुल्यो यद्येको भवति स एव नित्यपूतस्स एव वैराग्यमुक्तिः स एव ज्ञानाकारः स एव वेदपुरुष इति ज्ञानिनो मन्यन्ते ।

End:

सर्वदानुन्मत्तो बालोन्मत्तपिशाचवदेकाकी सञ्चरन्नसम्भाषणपरः(ः) स्वरूप-
ध्यानेन निरालम्बमवलम्ब्य स्वात्मनिष्ठानुकूलेन सर्वं विस्मृत्य तुरीयातीतो-
ऽवधूतवेषेणाद्वैतनिष्ठापरः प्रणवात्मकत्वेन देहत्यागं करोति यस्मोऽवधूतः स
कृतकृत्यो भवतीत्युपनिषत् ।

Colophon :—तुरीयातीतावधूतोपनिषन्ममाम्ना ॥

No. 481. तुरीयातीतावधूतोपनिषत्.

TURIYĀTĪTĀVADHŪTĪPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 129b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 482. तुरीयातीतावधूतोपनिषत्.

TURIYĀTĪTĀVADHŪTĪPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 18 × 1½ inches. Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, new.

Begins on fol. 9a. The other works herein are—Prapannalakṣaṇam 1a, Sannyāsōpaniṣad 10a, Paramahemṣaparivrājakōpaniṣad 17b, Paramahemṣōpaniṣad 21b, Nārada-parivrājakōpaniṣad 23a.

Complete. Another copy.

No. 483. तेजोबिन्दूपनिषत्.

TEJĪBĪNDŪPANIṢAD.

Pages, 50. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 106a of the MS. described under No. 259.

Complete.

This Upaniṣad, after teaching upon the practice of Yōga, explains at some length some of the chief tenets of the Advaita-Vēdānta in reference to the nature of the Supreme Being and of the universe, and deals also with the means of attaining salvation.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

तेजोबिन्दु परं ध्यानं विश्वात्मा हृदि संस्थितम् ।

अणुवं शम्भवं शान्तं स्थूलसूक्ष्मपरञ्च यत् ॥

दुःखाढ्यञ्च दुराराध्यं दुष्प्रेक्ष्यं मुक्तमव्ययम् ।
दुर्लभं तत्स्वयं ध्यानं मुनीनाञ्च मनीषिणाम् ॥

End :

तेजोबिन्दूपनिषदमभ्यसेत् सर्वदा मुदा ।
सकृदभ्यासमात्रेण ब्रह्मैव भवति स्वयम् ॥ इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—तेजोबिन्दूपनिषत्समाप्ता ॥

No. 484. तेजोबिन्दूपनिषत्.

TĒJÖBINDŪPANISAD.

Pages, 20. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 46b of the MS. described under No. 217.

Complete. Same as the last.

No. 485. तेजोबिन्दूपनिषत्.

TĒJÖBINDŪPANISAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15b of the MS. described under No. 322.

Complete.

This contains only 14 verses in the beginning.

Beginning:—Same as before in No. 483.

End :

न भयं सुखदुःखं च तथा मानावमानयोः ।

एतद्भावविनिर्मुक्तं तद्भाष्यं ब्रह्म तत्परम् ॥

तद्भाष्यं ब्रह्म तत्परमिति ॥

Colophon :—इत्यथर्वनेजोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 486. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $13\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{8}$ inches. Pages, 41. Lines, 9 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 10a. The other work herein is Āpastambadharmasūtram (Gautama) (1a.)

This contains the Praśnas whose beginnings are as follow :—

- | | |
|---------------------------|----------------------|
| 1. चित्तिः सुक्. | 4. भृगुर्वै वारुणिः. |
| 2. शं नो मित्रः शं वरुणः. | 5. अम्भस्य पारे. |
| 3. ब्रह्मविदामोति परम्. | |

This Upaniṣad, after describing the importance of the Praṇava and mentioning certain rules of conduct, explains the nature of the Supreme Being and of the worship and meditation which lead to the salvation of Mokṣa.

Beginning :

I Praśna.

ओं तच्छैयोरवृणीमहे । गातुं यज्ञाय । गातुं यज्ञपतये । दैवीः स्वस्ति-
रस्तु नः । स्वस्तिर्मानुषेभ्यः । ऊर्ध्वं जिगातु भेषजम् । शं नो अस्तु द्विपदे । शं
चतुष्पदे । ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ओं चित्तिः सुक् । चित्तमाज्यम् ।
वाग्वेदिः । आधीतं बर्हिः । केतो अग्निः ।

II Praśna.

शं नो मित्रः शं वरुणः । शं नो भवत्वयमा । शं न इन्द्रो बृहस्पतिः । शं नो
विष्णुरुक्रमः । नमो ब्रह्मणे । नमस्ते वायो । त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासि ।
त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्म वदिष्यामि । ऋतं वदिष्यामि । सत्यं वदिष्यामि ।
तन्मामवतु । तद्वक्तारमवतु । अवतु माम् । अवतु वक्तारम् । ओं शान्तिः शा-
न्तिः शान्तिः । शीक्षां व्याख्यास्यामः । वर्णस्वरः । मात्रा बलम् । साम सन्तानः ।
इत्युक्तः शीक्षाध्यायः । शीक्षां पञ्च ॥

III Praśna.

सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजसि नाव-
धातमस्तु मा विद्विषावहै । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ब्रह्मविदामोति
परम् । तदेषाभ्युक्ता । सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म ।

IV Praśna.

सह नाववत्विति शान्तिः ॥ भृगुर्वै वारुणिः । वरुणं पितरमुपससार ।
अधीहि भगवो ब्रह्मेति । तस्मा एतत्प्रोवाच ॥

V Praśna.

सह नाववत्विति शान्तिः ॥ अम्भस्य पारे भुवनस्य मध्ये नाकस्य पृष्ठे
महतो महीयान् । शुक्रेण ज्योतींषि समनुप्रविष्टः प्रजापतिश्चरति
गर्भे अन्तः ।

End :

एतौ वै सूर्याचन्द्रमसोर्महिमानौ ब्राह्मणो विद्वानभिजयति तस्माद्ब्रह्म-
णो महिमानमामोति तस्माद्ब्रह्मणो महिमानम् ॥ ४० ॥ अम्भस्येकपञ्चाशन्
शतं . . तस्यैवमेकमेकमशीतिः ।

सह नाववत्विति शान्तिः ।

No. 497. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIIRĪYOPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 15½ × 1½ inches. Pages, 56. Lines, 8
on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance,
old.

Complete. Same as the last.

No. 488. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIIRĪYOPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 14½ × 1½ inches. Pages, 50. Lines
6 on a page. Character, Nandināgari. Condition, injured.
Appearance, old.

This contains four Praśnas and begins with शं नो मित्रः ।

No. 489. तैत्तिरीयोपनिषत्.
TAITTIIRĪYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 6. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 25a. The other work herein is Taittiriyōpa-
niṣadvyākhyā fol. 1a. Contains the भृगुवल्ली in completion.

No. 490. तैत्तिरीयोपनिषत्.
TAITTIIRĪYŌPANIṢAD.

Pages, 16. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 25a of the MS described under No. 306.

This contains three Praśnas and begins with शं नो मित्रः.

No. 491. तैत्तिरीयोपनिषत्.
TAITTIIRĪYŌPANIṢAD.

Pages, 24. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 200.

The first leaf containing the beginning of the Upanisad is missing.

This contains three Praśnas and begins with शं नो मित्रः.

No. 492. तैत्तिरीयोपनिषत्.
TAITTIIRĪYŌPANIṢAD.

Pages, 31. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 10a and 22a of the MS. described under No. 202.

Contains the Praśnas beginning with भृगुर्वै वारुणिः and with
शं नो मित्रः

A Kanarese gloss is given here in addition.

No. 493. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYŌPANIṢAD.

Pages, 36. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 27a of the MS. described under No. 401.

Contains three Praśnas and begins with शं नो मित्रः.

No. 494. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 17 × 1½ inches. Pages, 91. Lines, 8 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, o'd.

Contains five Praśnas and begins with चितिः सुक्.

The MS. is dated Jaya year, Āśvīja month, Bahula 12th Friday, and is said to have been copied by Mājēti Candraśēkharr.

No. 495. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 16½ × 1½ inches. Pages, 41. Lines, 10 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Contains five Praśnas and begins with चितिः सुक्.

No. 496. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYŌPANIṢAD.

Pages, 14. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 30a of the MS. described under No. 336.

Contains three Praśnas and begins with शं नो मित्रः.

No. 497. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYĪOPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $6\frac{1}{2} \times 4\frac{1}{2}$ inches. Pages, 63. Lines, 11 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 32b. The other works herein are Nārāyaṇa-mantraḥ (33a), Ālavandārstōtram (45a).

The MS. is bound wrongly and has therefore to be read from the end.

This contains four Praśnas and begins with शं नो मित्रः.

No. 498. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYĪOPANIṢAD.

•Pages, 36. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 26b of the MS. described under No. 205.

This contains in full three Praśnas and begins with शं नो मित्रः ; and the fourth beginning with अम्भस्य पारे is, however incomplete.

No. 499. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYĪOPANIṢAD.

Size, $17\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 16. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 176.

This contains three Praśnas and begins with शं नो मित्रः.

No. 500. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYĪOPANIṢAD.

Pages, 30. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 115a of the MS. described under No. 304.

This contains five Praśnas and begins with चित्तिः सुत्.

No. 501. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYĪOPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 38. Lines, 8 on a page. Character, Grantha. Condition, good. Appearance, old.

This contains four Praśnas and begins with शं नो मित्रः.

No. 502. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYĪOPANIṢAD.

Pages, 52. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 431.

This contains five Praśnas and begins with चित्तिः सुक्.

No. 503. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYĪOPANIṢAD.

Pages, 15. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 342a of the MS. described under No. 302.

Complete.

Contains three Praśnas and begins with शं नो मित्रः.

No. 504. तैत्तिरीयोपनिषत्.

TAITTIRĪYĪOPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $7\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 144. Lines, 5 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 8a. The other work herein is Ādityahr̥dayam (1a).

Complete in two Praśnas.

No. 505. तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्.

TAITTIIRĪYŌPANIṢĀDBHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size, 19 × 1½ inches. Pages, 130. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, fair. Appearance, old.

Commentary on the Upaniṣad by Śaṅkarācārya. Contains the three Vallis,

Beginning :

यस्माज्जातं जगत्सर्वं यस्मिन्नेव च लीयते ।

येनेदं धार्यते चैव तस्मै ज्ञानात्मने नमः ॥

यैरिमे गुरुभिः पूर्वं पदवाक्यप्रमाणतः ।

व्याख्याताः सर्ववेदान्ताः तान्नित्यं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥

तैत्तिरीयकसारस्य मयाचार्यप्रसादतः ।

विस्पष्टार्थरुचीनां हि व्याख्येयं संप्रणीयते ॥

नित्यान्यधिगतानि कर्माणि उपात्तदुरितक्षयार्थानि काम्यानि च फलार्थिनां पूर्वस्मिन् ग्रन्थे । इदानीं कर्मोपादानहेतुपरिहाराय ब्रह्मविद्या प्रस्तूयते । . . . शं सुखं प्राणवृत्तेरहश्चाभिमानी देवतात्मा मित्रः नः अस्माकं भवतु तथैवापानवृत्तेः रात्रेश्चाभिमानी वरुणः चक्षुष्यादित्ये चार्यमा वले इन्द्रः ।

End :

इतीयं वल्लीद्वयविहितोपनिषत् परमात्मज्ञानं तामेतां यथोक्तमुपनिषदं शान्तो दान्त उपरतस्तितिक्षुः समाहितो भूत्वा भृगुवत्तपो महदास्थाय य एवं वेद तस्येदं फलं यथोक्तं कैवल्यमिति ॥

Colophon :

इति श्रीमद्भोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंसपरिव्रानकाचार्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ तैत्तिरीयकभाष्यं समाप्तम् ॥

दिने दिने च वेदान्तश्रवणाद्भक्तिसंयुतात् ।
 गुरुशुश्रूषया लब्धात्कुच्छाशीतिफलं लभेत् ॥
 वेदान्तश्रवणादेव नश्यन्ते चोपपातकाः ।
 महापातकसङ्घाश्च नित्यं वेदान्तसेवनात् ॥
 वेदान्तार्थविभासकाय गुरवे शान्ताय सन्न्यासिने
 नानावादिनगेन्द्रसङ्घपवये योगीन्द्रवन्द्याय च ।
 मोहध्वान्तदिवाकराय भगवत्पादाभिधां बिभ्रते
 तस्मै माप्यकृते नमोऽस्तु सततं पूर्णाय बोधात्मने ॥

No. 506. तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्.

TAITTIRIYOPANIṢADBHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, 18½ × 2½ inches. Pages, 63.
 Lines, 12 on a page. Character, Grantha. Condition, slightly
 injured. Appearance, old.

Complete.

The commentary is by Śaṅkarācārya like the preceding. This
 MS was written in Bahudhānya, Śrāvāṇa Bahula, on Thursday
 the 13th.

No. 507. तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्.

TAITTIRIYOPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 83. Lines, 11 on a page.

Complete.

Begins on fol. 349a of the MS. described under No. 302.

This is like the preceding.

No. 508. तैत्तिरीयोपनिषद्वाक्या.

TAITTIRĪYĪOPANIṢADVYĀKHYĀ.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 46. Lines, 11 on a page. Character, Grantha. Condition, much injured. Appearance, old.

Incomplete.

The name of the author of this commentary is not given in the work.

Beginning :

यस्मादुत्पद्यते सर्वं यस्मिन्नेव प्रलीयते ।
 येनेदन्धार्यते चैव तस्मै ज्ञानात्मने नमः ॥
 यैरिमे गुरुभिः पूर्वं पदवाक्यप्रमाणतः ।
 व्याख्यातास्सर्ववेदान्तास्तान्नित्यं प्रणतोऽस्म्यहम् ॥
 तैत्तिरीयकसारस्य मयाचार्यप्रसादतः ।
 विस्पष्टार्थरुचीनां हि व्याख्येयं संप्रणीयते ॥



No. 509. तैत्तिरीयोपनिषद्वाक्याप्यव्याख्या वनमाला.

TAITTIRĪYĪOPANIṢADBHĀṢYĀVYĀKHYĀ
VANAMĀLĀ.

Substance, palm-leaf. Size, $18\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 260. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

A gloss on the commentary of Śaṅkarācārya by Acyuta-kṛṣṇānandatīrtha, pupil of Svayamprakāśasarasvatī.

Beginning :

विघ्नेश्वरं विघ्नशान्त्यै वाणीं वाचः प्रवृत्तये ।
 गुरुन् गूढार्थभानाय प्रणमामि निरन्तरम् ॥
 जगन्मङ्गलरूपाय सृष्टिस्थित्यन्तकारिणे ।
 नमो लक्ष्मीसेमताय कृष्णाय परमात्मने ॥

परिपूर्णं नित्यशुद्धं निर्विशेषं स्वयंप्रभम् ।
 सत्यानन्दस्वरूपं यत्तदहं ब्रह्म निर्भयम् ॥
 आचार्यस्य प्रसादेन पूर्वपुण्यैकजन्मना ।
 तैत्तिरीयकभाष्यस्य व्याख्यां कुर्वेऽतिभक्तिः ॥

तैत्तिरीयोपनिषदं व्याचिख्यासुः भगवान्भाष्यकारः तत्प्रतिपाद्यं ब्रह्म
 जगज्जन्मादिकारणत्वेन तदस्थलक्षणेन सामान्येनोपलक्षितं सत्यज्ञानादिना
 स्वरूपलक्षणेन विशेषतो निश्चितं नमस्करोति यस्माज्जातमिति । ज्ञानात्मन
 इति स्वरूपलक्षणं सूचितम् ।

End :

सुवर्णज्योतिरिति । सुवर्ण इत्यत्र नकार इवार्थ इत्याशयेनाह . . .
 मङ्गलार्थमोङ्कामु(रो)च्चारणमिति ओमिति.

अन्नंप्राणमनोबुद्धिसुखैः पञ्चाभिरुज्ज्वला ।
 भगवत्यर्पिता जीयाद्वनमाला कृतिर्मम ॥
 नारायणपदद्वन्द्वं नारदादिभिरावृतम् ।
 नमामि शतशो नित्यं नमतां मुक्तिदायिनम् ॥

Colophon :

इति श्रीस्वयंप्रकाशानन्दसरस्वतीचरणारविन्दसंलग्नरजोभूतस्य अच्युत-
 कृष्णानन्दतीर्थस्य कृतौ तैत्तिरीयकभाष्यव्याख्यायां वनमालाख्यायां भृगु-
 वल्लीभाष्यव्याख्या समाप्ता ॥

This MS. was copied on Sunday the 2nd of Pūṣyabāhula in the
 year Pramādi by Kōṭi Veṅkanuśāyaka.

No. 510. तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यव्याख्या वनमाला.

TAITTIRIYOPANIṢADBHĀṢYAVYĀKHYĀ
 VANAMĀLĀ.

Substance, paper. Size, 13½ × 8½ inches. Pages, 250. Lines, 22 on a
 page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.
 To the end of Brahnavalli.

No. 511. तैत्तिरीयोपनिषद्दीपिका.

TAITTIRĪYŌPANĪṢADDĪPIKĀ.

Pages, 70. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 138.

Praśnas 1 to 3; complete.

A gloss on the Upaniṣad by Śaṅkarānanda, pupil of Ānandātman.

Beginning :

सीतापतिः सर्वजगन्निदानं बाह्योपपातानखिलान्निरस्य ।
 बौद्धाश्च बुद्धिप्रतिबन्धका ये बुद्धौ सदानन्दधनश्चक्राम्नु ॥
 विश्ववन्द्यं विम्वराजं . . . सरस्वतीम् ।
 पूर्वाचार्यान् पूर्वपूज्यान् कुर्वे नतिपदं गुरुन् ॥
 कृष्णानन्दापूर्णचन्द्रः क्षयवृद्धिविवर्जितः ।
 निष्कैलो निष्कलङ्कश्च जयत्यन्तस्तमोऽपह[त]ः ॥
 विद्यारण्यं भजे हृद्यं सद्योविद्योततापनम् ।
 यत्सन्दर्शितमार्गेण गन्तुं मन्दधियोऽप्यलम् ॥
 श्रीरामगुरुमानम्य सम्प्रदायानुसारतः ।
 तैत्तिरीयोपनिषदस्मन्यते लघुदीपिका ॥

सेयं तैत्तिरीयोपनिषत्त्रिविधा सांहिती वारुणी याज्ञिकी चेति । तत्र
 प्रथम(प्र)पाठके संहिताध्यानस्योक्तत्वात्तद्रूपोपनिषत्सांहिती । द्वितीयतृतीययोः
 प्रपाठकयोर्या ब्रह्मविद्याभिहिता तस्यां सम्प्रदायप्रवर्तको वरुणः तस्मात्त-
 दुभयरूपोपनिषत् वारुणी । चतुर्थप्रपाठके यज्ञोपयुक्ता अपि मन्त्रास्तत्र तत्र
 आम्नाताः अतः तद्रूपोपनिषद्याज्ञिकी । तासां तिसृणां मध्ये वारुणी मुख्या
 तस्यां परमपुरुषार्थस्य ब्रह्मप्राप्तिलक्षणस्य साक्षादेव साधनभूताया विद्यायाः
 प्रतिपादितत्वात् ।

शं नो मित इत्यादिना अहश्च प्राणवृत्तेश्चाभिमानिदेवता भितः नः
अस्माकं शं सुखहेतुर्भवतु । एवम् उत्तरत्रापि योज्यम् ।

End :

इदानीं श्रुतिराह । योऽधिकारी एवमुक्तप्रकारमानन्दात्मानं वेद जानाति
साक्षात्करोति इत्यर्थः । सोऽपि इमान् लोकानित्यादिनोक्तं फलं प्राप्नोती-
त्यभिप्रायः ॥ इत्युपनिषद्वाक्यात्तम्(ता) पूर्ववह्याम् ॥

Colophon :

इति परमहंसपरिव्राजकाचार्यानन्दात्मपूज्यपादशिष्यशङ्करानन्दभगवतः
कृतौ तैत्तिरीयोपनिषद्दीपिकायां भृगुवल्ली नाम तृतीयः प्रपाठकः ।

No. 612. तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्.

TAITTIRIYOPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 96. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 138.

A commentary on the Upaniṣad by Śāṇācārya. It forms part
of his commentary on the Kṛṣṇayajurvedāranyaka.

Beginning :

यस्य निःश्वसितं वेदा यो वन्देभ्योऽखिलं जगत् ।

निर्ममे तमहं वन्दे विद्यातीर्थमहेश्वरम् ॥

धारुण्युपनिषद्युक्ता ब्रह्मविद्या ससाधना ।

याज्ञिक्यां खिलरूपायां . . . विधीयते ॥

यथा बृहदारण्यके सप्तमाष्टमाध्यायौ खिलकाण्डत्वेनाचार्यैरुदाहृतौ
तथेयं नारायणीयाख्या याज्ञिक्युपनिषदपि खिलकाण्डरूपा तल्लक्षणोपेतत्वात् ।
कर्मोपासनेन ब्रह्मकाण्डेषु त्रिष्वपि यद्वक्तव्यमवशिष्टं तस्य सर्वस्याभिधानेन
प्रकीर्णकरूपं खिलत्वम् । बृहदारण्यके सप्तमाध्याये पूर्णमदः पूर्णमित्यादिना
ब्रह्मतत्त्वमभिहितम् । ओं स्वं ब्रह्मेत्यादिभिरष्टमाध्यायगतैश्च यो ह वै ज्येष्ठं

श्रेष्ठं च वेदेत्यादिभिर्वाक्यैर्नानाविधान्युपासनान्युक्तानि । स यः कामयेत महान् प्राप्तुयामित्यादिना मन्थास्थं कर्माभिहितम् । तथा पुत्रविशेषादिकामनायुक्तानां तत्कर्माण्यभिहितानि । एवमत्राप्यम्भस्य पार इत्यादिना ब्रह्मतत्त्वमभिहितम् । आदित्यो वा एष एतन्मण्डलमित्यादिनोपासनमभिहितम् । भूरग्नये पृथिव्यै स च हेत्यादिना कर्माण्यभिहितानि । तत्र कर्मणां बाहुल्यात् याज्ञिकीत्युच्यते । उपक्रमे ब्रह्मतत्त्वाभिधानादुपसंहारे च ब्रह्मज्ञानसाधनसत्त्यादीनां सन्न्यासान्तानामभिधानादुपनिषदित्युच्यते । तदीयपाठसंप्रदायस्तु देशविशेषेषु बहुविध उपलभ्यते । तत्र यद्यपि शाखाभेदः कारणं तथापि तैत्तिरीयशाखाध्यायिभिः तद्देशवासिभिः शिष्टैरादृतत्वात्सर्वोऽपि पाठ उपादेय एव । तत्र द्रविलानां चतुःषष्ट्यनुवाकपाठः । आन्ध्राणामशीत्यनुवाकः । कर्णाटेषु केषाञ्चित्तुःसप्ततिपाठः । अपरेषामशीतिपाठः । तत्र वयं पाठान्तराणि यथासम्भवं सूचयन्तोऽशीतिपाठं प्राधान्येन व्याख्यास्यामः । प्रथमानुवाकस्यादौ काश्चिदचो ब्रह्मतत्त्वं प्रतिपादयन्ति । तासु प्रथमामृचमाह । हरिः ओम् ॥ अम्भस्य पारे भुवनस्य मध्ये . . . प्रजापतिश्चरति गर्भे अन्तरिति । अम्भस्य बहुविधसमुद्रमध्यवर्तिजलस्य पारे परतीरे.

End :

तैत्तिरीयाणामुपासनमिदं किं तर्हि ब्रह्मविद्याप्रशंसा तस्यैवं विदुष इति ब्रह्मविदोऽनुक्रमणात् । तस्मान्न विद्यैक्यशङ्कायामप्यवकाशोऽस्ति । एतस्मिन्ननुवाके तत्त्वज्ञानिसेवानिमित्ताभिहितेत्यशेषमपि मङ्गलम् ॥

वेदार्थस्य प्रकाशेन तमो हार्दं निवारयन् ।

पुमर्थीश्चतुरो देयाद्विद्यातीर्थमहेश्वरः ॥

Colophon :

इति नारायणीये चतुःषष्टितमोऽनुवाकः ।

श्रीमद्राजाधिराजराजपरमेश्वरवैदिकमार्गप्रवर्तकश्रीचरबुक्कभूपालसाम्राज्य-

धुरन्धरेण सायणाचार्येण विरचिते माधवीये वेदार्थप्रकाशे यजुरारण्यक
सम्पूर्णम् ॥

क्षयाब्धिवत्सरे चैतनवम्यां भौमवांसरे ।

तेरालनारायणभट्टाख्यविदुषा लिखितं त्विदम् ॥

No. 513. तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्.

TAITTIRĪYŪPANIṢADBHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 159. Lines, 7 on
a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appearance, old.
Complete.

The commentary is by Raṅgarāmānujamuni according to the
Viśiṣṭadvaita system of the Vedānta.

Beginning:

अतसीगच्छ ~~प्रमद्वितोरस्थलं~~ श्रिया ।

अञ्जनाचलशृङ्गारमञ्जलिर्मम गाहताम् ॥

व्यासं लक्ष्मणयोगीन्द्रं प्रणम्यान्मान् गुरुनपि ।

तैत्तिरीयकवेदान्तविवृतिं करवाण्यहम् ॥

परविद्यामारभमाणो विघ्नशान्त्यै देवताः प्रार्थयते । शं नो मिलश्शं वरुणः ।

शं नो विष्णुरुक्रमः । सूर्यो वरुणोऽग्न्यमास्यादित्यविशेषः
इन्द्रो बृहस्पतिः महता विक्रमास्थपदविन्यासविशेषेण युक्तो विष्णुश्च सुखप्रदा
भवन्वित्यर्थः ।

End:

ब्रह्म प्राप्नोति तं मार्गं वक्ष्य इत्येवार्थः । अतो योगिनो गतिचिन्तावि-
धानार्थोऽयं सन्दर्भ इति स्थितमित्युपनिषत् । समाप्तेति शेषः ।

क्षेमाय यः करुणया क्षितिनिर्जराणां

भूमावनृम्भयत भाष्यमुधामुदाहः ।

पदमूलयातो
रामानुजस्स मुनिराद्रियतां मदुक्तिम् ॥

Colophon:

इति रङ्गरामानुजकृतिषु तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यप्रकाशिका समाप्ता ॥

No. 514. तैत्तिरीयोपनिषद्वास्या आगमामृतम्.

TAITTIRĪYÔPANISADVYĀKHYĀ ĀGAMĀMRTAM.

Substance, palm-leaf. Size, $17\frac{3}{4} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 9. Lines, 8 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 48a. The other works herein are—Navarātrika-
raḥ (1a), Tripurāsiddhāntaḥ (17a), Vāmakēśvaratantram (20a),
Pañcadaśībhāṣyam (31a), Kāmākṣīstōtram (35a), Sītārāmayantrō-
ddhārāḥ (37b), Dēvyupāniṣad (38a), Pūrṇadīkṣāvidhiḥ (40a),
Āmnāyōpāniṣad (44a), Bhāvanōpāniṣad (55a), Ṣaṭpadistōtram
(57a), Stōtratrayaṅkhyā (58a).

By Sītārāma, son of Accannasūri and Viramāmbā of Vellinkya family in the Kaundinyagōtra.

Beginning:

भञ्जनं सर्वशत्रूणां रञ्जनं जानकीमनः ।

कञ्जनं सर्वभक्तानामाञ्जनेयमहं भजे ॥

सीतारामेण विदुषा श्रीवेल्लिङ्गचान्वयेन्दुना ।

शिक्षोपनिषद्यास्थानं क्रियते ह्यागमामृतम् ॥

अच्चन्नसूर्यध्वरिसद्गुणाम्

अनुग्रहात्तत्पदभक्तितश्च ।

स्वरत्यसौ मन्त्रकलाप एषः

करस्थधात्रीफलवत्त्वचित्ते ॥

पूर्वं कर्मकाण्डे तत् तत् शैववैष्णवगणपतसौरशाक्तबौद्धादिमन्त्रान्
कचित् कचिदुक्तान् सांहितोपनिषदि प्रथमद्वितीयानुवाकयोः पञ्चदशप्रका-

रान्(राः) कथ्यते(न्ते) । शिक्षां व्याख्यास्यामः । शिक्षैव शिक्षा सर्वजनशिक्षा-
रूपिणी पञ्चदशी विद्येति यावत् । तां व्याख्यास्यामः तत्स्वरूपोद्धारं कुर्म
इति भावः

End:

शिक्षाध्याये पञ्चदशीमाह गोप्यामपि स्वयम् ।

वर्णबीजद्वयं चाल शक्तिकामस्वरद्वयम् ॥

मातामायात्रयं चोक्तं बलं लक्ष्मीत्रयं मतम् ।

साम्ना हवर्णद्वित्रयं सन्तानः कलयं मतम् ॥

इति सनन्दनसंहितायाम् । एवं तत्र तत्र पञ्चसंहितासूक्तत्वादेवं व्याख्यातं
नास्सद्बुचिरिति सर्वं निरवद्यम् ॥

Colophon :

इति श्रीमत्पाष्टिघटिकाश्रावितसप्तकाण्डीबिरुदङ्कितकौण्डिन्यकुलतिलकेन
वीरमाम्बागर्भाम्बुधिसुधाकरेण श्रीमदच्चन्नाध्वरिसूरिसूनुना सीतारामेण कृता-
यां संहितोपनिषद्याख्यायां प्रथमोऽनुवाकः ॥

* * * *

इति संहितोपनिषद्याख्याने द्वितीयोऽनुवाकः ॥

No. 515. तैत्तिरीयोपनिषद्घुटीका.

TAITTIRIYOPANISĀLLAGHUTĪKĀ.

Substance, palm-leaf (Śritāla). Size, 14½ × 2½ inches. Pages, 59.

Lines, 10 on a page. Character, Telugu. Condition, good.

Appearance, new.

Praśnas 1 to 3.

This commentary on the Upanisad is complete. The author's name is not herein given ; but reference is made to Vidyāranya in a stanza added at the end of the work.

Beginning:

श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ वायुरपि नमस्कियते । तत्रान्तर्यामिणश्शस्त्रानुमाना-
भ्यां सदुपदेशगम्यत्वेन परोक्षत्वात्कामि संबोधनं सूत्रात्मा तु वायुरूपेण स्पर्श-

नेन्द्रियगम्यत्वात् संबोध्यते नमस्ते वायो इति । अयमेवाभिप्रायः त्वमेव प्रत्यक्षं ब्रह्मासीति वाक्येन स्पष्टीक्रियते । यतो वायूपाधिकं ब्रह्म प्रत्यक्षयोग्यं ततो हे वायो वक्ष्यमाणेषूपसकेषु त्वामेव साक्षात्कारयोग्यं ब्रह्म वदिष्यामि सोपाधिकं तु ब्रह्म येन येन प्रकारेण उपास्यते विचाराभ्यासे सति तेन तेन प्रकारेण साक्षात्कर्तुं शक्यत एव । वाजसनेयिन आमनन्ति देवो भूत्वा देवानप्येति इति ।

* * * *

इति लघुटीकायां द्वादशोऽनुवाकः

* * * *

इति वारुण्यामुपनिषदि लघुटीकायां ब्रह्मवल्ल्याख्यो द्वितीयानुवाकः ।

End :

अहमन्नदेवतारूपस्सन् अदन्तं दानमन्तरेण स्वयमेवान्नं भक्षयन्तं लोभयुक्तपुरुषमग्निं भक्षयामि नरकपातेन नाशयामीत्यर्थः । “केवलाघो भवति केवलादी” इति श्रुतेः । “ते त्वघं भुञ्जते पापा ये पचन्त्यात्मकारणात्” इति स्मृतेश्च । अहं विश्वं सर्वं भुवनं लोकजातमभ्यभवाम् अभिभूतवान् ईश्वररूपस्सन् प्रलयकाले संहृतवानस्मि । सुवश्शब्दः स्वर्गस्थमादित्यमुपलक्षयति । नशब्द उपमार्थः । सुवर्ण आदित्य इव आदित्यो यथा दीपादिनिरेपेक्षेण स्वयमेव प्रकाशरूपः तथैवाहमपि चक्षुरादिनिरेपेक्षः चैतन्यज्योतिरस्मि इत्यर्थः । अनेन साम्ना प्रतिपादितसर्वात्मकत्वानुभवः कस्य फलमित्याशङ्क्याह य एवं वेदेति । ब्रह्म पुच्छमिति वाक्येनोक्तमखण्डैकरसमात्मानं यः पुमानन्नमयादिद्वारेण साक्षात्करोति तस्यैतत् फलमिति । यद्यपि स एवंविदिति फलभाक् विद्वान् पूर्वमेव निर्दिष्टः तथापि विदुष एव फलं नेतरस्य विदुषस्त्ववश्यं फलं भवत्येवेति एवंविधनियमार्थम् । य एवं वेदेति पुनरान्नातमनुवाकार्थमुपसंहरति इत्युपनिषदिति । भृगुर्वै वारुणिरित्यारभ्य य एवं वेदेत्यन्तेन ग्रन्थेन प्रतिपादिता येयं ब्रह्मविद्या सेयमिति शब्देन परामृश्यते सैव उपनिषच्छब्दवाच्या उपनिषण्णमस्यां श्रेय इत्यवयवार्थस्य विद्यायामेव संभवात् उपनिषदं भो

No. 517. तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्यम्.

TAITTIRĪYŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 27. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 266 of the MS. described under No. 31.

Praśnas 1 to 3.

A metrical commentary by Ānandatīrtha.

Beginning:

सत्यं ज्ञानमनन्तमानन्दं ब्रह्म सर्वशक्त्येकम् ।

सर्वदेवैरीड्यं विष्णवाख्यं सर्वदैमि सुप्रेष्ठम् ॥

आदित्यसंस्थितावि(द्वि)ष्णोः श्रुत्वा ब्रह्मा य(था) हरिम् ।

तुष्टाव तत्प्रकारेण वरुणोक्तेन वै भृगुः ॥

विष्णुमस्तौत्तथा प्राह शन्नोमित्रादिका श्रुतिः ।

यदुवाच हरिस्सूर्यमण्डलस्थः परः पुमान् ॥

ब्रह्मा तदाह वरुणो(णं) वरुणे(णो) भृगवेऽपि तु ।

शन्नोमित्रादिभिर्वाक्यैस्तैरेव हरिमस्तुवत् ॥

भृगुः पञ्चात्मकं पूर्णमन्नादिमयमच्युतम् ।

मुक्तगीतावसानैस्तु स्तुतस्तेन जनार्दनः ॥

सुप्रीतः प्रददौ ज्ञानं स्वात्मभक्तिञ्च शाश्वतीम् ।

इत्यादि यजुस्संहितायाम् ।

भृगुवाक्यतया वायुनमस्कारादिकं हरिः ।

प्रोवाच ब्रह्मणे चैवं वचः सुबहुदर्शिषु ॥ इति च ।

वरणीयो वर्णः स्वरते स्वरः मात्रात् त्राणान्मात्रा बलरूपसमश्च सर्व-
रूपेषु सन्ततश्च ॥

वर्णादिवाचकं रूपं ज्ञेयं वर्णादिनामकम् ।

विष्णोर्वर्णादिसंस्थञ्च पुंसु(स्सु) तत्तत्क्रियापदम् ॥

नारायणादिरूपाणि लोकादिषु च पञ्चसु ।
 अनिरुद्धावसानानि ध्येयानि चतुरात्मना ॥
 वासुदेवादिकान्येतत्तानि पूर्वोत्तराण्योः ।
 संहितायास्तथा सङ्घः सन्धाने चाधिकृच्छः ॥
 यो वेदैतानि रूपाणि सर्वभोगसमन्वितः ।
 प्राप्नोति वैष्णवं स्थानं मुक्तः स्वर्गाभिधं परम् ॥

End :

आसमन्तात्पतित्वे च गूढं कलियुगे हरिम् ।
 असत्यमप्रतिष्ठं ते जगदाहुरनीश्वरम् ॥
 वदद्भिर्गूहितं सन्तं तृतीयोऽमुमयायति ।
 येन विष्णोस्तु वर्णास्थान् गुणानज्ञासिषुः परान् ॥
 ईशानासस्सूरयश्च निगूढान्निर्गुणोक्तिभिः ।
 तेतायां द्वापरे चैव कलौ चित्ते क(क)मात्रयः ॥
 येनैषां परमो विष्णुः नेता सर्वेश्वरेश्वरः ।
 स्वयंभूर्ब्रह्मसंज्ञोऽमौ परस्मै ब्रह्मणे नमः ॥
 पूर्णागण्यगुणोदारधाम्ने नित्याय वेधसे ।
 अमन्दानन्दसान्द्राय प्रेयसे विष्णवे नमः ॥

Colophon :

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादविगचिते तैत्तिरीयोपनिषद्भाष्ये भृगुवल्ली
 समाप्ता ॥

No. 518. त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषत्.

TRIPĀDVIBHŪTIMAHĀNĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 61. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 212b of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad is also called Mahānārāyaṇōpaniṣad, and under this name a number of copies are noticed later on.

This Upaniṣad explains in accordance with the tenets of Viśiṣṭādvaita Vēdānta, the nature and qualities of Nārāyaṇa, the Supreme Being, the evolution and involution of the universe, the cause of the mundane embodied existence of souls, the means and nature of salvation; and it gives a description of Heaven with that of the Supreme Being residing therein. A table denoting the subject matter of the various chapters in the Upaniṣad is given below—

1. पादचतुष्टयस्वरूपनिरूपणम्.
2. परब्रह्मणस्साकारनिराकारस्वरूपनिरूपणम्.
3. मूलाविद्याप्रलयस्वरूपनिरूपणम्.
4. महामायातीताखण्डद्वैतपरमानन्दलक्षणपरब्रह्मणः परमतत्त्वस्वरूपनिरूपणम्.
5. संसारतरणोपायकथनद्वारा परममोक्षमार्गस्वरूपनिरूपणम्.
6. परममोक्षमार्गस्वरूपनिरूपणम्.
7. परममोक्षस्वरूपनिरूपणद्वारा त्रिपाद्विभूतिपरमवैकुण्ठमहानारायण-यन्त्रस्वरूपनिरूपणम्.
8. परमसायुज्यमुक्तस्वरूपनिरूपणम्.

Beginning :

ओं भद्रं कर्णेभि रिति शान्तिः ।

अथ परमरहस्यतत्त्वं जिज्ञासुः परमेष्ठी देवमानेन सहस्रसंवत्सरं तपश्च-
चार । सहस्रवर्षेऽतीतेऽत्युग्रतीव्रतपसं भगवन्तं महाविष्णुं ब्रह्मा परिपृच्छति
भगवन् परमतत्त्वरहस्यं मे ब्रूहीति

End :

इदं परमरहस्यं मद्भक्तेष्वभिधास्यति । मद्भक्तिनिष्ठो भूत्वा मामेव प्रा-
प्स्यति । आवयोर्ये इमं संवादमध्येष्यति स नरो ब्रह्मनिष्ठो भवति । श्रद्धावा-

ननसूयः शृणुयात् पठति वा य इमं संवादमावयोस्स पुरुषो मत्सायुज्यमेति
ततो महाविष्णुस्तिरोदधे । ततो ब्रह्मा स्वस्थानं जगामेत्युपनिषत् ।

Colophon :

इत्याथर्वणमहानारायणोपनिषदि परमसायुज्यमुक्तिस्वरूपनिरूपणं नामा
ष्टमोऽध्यायः ॥ त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 519. त्रिपाद्विभूतिमहानारायणोपनिषत्.

TRIPĀDVIBHŪTIMAHĀNĀRĀYAṆÓPANIṢAD.

Pages, 23. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 86a of the MS. described under No. 247.

Complete.

Same as the last.

No. 520. त्रिपुरातापनीयोपनिषत्.

TRIPURĀTĀPĀNĪYOPANIṢAD.

Pages, 24. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 85a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad teaches that Śakti is the Supreme Being ; and to offer worship unto Her as such, a Mantra and a Yantra are also given herein. It concludes with an exposition of the oneness of the Sentient Principle which is conceived to form the foundation of the universe and all its varied phenomena.

Beginning :

ओं भद्रं कर्णेभिर्गतिं शान्तिः ।

अथैतस्मिन्नन्तरे भगवान् प्राज्ञापत्यं वैष्णवं विलयकारणं रूपमाश्रित्य त्रिपुराभिधा भगवतीत्येवमादिशक्त्या भूर्भुवस्वस्त्रीणि स्वर्गभूपातालानि त्रिपुराणि हरमायात्मकेन द्वीङ्कारेण हल्लेखाख्या भगवती त्रिकूटावसाने निलये विलये धाम्नि महसा घेरेण व्याप्नोति सैवेयं भगवती त्रिपुरेति व्यापठ्यते ॥

तत्सवितुर्वरेणीयं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

End :

अन्धमभ्यस्य मेधावी ज्ञानविज्ञानतत्परः ।

पलालमिव धान्यार्थी त्यजेद्ब्रह्ममशेषतः ॥

गवामनेकवर्णानां क्षीरस्याप्येकरूपता ।

क्षीरवत्पश्यति ज्ञानं लिङ्गिनस्तु गवां यथा ॥

ज्ञाननेत्रं समाधाय स महत्परमं पदम् ।

निष्कलं निश्चलं शान्तं ब्रह्माहमिति संस्मरेत् ॥

इत्येकं परं ब्रह्मरूपं सर्वभूताधिवासं तुरीयं जानीते सोऽक्षरे परमे व्योमन्यधिवसति ।

* * * *

तस्मादेतान्त्वर्या श्रीकामराजीयामेकादशधा भिन्नामेकाक्षरं ब्रह्मेति यो जानीते स तुरीयं पदं प्राप्नोति । य एवं वेदेति महोपनिषत् ॥

Colophon:—त्रिपुरातापनोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 521. त्रिपुरातापनीयोपनिषत्.

TRIPURĀTĀPANIYŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 147b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 522. त्रिपुरातापनीयोपनिषत्.

TRIPURĀTĀPANIYŌPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $8\frac{1}{2} \times 10\frac{7}{8}$ inches. Pages, 20. Lines, 18 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 1b. The other works herein are Dēvyupaniṣad (11a), Tripurōpaniṣad (13a), Bhāvanōpaniṣad (14a).

Complete.

Same as the last.

No. 523. त्रिपुरातापनीयोपनिषत्.

TRIPURĀTĀPANIYŌPANIṢAD.

Pages, 20. Lines, 18 on page.

Begins on fol. 92b of the MS. described under No. 169.

Complete.

Same as the last.

No 524. त्रिपुरातापिन्युपनिषत्.

TRIPURĀTĀPINYUPANIṢAD

Substance, paper. Size, $11\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Pages, 13. Lines, 18 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Contains 3 Khaṇḍas.

Begins on fol. 73a. The other works herein are: Trisatī-nāmārthaprakāśikā (1a), Vamācārasiddhāntaḥ (80b), Bagalā-muknīśahasranāmastōtram (98a).

This Tripurātāpinyupaniṣad seems to be different from the Tripurātāpiniyōpaniṣad as well as from the Tripurōpaniṣad. It

however, deals with the subject that is dealt with in the former of these two latter Upaniṣads.

Beginning :

अथ श्रीविद्यामनोरामाय मु(उ)पदिश्यते ब्रह्मचारिणे दान्ताय गुरुभक्ताय ।
यथा विद्यामन(नो):कस्मिन्बुद्धवःतत्स्वरूपं ब्रूहीति होवाच । इह शृणु सौम्य ब्रह्मवा-
चकस्तु प्रणवो वर्तते न पुनराप्रपञ्चाधिष्ठानविद्या । स ह त्रिमात्रोपहितः । का
मात्राः । अकारोकारमकाराः तत्त्वत्रयेण परिणमन्ति । तत्कथन्तत्त्वम् । तस्य
भावस्तत्त्वमात्मविद्याशिवनामभिस्त्रयत्वम् अतो ह्यात्मतत्त्वमेकम् । विद्यातत्त्व
मन्यत् । शिवतत्त्वमृथक् ।

End :

पुनः पप्रच्छ भगवन् शुद्धविद्यानामोच्चारणेन मन्त्रः कथमायातः । शृणु
पुत्र तस्याः कामपि चक्रपूर्वकत्वं विना देवतात्वं कथं तस्मान्मन्त्रोपहि-
ताश्शक्तयः घटः कलशः कुम्भ इत्येकार्थवाचक इव मन्त्रदेवतागुरुरित्येकार्थ-
वाचकास्त एवाथ मन्त्रादि तथा सेति बुद्ध्वा पुरुषार्थवान् भवेदिति ॥
तृतीयः खण्डः ॥

No. 525. त्रिपुरोपनिषत्.

TRIPURŌPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 98b of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad teaches that the worship of Śakti with the aid of the Śrīcakra and the Śrīvidyā is the means of attaining salvation. The Vāmācāra form of Śakti-worship is also adverted to incidentally with a view to censure it.

Beginning :

ओं वाञ्छे मनसीति शान्तिः ।

तिस्रः पुरस्त्रिपथा विश्वचर्षणी अत्राकथा अक्षराः सन्निविष्टाः ।
अधिष्ठायैना अजरा पुराणि महत्तरा महिमा देवतानाम् ॥

* * * *

आनन्दनं मोदनं ज्योतिरिन्दोरेता उ वै मण्डला मण्डयन्ति ।
यास्तिस्रो रेखाः सदनानि भूस्त्रीस्त्रिविष्टपास्त्रिगुणास्त्रिप्रकाराः ॥

End :

उभा दाताराविह सौभगानां समप्रधानौ समसत्त्वौ समादौ ।
तयोश्शक्तिरजरा विश्वयोनिः परिसृता हविषा भावितेन ॥
प्रसङ्कोचे गलिते वैमनस्कः शर्वस्सर्वस्य जगतो विधाता ।
धर्ता हर्ता विश्वरूपत्वमेति इयं महोपनिषत्त्रैपुर्यायाः ॥
क्षयं परमो गीर्भिरीदृष्टे एषम्यजुः परमेतच्च साम ।
यमथर्वेयमन्या च विद्या ओं ह्रीम् ओं ह्रीमित्युपनिषत् ॥

Colophon :— त्रिपुरोपनिषत्समाप्ता ॥

No 526. त्रिपुरोपनिषत्.

TRIPURŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 152a of the MS. described under No. 247.

Same as the last. Complete.

No. 527. त्रिपुरोपनिषत्.

TRIPURŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 522.

Same as the last. Complete.

No. 528. त्रिपुरोपनिषत्.
TRIPURŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 24 on a page.

Begins on fol. 104a of the MS. described under No. 169.
Complete.

No. 529. त्रिपुरोपनिषद्भाष्यम्.
TRIPURŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Substance, paper. Size, $8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Pages, 61. Lines, 12 on a page. Character, Dēvanāgarī. Condition, good. Appearance, new.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Bhāvanōpaniṣadbhāṣyam (62a).

Complete.

This commentary is believed to be by a Bhāskarācārya who is the author of commentaries on certain Mantra - Śāstra works. The introduction gives an interesting account of certain forms of religious worship and ritual. He says therein that he wrote a commentary called Sētubandha on the Vāmakēśvara yantra.

Beginning :

सहस्रदलपद्मे स्वे नाथाङ्गचञ्जद्वये सति ।
कमले कमलोत्पत्तिर्न दृष्टेत्युक्तयः कथम् ॥
श्रीसाङ्ख्यायनकल्पसूत्रविधितस्तोत्राणि ये कुर्वते
येषां शाकल एव मन्त्रनिचयः कौषीतकं ब्राह्मणम् ।
तैरारण्यकमध्यमन्त्रविततिर्या पठ्यते ब्राह्मणैः
ऋग्भिष्पोऽशभिर्महोपनिषदं व्याचक्ष्महे तां वयम् ॥

इह खलु त्रैवर्णिकैरध्येतव्यो वेदः पूर्वोत्तरकाण्डभेदेन द्विविधः । स उभय-
विधोऽपि साक्षात्परम्परया वा क्रियाविशेषविधानाय प्रवृत्तः । क्रियाश्च काश्च
न(ना)देवताकाः सदेवताकाश्च - अभिहोत्रस्नानादयो (रामकृष्णोपास्तियोषि-
दग्न्युपास्त्यादयश्च । अधिकारिणस्तु देहातिरिक्त आत्मा परलोकयातायातक्षमोऽ-

स्तीति विश्वासशीला एवामुष्मिकफलायासु यथाधिक्रियन्ते तथा तेष्वपि देवता नामास्मदादिभिरदृश्यमानाप्यभिमतफलदानक्षमा काचिदस्तीति विश्वासशीला एव रामकृष्णाद्युपासना(सु) अधिक्रियन्ते । ईदृशजनाभिप्रायेणैव देवतानां विग्रहादिकं समर्थितं बादरायणादिभिः । येषान्तु देवतासद्भावे जन्मान्तरकर्मवशादता(वि)श्वास आस्तिकता च ते पूर्वकाण्डोत्तर(क्त)कर्मस्वेवाधिकारिणो न देवतोपासनायाम् । तादृशजनाभिप्रायेणैव देवतानां विग्रहादिपञ्चकनिरासेन कर्मप्राधान्यवादस्मर्थितो जैमिन्यादिभिः । अत एव तादृशकर्मठानामेव कर्मपरिपाकवशात् कतिपयजनानां पूजायां प्रवृत्तौ सत्यां मीमांसकमतपरित्यागप्रयुक्तोपहासकृतो वर्णिता मृगेन्द्रसंहितायाम् । ये तु देवतोपासकास्तैरपि विग्रहादिपञ्चकापन्न(ह)वाभिप्रायरहस्यजनैरपि कर्मप्राधान्यवादो न निरसनीयः । तथात्वे तादृशकर्मठानां चित्तपरिपाकविशेषमन्तरेण समर्थ्यमानार्थं विश्वासानुदयान्निरसनयुक्तिभिः तदवलम्बितार्थं सन्देहोदयेन तेषामुभयभ्रष्टतापत्तेः । देवताविश्वासमिव कार्याण्येव(कर्माणि) । एतदभिप्रायेणैव

लोकसङ्ग्रहमेवाभिसम्पश्यन् कर्तुमर्हसि ।

इत्यादयो विधयो

न बुद्धिभेदजनयेदज्ञानां कर्मसङ्गिनाम् ।

इत्यादयो निषेधाश्च । उत्तरभूमिकाधिरूढैरपि पूर्वभूमिकासमर्थनशीलं भूमिकाया अप्रकाशनञ्चावश्यकम् । अत एव तेषां संरक्षणार्थमेवोपासकैरपि तानि कर्माणि तद्वदेव कार्यमि(र्याणी)ति तु पिण्डितोऽर्थः । तेनैतौ विधिनिषेधौ निस्त्रैगुण्ये पथि विचरतां जीवन्मुक्तानामप्यावश्यक(कावि)[र्मा]ति सिध्यति । एषान्तु बहुजन्मसु पूर्वकाण्डोक्तकर्मनुष्ठानवशात् चित्तपरिपाकविशेषो दृढो दृश्यते तादृशान् प्रति तु सम्यक् परीक्ष्य स्वीयभूमिका शनैः शनैः प्रकाशनीयैव । अन्यथा सम्प्रदायविच्छेदापत्तेः । त्रिपुरसुन्दर्युपास्तिपर्यन्ता ये भूमिकाभेदास्ते तु सविस्तरं वामकेश्वरतन्त्रव्याख्याने सेतुबन्धाख्यानेऽस्माभिः प्रदर्शिताः । उपासनाशास्त्रे तु देवताप्राधान्यमेव न कर्मणः प्राधान्यम् ।

क्रियाप्राधान्याभावादेव देवतारूपसिद्धवस्तुबोधका वेदान्ता इति वाचोयुक्तिः ।
 देवतायाश्च त्रीणि रूपाणि स्थूलं सूक्ष्मं परञ्चेति । तत्राद्यं तत्तद्भूतानश्लोकोक्तम् ।
 द्वितीयं तत्तन्मन्त्रात्मकम् । तृतीयन्तु वामनात्मकम् । देवतारूपत्रैविध्यादेव
 तदुपास्तिरपि त्रिविधा । बहिर्यागजपान्तर्यागभेदात् । तदिदं सपरिकरं वेदपुरुषो
 महोपनिषद्गोपदिशति तिस्रः पुर इत्यादि स नेत्युपनिषदित्यन्तेन । अस्या
 उपनिषदः परदेवतास्तुतौ विनियोगः तृतीयदशममन्त्रलिङ्गात् । तत्र प्राधान्या-
 देवतां निर्देष्टुमाद्यामृचमाह ।

तिस्रः पुरस्त्रिपथा विश्वचर्षणी यात्रा कथाक्षरा सन्निविष्टा ।

अधिष्ठायैनामजरा पुराणि महत्तरा महिमा देवतानाम् ॥

मुक्तिस्तावत्पञ्चविधा सामीप्यमेकं सालोक्यसारूप्यसायुज्यत्रितयं कैवल्य-
 ञ्चेति । तास्वाद्यन्तौ प्रत्येकं द्वौ मार्गौ । मध्यमत्रयमेको मार्गः । तथा च तैत्तिरीया
 आमनन्ति । य एवं विद्वानुदगयने प्रमीयते । देवानामेव महिमानं गत्वादित्यस्य
 सायुज्यं गच्छत्यथ यो दक्षिणे प्रमीयते पितृणामेव महिमानं गत्वा चन्द्रमस-
 स्सायुज्यं सलोकतामामोत्येतौ वै सूर्याचन्द्रमसोर्महिमानौ ब्राह्मणो विद्वानभि-
 जयति तस्माद्ब्राह्मणो महिमानमिति । अयं भावः । ऊर्द्धरेतसां स्वाश्रमोक्तकर्मानु-
 ष्ठानवतां चन्द्रलोकप्राप्तिः सामीप्यरूपा । प्रतीकोपासनया स्वस्वामिभावे-
 नोपासनया अहंग्रहोपासनया सालोक्यादित्रितयरूपादित्यलोकप्राप्तिः ।
 निर्गुणोपास्तिरूपब्रह्मज्ञानवतां तु कैवल्यरूपब्रह्मपदप्राप्तिः । इति एतन्मार्ग-
 त्रयमेव स्पष्टमुपबृंहितं विष्णुपुराणे तृतीयेंऽंशे

उत्तरं यदगस्त्यस्य अजवीथ्याश्च दक्षिणम् ।

पितृयानस्स वै पन्था वैश्वानरपश्चाद्बहिः ॥ इत्यादिना

विवेकज्ञानदृष्टञ्च तद्विष्णोः परमम्पदम् ।

इत्यन्तेन । मार्गत्रैविध्यादेव गन्तव्याः पुर्योऽपि तिस्रः ईदृशपुरत्रयप्रापक-
 स्वात्तद्रूपत्वादेव परदेवता त्रिपुरेत्युच्यते ।

End:

प्रणवस्वरूपाप्येषैवेत्याह ओमिति । ओमाडोश्चेति पररूपम् । तेनेयन्त्रि-
रन्तरमध्येतव्येति भावः । इयमुपनिषदेतादृशीत्येवं यो वेद तस्य महिमानं
श्रुतिरपि वक्तुमसमर्था । तस्य ब्रह्मैकरूपत्वात् तत्र वाचामप्रवृत्तेरित्याशयेन
श्रुत्या मौनमास्थितम् इत्युपनिषत् ।

No. 530. त्रिशिखीब्राह्मणोपनिषत्.

TRISIKHĪBRĀHMANŌPANISAD.

Pages, 19. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 181a of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad explains the evolution of the body from primor-
dial matter, Prakṛti, and describes the nature of the Yōga which
leads the soul to self-realization.

Beginning :

ओं पूर्णमद इति शान्तिः ।

त्रिशिखी ब्राह्मण आदित्यलोकं जगाम । तं गत्वोवाच भगवन् किं देहः
किं प्राणः किं कारणं किमात्मा । तं होवाच सर्वमिदं शिव एव विजानीहि ।
किन्तु नित्यशुद्धो निरञ्जनो विभुरद्वयश्शिव एकस्त्वेन भासेदं सर्वं दृष्ट्वा
तप्तायःपिण्डवदेकं भिन्नवदवभासते । तद्भासकं किमिति चेदुच्यते ॥

End :

ब्राह्माभावे मनः प्राणो निश्चयज्ञानसंयुतः ।

शुद्धसत्त्वे परे लीनो जीवस्सैन्धवपिण्डवत् ॥

मोहजालकसङ्घातो विश्वं पश्यति स्वप्नवत् ।

सुषुप्तिवद्यश्चरति स्वभावपरिनिश्चलः ॥

निर्वाणपदमाश्रित्य योगी कैवल्यमश्नुते । इत्युपनिषत् ॥

Colophon :— त्रिशिखीब्राह्मणोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 531. त्रिशिखीब्राह्मणोपनिषत्.

TRIŚIKHĪBRĀHMANŌPANIṢAD.

Pages, 8. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 74a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 532. त्रिशिखीब्राह्मणोपनिषत्.

TRIŚIKHĪBRĀHMANŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 17b of the MS. described under No. 116.

Complete.

The Śānti is not given ; and the colophon is त्रिशिखोपनिषत्समाप्ता॥

After a few passages in the beginning, which are not different, this MS. gives a different and shorter version of the Upaniṣad referred to under the above number.

No. 533. त्रिशिखीब्राह्मणोपनिषत्.

TRIŚIKHĪBRĀHMANŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 61a of the MS. described under No. 285.

Incomplete.

After giving the first 31½ stanzas the last three are given, so that about 130 stanzas are missing in the middle.

The Śānti is not given.

No. 534. त्रिशिखीब्राह्मणोपनिषत्.

TRIŚIKHĪBRĀHMANŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 16 × 1½ inches. Pages, 3. Lines, 8 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 38a.

Complete.

The other works herein are *Daśaślōkīvyākhyā* (1a), *Vēdānta-viṣayaḥ* (22a), *Brahmasūtram* (27a), *Aparōkṣānubūtiḥ* (33a), *Kālāgnirudrōpaniṣad* (39a), *Māṇḍūkyaōpaniṣad* (34b), *Haṁsōpaniṣad* (41a), *Brahmōpaniṣad* (41b), *Vākyasudhā* (42b).

No Śānti is mentioned.

The version of the Upaniṣad herein is the same as in the last.

No. 535. दक्षिणामूर्त्युपनिषत्.

DAKṢIṆĀMŪRTYUPANĪṢAD.

Pages, 5. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 207a of the MS. described under No. 250.

Complete.

In this Upaniṣad Mārkaṇḍēya teaches that Śiva in the form of Dakṣiṇāmūrti is the Supreme Being who is to be worshipped ; and five Mantras are given as aids to conduct the worship.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः । ब्रह्मावर्ते महाभाण्डीरवटमूले महासत्ताय समेता महर्षयश्शौनकादयस्ते ह समित्पाणयस्तत्त्वजिज्ञासवो मार्कण्डेयं चिरजी-
विनमुपसमेत्य पप्रच्छुः केन त्वच्चिरं जीवसि केन वानन्दमनुभवसीति । परम-
रहस्यशिवतत्त्वज्ञानेनेति स होवाच

End :

दक्षिणाभिमुखः प्रोक्तः शिवोऽसौ ब्रह्मवादिभिः ।

सर्गादिकाले भगवान् विरिञ्चिरुपास्यैनं सर्गसामर्थ्यमाप्य तुतोष वाञ्छितार्थीश्च लब्ध्वा । सोऽस्योपासको भवति य इमां परमरहस्यं शिवतत्त्व-
विद्यामधीते स सर्वपापेभ्यो मुक्तो भवति । य एवं वेद स कैवल्यमनु-
भवति । इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—दक्षिणामूर्त्युपनिषत्समाप्ता ॥

No. 536. दक्षिणामूर्त्युपनिषत्.

DAKṢIṆĀMŪRTYUPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 84*u* of the MS. described under No. 247.

Complete.

No. 537. दक्षिणामूर्त्युपनिषत्.

DAKṢIṆĀMŪRTYUPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 17½ × 1½ inches. Pages, 4. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, not o'd.

Begins on fol. 176*b*. The other works herein will be noted under a subsequent number.

Complete.

No Śānti is given in the beginning, but the colophon runs as follows :—

इति अथर्वणे कावषीकशाखायां परमरहस्ये शिवतत्त्वविद्योपनिषत्समा-
प्ता ॥

No. 538. दक्षिणामूर्त्युपनिषत्.

DAKṢIṆĀMŪRTYUPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 41*b* of the MS. described under No. 254.

Complete.

The colophon runs as follows :—इत्याथर्वणे कौषीतकशाखायां परम-
रहस्यशिवतत्त्वविद्योपनिषत्समाप्ता ॥

No. 539. दत्तात्रेयोपनिषत्.

DATTĀTRĒYŪPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 183b of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad states and explains seven different mystic formulæ to conduct the worship and meditation of God under the name of Dattātrēya, the meaning of which name is also mentioned herein.

Beginning :

ओं भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

ओं सत्यक्षेत्रे ब्रह्मा नारायणं महासाम्राज्यं किं तारकं ततो(न्नो) ब्रूहीति ।
भगवन्नित्युक्तः सत्यानन्दचिदात्मकं सात्त्विकं मामकन्धामोपास्वत्याह । सदा
दत्तोऽहमस्मीति प्रत्येतत्संवदन्ति येन तेन संसारिणो भवन्ति

End:

अभक्ष्य[?]भक्ष्य(क्ष)णपापैर्मुक्तो भवति । सर्वमन्त्रयोगपारिणो भवति । स
एव ब्राह्मणो भवति । तस्माच्छिष्यं भक्तं प्रतिगृह्णीयात् । सोऽनन्तफलमश्नुते
स जीवन्मुक्तो भवति । इत्याह भगवान्नारायणो ब्रह्माणमुपनिषत् ॥

Colophon :—दत्तात्रेयोपनिषत्समाप्ता ॥ हरिः ओम् ॥

No. 540. दत्तात्रेयोपनिषत्.

DATTĀTRĒYŪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 183b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 541. दर्शनोपनिषत्.
DARŚANĀPANIṢAD.

Pages, 23. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 129b of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad explains in detail the eight elements which go to make up the complete practice of the Yōga; it is so named because it enables one, through Yōga, to see one's own true nature as an intelligent soul.

Beginning :

आप्यायन्त्विति शान्तिः ॥

दत्तात्रेयो महायोगी भगवान् भूतपावनः ।

चतुर्भुजो महाविष्णुर्योगेसाम्राज्यदीक्षितः ॥

तस्य शिष्यो मुनिवरः साङ्गतिर्नाम भक्तिमान् ।

भगवन् ब्रूहि मे योगं साष्टाङ्गं सप्रपञ्चकम् ॥

येन विज्ञानमात्रेण जीवन्मुक्तो भवाग्यहम् ।

साङ्गते शृणु वक्ष्यामि योगं साष्टाङ्गदर्शनम् ॥

End :

यदा पश्यति चात्मानं केवलं परमार्थतः ।

मायामात्रं जगत् कृत्स्नं तदा भवति निर्वृतिः ॥

एवमुक्त्वा स भगवान् दत्तात्रेयो महामुनिः ।

साङ्गते स्वस्वरूपेण सुसमस्तेति निर्भयः ॥

Colophon :—दर्शनोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 542. दर्शनोपनिषत्.
DARŚANĀPANIṢAD.

Pages, 10. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 163a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 543. देव्युपनिषत्.

DĒVYUPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 96b of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad teaches that Dēvī or Durgā or Śakti is the Supreme Being ; Dēvī-Mantra is herein taught to be the means of conducting her worship and thereby obtaining salvation.

Beginning :

ओं भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

सर्वे वै देवा देवीमुपतस्थुः । कासि त्वं महादेवि । साब्रवीदहं ब्रह्म-
स्वरूपिणी । मत्तः प्रकृतिपुरुषात्मकं जगत् । शून्यञ्चाशून्यञ्चाहम् । आनन्दाना-
नन्दान(व)हम् । विज्ञानाविज्ञाने अहम् । ब्रह्माब्रह्मणी वेदितव्ये । इत्याहाथर्वणी
श्रुतिः ।

End :

प्राणप्रतिष्ठायां जप्त्वा प्राणानां प्रतिष्ठा भवति । भौमाश्विन्यां महा-
देवीसन्निधौ जप्त्वा महामृत्युन्तरति । य एवं वेदेत्युपनिषत् ॥

Colophon .—देव्युपनिषत्समाप्ता ॥

No 544. देव्युपनिषत्.

DĒVYUPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 151b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 545. देव्युपनिषत्.

DĒVYUPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No 522.

Complete.

No. 546. देव्युपनिषत्.

DĒVYUPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 102a of the MS. described under No. 169.

Complete.

No. 547. देव्युपनिषत्.

DĒVYUPANIṢAD

Substance, palm-leaf. (Śrītāla). Size, $7\frac{1}{2} \times 2\frac{1}{8}$ inches. Pages, 5
 Lines, 11 on a page. Character, Grantha. Condition, good.
 Appearance, old.

Begins on fol. 9b. The other works herein will be noted under
 a subsequent number.

Complete.

The colophon runs as follows:— इति देवी अथर्वशिरोपनिषत्
 समाप्तः (सा) ॥

No. 548. द्वयोपनिषत्.

DVAYĪPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 42b of the MS. described under No. 139.

Complete.

This Upaniṣad describes the Dvaya-Mantra —श्रीमन्नारायणचरणौ
 शरणं प्रपद्ये श्रीमते नारायणाय नमः— and mentions the qualities to be
 possessed by the teacher and the pupil for the proper study of this
 Mantra. It is so called because it consists of two distinct sentences.

Beginning :

अथातः श्रीमद्वयोत्पत्तिः । वाक्यद्वयम् । षट्पदानि अर्था दश । पञ्च-
विंशत्यक्षराणि । पञ्चदशाक्षरं पूर्वम् । दशाक्षरं परम् । नवाक्षरः प्रथमपदे ।
द्वितीयतृतीयचतुर्थस्त्रिचक्षराणि । पञ्चाक्षरं पञ्चमम् । द्व्यक्षरः षष्ठः । एकाक्षरोऽ-
थ प्रथमः । एकाक्षरो द्वितीयः । चतुर्धाक्षरस्तृतीयः ।

End :

गुरुरेव परा विद्या गुरुरेव परा गतिः ॥
यस्मात्तदुपदेष्टासौ तस्माद्गुरुतरो गुरुः ।
सकृदुच्चरितो येन तस्य संसारनाशिनी ॥
यश्च गुरुर्नारविमोचनं भवति ।
संसृजन्मकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ।
सर्वपुरुषार्थसिद्धिर्भवति य एवं वेदेत्युपनिषत् ॥

No. 549. द्वयोपनिषत्.

DVAYÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 13b of the MS. described under No. 305.

Complete.

In this the Śānti is given as सह नाववत्विति शान्तिः ॥

No. 550. ध्यानबिन्दूपनिषत्.

DHYĀNABINDŪPANISAD.

Pages, 15. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 133b of the MS. described under No. 250.

Complete.

The colophon wrongly names this as तेजोबिन्दूपनिषत् .

This Upaniṣad explains how the Pranava, Ōm, is to be used in Yōgic meditation, and then the nature of the practice of Yōga is described at some length.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

यदि शैलसमं पापं विस्तीर्णं दशयोजनम् ।
 भिद्यते ध्यानयोगेन नान्यो योगः कदाचन ॥
 बीजाक्षरं परं बिन्दुं नादं तस्योपरि स्थितम् ।
 स शब्दश्चाक्षरे क्षीणे निश्शब्दं परमं पदम् ॥
 अनाहतन्तु यच्छब्दं तस्य शब्दस्य यत्पद(र)म् ।
 तत्परं विन्दते यस्तु स योगी छिन्नसंशयः ॥

End :

कोदण्डद्वयमध्ये तु ब्रह्मरन्ध्रेषु शक्ति च ।
 स्वात्मानम्पुरुषम्पश्येन्मनस्तत्र लयङ्गतम् ॥
 रत्नानि ज्योत्स्निनादन्तु बिन्दुमाहेश्वरम्पदम् ।
 य एवं वेद पुरुषः स कैवल्यं समश्नुते । इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—तेजोबिन्दूपनिषत् समाप्ता.

No. 551. ध्यानबिन्दूपनिषत्.

DHYĀNABINDŪPANĪṢAD.

Pages, 5. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 57b of the MS. described under No. 247.

Complete.

The mistake in the colophon pointed out under the last number occurs in this copy also.

No. 552. ध्यानबिन्दूपनिषत्.

DHYĀNABINDŪPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 66a of the MS. described under No. 285.

Complete.

No Śānti is given in the beginning but the colophon is इत्या(थ)-

र्व णे ध्यानबिन्दूपनिषत्समाप्ताः(त्ता) ॥

This seems to be much abridged and does not contain as much matter as the previous copy.

No. 553. नादबिन्दूपनिषत्.

NĀDABINDŪPANIṢAD.

Pages, 7. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 130b of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad explains the manner in which the meditation of the Pranava is to be associated with a peculiar humming nasal sound called Nāda; and it describes the value of this manner of Yōgie meditation, drawing attention at the same time, to the peculiarities of the experience gone through in the course of such meditation and to the nature of the final condition in which the successful aspirant may be found as the result of his practising Yōga thus.

Beginning :

वाङ्मे मनसीति शान्तिः ।

अकारो दक्षिणः पक्ष उकारस्तूत्तरस्मृतः ।

मकारं पुच्छमित्याहुरर्धमात्रा तु मस्तकम् ॥

पादादिकं गुणास्तस्य शरीरं तत्त्वमुच्यते ।

धर्मोऽस्य दक्षिणं चक्षुरधर्मोऽथो परः स्मृतः ॥

भूर्लोकः पादयोस्तस्य भुवर्लोकस्तु जानुनि ।
सुवर्लोकः कटीदेशे नाभिदेशे महर्जगत् ॥

End :

दृष्टिस्थिरा यस्य विना सदृश्यं
वायुस्थिरो यस्य विना प्रयत्नम् ।
चित्तं स्थिरं यस्य विनावलम्बं
स ब्रह्म तारान्तरनादरूपः । इत्युपनिषत् ॥

Celophon :—नादविन्दूपनिषत् समाप्ता ॥

No. 554. नादविन्दूपनिषत्.
NĀDABINDŪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 56b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 555. नारदपरिव्राजकोपनिषत्.
NĀRADAPARIVRĀJAKŌPANIṢAD.

Pages, 50. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 156b of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad explains the division of the life of a Dvija into the various stages known as Āśramas, and specially deals with the ascetic life of Sannyāsa. It sets forth the various classes of ascetics, the manner of entering the order of Sannyāsins, the duties and the rules of conduct appertaining to that order.

Beginning :

ओं भद्रङ्कणेभिरिति शान्तिः ।

परिव्राट् त्रिशिखी सीता चूडा निर्वाणमण्डलम् ।

दक्षिणा शरभं स्कन्धं महानारायणं द्वयम् ॥

अथ कदाचित्परिव्राजकाभरणो नारदस्सर्वलोकसञ्चारं कुर्वन् अपूर्वपु-
ण्यस्थलानि पुण्यतीर्थानि तीर्थीकुर्वन् अवलोक्य चित्तशुद्धिं प्राप्य निर्वैरः
शान्तो दान्तः सर्वतो निर्वेदमासाद्य नरमृगकिम्पुरुषामरकिन्नराप्स-
रोगणान् सम्मोहयन्नागतं ब्रह्मात्मजं भगवद्भक्तं नारदमवलोक्य द्वादशवर्षसत्र-
यागोपस्थिताः श्रुताध्ययनसम्पन्नाः सर्वज्ञास्तपोनिष्ठापराश्च ज्ञानवैराग्यसम्पन्नाः
शौनकादिमहर्षयः प्रत्युत्थानं कृत्वा नत्वा यथोचितमातिथ्यपूर्वकमुपदेश-
यित्वा स्वयं सर्वेऽप्युपदिष्टाः । भो भगवन् ब्रह्मपुत्र कथं मुक्त्युपायोऽस्माकं
वक्तव्यमित्युक्तस्तान् स होवाच नारदः । सत्कुलभवोपनीतस्सम्यगुपनयनपू-
र्वकं चतुश्चत्वारिंशत्संस्कारसम्पन्नः स्वाभिमतैकगुरुसमीपे शाखाध्ययनपूर्वकं
सर्वविद्याभ्यासं कृत्वा द्वादशवर्षशुश्रूषापूर्वकं ब्रह्मचर्यम् ।

End :

कथं निर्धनिकः सुखी धनवान् ज्ञानाज्ञानोभयातीतः सुखदुःखातीतः
स्वयंभ्योतिःप्रकाशः सर्ववेद्यः सर्वज्ञः सर्वसिद्धिदः सर्वेश्वरः सोऽहमिति
तद्विष्णोः परमं पदं यत्र गत्वा न निवर्तन्ते योगिनः सूर्यो न तत्र भाति
न शशाङ्कोऽपि । न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्तते तत्कैवल्यमित्युपनिषत् ॥

Colophon :—नारदपरिव्राजकोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 556. नारदपरिव्राजकोपनिषत्.

NĀRADAPARIVRĀJAKŌPANĪṢAD.

Pages, 19. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 65a of the MS. described under No. 247.

Complete.

No 557. नारदपरिव्राजकोपनिषत्.

NĀRADAPARIVRĀJAKŌPANĪṢAD.

Pages, 16. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 355.

Incomplete and imperfect.

No. 558. नारदपरिव्राजकोपनिषत्.

NĀRADAPARIVRĀJAKŌPANIṢAD.

Pages, 10. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 482

Another copy of the preceding.

Incomplete.

No. 559. नारदोपनिषत्.

NĀRADŌPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 31b of the MS. described under No. 139.

Incomplete.

Brahman herein teaches Nārada the object of wearing on the forehead a mark in the form of Viṣṇu's foot with white mud taken from hallowed places.

Beginning :

अथ प्रणिपत्य नारदो ब्रह्माणं प्रायुक्क । अधीहि भगवन् मे किं पवित्राणां
पवित्रं केन सुकरेणामृतत्वमेति । स होवाच साधु ते नियोगं सुलभं पवित्रं
सुलभं सुकरं तद्विष्णुक्षेत्रं तत्र मृदं श्वेतमुद्धृतासीत्युद्धरेत् ।

End :

तज्जलेन श्रीबीजेन संसृज्य तत्सूक्ष्मरेखां धारयेत् । ते द्वे शाखे हंसवर्णे
गायत्रीत्रिष्टुब्दैवत्ये आत्मपरमात्मदैवत्ये लक्ष्मीनारायणदैवत्ये दर्शपूर्णमासे
अष्टके इष्टापूर्तक्रिये.

No. 560. नारायणतापिन्युपनिषत्.

NĀRĀYAṆATĀPINYUPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $17\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{8}$ inches. Pages, 4. Lines, 13 on a page. Character, Telugu. Condition good. Appearance, old.

Begins on fol. 22a. The other works herein are : Nṛsinhapūrvatāpinyupaniṣadbhāṣyam 1a, Rāmatāpinyupaniṣadvyākhyā 24a, Dēvicatuṣṣaṣṭipūjāvidhānam 50b, Rāmatāpinyupaniṣad 53a, Gurustavaḥ 57a, Maṅgalāṣṭakam 58a, Śrīvidyāpuraścaraṇavidhiḥ 59a, Mudrālakṣaṇam 75a, Nṛsimhasahasranāmastōtram 79a.

Complete.

This Upaniṣad explains how the eight-syllabled Mantra—
ओं नमो नारायणाय—represents Śiva and the ten Avatars of Viṣṇu ; it mentions a number of mystic formulæ connected with this Mantra and describes the Yantra or magic figure to be used in the worship that is conducted with the aid of this Mantra ; and lastly it describes the high value of the Mantra and the greatness of God conceived as Nārāyaṇa.

Beginning :

अथ ब्रह्माण्मभगवन्तं सनत्कुमारः पप्रच्छ कीदृशन्नारायणाष्टाक्षरं भवतीति । व्याचष्टे । अथ यो वै नारायणस्स भगवान् परब्रह्म स्वमानन्दो भवति । सच्चिदानन्दस्वरूपवस्तु भवति ।

End :

सर्वकृतुफलं प्राप्नोति । सर्वकर्मकर्ता भवति । चतुस्समुद्रपर्यन्तभूदानफलं प्राप्नोति । द्विजोत्तमो भवति । चतुर्वर्गफलं प्राप्नोति । ब्रह्मचारी ज्ञानवान् भवति । गृही पुत्रपौत्रमहदैश्वर्यवान् भवति । सन्न्यासी मोक्षवान् भवति ।

पठनाच्छ्रवणाद्वापि सर्वकामानवाप्नुयात् ।

नारायणप्रसादेन वैकुण्ठपदमश्नुते ॥

इति स होवाच भगवान् य एवं वेदेत्युपनिषत् ॥

Colophon :

इत्याथर्वणरहस्ये नारायणोत्तरतापिनीये तृतीयः खण्डः ।
 वेदाक्षराणि यावन्ति पठितानि द्विजोत्तमैः ।
 तावन्ति हरिनामानि कीर्तितानि न संशयः ॥
 नारायण हरे कृष्ण वासुदेव जगद्गुरो ।
 मुकुन्दाच्युत देवेश महाविष्णो नमोऽस्तु ते ॥
 सह नाववतु शान्तिः ॥
 भूतानि तक्ष(क्षर)संज्ञानि कूटस्थोऽक्षरसंवदेत् (ज्ञकः) ।
 उत्तमोऽन्योऽसौ पुरुषो नारायणा(णोऽ)भिधीयते ॥

No. 561. नारायणोपनिषत्.

NĀRĀYAṆĪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 23 on a page.

Begins on fol. 17a of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad teaches that the universe proceeds from and returns unto Nārāyaṇa, that He is the universe and that the eight-syllabled Mantra—ओं नमो नारायणाय—is the means of worshipping Him and thus winning salvation.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

ओम् । अथ पुरुषो ह वै नारायणोऽकामयत । प्रजास्तृजेयेति । नारायणात्प्राणो जायते । मनस्सर्वेन्द्रियाणि च । स्वं वायुज्योतिरापः पृथिवी विश्वस्य धरिणी । नारायणाद्ब्रह्मा जायते । नारायणाद्बुद्धो जायते । नारायणादिन्द्रो जायते । नारायणात् प्रजापतिः प्रजायते । नारायणात् द्वादशादित्या रुद्रा वसवस्सर्वाणि छन्दांसि

End :

प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति । सायमधायानो दिवसकृतं
पापं नाशयति । तत् सायं प्रातरधीयानः पापोऽपापो भवति । माध्यन्दिनमा-
दित्याभिमुखोऽधीयानः पञ्चमहापातकोपपातकात् प्रमुच्यते । सर्ववेदपारायण-
पुण्यं लभते । नारायणसायुज्यमवाप्नोति । श्रीमन्नारायणसायुज्यमवाप्नुयात् ।
य एवं वेदेत्युपनिषत् ॥

Colophon :—नारायणोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 562. नारायणोपनिषत्.

NĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 8a of the MS. described under No. 247.

Complete.

No. 563. नारायणोपनिषत्.

NĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 224a of the MS. described under No. 58.

Complete.

This is seen here transcribed at the end of the Chāndōgyōpa-
niṣad, and therefore it may belong to the Sāmaveda; but the Śānti,
though not found in this MS., shows that it is probably of
Yajurvedic origin.

No. 564. नारायणोपनिषत्.

NĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 39a of the MS. described under No. 139.

Complete.

No. 565. नारायणोपनिषत्.

NĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 45a of the MS. described under No. 254.

Complete. *

No. 566. नारायणोपनिषत्.

NĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 284.

Complete.

There is another copy of the same work herein, beginning on fol. 41b and extending over three pages of five lines to a page.

No. 567. नारायणोपनिषत्.

NĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 125a of the MS. described under No. 204.

Complete.

No. 568. नारायणोपनिषत्.

NĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 116a of the MS. described under No. 365.

Complete.

No. 569. नारायणोपनिषत्.

NĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 73a of the MS. described under No. 256.

Complete.

No. 570. निरालम्बोपनिषत्.

NIRĀLAMBŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 98a of the MS. described under No. 250.

Complete.

In the way of answering a series of questions, this Upaniṣad sets forth prominently the Advaita system of the Vēdānta philosophy.

Beginning :

पूर्णमद इति शान्तिः ।

एषामज्ञानजन्तूनां समस्तारिष्टशान्तये ।

यद्यद्वोद्धव्यमखिलं तदाशङ्क्य ब्रवीम्यहम् ॥

किं ब्रह्म क ईश्वरः को जीवः का प्रकृतिः कः परमात्मा को ब्रह्मा को विष्णुः को रुद्रः क इन्द्रः कश्शमनः कस्सूर्यः कश्शब्दः के सुराः के असुराः के पिशाचाः के मनुष्याः काः स्त्रियः के पश्वादयः किं स्थावरं के ब्राह्मणादयः

End :

निरालम्बोपनिषदं योऽर्थते गुर्वनुग्रहतस्सोऽभिपूतो भवति स वायुपूतो भवति न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्तते पुनर्नाभिजायते पुनर्नाभिजायत इत्युपनिषत् ।

Colophon :— निरालम्बोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 571. निरालम्बोपनिषत्.

NIRĀLAMBŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 43b of the MS. described under No. 247.

Complete.

No. 572. निरालम्बोपनिषत्.
NIRĀLAMBŌPANIṢAD.

Pages, 17. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 49a of the MS. described under No. 217.
Complete.*

No. 573. निरालम्बोपनिषत्.
NIRĀLAMBŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 19a of the MS. described under No. 292.
Complete.

No. 574. निरालम्बोपनिषत्.
NIRĀLAMBŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 5. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

Begins on fol. 1a. The other works herein are Rājayōgāmṛta (3a), Gītāsāra (5a).

Another copy; but the following is found in addition before what happens to be the first verse in the preceding copies.

एकपीठं जगत्सर्वमेका मुद्रा च खेचरी ।
एक एव महामन्त्रः गुरुरित्यक्षरद्वयम् ॥
सर्वमन्त्रस्वरूपाय निर्गुणाय गुणात्मने ।
तच्छब्दमखिलं धात्रे तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥
पूर्णस्यावाहनं कुत्र सर्वाधारस्य चासनम् ।
स्वच्छस्य पाद्यमर्घ्यं च शुद्धस्याचमनं कुतः ॥

निर्मलस्य कुतः स्नानं वस्त्रं दिग्वाससः कुतः ।
 निर्लेपस्य कुतो गन्धो रम्यस्याभरणं कुतः ॥
 निरालम्बस्योपवीतं पुष्पं निर्वासनस्य च ।
 निर्गन्धस्य कुतो धूपः स्वप्रकाशस्य दीपकम् ॥
 नित्यवृत्तस्य नैवेद्यं ताम्बूलं च कथं विभोः ।
 स्वयंप्रकाशमानस्य कुतो नीराजनाविधिः ॥
 प्रदक्षिणमनन्तस्य ह्यद्वितीयस्य काः स्तुतिः ।
 अन्तर्बहिश्च पूर्णस्य कथमुद्रासनम्भवेत् ॥
 इयमेव परा पूजा सर्वावस्थासु सर्वदा ।
 प्रेषबुद्ध्या सुसर्वेशे मनो देवे निवेदयेत् ॥

एषामज्ञानजावाना

No 575. निर्वाणोपनिषत्.

NIRVĀṆĪPANIṢAD.

Page 3, 3. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 200a of the MS described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad describes the peculiar characteristics of the condition of Mōkṣa, wherein the liberated soul is conceived to be fully free from material bondage and all its sorrows and limitations.

Beginning :

ओं वाञ्छे मनसीति शान्तिः ।

अथ निर्वाणोपनिषदं व्याख्यास्यामः । परमहंसस्तोऽहम् । परिव्राजकाः पश्चिमलिङ्गाः । मन्मथक्षेत्रपालाः गगनसिद्धान्तम् । अमृतकलोलनदी अक्षयं निरञ्जनम् । निस्संशय ऋषिः निर्वाणो देवता निष्कलप्रवृत्तिः ।

End:

परं ब्रह्म प्लववदाचरणं ब्रह्मचर्यशान्तिसंग्रहणं ब्रह्मचर्याश्रमेऽधीत्य
वानप्रस्थाश्रमेऽधीत्य । स सर्वचिन्त्यासं सन्न्यासमन्ते ब्रह्माखण्डाकारं नित्यं
सर्वसन्देहनाशनमेतन्निर्वाणदर्शनम् । शिष्यं पुत्रं विना न देयमित्युपनिषत् ॥

Colophon :—निर्वाणोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 576. निर्वाणोपनिषत्.

NIRVĀṆĪPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 81a of the MS. described under No. 247.

Complete.

No. 577. नृसिंहतापिन्युपनिषत्.

NṚSĪMHATĀPINYUPANIṢAD.

Pages, 40. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 57b of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad explains the great value of the Nṛsimhamantra of thirty-two syllables and deals with the incarnation of Viṣṇu as Nṛsimha or Man-Lion.

Beginning of the Pūrvatāpinī :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥ आपो वा इदमासन् सलिलमेव । स
प्रजापतिरेकः पुष्करपर्णे समभवत् । तस्यान्तर्मनसि कामस्समवर्तत । इदं
सृजेयमिति । तस्माद्यत्पुरुषो मनसाभिगच्छति । तद्वाचा वदति । तत्कर्मणा
करोति । तदेषाभ्यनूक्ता । कामस्तदग्रे समवर्तताधि । मनसो रेतः प्रथमं
यदासीत् ।

End :

सदाशिवं ब्रह्माभिवन्दितं योगिध्येयं परं पदं यत्र गत्वान निवर्तन्ते
योगिनः । तदेतद्वचाभ्युक्तम् । तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः ।
दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसस्समिन्धते । विष्णोर्यत्प-
रमं पदम् । तदो निष्कामस्य भवति तदो निष्कामस्य भवति । य एवं वेदेति
महोपनिषत् ॥ पञ्चमोपनिषत् ॥

Colophon :—नृसिंहपूर्वतापिनीयोपनिषत्समाप्ता ॥

Beginning of the Uttaratāpini :

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन् अणोरणीयांसमिममात्मानमोङ्कारं नो व्या-
चक्ष्वेति । तथेत्योमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानमिदं भूतं भवद्भ-
विष्यदिति सर्वमोङ्कार एव यच्चान्यत्त्रिकालातीतम् ।

End :

ते होचुर्नमस्तुभ्यं वयन्त इति ह प्रजापतिर्देवाननुशासेति । तदेष
श्लोकः ॥

ओतमोतेन जानीयादनुज्ञातारमान्तरम् ।

अनुज्ञामद्वयं लब्ध्वा उपद्रष्टारमात्रजेत् ॥ इति ॥

नवमः खण्डः ॥

Colophon :—इति नृसिंहोत्तरतापिनीयोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 578. नृसिंहतापिन्युपनिषत्.

NṚSĪMHATĀPINYUPANIṢAD.

Pages, 19. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 26a of the MS. described under No. 247.

Complete.

No. 579. नृसिंहतापिन्युपनिषत्.
NṚSĪMHATĀPINYUPANIṢAD.

Pages, 17. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 50b. of the MS. described under No 285.
First part ; complete.

No. 580. नृसिंहतापिन्युपनिषत्.
NṚSĪMHATĀPINYUPANIṢAD.

Pages, 19. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 306.
First part ; complete.

No 581. नृसिंहतापिन्युपनिषद्भाष्यम्.
NṚSĪMHATĀPINYUPANIṢADBHĀṢYAM.

Substance, paper. Size, $12\frac{1}{2} \times 7\frac{1}{2}$ inches. Pages, 225. Lines, 22 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 83a. The other works herein are: Siddhāntasīkhāmanih (1a), Kālarātrikalpaḥ (204a), Bhuvanēśvarikalpaḥ (218a), Mantramālikā 220a, Chinnamastākapaḥ 256, Haridāgaṇapatikalpaḥ 268a.

Complete.

Beginning :

यन्नाम्नोपनिषत् स्थाता तपनं तं विधिं गुरुम् ।
प्रणम्योपासनागर्भं तद्व्याख्यां श्रद्धयारभे ॥
आनुष्टुभात्सामराजान्नारसिंहादिदं जगत् ।
जातं यस्मिन् स्थितं लीनं नमस्तस्मै त्रिशक्तये ॥

भद्रं कर्णेभिरिति मन्त्रान्तर्गतभद्रपदव्याख्यानपरामृचमादितश्शान्ति
पठन्नन्याभ्यः श्रौतस्मार्तपौराणिककल्पाशिक्षाप्रतिपादिताभ्यस्साकारब्रह्मवि-
द्याभ्यः इयं शुभदेति दर्शयति भद्रं कर्णेभिरिति । भद्रं कल्याणं कर्णे-

भिरिति छान्दसं कर्णैः शृणुयाम . शृणुमः देवास्संस्तुतो वयं भद्रं कल्याणं
पश्येम पश्यामः . . . आपो ब्रां इदमासन्नित्यादिना नृसिंहब्रह्म-
विद्याप्रकरणमाख्याधिकापूर्वकमवतारयति इयमुपनिषत् ।

End :

तादात्म्यपक्षे तु मन्त्रब्राह्मणयोर्यथास्वरूपं व्याख्येयम् । इतिशब्दो
मन्त्रसमाप्तिं द्योतयति । तदेतन्निष्कामस्य भवतीति पदचतुष्टयाभ्यासस्सर्वो-
पनिषत्समाप्तिं द्योतयतीति सर्वं निर्मलं सिद्धम् ॥

Colophon :

इति गोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंसपीरब्राजकाचार्यस्य
शङ्करभगवतः कृतौ आथर्वणपूर्वतापनीयोपनिषद्भाष्ये पञ्चमोपनिषत् समाप्ता.

विक्रमाब्दाश्वयुज्यासप्रतिपत्सोमवासरे ।

रामचन्द्रोऽलिखत्स्वार्थं तापनीभाष्यमादरात् ॥

At the end of the commentary, a metrical version of the subjectmatter of the Upaniṣad, extending over six pages of 22 lines to a page and containing about 60 verses, is given in addition.

Beginning :

उदेति यस्मादखिलं सङ्कल्पादेव सन्ततम् ।

ब्रह्मणे श्रीनृसिंहाय नमस्तस्मै रजोजुषे ॥

ग्रन्थिश्शिखि(थि)लतामेति हृदयस्य यदि क्षणात् ।

विष्णवे श्रीनृसिंहाय तस्मै सत्त्ववते नमः ॥

End :

अञ्जलिर्वन्दनं मुष्टिः प्रधानं च चपेटिकम् ।

तर्जन्यास्फोटनं तद्वत् शङ्खं चक्रं गदाब्जके ॥

पाशाङ्कुशौ च मुसलं खड्गं चर्म सशार्ङ्गकम् ।

इषु चान्द्रं च वक्रं च दंष्ट्रा श्रीवत्सकौस्तुभौ ॥

लक्ष्मीर्योनिस्तथा धेनुः वरदाभयहस्तकौ ।
 कर्णौ च केसराश्चैव वनमालाखगेश्वरौ ॥
 उपसंहारमुद्रा च द्वात्रिंशत् परिकीर्तिताः ।

Beginning of the second part :

निरस्तनिखिलानर्थपरमानन्दरूपिणे ।
 नृसिंहाय नमस्कुर्मः सर्वधीवृत्तिसाक्षिणे ॥
 यत्पादाब्जरजोलेशसम्पर्कात्सहसा सकृत् ।
 सर्वसंसारहीनोऽहं तान्नतोऽस्मि गुरून् सदा ॥
 तापनीयरहस्यार्थविवृतिर्लेशतो मया ।
 क्रियतेऽल्पधियान्तस्मात्क्षन्तव्यं क्षतमुत्तमैः ॥

इह पूर्वास्मिन् ग्रन्थे नृसिंहाकारब्रह्मविद्या निरुपाधिकब्रह्मविद्याफलाधि-
 गता । तथाह्युक्तं वार्तिककृद्भिः

नृसिंहब्रह्मविद्यैषा व्याख्याता ज्ञानसिद्धये । इति
 प्रणवस्य त्वनुष्टुबङ्गत्वेनैव तत्र तत्र प्रवेशः

End :

तापनीयरहस्यार्थदीपिका तिमिरापहा ।
 गुर्वनुग्रहलब्धैषा सतामस्तु सुखाप्तये ॥
 संचिदानन्दसम्पूर्णप्रत्यगेकरसात्मने ।
 तेजसे महते भूयान्नमः पुंसिंहरूपिणे ॥
 येषां संस्मृतिमात्रेण तरन्ति भवसागरम् ।
 तान्नतोऽस्मि गुरून् भक्त्या धिया वाचा च कर्मणा ॥

Colophon :

इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छुक्मुनीन्द्रशिष्यश्रीमद्वौडपाद-
 मुनिविरचिते उत्तरतापनीयविवरणे प्रथमः खण्डः ॥

No. 582. नृसिंहतापिन्युपनिषद्भाष्यम्.

NṚSĪMĤATĀPINYUPANĪṢADBĤĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size, $18\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 181. Lines, 8 on a page. Character, Telugu. Condition, slightly injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1^a. The other works herein are Viṣṇumātrkānyāsaḥ 91a, Praṇavaṇiṣayaḥ (92a), Asaṅgātmanirasaṇam (98a). Complete.

The verse specifying the date of transcription is identical with that found in the MS. described under the last number. Moreover this also gives the metrical paraphrase of the Upaniṣad found at the end of that codex. Therefore this seems to be the original from which that copy has been made.

The colophon is इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमच्छुक्मुनीन्द्र-
शिष्यगौडपादमुनिविरचिते उत्तरतापिनीयोपनिषद्विवरणे नवमः खण्डः ॥

No. 583. नृसिंहतापिन्युपनिषद्भाष्यम्.

NṚSĪMĤATĀPINYUPANĪṢADBĤĀṢYAM.

Pages, 44. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 560.

Complete.

Another copy of the commentary by Śaṅkarācārya.

The colophon is इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीशङ्करभगवतः कृतौ आथर्वणतापनीयोपनिषद्भाष्यं समाप्तम् ॥

No. 584. नृसिंहतापिन्युपनिषद्भाष्यम्.

NṚSĪMĤATĀPINYUPANĪṢADBĤĀṢYAM.

Pages, 44. Lines, 7 on a page.

Breaks off in the third Upaniṣad of the first part.

Begins on fol. 79a of the MS. described under No. 316.

The colophon runs thus :—

इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतम्वथर्वणोपनिषद्भाष्ये द्वितीयोपनिषद्याख्या समाप्ता ॥

No. 585. नृसिंहतापिन्युपनिषद्भाष्यम्.

NṚSĪMĤATĀPINYUPANISĀDBHĀṢYAM.

Substance, paper. Size, $8\frac{1}{2} \times 10\frac{3}{4}$ inches. Pages, 114. Lines, 21 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new.

Complete.

The following colophon is found: इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजका-
चार्यपरस्य गोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य भगवच्छङ्कराचार्यस्य कृतौ नृसिं-
होत्तरतापनीयव्याख्यानं सम्पूर्णम् ॥

Begins on fol. 153a. The other works herein are Tripurā-siddhāntaḥ 1a, Lalitāsahasranāmōttarapīṭhikā with commentary 97a.

No. 586. नृसिंहतापिन्युपनिषद्भाष्यम्.

NṚSĪMĤATĀPINYUPANISĀDBHĀṢYAM.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 1$ inches. Pages, 187. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

The colophon is इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यपरस्य गोविन्द-
भगवत्पूज्यपादशिष्यस्य भगवच्छङ्कराचार्यस्य कृतौ नृसिंहोत्तरतापनीयव्याख्यानं
सम्पूर्णम् ।

No. 587. नृसिंहतापिन्युपनिषद्भाष्यम्.

NṚSĪMHA TĀPĪNYUPANISĀD BHĀṢYAM.

Substance, paper. Size, $7\frac{1}{2} \times 9\frac{1}{2}$ inches. Pages, 21. Lines, 15 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, not old.

* Second part. It breaks off in the course of the second Khanda.

Begins on fol. 201a. The other works herein are : Jñānārṇavam (1a) Rajasvalāśnānavidhiḥ (121a), Ratirahasyam (129a), Paraśurāmasūtram (177a).

✓

No. 588. नृसिंहतापिन्युपनिषद्दीपिका.

NṚSĪMHA TĀPĪNYUPANISĀD DĪPIKĀ.

Substance, palm-leaf. Size, $9 \times 1\frac{3}{4}$ inches. Pages, 346. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

A commentary on the Upaniṣad by Śaṅkarānanda, pupil of Ānandātman.

Beginning :

ओं प्रायस्सगुणे ब्रह्मणि प्रवृत्ताः सकामाः । कामिनां चानर्थो भूयान् । निष्कामानामेव देवकृतविघ्नस्य(स्या)संभावितत्वात् । अतः संभावितानर्थपरिहारार्थं प्रथमतः शान्तिकरौ मन्त्रौ पठति । भद्रं कल्याणं कर्णेभिः कर्णैः उपासकानां बहुत्वाद्बहुवचनं शृणुयाम श्रूयास् देवाः देवाश्च नारसिंहस्योपासकाः तद्व्यानात् तादात्म्यं प्राप्ताः ॥

End :

तत्परमधामप्राप्तिरूपं फलमेतदिदानीमुक्तम् । निष्कामस्य सर्वाभिलाष-
रहितस्य भवति स्पष्टम् । नीपा(निष्का) मस्य भवति व्याख्यातम् । वाक्याभ्यास
उपनिषत्समाप्त्यर्थः ॥

Colophon :

इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यानन्दात्मपूज्यपादाशिष्यस्य श्री (शं)क-
रानन्दभगवतः कृतौ पूर्वतापिन्युपनिषद्दीपिकायां पञ्चमोपनिषत् समाप्ता ।

समाप्ता च पूर्वतापिन्युपनिषत् ।

As the second part of the commentary is written here in continuation of the commentary on Pūrvatāpinī by Śaṅkarānanda, this may also be by the same author.

Beginning :

यदुत्तराध्वन्यतिकौशलानां व्यासादिकानां प्रणवप्रसिद्धाम् ।

नृसिंहरूपं तपनं भवाब्धेः वन्दे तदात्मोत्तरतापिनीयम् ॥

ग्रन्थोऽपि तस्योत्तरतापनीयनामा प्रसिद्धः प्रणवात्मसिंहान् ।

अभेदबुद्धचोपदिशन् जनानां भूयान्मुदेऽनुष्टुभ उत्तरो यः ॥

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन् अगोरणीयांसमिममात्मानमारभ्य उपद्रष्टा-
रमाव्रजेदित्यन्ता नवखण्डिकारूपोत्तरतापनीयोपनिषद् तस्या अर्थप्रकाशिकेयं
दीपिका समारभ्यते ।

Ead :

उपद्रष्टारं तुरीयमविकल्पं वाङ्मनसातीतमपगतभेदवासनो निरिन्धना-
ग्निवदाव्रजेत् अनुसमन्ताद्गच्छेत् । इति नवमः खण्डः ॥

Colophon :—उत्तरतापिनीव्याख्या समाप्ता ॥

No 589. नृसिंहतापिन्युपनिषद्विवरणम्.

NṚSĪMĤATĀPINYUPANĪṢADVIVARAṆAM.

Substance, paper. Size, 13½ × 8½ inches. Pages, 69. Lines, 30
on a page. Character, Devanāgarī. Condition, good. Appearance,
new.

A commentry on the Upaniṣad by Kṛṣṇācārya, son of Tīru-
malācārya.

Begins on fol. 1a. The other works herein are : Niruktam (37a), Vēdāṅgachandassūtram (44a), Vēdāṅgajyautiṣam (49a), Vyāsaśikṣāvyaḥyānam (Vēdataiṣam) (51a.)

Complete.

Beginning :

श्रीपाण्डुरङ्गं सर्वान्तरङ्गं सर्वाङ्गमङ्गलम् ।
 इन्दिरामन्दिरं वन्दे वैदेहीवरसुन्दरम् ॥
 गुरुःश्रीतिर्मलाचार्यसूर्यो मे शर्म यच्छतु ।
 स्वान्तर्ध्वान्तर्ध्वंसकर्ता धर्ममार्गप्रदर्शकः ॥
 गुरुश्रीतिर्मलाचार्यसूनुना कृष्णशर्मणा ।
 अ(आ)थर्वणोपनिषदः श्रीमद्भाष्यमनूच्यते ॥

इह खलु संसारपारावारे निम(ग्र)धिकारिजनं जननी तनयमिव पर-
 मात्मतत्त्वज्ञानप्लवेनोद्दिधीर्षुरियमाथर्वणी मन्त्रोपनिषदितिकर्तव्यतामन्तरेण
 न तत्त्वज्ञानकारणतामापद्यते । अतः तदितिकर्तव्यतारूपन्यायगर्भं भाष्यं
 करिष्यन्नाचार्यः प्रारिप्सितपरिसमाप्त्यादिप्रयोजनमेतदुपनिषत्प्रातिपाद्यदेव-
 ताप्रणतिमादौ निबध्नाति आनन्दमिति ।

End :

मम सदा प्रेष्ठप्रेष्ठतम इति । अतिशयेन प्रियः प्रेष्ठः अतिशयेन प्रेष्ठः
 प्रेष्ठतमः प्रेष्ठाप्रेष्ठतमः प्रेष्ठप्रेष्ठतमः निरतिशयप्रिय इत्यर्थ इत्यशेषमिति
 मङ्गलम् ॥

तातश्रीनिर्मलाचार्यगुरुप्रोक्तो मयाशयः ।

आथर्वणोपनिषदस्तद्भाष्यस्यापि दर्शितः ॥

Colophon :

इति श्रीतिर्मलाचार्यसूरिसूनुकृष्णाचार्यविरचितं श्रीमदाथर्वणोपनिष-
 द्भाष्यविवरणं समाप्तम् ॥ श्रीसत्यपूर्णतीर्थगुरुभ्यो नमः

No. 590. पञ्चब्रह्मोपनिषत्.

PAÑCABRAHMÔPANISAD.

Pages, 5. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 144a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad describes the five manifestations of Śiva conceived as God, and teaches that the five syllabled Mantra-नमश्शिवाय- is the means of worshipping Him and of thereby attaining salvation.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः । अथ पैङ्गलादो भगवान् भो(ः)किमादौ किञ्जा-
तामिति । सद्यो जातमिति । किम्भगव इति । अघोर इति । किम्भगव
इति । वामदेव इति । किं वा पुनरिमे भगव इति । तत्पुरुष इति ।
किं वा पुनरिमे भगव इति । सर्वेषान्दिव्यानां प्रेरयिता ईशान इति ।

End :

अतश्च कारणं नित्यमेकमेवाद्वयं खलु ।
अत्र कारणमद्वैतं शुद्धचैतन्यमेव हि ॥
अस्मिन् ब्रह्मपुरे वेश्म दहरं यदिदं मुने ।
पुण्डरीकिन्तु तन्मध्ये आकाशो दहरोऽस्ति तत् ॥
स शिवस्सच्चिदानन्दस्सोऽन्वेष्टव्यो मुमुक्षुभिः ।
अयं हृदि स्थितस्साक्षी सर्वेषामविशेषतः ॥
तेनायं हृदयं प्रोक्तं शिवस्संसारमोचकः ।
इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—पञ्चब्रह्मोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 591. पञ्चब्रह्मोपनिषत्.

PAÑCABRAHMÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 168b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 592. पञ्चीकरणोपनिषत्.

PAÑCĪKARANÔPANISAD.

Pages, 8. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 18b of the MS. described under No. 202.

Complete.

This Upaniṣad explains how the diversity of the universe has resulted from the five homogeneous primary principles or elements by means of a process called Pañcīkaraṇa, i.e., dividing each element into five portions and then combining them heterogeneously in certain different proportions.

Beginning :

पञ्चीकरणोपनिषत् ।

प्रपञ्चोत्पत्त्यपूर्वाणि सदब्धिं परमेश्वरं ।

निस्तरङ्गार्णवं तत्र मायाबीजसमुद्भवम् ॥

निर्णयित्वं सदोत्पन्नं तत् सर्वं या परोद्भवम् ।

तांस्तथा (तथाभूत) तत्त्वपञ्चीकारं तत् स्वयं याति पञ्चकम् ॥

प्रपञ्चं भूतमिश्रन्तु कुशलैः प्रेमलीलया ।

पञ्चीकरणसुनिर्माणं विश्वमव्याकृतं तदा ॥

एकैकं पञ्चपञ्चस्तु पञ्चविंशतिकरणया ।

भूतमुत्पन्नवद्द्रुपं पञ्चीकरणविधानकम् ॥

End :

पञ्चीकरणोपनिषत् हृदये गोप्या रक्षस्व च ।
 सन्न्यासिनामिदं योगज्ञानैश्वर्यसुखप्रदम् ॥
 पञ्चविंशतितत्त्वस्थो यत्र कुत्राश्रमे वसन् ।
 जटी मुण्डी शिखी वापि मुच्यते नात्र संशयः ॥
 दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
 वीतरागभयक्रोधस्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥
 चतुर्वेदधरो विप्रः सर्वशास्त्रविशारदः ।
 आत्मतत्त्वं न जानाति दर्वी पाकरसं यथा ॥

Colophon :— इति पञ्चीकरणोपनिषत् संपूर्णा ॥

No. 593. परब्रह्मोपनिषत्.

PARABRAHMÔPANISAD.

Pages, 6. Lines, 19 on a page:

Begins on fol. 80a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad deals with the nature of the soul, of the Supreme Being, and of salvation ; and it explains also how this last is to be attained by one who, having become a Sannyāsin, has risen through the divine wisdom he has acquired, above the necessity of wearing the Śikhā, or the knot of hair on the head, as well as of wearing the Yajñōpavīta or the Brahminical sacred thread.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

अथ हैनं महाकालः(शालः) शौनकोऽङ्गिरसं भगवन्तं पिप्पलादं
 विधिवदुपपन्नः पप्रच्छ । दिव्ये ब्रह्मपुरे (के) सम्प्रतिष्ठिता भवन्ति कथं

(सृज्यन्ते) । नित्यात्मन एष महिमा । विभज्य एष महिमा विभुः क एषः ।
तस्मै स होवाच एतत्सत्यं यत्प्रब्रवीमि ब्रह्मविद्यां वरिष्ठाम्.

End:

एकयज्ञोपवीती तु नैव सन्न्यस्तुमर्हति ।

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन मोक्षापेक्षी भवेद्यतिः ॥

बहिस्तूत्रं परित्यज्य स्वान्तस्तूत्रन्तु धारयेत् ।

बहिः त्रि(प्र)पञ्चशिखोपवीतित्वमनादृत्य प्रणवहंसशिखोपवीतत्वमव-
लम्ब्य मोक्षसाधनङ्कुरा(र्या)दित्याह भगवान् शौनक इत्युपनिषत् ॥

Colophon:—परंब्रह्मोपनिषत् समाप्ता.

No. 594. परंब्रह्मोपनिषत्.

PARABRAHMĪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 146a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 595. परमहंसपरिव्राजकोपनिषत्.

PARAMAHAMŚAPARIVRĀJAKĪPANIṢAD.

Pages, 8. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 31a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad describes the rules relating to the initiation into the Sannyāsin's life, and gives the rules of conduct to be followed by Sannyāsin or the religious ascetics who have given up the world and adopted the life of renunciation.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

अथ पितामहः स्वपितरमादिनारायणमुपसमेत्य प्रणम्य पप्रच्छ । भगवन् त्वन्मुखाद्वर्णाश्रमधर्मक्रमं सर्वं श्रुतं विदितमवगतम् । इदानीं परमहंस-परिव्राजकलक्षणं वेदितुमिच्छामि । कः परिव्राजनाधिकारी कीदृशं परिव्राजक-लक्षणं कः परमहंसः परिव्राजकत्वं कथं तत्सर्वं मे ब्रूहीति । स होवाच भगवानादिनारायणः । सद्गुरुसमीपे सकलविद्यापरिश्रमज्ञो भूत्वा विद्वान् सर्वमैहिकामुष्मिकसुखश्रमं ज्ञात्वैषणात्रयवासनात्रयममत्वाहङ्कारादिकं वम-नान्नमिव हेयमुपगम्य मोक्षमार्गैकसाधनो ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भवेत् ।

End :

देवतान्तरध्यानशून्यो लक्ष्यालक्ष्यनिर्वर्तकस्सर्वोपरतस्सच्चिदानन्दाद्वय-चिद्धनस्संपूर्णानन्दैकरसो [यो] ब्रह्मैवाहमस्मीति अनवरतं ब्रह्मप्रणवानुसन्धानेन यः कृतकृत्यो भवति स परमहंसपरिव्राडित्युपनिषत् ॥

Colophon :—परमहंसपरिव्राजकोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 596. परमहंसपरिव्राजकोपनिषत्.

PARAMAHMSAPARIVRĀJAKŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 132a of the MS. described under No. 247.

Complete.

No. 597. परमहंसपरिव्राजकोपनिषत्.

PARAMAHMSAPARIVRĀJAKŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 17b of the MS. described under No. 482.

Complete. Same as the last.

No. 598. परमहंसोपनिषत्.

PARAMAHAMŚŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad lays down the rules of conduct relating to the Paramahansa class of Sannyāsins.

Beginning :

पूर्णमद इति शान्तिः ।

अथ योगिनां परमहंसानां कोऽयं मार्गस्तेषां का स्थितिरिति नारदो भगवन्तमुपसमेत्योवाच । तं भगवांनाह योऽयं परमहंसमार्गो लोके दुर्लभतरो न तु बाहुल्यो यद्येको भवति स एव नित्यपूतस्थस्स एव वेदपुरुष इति विदुषो मन्यन्ते महापुरुषो यच्चित्तं तत् सदा मय्येवावतिष्ठते ।

End :

दुःखे नोद्विग्नस्सुखे निस्पृहस्त्यागो रागे सर्वत्र शुभाशुभयोरनभिस्नेहो न द्वेष्टि न मोदते च सर्वेषामिन्द्रियाणां गतिरुपरमते य आत्मन्येवावस्थीयते तत्पूर्णानन्दैकबोधस्तत् ब्रह्मैवाहमस्मीति कृतकृत्यो भवति कृतकृत्यो भवतीत्युपनिषत् ॥

Colophon :—परमहंसोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 599. परमहंसोपनिषत्.

PARAMAHAMŚŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 8b of the MS. described under No. 247.

No. 600. परमहंसोपनिषत्.

PARAMAHAMŚŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 300.

Complete. Same as the preceding.

No 601. परमहंसोपनिषत्.

PARAMAHAMŚŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 56b of the MS. described under No. 276.

Complete.

Another copy. The Śānti is herein given thus : सह नाववत्विति शान्तिः ।

No. 602. परमहंसोपनिषत्.

PARAMAHAMŚŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 21b of the MS. described under No. 482.

Complete.

Another copy. It begins :

अथ शुक्लयजुर्वेदे परमहंसोपनिषत् । पूर्णमद इति शान्तिः ।

No. 603. परमहंसोपनिषत्.

PARAMAHAMŚŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 70a of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.

No. 604. परमहंसोपनिषद्दीपिका.

PARAMAHAMŚOPANIṢADDĪPIKĀ.

Pages, 17. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 71b of the MS. described under No. 316.

Incomplete.

A gloss on the Upaniṣad probably by Śaṅkarānanda.

Beginning :

साध्वी पारमहंसेति नामाङ्कोपनिषत्सु या ।

पदावलोकनात्तस्या अर्थमाविष्करोम्यहम् ॥

यद्यप्यपौरुषेये वेदे न कोऽपि वक्ता अत एव न प्रापि तथापि भ(भो)ग-
स्थाननुजिघृक्षन्नेकं वक्तामपरं प्रष्टारं च लोकवदङ्गीकृत्यास्तिक्यबुद्धिसंरक्षणार्थं
ब्रह्मनारदौ प्रस्थातपुरुषौ सर्वज्ञतत्कल्पौ वक्तृप्रष्टारौ सङ्गृह्य परमहंसधर्मानाह ।

End:

साधूक्तं कृतकृत्यो भवतीति इयं परमहंसानां व्या.

No. 605. पाशुपतब्रह्मोपनिषत्.

PĀŚUPATABRAHMŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 75b of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad treats of the characteristics of the Supreme Being, first from the Śaiva-Viśiṣṭādvaita point of view, and then from the Śaivādvaita point of view.

Beginning :

ओं भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

अथ ह वै स्वयंभूर्ब्रह्मा प्रजाः सृजानीति कामकामो जायते कामेश्वरो
वैश्रवणः वैश्रवणो ब्रह्मपुत्रो वालखिल्यः स्वयंम्भुं(म्भुवं) परिपृच्छति । जगतां

का विद्या का देवता जाग्रत्तुरीययोरस्य को देवः । यानि कस्य वशानि । कालाः
कियत्प्रमाणाः । कस्याज्ञया रविचन्द्रग्रहादयो भासन्ते ।

End :

साक्षिरूपतया भाति ब्रह्मज्ञानेन बाधिता ।

ब्रह्मवित् ज्ञानसंपन्नः प्रतीतमखिलं जगत् ॥

पश्यन्नपि सदा नैव पश्यति स्वात्मनः पृथक् ॥ इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—पाशुपतब्रह्मोपनिषत् समाप्ता.

No. 606. पाशुपतब्रह्मोपनिषत्.

PĀŚUPATABRAHMŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 145a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 607. पैङ्गलोपनिषत्.

PAINGALŌPANIṢAD.

Pages, 15. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 281b of the MS. described under No. 250.

Complete.

Yājñavalkya explains to Paiṅgala herein how the material universe and the sentient individual soul are both evolved from the attributeless Supreme Being, what the Mahāvākyas mean, and how a man of true wisdom should behave, and how others are to treat him.

Beginning :

ओं पूर्णमद इति शान्तिः ।

अथ ह पैङ्गलो याज्ञवल्क्यमुपसमेत्य द्वादशवर्षशुश्रूषापूर्वकं परम-
रहस्यकैवल्यमनुब्रूहीति पप्रच्छ । स होवाच याज्ञवल्क्यः सदेव सोम्ये-

दमग्र आसीत् । तं नित्यमुक्तमविक्रियं सत्यज्ञानानन्दं परिपूर्णं सनातनमेक-
मेवाद्वितीयं ब्रह्म ।

End :

ब्रह्महत्यासुरापानस्वर्णस्तेयगुरुतल्यगमनतत्संयोगपातकेभ्यः पूतो
भवति । तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ।
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसस्समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् । ओं
सत्यमित्युपनिषत् ॥

Colophon :—पैङ्गलोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 608. पैङ्गलोपनिषत्.

PAINGALŌPANIṢAD.

Pages. 6. Lines. 12 on a page.

Begins on fol. 111a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 609. पैप्पलादोपनिषत्.

PAIPPALĀDŌPANIṢAD.

Pages. 2. Lines. 6 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 217.

Incomplete.

In this Upaniṣad Brahman teaches Paippalāda that Rudra is the Supreme Being who is to be worshipped and meditated upon, and that He is superior to Viṣṇu.

Beginning :

अथ हैनं भगवन्तं पैप्पलादो ब्रह्माणमुवाच ब्रह्मविष्णुरुद्राणां मध्ये
को वाऽधिकतरो ज्येयश्च । तस्मै मं होवाच पितामहश्च ।

बहूनि पुण्यानि कृतानि येन तेनैव लभ्यः परमेश्वरोऽसौ ।
 यस्याङ्गजोऽहं हरिरिन्द्रमुखा मोहं न जानन्ति सुरेन्द्रमुखाः ॥
 प्रभुं वरेण्यं पितरं महेशं ममापि विष्णोर्जनकं देवमीड्यम् ।
 यो अन्तकाले सर्वलोकान्संजर्हति तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ॥

End:

यो वामपादार्चितविष्णुनेत्रस्तस्मै ददौ चक्रमतीव हृष्टः ।
 तस्मै रुद्राय नमो अस्तु ।
 परात्परतरो ब्रह्म यत्परात्परतो हरः ।
 तत्परात्परतरो (गि)रीशस्त(स्मै रुद्राय नमो अस्तु) ॥

No 610. प्रश्नोपनिषत्.

PRAŚNÓPANISAD.

Pages, 8. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 82a of the MS. described under No. 302.

Complete.

This Upanisad teaches that the matter of the body is animated by Prāṇa which is derived out of the Ātman (self), these together constituting the man of sixteen Kalas or component parts. It further mentions certain states of human consciousness, explaining them in accordance with this theory, and describes the value of the repetition of the Pranava as a means to attain Mōkṣa by realising the nature of the Supreme Being, as herein described.

Beginning:

हरिः ओम् ॥ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवाः । . . शान्तिः ॥
 ओं सुकेशा च भारद्वाजः शैब्यश्च सत्यकामः सौर्यायणी च गार्ग्यः कौ-
 सल्यश्चाश्वलायनो भार्गवो वैदर्भिः कबन्धी कात्यायनस्ते हैते ब्रह्मपरा
 ब्रह्मनिष्ठाः परं ब्रह्मान्वेषमाणा एष ह वै तत्सर्वं वक्ष्यतीति ते ह समित्पाणयो
 भगवन्तं पिप्पलादमुपसन्नास्तान् सह ऋषिरुवाच भूय एव तपसा ब्रह्मचर्येण

श्रद्धया संवत्सरं संवत्स्यथ यथाकामं प्रश्नान् पृच्छत यदि विज्ञास्यामः
सर्वं ह वो वक्ष्याम इति । अथ कबन्धी कात्यायन उपेत्य पप्रच्छ ।

End:

तान्होवाचैतावदेवाहमेतत्परं ब्रह्म वेद नातः परमस्तीति । ते तमर्चय-
न्तस्त्वं हि नः पिता योऽस्माकं विद्यायाः परं पारं तारयसीति । नमः परम-
ऋषिभ्यो नमः परमऋषिभ्यः ॥ ओं भद्रं कर्णेभिः . . . दधातु ॥
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

Colophon :— प्रश्नोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 611. प्रश्नोपनिषत्.

PRAŚNĪPANIṢAD.

Pages, 11. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 9b of the MS. described under No. 300.

Complete.

Very incorrect, imperfect and wrongly arranged.

The Śānti is not given.

No. 612. प्रश्नोपनिषत्.

PRAŚNĪPANIṢAD.

Pages, 14. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 105a of the MS. described under No. 180.

Complete.

The book is bound in the wrong way.

Another copy.

No. 613. प्रश्नोपनिषत्.

PRAŚNĪPANIṢAD.

Pages, 11. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 62b of the MS. described under No. 276.

Complete.

Another copy.

No. 614. प्रश्नोपनिषत्.

PRAŚNĪPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 109a of the MS. described under No. 204.

Complete.

Another copy.

No. 615. प्रश्नोपनिषत्.

PRAŚNĪPANIṢAD.

Pages, 11. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 22b of the MS. described under No. 307.

Complete. Same as the last.

No. 616. प्रश्नोपनिषत्.

PRAŚNĪPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 10b of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.

No. 617. प्रश्नोपनिषत्.

PRAŚNĪPANIṢAD.

Pages, 10. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 11a of the MS. described under No. 309.

Complete. Same as the last.

No. 618. प्रश्नोपनिषद्भाष्यम्.

PRAŚNĪPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 50. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 80a of the MS. described under No. 302.

Complete.

A commentary on the Upaniṣad by Śaṅkarācārya.

Beginning :

मन्त्रोक्तस्यार्थस्य विस्तारानुवादीदं ब्राह्मणमारभ्यते । ऋषिप्रश्नप्रति
वचनास्थायिका तु विद्यास्तुतयः एवं संवत्सरं ब्रह्मचर्यसंवासादियुक्तैस्तपोयुक्तैः
ब्राह्मपिप्पलादवत्सर्वज्ञकल्पैराचार्यैः वक्तव्या च न येन केनचिदिति विद्यां स्तौ-
ति । ब्रह्मचर्यादिसाधनसूचनाच्च तत्कर्तव्यता स्यात्

End :

पिता शरीरमात्रं जनयति तथापि संपूज्यतमो लोके किमु तद्वक्तव्य-
मात्यन्तिकाभयस्य दातुरित्यभिप्रायः । नमः परमऋषिभ्यो ब्रह्मविद्यासंप्रदाय-
कर्तृभ्यो नमः ॥

Colophon :— इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यपरमहंसपरिव्राज-
काचार्यश्रीशङ्करभगवत्पादकृतावथर्वणोपनिषत्प्रश्नभाष्यविवरणं संपूर्णम् ।

No. 619. प्रश्नोपनिषद्भाष्यम्.

PRAŚNŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 32. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 57a of the MS. described under No. 311.

Complete. Same as the last.

No 620. प्रश्नोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

PRAŚNŌPANIṢADBHĀṢYATIPPANAM.

Pages, 29. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 37a of the MS. described under No. 332.

Complete.

For remarks and extracts about the work see pages 2 and 69
of the " Report on a search for Sanskrit and Tamil MSS. for the
year 1896-97" by M. Seshagiri Sastri.

No. 621. प्रश्नोपनिषद्भाष्यविवरणम्.

PRAŚNŌPANIṢADBHĀṢYAVIVARANAM.

Pages, 78. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 53a of the MS. described under No. 532.

Complete.

This is a gloss on Śaṅkarācārya's Bhāṣya on the Praśnōpa-
niṣad, which is one of the ten principal Upaniṣads. It was written
by Nārāyaṇēndrasarasvatī, pupil of Jñānēndra, whose preceptor
was Kaiśalyēndra. Nārāyaṇēndrasarasvatī was a Yati, and
speaking of himself he says that he had acquired that knowledge
of self by which he could become immortal, blissful, pure,
infinite. The work is said to have been composed at the request
of his pupils.

Beginning :

स्वपादसेविनां पुंसां स्वात्मबोधप्रसिद्धये ।
सेवितं दक्षिणामूर्तिं ज्ञानेन्द्रगुरुरूपिणम् ॥
मय्यारोप्य समस्तमद्वय इदं तस्मिन्प्रवेशान्मृषा-
शक्त्या जागरितादिदुःखमखिलं निर्विण्णधीर्दुःखतः ।
कोऽहं वेति विचार्य कार्यकरणग्रामात् पृथक्सर्वगः
प्रज्ञानैकरसं निरस्तनिखिलोपाधिः परं ब्रह्म च ॥
ज्ञात्वात्मानमहन्निजे परिमिते नित्ये सुखे निर्मले
सर्वानन्दनिधौ स्थितः समभवं श्रीवामदेवादिवत् ।
सोऽहं तत्त्वबुभुत्सुशिष्यपरिषत्संप्रार्थितः सम्प्रति
व्याकुर्वे ललितैः पदैः स्फुटतरं प्रश्नस्य भाष्यं मुदा ॥

ओम् अथर्वणे ब्रह्मा देवानामित्यादिमन्त्रैरेव आत्मतत्त्वस्य निर्णीतत्वात्तत्रैव
ब्राह्मणेन तदभिधानं पुनरुक्तमित्याशङ्क्य तस्यैवेह विस्तरेण प्राणोपासनादि-
साधनसाहित्येनाभिधानं न पौनरुक्त्यमिति वदन् ब्राह्मणमवतारयति मन्त्रेति ।
विस्तरेति । मन्त्रे हि द्वे विद्ये वेदितव्ये परा चैवापरा चेति ।

End :

तस्मादिति । पितृत्वादेवं पूज्यतरत्वं परिचार्यत्वं स्वामित्वं किमु वक्तव्यमित्यर्थः । अत एव वाजसनेयके मां चापि सह दारयायेत्युक्तमिति भावः ।

Colophon :

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीकैवन्द्रेन्द्र(ल्येन्द्र)शिष्यज्ञानेन्द्र-
गुरुचरणसेविनारायणेन्द्रसरस्वतीविरचितं प्रश्नोपनिषद्भाष्यविवरणं समाप्तम्.

No. 622. प्रश्नोपनिषद्भाष्यम्.

PRAŚNÔPANISAD BHĀṢYAM.

Pages, 5. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 309.

Complete.

This is a metrical commentary on the Praśnopaniṣad by Anandatīrtha in support of the Dvaita-Vēdānta.

Beginning :—

हरिः ओम् । नमो भगवते तस्मै प्राणादिप्रभविष्णवे ।
अमन्दानन्दसान्द्राय वासुदेवाय वेधसे ॥

प्रजानां पालनाद्विष्णुः प्रजापतिरितीरितः ।

स वायुं सूर्यनामानं चन्द्रनाम्नीं सरस्वतीम् ॥

सूर्याचन्द्रगतो देवस्ससर्जं पुरुषोत्तमः ।

तावाविश्य स्वयं विष्णुः सर्वसृष्टीः करोत्यजः ॥

अमूर्तस्थस्स वायुस्तु मूर्तसंस्था सरस्वती ।

आदित्यस्थः स वायुस्तु प्राणानात्मनि संनयेत् ॥

प्राच्यप्राणास्तथेन्द्राद्या दक्षिणाश्च यमादयः ।

प्रतीच्या वरुणाद्यास्तु सोमाद्या उत्तरे स्मृताः ॥

शेषमित्राववाचीनाविन्द्रकामावुदक्तनौ ।
 सभार्याः कोणपैस्सार्द्धं चत्वारो दिशि दिश्यपि ॥
 संवत्सरस्थो भगवान् वागीशावयनस्थितौ ।
 मासस्थितस्स भगवान् पक्षयोर्वाक् च मारुतः ॥
 अहोरात्रे तु भगवान् प्राणोऽह्यथ च वाङ्मसि ।
 दम्पत्योर्भगवान्विष्णुः भार्यास्था तु सरस्वती ॥
 भर्तृस्थः स स्वयं वायुरेवं जानन्विमुच्यते ।
 इति प्रजापतिसंहितायाम् ।

वायुरग्निरित्यत्र भूतवायुरुच्यते । प्राणशब्देन प्रधानवायुः । आत्मतः परमात्मतः ।

• विष्णोर्वायुस्समुत्पन्नो वायोस्सर्वाश्च देवताः ।
 प्राणाद्यास्तानयं प्राण आज्ञापयति राजवत् ॥

End :

पृथक् पृथक् नामरूपैः नमस्तस्मै पराय ते ।
 इति च सत्तत्त्वे ॥

नामरूपाद्विमुक्त इत्यत्रापि नामरूपादमुक्तत्वमुच्यते विप्रिय इत्यादि-
 वत् । नामरूपे अविहायेति पूर्वत्र अनन्तं वै नाम अनन्ता वै विश्वे देवा इति
 नामरूपयोरनन्तत्वं श्रुतिर्वक्ति । यत्र पूर्वं साध्यास्सन्ति देवाः । स तत्र पर्येति
 जक्षन् क्रीडन् रममाणः । सोऽश्रुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता ।
 ऋचान्त्वः पोषमास्ते पुपुष्वान् । गायत्रं त्वा गायति शकरीषु इत्यादेश्च ।
 अतः सर्वमुक्तेभ्यो ह्युत्तमोत्तमः परिपूर्णगुणो नारायण इति सिद्धम् ॥

नमो नमोऽस्तु हरये प्रेष्ठप्रेष्ठतमाय मे ।
 परमानन्दसन्दोहसान्द्रानन्दवपुष्मते ॥

Colophon :

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादविरचितं षट्प्रश्नोपनिषद्भाष्यं समाप्तम् ॥

No. 623. प्रश्नोपनिषद्भाष्यम्.

PRAŚNĪPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 5. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 9a of the MS. described under No. 31.

Same as the last. Complete.

No. 624. प्राणामिहोत्रोपनिषत्.

PRĀṆĀGNIHŌTRĪPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 23 on a page.

Begins on fol. 146a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad explains the ritual of प्राणामिहोत्र or the worship of the fire of life as contained in the body; it identifies allegorically the various elements of life and of the human body with the various elements of the sacrifice and enjoins the performance of this worship of the fire of life as a means for obtaining the salvation of Mōkṣa without having to undergo any more re-incarnations.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

अथातस्सर्वोपनिषत्सारं संसारे ज्ञानातीतमन्नसूक्तं शारीरयज्ञं व्याख्यास्यामः । यस्मिन्नेव पुरुषशरीरे विनाप्यमिहोत्रेण विनापि साङ्ख्येन संसारविमुक्तिर्भवतीति स्वेन विधिनान्नं भूमौ निक्षिप्य या ओषधयस्सोमराज्ञीरिति तिसृभिः अन्नपत इति द्वाभ्यामनुमन्त्रयति ।

End :

सर्वाण्यस्मिन् देवताशा(श्श)रीरे अधिसमाहिताः ।

वाराणस्यां मृतो वापि इदं वा ब्राह्मणः पठेत् ॥

एकेन जन्मना जन्तुर्मोक्षं च प्राप्नुयादित्युपनिषत् ॥

Colophon :—इति प्राणामिहोत्रोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 625. प्राणामिहोत्रोपनिषत्.

PRĀṆĀGNIHÔTRÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 169*b* of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 626. प्राणामिहोत्रोपनिषत्.

PRĀṆĀGNIHÔTRÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 12*a* of the MS. described under No. 203.

Another copy. Complete.

No. 627. बह्वचोपनिषत्.

BAHVRĀCÔPANIṢAD.

Pages, 3. Lines 22 on a page.

Begins on fol. 199*c* of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad teaches that Dēvī is the Supreme Being from whom proceed all the gods and all the various beings in the universe; it describes her as all-pervading and endeavours to identify the meaning of certain Dēvī-mantras with that of the Mahāvākyas.

Beginning:

ओं वाग्मे मनसीति शान्तिः ॥ ओं देवी ब्रह्माग्र आसीत् । सैव जगदण्ड-
मसृजत । कामकलेति विज्ञायते । शृङ्गारकलेति विज्ञायते । तस्या एव ब्रह्मा
अजीजनत् । विष्णुरजीजनत् । रुद्रोऽजीजनत् । सर्वे मरुद्गणा अजीज-
नन् ॥

End:

ब्रह्मानन्दकलेति । ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् । यस्मिन्देवा अधि विश्वे
निषेदुः । यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति । य इत्तद्विदुस्त इमे समासत
इत्युपनिषत् ॥

Colophon:—हरिः ओं बृहचोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 628. बृहचोपनिषत्.

BAHVRCÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 188a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 629. बृहज्जालोपनिषत्.

BRHAJJĀBĀLÔPANISAD.

Pages, 24. Lines, 21 on a page.

Begins on fols. 37a and 51a of the MS. described under No. 250.

Complete.

It consists of 8 Brāhmaṇas.

The first portion commencing on fol. 37a breaks off in the 4th Brāhmaṇa, and the portion commencing on fol. 51a takes it up from where it breaks off and completes the Upaniṣad. This split-

ting up of the Upaniṣad seems to have been due to the reason pointed out under No. 415.

This Upaniṣad explains the origin of the sacred ashes of Śaivism known as Bhasma or Vibhūti, its preparation, the deities presiding over it, the various ways in which it is to be used and the virtue or merit attached to its use, illustrating it all with a story ; it also mentions the legendary origin of Rudrākṣa, and describes the merit that would accrue to the wearer of a string of Rudrākṣa beads.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः । आपो वा इदमासन् सलिलमेव । स प्रजापति-
रेकः पुष्करपर्णे समभवत् । तस्यान्तर्मनसि कामस्समवर्तत । इदं सृजेयमिति ।
तस्माद्यत्पुरुषो मनसाभिगच्छति । तद्वाचा वदति । तत्कर्मणा करोति । तदेषाभ्य-
नूक्ता । कामस्तदग्रे समवर्तताधि । मनसो रेतः प्रथमं यदासीत् ।

End :

ब्रह्मादिवन्दितं योगिध्येयं परं पदं यत्र गत्वा न निवर्तन्ते योगिनस्त-
देतद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव
चक्षुराततम् । तद्विष्णोः विपन्यवो जागृवांसस्समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ।
ओं सत्यमित्युपनिषत् । अष्टमब्राह्मणम् ।

Colophon :— बृहज्जाबालोपनिषत् समाप्ता.

No. 630. बृहज्जाबालोपनिषत्.

BRHAJJĀBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 10. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 21a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 631. बृहज्जाबालोपनिषत्.

BRHAJJĀBĀLŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $14\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 28.

Lines, 9 on a page. Character, Grantha. Condition, good.

Appearance, old.

Contains only 7 Brāhmaṇas, but is stated to be complete.

Begins on fol. 162*a*. The other works herein are Viṣṇu-
purāṇa (1*a*), Mātṛbhūtēśvarastōtram (160*a*), Rudrākṣadhāraṇa-
vidhiḥ (176*a*), Haristutivyākhyā (177*a*), Śrutabōdham (229*a*).

No. 632. बृहज्जाबालोपनिषत्.

BRHAJJĀBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 28. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 23*b* of the M3. described under No. 285.

Contains only 7 Brāhmaṇas like the preceding.

No. 633. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $17\frac{1}{4} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 166. Lines,
6 on a page. Character, Grantha. Condition, injured. Appear-
ance, old.

Complete.

It consists of 6 Adhyāyas from the 3rd to the 8th Adhyāya of
the Āranyaka of the Śuklayajurveda.

After treating of अविद्या in the first chapter, this Upaniṣad
gives in the next three chapters a lengthy discourse between
Janaka Vidēba and Yājñavalkya regarding the true nature of
the Supreme Being and of His relation to the universe; the
fifth and the sixth chapters deal with a number of Upāśanas or
modes of meditation and worship as leading to the salvation of

Mōkṣa or to the attainment of the highest wisdom which delivers one from the bondage of **Karma** and reincarnation.

Begins on fol. 1a. The other works herein are : **Dadhivāmana-stōtram** (85a), **Rāmakavacam** (86a), **Rāmahujanḡastōtram** (88b), **Gāyatrīsāvitrisarasvatikavacaḥ** (90a), **Rāmānusmṛtiḥ** (90b), **Rāma-durgāstōtram** (91b), **Prātassmaranīyastōtram** (92b).

Beginning :

उषा वा अश्वस्य मेध्यस्य शिरस्सूर्यश्चक्षुर्वातः प्राणो व्यास(त्त)मग्निर्वैश्वानरः संवत्सर आत्माश्वस्य मेध्यस्य द्यौः पृष्ठमन्तरिक्षमुदरं पृथिवी पाजस्यन्दिशः पार्श्वे अवान्तरदिशस्पर्शव ऋतवोऽङ्गानि मासाश्चार्द्धमासाश्च पर्वाण्यहोरात्राणि प्रतिष्ठा नक्षत्राण्यर्क्षानि ।

End :

समानमासाङ्गीविपुत्रात् । साङ्गीविपुत्रो माण्डूकायनेर्माण्डूकायनिः माण्डव्यान्माण्डव्यः कौत्सात्कौत्सिर्माहित्थेर्माहित्थिर्वामकक्षायणाद्वामकक्षायण-
शशाण्डिल्याच्छाण्डिल्यो वात्स्याद्व्रात्यः कुश्रेः कुश्रिर्यज्ञवचसो राजस्तम्बायनाद्यज्ञवचा राजस्तम्बायनस्तुरात्कावषेयात्तुरः कावषेयः प्रजापतेः प्रजापतिर्ब्रह्मणो ब्रह्म स्वयंभु ब्रह्मणे नमः.

Colophon :— इति बृहदारण्ये अष्टमोऽध्यायः ॥

At the end there is an index, relating to the beginning of the **Adhyāyas**, followed by a few stray passages from the **Yajur-Veda** extending over two pages.

No. 634. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 5 on a page.

This MS. has been described under No 306.

Begins on fol. 1a.

Contains from the 7th Khaṇḍa, 5th Brāhmaṇa, 6th Adhyāya, to the end of the Adhyāya.

Pages, 16. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 6a.

Contains the fifth Adhyāya ; complete.

Pages, 20. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 48a.

The sixth Adhyāya ; complete.

No. 635. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Pages, 25. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 75a of the MS. described under No. 276.

Contains only the sixth Adhyāya.

No. 636. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Pages, 105. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 304.

Complete.

Another copy.

The colophon herein runs thus:— इति वाजसनेयान्तर्गतका-
प्वीये शुक्लयजुर्वेदे शतपथब्राह्मणे सप्तदशकाण्डे बृहदारण्यकाण्डे षष्ठोऽ-
ध्यायः ॥

No. 637. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 17 × 1½ inches. Pages, 118. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, much injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Viṣṇupāramya-samarthanam (63a).

The leaves of the Upaniṣad and its commentary are mixed promiscuously, and the pages are not marked.

No. 638. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Pages, 132. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 56a of the MS. described under No. 458.

Complete.

Another copy.

No. 639. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $9\frac{3}{4} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Pages, 140. Lines, 12 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Between the 4th and the 5th Adhyāyas, the 8th and the 7th Adhyāyas are again found written, beginning on fol. 42a and extending over 28 pages.

Begins on fol. 23a. The other works herein are Brhadāraṇyakōpaniṣadbhāṣyaṭikā (1a), Brhadāraṇyakōpaniṣadbhāṣyam (93a).

Complete.

No. 640. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Pages, 22. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 292.

Contains the 6th Adhyāya of the Upaniṣad.

No. 641. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 52. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Contains the 5th and the 6th Adhyāyas of the Upaniṣad.

No. 642. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Pages, 18. Lines, 7 on a page

Several leaves are broken.

Begins on fol. 52a of the MS. described under No. 256.

Adhyāyas 6 to 8.

No. 643. बृहदारण्यकोपनिषत्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, $15\frac{3}{4} \times 2\frac{1}{2}$ inches. Pages, 74.

Lines, 11 on a page. Character, Grantha. Condition, good.

Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Khilarcaḥ 38a.

Complete.

The copying of this MS. is said to have been completed on Sunday (13th lunar day) the 14th of Māṣi (February-March) of Kilaka year by one Kaccapēśvaran.

No. 644. बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम्.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 472. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 93a of the MS. described under No. 639.

Complete.

This commentary is by Śaṅkarācārya.

Beginning:

ओं नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासंप्रदायकर्तृभ्यो नमो वंशऋषि-
भ्यो नमो गुरुभ्यः । ओम् उषा वा अश्वस्येत्येवमाद्या वाजसनेयब्राह्मणोपनिषत्-
स्या इयमल्पग्रन्था वृत्तिरारभ्यते । संसारनद्या नि(वि)वृत्तुभ्यस्संसारहे-
तुनिवृत्तिसाधनविद्याप्रतिपत्तये सेयं ब्रह्मविद्योपनिषच्छब्दवाच्या तत्पराणां
सहेतोस्संसारस्य अत्यन्तावसादनादुपनिष्वस्य सदेस्तदर्थत्वात् तादर्थ्या-
द्ग्रन्थोऽपि उपनिषदित्युच्यते । सेयं षडध्याय्यरण्येऽनूच्यमानत्वादारण्यकम् ।
बृहत्त्वात् परिमाणतो बृहदारण्यकम् । तस्या(ः) कर्मकाण्डेन सम्बन्धोऽभिधीयते ।

*

*

*

*

अतोऽस्मात्क्रियाकारकफलरूपादेतावदिदमिति साध्यसाधनरूपाद्विरक्तस्य
कामादिदोषकर्मबीजभूताविद्यानिवृत्तये रज्ज्वामिव सर्पज्ञानापनयनाय ब्रह्म-
विद्यारभ्यते.

प्रत्यगाढान्धकारप्रविघटनपटुज्ञानदानोत्सुकाभ्यां
सत्यज्ञानात्मकाभ्यां बहुविधजगतः कारणाभ्यां शिवाभ्याम् ।
कारुण्यश्रीकटाक्षामृतरसविलसल्लोचनाम्भोरुहाभ्यां
भूयो भूयः प्रकुर्मस्त्रिविधमपि नमोऽनीश्वराभ्यां गुरुभ्याम् ॥

तत्र तावदश्वमेधविज्ञानाय उषा वा अश्वस्येत्यादि । तत्र अश्व-
मेधविषयमेव दर्शनमुच्यते प्राधान्यात् । अश्वस्य प्राधान्यं च तन्नामाङ्कितत्वात्
क्रतोः । प्राजापत्यत्वाच्च उषा इति ब्राह्मो मुहूर्त उषा । वैशब्दः स्मरणार्थः

End :

यस्ते स्तन इत्यादिमन्त्रेण अथास्य मातरमभिमन्त्रयते इलासीत्यनेन
तं वा एतमाहुरित्यनेन विधिना ।

ज्ञ(जा)तः पुत्रः पितरं पितामहं चातिशेते श्रिया यशसा ब्रह्मवर्चसेन च
परमां निष्ठां प्रापदित्येवं स्तुत्यो भवतीत्यर्थः । यस्य चैवंविदो ब्राह्मणस्य

पुत्रो जायते तेन चैवं स्तुत्यो भवतीत्यध्याहार्यः । अष्टमस्य चतुर्थं ब्राह्म-
णम् ।

*

*

*

*

नमो वंशऋषिभ्यो वेदाचार्येभ्यो नमः ।

नमस्तदनुवर्तिभ्यो गुरुभ्यो नम ऋषिभ्यः ॥

Colophon :

इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य
श्रीशङ्करभगवतः कृतौ बृहदारण्यकटीकायामष्टमोऽध्यायः ॥ समाप्तोऽयं ग्रन्थः ॥

✓

No. 645. बृहदारण्यकभाष्यटीका.

BRHADĀRANYAKABHĀṢYATĪKĀ.

Substance, palm-leaf. Size, $17\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 588. Lines,
7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appear-
ance, old.

III to VII Adhyāyas.

A gloss on Śaṅkarācārya's commentary on the Upaniṣad by
Ānandajñāna, pupil of Śuddhānanda.

Beginning :

यद्विद्यावशाद्विश्वं दृश्यते रशनाहिवत् ।

यद्विद्यया च तद्भानिस्तं वन्दे पुरुषोत्तमम् ॥

नमस्त्रयन्तसन्दोहसरसीरुहबन्धवे ।

गुरवे परपक्षौघध्वान्तध्वंसपटीयसे ॥

भगवत्पादपादाब्जद्वन्द्वं द्वन्द्वनिबर्हणम् ।

सुरेश्वरादिसद्भृङ्गैः अवलम्बितमाभजे ॥

बृहदारण्यके भाष्ये शिष्योपकृतिसिद्धये ।

सुरेश्वरोक्तिमाश्रित्य क्रियते न्यायनिर्णयः ॥

ओं काण्वोपनिषद्विवरणव्याजेनाशेषामेवोपनिषदं शोधयितुकामो भगवान्
भाष्यकारो विघ्नोपशमादिसमर्थं शिष्टाचारप्रमाणकं परापरगुरुनमस्काररूपं
मङ्गलमाचरति । नमो ब्रह्मादिभ्य इति.

End :

भवद्विराराधितो भवतां यथोक्तं फलं साधयिष्यामीत्याशङ्कचाह
किन्त्विति । बहुमतत्वं भक्तिश्रद्धातिरेकयुक्तत्वम् । यागादिनापि परिचरणा क्रि-
यतामित्याह अन्यदिति । सन्ततनमस्कारोक्त्या परिचरामेति पूर्वेण संबन्धः ।
अशक्तिश्च मुमूर्षावशादिति द्रष्टव्यम् । इतिशब्दोऽध्यायपरिसमाप्त्यर्थः ॥

Colophon :

इति श्रीशुद्धानन्दपूज्यपादशिष्यभगवदानन्दज्ञानकृतायां बृहदारण्य-
भाष्यटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥

नमद्बुद्ध्यादिसम्बन्धबन्धावध्वसहेतवं ।

नित्यशुद्धिचिदानन्दसिन्धवे हरये नमः ॥

वेदान्तशास्त्रासिद्धान्तसारसर्वस्वदायिने ।

अभेद्यहृदयग्रन्थिभेदिने गुरवे नमः ॥

Written on Monday, the 15th of Bhādrapada-Sūddha of Yuva
Sainvatsara, by Kōḍālī Rāmayya for Kōṭi Veṅkannanāyaka.

No. 646. बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यटीका.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢADBHĀṢYATĪKA.

Pages, 44. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 639.

• Incomplete. Same as the last.

No. 647. बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्याख्या.

BRHADĀRANYAKĪPANIṢADVYAKHYĀ.

Substance, palm-l. af. Size, 16½ × 1½ inches. Pages, 152. Lines,
5 on a page. Character, Telugu. Condition. good. Appear-
ance, old.

Contains only the 5th and the 6th Adhyāyas.

This is a commentary, named *Mitākṣara*, on the Upaniṣad by Nityānandaśrama, pupil of Puruṣōttamaśrama.

Beginning :

एवमागमप्रधानेन मधुकाण्डेनोक्तमेवार्थमुपपत्त्या निरूपयितुं तत्प्रधानं मुनिकाण्डमारभ्यते । तत्रोपपत्तीनां वादजल्परूपेण द्वैविध्यात्मकत्वं च तमे (पञ्चमे)ऽध्याये जल्पकथायां युक्तयो निरूप्यन्ते । तन्निरूपणाय तत्प्रस्तावं कर्तुमाख्यायिकां विज्ञानस्तुत्यर्थं विद्याप्राप्त्युपायदानप्रदर्शनार्थं वा आश्वल-ब्राह्मणेनारचयति ।

End :

अन्यत् पाठान्तरमपि समानार्थं सुखबोधं चेत्युपरम्यते । एतावता पंरिसमाप्तो ब्रह्मविद्यारम्भः शास्त्रार्थस्सकलोऽपि ।

इति षष्ठाध्यायस्य पञ्चमब्राह्मणम् ।

अथ साङ्गोपाङ्गविद्याकथनानन्तरं याज्ञवल्कीयकाण्डस्य वंशः कथ्यते । शेषं मधुकाण्डवंशब्राह्मणवद्व्याख्येयम् । इति षष्ठाध्यायस्य षष्ठं ब्राह्मणम् ॥

Colophon :

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीपुरुषोत्तमाश्रमपूज्यपादशिष्यनि-त्यानन्दाश्रमविरचितायां मिताक्षरायां षष्ठोऽध्यायः ॥

No. 648. बृहदारण्यकोपनिषद्भाष्यम्.

BRHADĀRANYAKŪPANIṢADBHĀṢYAM.

Substance, paper. Size, 7½ × 4½ inches. Pages, 190. Lines, 12 on a page. Character, Devanāgarī. Condition, injured. Appearance, old. The first leaf is lost.

Breaks off in the 8th Adhyāya.

This is a metrical commentary on the Upaniṣad by Ānanda-tīrtha.

Beginning :

. . . देवता एव सर्वशः ॥
 ततन्नामैव नामैषां भिन्नानाम(विधा)नतः ।
 नामानि तान्यपि हरेः स हि सर्वगुणाधिकः ॥

इति नारदीये.

उषा शिरो ब्रह्मविद्या तत्त्वमस्यादयोऽखिलाः ।
 सप्तम्यर्थास्समुद्दिष्टाः पञ्चम्यर्थास्त . . . (था पुनः) ॥
 षष्ठ्यर्थश्च चतुर्थ्यर्थः समानार्थश्च सर्वशः ।
 तदैक्यवाचिवच्छब्दा अपि तद्वत्त्ववाचकाः ॥
 सप्तम्यर्था नैव ते सर्वे भिन्नरूपा यतः सदा ।
 ईशाङ्गवाचिनो वास्यस्तेषामेव तदर्थतः ॥
 सप्तसु प्रथमा यस्मात् तत्तद्योग्यार्थता भवेत् ।
 इति ब्रह्मतर्कः.

*

*

*

*

Colophon :

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादविरचिते श्रीमद्बृहदारण्यकभाष्ये सप्त-
 मोऽध्यायः ।

अहंश्रेयोविवादन्तु येन कृत्वाखिलास्सुराः ।

असमर्थास्स्वरक्षायां स वायुः सुरनायकः ॥

वि(व)दन्तोऽखिला देवा ययुर्नारायणं प्रभुम् ।

End :

यस्य त्रीण्युदितानि वेदवचनै रूपाणि दिव्यान्यलं
 तत्तद्दर्शिनमित्थमेव निहितं देवस्य भर्गो महत् ।
 वायो रामवचोनयं प्रथमकं पृक्षो द्वितीयं वपुः

मध्वो यत्तु तृतीयकं कृतमिदं भाष्यं हि तेन प्रभौ ॥
हनुशब्दो ज्ञानवाची हनुमान् मतिश . . .

No. 649. ब्रह्मविद्योपनिषत्.

BRAHMAVIDYÔPANISAD.

Pages, 12. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 1406 of the MS. described under No. 250.

Complete.

The first Khaṇḍa of this coincides with the *Brahmabindūpaniṣad*.

After explaining the greatness of the *Prāṇava*, ओम्, this *Upaniṣad* teaches the *Hamsavidyā*, which consists in repeating the word *Hamsa* after performing certain *Yōgic* practices in respect of controlling the breath, &c., and explains its great value as a help to *Yōga* and self-realization. It eulogizes the Supreme Wisdom of the Supreme Being and points out that He is omnipotent as the Self of the Universe.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः । अथ ब्रह्मविद्योपनिषदुच्यते ।

प्रसादाद्ब्रह्मणस्तस्य विष्णोरद्भुतकर्मणः ।

रहस्यं ब्रह्मविद्यायां ध्रुवार्णि संप्रचक्षते ॥

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म यदुक्तं ब्रह्मवादिभिः ।

शरीरं तस्य वक्ष्यामि स्थानं कालत्रयन्तथा ॥

End :

सत्यस्वरूपचिन्मात्रसिद्धस्सर्वात्मकोऽस्म्यहम् ।

सर्वाधिष्ठानसन्मात्रस्वात्मबन्धहरोऽस्म्यहम् ॥

सर्वग्रासोऽस्म्यहं सर्वद्रष्टा सर्वानुभूरहम् ।
एवं यो वेद तत्त्वेन स वै पुरुष उच्यते ॥ इत्युपनिषत् ॥

Colophon :

ब्रह्मविद्योपनिषत्समाप्ता ॥

No. 650. ब्रह्मविद्योपनिषत्.
BRAHMAVIDYÔPANISAD.

Pages, 4. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 60a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 651. ब्रह्मविद्योपनिषत्.
BRAHMAVIDYÔPANISAD.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 60b of the MS. described under No. 285.

Complete.

The first 13 stanzas of this Upaniṣad are herein given under the name of Praṇavôpaniṣad.

End :

कांस्यघण्टानिनादस्य यथा लीयति शान्तये ।
ओंकारस्तु तथा योज्यः शान्तये सर्वमिच्छता ॥
यस्मिन् स लीयते शब्दः तत्परं ब्रह्म गीयते ।

ब्रह्म परं ब्रह्म स्थ लीयते ध्रुवं स्थ लीयते ब्रह्मणोऽमृतत्वाय कल्पते
सोऽमृतत्वाय कल्पते सोऽमृतत्वाय कल्पत इति ।

Colophon :— प्रणवोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 652. ब्रह्मबिन्दूपनिषत्.

BRAHMABINDŪPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 322.

Complete.

This contains the first Khaṇḍa of the ब्रह्मविद्योपनिषत् but is called by a different name.

The colophon herein is ब्रह्मबिन्दूपनिषत्समाप्ता ॥

No. 653. ब्रह्मविद्योपनिषत्.

BRAHMAVIDYŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 13b of the MS. described under No. 116.

Complete.

This is another copy of the preceding, but is called ब्रह्मविद्योपनिषत्.

No. 654. ब्रह्मविद्योपनिषत्.

BRAHMAVIDYŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 128b of the MS. described under No. 180.

Complete.

No Śānti is given. This is like the work described under No. 652, but the following stanza is found in the beginning.

ओम् । ब्रह्मविद्यां प्रवक्ष्यामि सर्वज्ञानमनुत्तमम् ।
यतोत्पत्तिलयं चैव ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान् ॥

No. 655. ब्रह्मोपनिषत्.

BRAHMÔPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad teaches the undifferentiated oneness of the Supreme Being and teaches also that, in the case of the man who has obtained this knowledge, the external marks and the ritualistic symbols of the Brahminical life are not at all required.

Beginning :

ब्रह्मकैवल्यजावालश्चेताश्चो हंस आरुणिः ।

गर्भो नारायणो हंसो बिन्दुनादशिरः शिखा ॥

ओं सह नाववत्विति शान्तिः ।

अथास्य पुरुषस्य चत्वारि स्थानानि भवन्ति । नाभिर्हृदयं कण्ठं मूर्धा च । तत्र चतुष्पादं ब्रह्म विभाति । जागरिते ब्रह्मा । स्वप्ने विष्णुः । सुषुप्तौ रुद्रः । तुरीयमक्षरम् ।

End :

सर्वव्यापिनमात्मानं क्षीरे सर्पिरिवार्पितम् ।

आत्मविद्यातपोमूलं तद्ब्रह्मोपनिषत्परम् ॥

तद्ब्रह्मोपनिषत्परमिति ॥

Colophon :— ब्रह्मोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 656. ब्रह्मोपनिषत्.

BRAHMÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 657. ब्रह्मोपनिषत्.

BRAHMÔPANISAD.

Pages, 4. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 25a of the MS. described under No. 139.
Complete.

In the beginning the Śānti is given as भद्रं कर्णेभिः &c.

No. 658. ब्रह्मोपनिषत्.

BRAHMÔPANISAD.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 19b of the MS. described under No. 300.
Complete.

No. 659. ब्रह्मोपनिषत्.

BRAHMÔPANISAD.

Pages, 7. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 401.
Complete.

The following Śāntis are given at the beginning :—

1. सह नाववतु, &c.
2. भद्रं कर्णेभिः, &c.
3. नमो ब्रह्मादिभ्यः नमो गुरुभ्यः, &c.
4. यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वम्, &c.

No. 660. ब्रह्मोपनिषत्.

BRAHMÔPANISAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 116.
Complete.

No. 661. ब्रह्मोपनिषत्.

BRAHMÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 41b of the MS. described under No. 534.

Complete.

No. 662. ब्रह्मोपनिषत्.

BRAHMÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 51b of the MS. described under No. 276.

Complete.

No. 663. ब्रह्मोपनिषत्.

BRAHMÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 61a of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.

No. 664. ब्रह्मोपनिषद्दीपिका.

BRAHMÔPANIṢADDÎPIKĀ.

Pages, 17. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 40a of the MS. described under No. 316.

Complete.

This commentary is by Śaṅkarānanda, pupil of Ānandātman.

Beginning :

कृष्णद्वैपायनं व्यासं शङ्करं लोकशङ्करम् ।

आनन्दात्मानमव्यात्मा(न्मा) गुरुं देवं नतोऽस्म्यहम् ॥

ब्रह्मोपनिषदं नाम ब्रह्मात्मैक्यावबोधिनीम् ।

व्याकरिष्यामि तेनेदं ब्रह्म तुष्यतु सर्वगम् ॥

त्वं ब्रह्मासीत्युक्ते अनधिकारिणः कर्तृत्वादिविपरीतज्ञानवतो योगत्वेनै-
तद्बोधो जायते । ततोऽन्यबोधोत्पादनार्थं नाभ्यादिस्थानान्युररीकृत्य विविधो-
पायानाह । अथ उपनिषदारम्भे श्रुत्या मङ्गलप्रयोजनोऽथशब्दोऽधिकारिण-
माह ।

End :

तद्ब्रह्मोपनिषत्पदं व्याख्यातम् । पदाभ्यास उपनिषदर्थपरिसमाप्त्यर्थः ।
इतिः उपनिषत्समाप्त्यर्थः ॥

Colophon :

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यानन्दात्मपूज्यपादशिष्यस्य श्रीशङ्क-
रानन्दभगवतः कृतिर्ब्रह्मोपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥

No. 665. ब्रह्मोपनिषद्दीपिका.
BRAHMÔPANISADDÎPIKÂ.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 183a of the MS. described under No. 316.

This is the last portion of the commentary noticed under the last number.

No. 666. ब्रह्मोपनिषद्दीपिका.
BRAHMÔPANISDDÎPIKÂ.

Pages, 20. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 73a of the MS. described under No. 412.

Complete.

This is a copy of the MS. described under No. 664.

No. 667. भस्मजाबालोपनिषत्.
BHASMAJÂBÂLÔPANISAD.

Pages, 14. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 117b of the MS. described under No. 246.

Complete.

In this Upaniṣad Paramēśvara teaches Bhusuṇḍa Jābāla that Śiva is the Supreme Being who transcends Brahmā, Viṣṇu and Rudra, that His devotees should necessarily besmear their body with the sacred ashes (भस्म), that the six-syllabled and eight-syllabled Mantras—ओं नमः शिवाय and ओं नमो महादेवाय - should be repeated by them, and that they should all worship the Liṅga as a means of representing Him who is really unrepresentable.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

अथ जाबालो भुसुण्डः कैलासशिखरावासमोङ्कारस्वरूपिणं महादे-
वमुमार्धकृतशेखरं सोमसूर्याग्निनयनमनन्तेन्दुरविप्रभं व्याघ्रचर्माम्बरधरं
मृगहस्तं भस्मोद्भूलितसर्वाङ्गम् ।

*

*

*

*

भगवन्तं शिवं प्रणम्य मुहुर्मुहुरभ्यर्च्य श्रीफलदलैस्तेन भस्मना च न-
तोत्तमाङ्गः कृताञ्जलिपुटः पप्रच्छ अधीहि भगवन् वेदसारमुद्धृत्य त्रिपुण्ड्र-
विधिम् । यस्मादन्यानपेक्षमेव मोक्षोपलब्धिः ।

End :

ये चान्ये काश्यां पुरीषकारिणः प्रतिग्रहरतास्त्यक्तभस्मधारणास्त्यक्त-
रुद्राक्षधारणास्त्यक्तसोमवारव्रतास्त्यक्तगृहयागास्त्यक्तविश्वेश्वरार्चनास्त्यक्तपञ्चा-
क्षरजपास्त्यक्तभैरवार्चना भैरवीं घोरादि(रां)यातनां नानाविधां काश्यां
परेता भुक्त्वा ततश्शुद्धा मां प्रपद्यन्ते च । अन्तर्गृहे रेतो मूत्रं वा विसृजन्ति
तदा तेन सिञ्चन्ते पितृन् . . . ततश्चाप्रमादेन निवसेदप्रमादेन निवसेत्
काश्यां लिङ्गरूपे(पि)ण्यामित्युपनिषत् ।

Colophon :— भस्मजाबालोपनिषत् समाप्ता.

No. 668. भस्मजाबालोपनिषत्.
BHASMAJĀBĀLŌPANĪṢAD.

Pages, 6. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 158b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 669. भस्मजाबालोपनिषत्.
BHASMAJĀBĀLŌPANĪṢAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 66b of the MS. described under No. 285.

Complete.

This version of the Upaniṣad is said to belong to the R̥gvēda and is therefore different from that described under No. 667.

Beginning :

अथ जनको ह वैदेहः पैप्पलादेन सह प्रजापतेर्लोकं जगाम । तं गत्वोवाच
भोः प्रजापते त्रिपुण्ड्रविधिं ब्रूहीति [होवाच] । तं प्रजापतिरब्रवीत् यथैवेश्वरस्य
माहात्म्यं तथैव त्रिपुण्ड्रस्य माहात्म्यमिति [होवाच] ॥

End :

अथ कालाग्निरुद्रः प्रोवाच योगध्यानानां शिव एको ध्येयः शिवङ्करः ।
सर्वमन्यत् परित्यज्य एतामधीत्य द्विजो वा साम्राज्याधिपतिर्वा गर्भवासान्मुच्यत
इत्यो सत्यम् । अथ कालाग्निरुद्रः प्रोवाच सकृज्जप्त्वैव शुचिः पूतकर्मण्यो
भवति । द्वितीयं जप्त्वा गाणपत्यमवाप्नोति । तृतीयं जप्त्वा देवमेवानुप्रविशत्यो
सत्यम्.

Colophon :— इति ऋग्वेदे भस्मजाबालोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 670. भावनोपनिषत्.
BHĀVANŌPANĪṢAD.

Pages, 4. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 103a of the MS. described under No. 246.

Complete.

In this Upaniṣad the body is likened unto the Śrīcakra by the respective identification of their various parts ; and the various activities of the mind are stated to constitute the worship of this Śrīcakra, which is a mystic figure used in the worship of Śakti. The name of the Upaniṣad is due to the fact that in it there is the Bhāvanā or *conception* of the body as the Śrīcakra.

Beginning :

भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः । ओं श्रीगुरुपरमकारणभूता शक्तिः केन नवरन्ध्र-
रूपेण देहः नवशक्तिमयं श्रीचक्रम् । वाराही पितृरूपा कुरुकुला वल्ली देवता
माता । पुरुषार्थास्सागराः । देहो नवरत्नद्वीपः । आधारनवकमुद्राशक्तयः ।

End :

• स्वयं तत्पादुकानिमज्जनं परिपूर्णध्यानम् एवमुद्धर्तत्रयं भावनया युक्तो
जीवन्मुक्तो भवति । तस्य देवात्मैक्यसिद्धिः । चिन्तितकार्याण्ययत्नेन-
सिध्यन्ति । स एव शिवयोगीति कथ्यत इत्युपनिषत् ॥

Colophon :— भावनोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 671. भावनोपनिषत्.

BHĀVANĀNĪṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 153⁶ of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 672. भावनोपनिषत्.

BHĀVANĀNĪṢAD.

Pages, 4. Lines, 17 on a page.

Begins on fol. 14^a of the MS. described under No. 522.

Complete.

Though this is called भावनोपनिषत् in the colophon, it is identical with भावनोपनिषत्.

No. 673. भावनोपनिषत्.

BHAVANŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 17 × 1½ inches. Pages, 3. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 21*b*. The other works herein are :—

| | Fol. | | Fol. |
|------------------------|-------------|--------------------------|--------------|
| Saḍāmnāyaḥ | 1 <i>a</i> | Mātrkānyāsaḥ | 49 <i>b</i> |
| Mahāṣōḍaśyuddhāraḥ .. | 19 <i>a</i> | Cintāmaṇimantraḥ .. | 51 <i>a</i> |
| Yōgatattvōpaniṣad .. | 19 <i>b</i> | Khadgamālāstōtram .. | 51 <i>b</i> |
| Bijanirṇayaḥ | 20 <i>a</i> | Dēvimānasapūjā .. | 53 <i>a</i> |
| Ajapāgāyatrī | 23 <i>a</i> | Kāmakalāsūtram .. | 58 <i>a</i> |
| Mantrasandhyā | 24 <i>b</i> | Dēvimānasapūjā .. | 61 <i>a</i> |
| Mantravidyā | 25 <i>a</i> | Siddhāricakram .. | 65 <i>a</i> |
| Cakravidyā | 25 <i>b</i> | Kāṭhapradīpikā .. | 68 <i>a</i> |
| Cakrastavaḥ | 30 <i>b</i> | Pañcadaśīmantravyākhyā- | |
| Pañcamīstavarājaḥ .. | 32 <i>a</i> | nam. | 84 <i>b</i> |
| Indrāksīkavacaḥ | 37 <i>a</i> | Rāmadurgam | 88 <i>b</i> |
| Tryambakastōtram | 38 <i>a</i> | Rājarājēśvaristōtram .. | 89 <i>a</i> |
| Ṣōḍaśīkalpaḥ | 39 <i>a</i> | Lalitāsahasranāmastōtram | 92 <i>b</i> |
| Pañcaratnamālā | 39 <i>a</i> | Pañcadaśīkavacam .. | 100 <i>a</i> |
| Gurupāṅktistavaḥ | 40 <i>a</i> | Śyāmalāpūjāpaddhatiḥ | 103 <i>a</i> |
| Ṣōḍhānyāsaḥ | 40 <i>a</i> | Cakranyāsakavacaḥ .. | 104 <i>a</i> |
| Grahanyāsaḥ | 41 <i>a</i> | Śyāmalāsahasranāmāni | 107 <i>a</i> |
| Nakṣatrananyāsaḥ | 41 <i>b</i> | Dēvināmasārastavaḥ .. | 113 <i>a</i> |
| Yōginīnyāsaḥ | 42 <i>a</i> | Śrīkaṇṭhādīmātrkānyāsaḥ | 115 <i>a</i> |
| Rāśīnyāsaḥ | 44 <i>b</i> | Kēśavādīmātrkānyāsaḥ | 116 <i>a</i> |
| Pīṭhanyāsaḥ | 45 <i>a</i> | Tattvanyāsaḥ' | 117 <i>b</i> |
| Mahāṣōḍhānyāsaḥ | 45 <i>b</i> | Aṣṭatrinīṣatkalānyāsaḥ | 118 <i>a</i> |
| Prapañcanyāsaḥ | 46 <i>a</i> | Abhiṣēkakalpaḥ | 119 <i>a</i> |
| Bhuvananyāsaḥ | 46 <i>b</i> | Chāyāpuruṣalakṣaṇam | 125 <i>b</i> |
| Mūrtinyāsaḥ | 47 <i>b</i> | Ōghatrayam | 128 <i>a</i> |
| Mantranyāsaḥ | 49 <i>a</i> | Kuṇḍalinīhōmaprakāraḥ | 129 <i>a</i> |
| Dēvatānyāsaḥ | 49 <i>a</i> | Bā'ācakra-dhyānam .. | 132 <i>a</i> |

| | Fol. | | Fol. |
|--------------------------|------|----------------------------|-------|
| Svayamvarāmantrakalpaḥ | 133a | Parāśahasranāmastōtram | 150a |
| Bagalācakrōddhārāḥ .. | 136b | Śrividyaśratnasūtram | 159a. |
| Parāprāsādamantrōddhārāḥ | 137 | Śrividyaṣpūrvōttaratāpinī- | |
| Saṁviddēvimantraḥ .. | 144a | yam. | 161a |
| Santānagōpālamāntraḥ | 145a | Śrividyaṣayakōpanyāsaḥ | 167a |
| Sannyāśavidhiḥ .. | 145b | Śrīcakrāṣayōpanyāsaḥ | 170a |
| Parāśōttaraśatanāma- | | Dhūmāvātimantraḥ .. | 175a |
| stōtram. | 149a | | |

Complete.

The colophon herein is इति कादिमतोक्तभावनप्रकारेण भावनोपनि-
षत्समाप्ता ॥

No 674. भावनोपनिषत्.

BHĀVANŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 23 on a page.

Begins on fol. 104b of the MS. described under No. 169.

Complete.

This is named in the colophon as भावोपनिषत्.

No. 675. भावनोपनिषत्.

BHĀVANŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf (Śrītāla). Size, 4½ × 1½ inches. Pages, 8.

Lines, 10 on a page. Character, Grantha. Condition, good.

Appearance, old.

Begins on fol. 24a. The other works herein are : Gāyatrihṛdayam (1a), Gāyatrikavacam (12a), Gītāsārāḥ (15a), Lalitāsahasranāmastōtram (28a), Lalitātrīśatistōtram (40a), Tripurasundarikavacaḥ (44a), Mantrāvaliḥ (50a), Dūtiyajanaṁmantraḥ (84a), Saundaryalahari (119a).

Complete.

No. 676. भिक्षुकोपनिषत्.
BHIKṢUKŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 289a of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad classifies the Saunhyāsins under the four heads of Kuṭicaka, Bahūdaka, Hamsa and Paramahamsa, gives the distinguishing marks of, as well as the duties appertaining to, each of these classes, and finally names certain Rṣis who are respectively illustrative of these various classes of Saunhyāsins.

Beginning :

पूर्णमद इति शान्तिः । अथ भिक्षूणां मोक्षार्थिनां कुटीचकबहूदकहंस-
परमहंसाश्चेति चत्वारः । कुटीचको नाम गौतमभारद्वाजयाज्ञवल्क्यवसिष्ठ-
प्रभृतयोऽष्टौ त्रासांश्चरन्तो योगमार्गे मोक्षमेव प्रार्थयन्ते

End :

तत्र ब्रह्ममार्गे सम्यक् सम्पन्नाः शुद्धमानसाः परमहंसाचरणेन सन्न्या-
सेन देहत्यागं कुर्वन्ति ते परमहंसा नामेत्युपनिषत् ॥

Colophon :— भिक्षुकोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 677. भिक्षुकोपनिषत्.
BHIKṢUKŌPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 113b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 678. भिक्षुकोपनिषत्.
BHIKṢUKŌPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 277.

Complete. Same as the last.

No. 679. मण्डलब्राह्मणोपनिषत्.

MAṆḌALABRĀHMAṆŌPANISAD.

Pages, 12. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 2016 of the MS. described under No. 250.

Complete.

In this Upaniṣad the meaning and the manner of practical Yōga is taught to Yājñavalkya, by Nārāyaṇa, who is conceived to be within the orb of the sun, Yōga being declared to be a means for the attainment of the highest wisdom.

Beginning :

ओं पूर्णमद इति शान्तिः । याज्ञवल्क्यो ह वै मुनि(रादित्यलोकञ्जगाम ।
तमादित्यं नत्वा भो भगवन्नादित्यात्मतत्त्वमनुब्रूहीति । स होवाच नारायणः
ज्ञानयुक्तयमाद्यष्टाङ्गयोग उच्यते । शीतोष्णाहारनिद्राविजयः सर्वदा शान्तिः
निश्चलत्वं विषयेन्द्रियनिग्रहश्चैते यमाः । गुरुभक्तिसत्यमार्गानुरक्तिसुखा-
गतवस्त्वनुभव(1)श्च तद्वस्त्वनुभवेन तुष्टिनि(र्नि)स्सङ्गता एकान्तवासमनो-
निवृत्तिफलानभिलाषो वैराग्यभावश्च नियमाः । सुखासनवृत्तिश्चैरवासश्च
एवमासननियमा भवन्ति ॥

End :

एवं चिरसमाधिजनितब्रह्मामृतपानपरायणोऽसौ सन्न्यासी परमहंस अव-
धूतो भवति । तद्दर्शनेन सकलं जगत्पवित्रं भवति । तस्मेवापरोऽपि अज्ञोऽपि
मुक्तो भवति । तत्कुलमेकोत्तरशतं तारयति । तन्मातृपितृजायापत्यवर्गं च
मुक्तं भवतीत्युपनिषत् ॥ पञ्चमं ब्राह्मणम् ।

Colophon :— मण्डलब्राह्मणोपनिषत्समाप्ता ॥*

No. 680. मण्डलब्राह्मणोपनिषत्.

MAṆḌALABRĀHMAṆŌPANISAD.

Pages, 12. Lines 6. on a page,

Begins on fol. 82a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 681. मन्त्रिकोपनिषत्.

MANTRIKÔPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 94b of the MS. described under No. 250.

Complete.

In this Upaniṣad the *Avyaktavidyā* is taught. In this *Vidyā* or special mode of meditation and worship, the undifferentiated primordial matter and the undifferentiated consciousness are both enjoined to be used as the objects of meditation and worship, they being conceived to be helpful to the worshipper in enabling him to realize the true nature of the Supreme Being.

Beginning :

पूर्णमद इति शान्तिः ।

मन्त्रिकोपनिषत् ।

अष्टपादं शुचिं हंसं त्रिसूत्रमणुमव्ययम् ।

त्रिवर्त्मानं तेजसोऽहं सर्वतः पश्यन्न पश्यति ॥

भूतसम्मोहने काले भिन्ने तमसि वैखरे ।

अन्तः पश्यन्ति सत्त्वस्थाः निर्गुणं गुणगह्वरे ॥

End :

एवं स भगवान् देवं पश्यन्त्यन्ये पुनः पुनः ।

ब्रह्म ब्रह्मेत्यथायान्ति ये विदुर्ब्राह्मणास्तथा ॥

अत्रैव ते लयं यान्ति लीनाश्चाव्यक्तशालिनः ।

लीनाश्चाव्यक्तशालिन इत्युपनिषत् ॥

Colophon :— मन्त्रिकोपनिषत्.

No. 682. मन्त्रिकोपनिषत्.

MANTRIKŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 42*a* of the **MS.** described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 683. मन्त्रिकोपनिषत्.

MANTRIKŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 47*a* of the **MS.** described under No. 285.

Complete.

Another copy like the preceding.

No. 684. महानारायणोपनिषत्.

MAHĀNĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 55. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 1*a* of the **MS.** described under No. 254.

Complete.

This is the same as Tripādvibhūtimahānārāyaṇōpaniṣad described under No. 518. See therein for description and extracts.

No. 685. महानारायणोपनिषत्.

MAHĀNĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 81. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 98*b* of the **MS.** described under No. 180.

Complete.

The Śānti given in the beginning is भद्रं कर्णेभिः, &c. ।

No. 686. महानारायणोपनिषत्.

MAHĀNĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Pages, 23. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 19a of the MS. described under No. 383.

Wants beginning and end ; many leaves are wanting in the middle also.

No. 687. महानारायणोपनिषत्.

MAHĀNĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $17\frac{3}{8} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 29. Lines, 10 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, not old.

Complete. Another copy.

This was copied in the month of Āśvija of the year Ānanda.

No. 688. महानारायणोपनिषत्.

MAHĀNĀRĀYAṆŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $16\frac{1}{4} \times 1\frac{3}{8}$ inches. Pages, 41. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, not old.

Complete.

The following stanza is found in addition at the end of the colophon of the eighth Adhyāya :—

असाध्ये भ्रूमध्ये विलसति सदाराध्यमिनभं
सदा ध्या(ध्ये)यं श्रीमद्गुरुपदयुगं यश्चिवपदम् ।
लिलेखानन्तास्थो झटिति जलसूत्रान्वयभवः
स एव श्रीनारायणपरमतत्त्वोपनिषदम् ॥

No. 689. महावाक्योपनिषत्.
MAHĀVĀKYŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 143a of the MS. described under No. 246.

Complete.

In this Upaniṣad the universal illusion of Māyā is taught to be capable of being dispelled by the acquisition of the highest wisdom, which consists in actually realizing the identity of the individual soul with the Supreme Being.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

अथ होवाच ब्रह्मा अपरोक्षानुभवपरोपनिषदं व्याख्यास्यामः । गुह्याद्ब्रह्मतरमेषा न प्राकृतायोपदेष्टव्या । सात्त्विकायान्तर्मुखाय परिशुश्रूषवे । अथ संसृतिविद्यामोक्षयोर्विद्याविद्ये च चक्षुषी उपसंहृत्य विज्ञाय अविद्यालोकान्धस्तमोदृक् ।

End :

सोऽहमर्कः परं ज्योतिरर्कज्योतिरहं शिवः ।

आत्मज्योतिरहं शुक्रः सर्वज्योतिरसावहम् ॥

एतदथर्वशिरोऽधीते प्रातरधीयानो रात्रिकृतं पापं नाशयति . . .

सर्ववेदपारायणपुण्यं लभते । श्रीमहाविष्णुसायुज्यमवाप्नोति । इत्युपनिषत् ।

Colophon :—महावाक्योपनिषत् समाप्ता ।

No. 690. महावाक्योपनिषत्.

MAHĀVĀKYŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 168a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 691. महोपनिषत्.

MAHŌPANIṢAD.

Pages, 56. Lines, 23 on a page.

Begins on fol. 289b of the MS. described under No. 250.

Complete.

After explaining that the universe has proceeded from Nārāyaṇa who was in the beginning one without a second, this Upaniṣad deals with the illusory and unreal nature of the universe, and then it describes the unity of God by means of two dialogues, one being between Śuka and Janaka and the other between Nidāgha and Rbhu.

Beginning :

आप्यायन्त्विति शान्तिः । अथातो महोपनिषदं व्याख्यास्यामः । तदा-
हुरेको ह वै नारायण आसीत् न ब्रह्मा नेशानो नापो नाम्नीषोमौ नेमे द्यावा-
पृथिवी न नक्षत्राणि न सूर्यो न चन्द्रमास्स एकाकी न रमेत । तस्य
ध्यानान्तस्थस्य यज्ञस्तोममु(उ)च्यते । तस्मिन्पुरुषाश्चतुर्दशाजायन्ते(न्त) ॥

End :

संशान्तनवसंवेद्यं संविन्मात्रमहम्महत् ।

संशान्तसर्वसङ्कल्पः प्रशान्तसकलैषणः ॥

निर्विकल्पपदं गत्वा स्वस्थो भव मुनीश्वर ।

य इमां महोपनिषदं ब्राह्मणो नित्यमधीते अश्रोत्रियः श्रोत्रियो
भवति

आसप्तमान् पुरुषयुगान् पुनाति इत्याह भगवान् हिरण्यगर्भः । जाप्ये-
नामृतत्वं च गच्छति । इत्युपनिषत् । षष्ठोऽध्यायः ॥

Colophon :—महोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 692. महोपनिषत्.

MAHŌPANIṢAD.

Pages, 20. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 113b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 693. महोपनिषत्.
MAHŌPANISAD.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 49a of the MS. described under No. 285.

Contains only a portion of the first Adhyāya.

No. 694. माण्डूक्योपनिषत्.
MĀNDŪKYŌPANISAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 2a of the MS. described under No. 203.

Complete.

This Upaniṣad describes the meaning and the power of Praṇava as a means of knowing the nature and the reality of the self. A number of Ślōkas by Gauḍapāda in interpretation of the Upaniṣad is considered by some to form part of the Upaniṣad itself. They are divided into four Prakaraṇas, and expound the Advaita school of the Vēdānta, and are intended to meet certain objections that may be raised against that school.

In this MS. the first Prakaraṇa of Gauḍapādakārikā is mixed up with the Upaniṣad; and therefore the extract from the end happens to be a passage of the Kārikā. For the end of the Upaniṣad itself see under the next number.

Beginning :

ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानं भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमो-
ङ्कार एव । यच्चान्यत् त्रिकालातीति तदप्योङ्कार एव । सर्वं हेतुद्रव्यायमात्मा ब्रह्म
सोऽयमात्मा चतुष्पाज्जागरितस्थानो बहिः प्रज्ञस्सप्ताङ्ग एकोनविंशतिमुखः स्थूल-
सुक्ष्मैश्वरानरः प्रथमः पादः । स्वप्नस्थानोऽन्तः प्रज्ञः सप्ताङ्ग एकोनविंशति-
मुखः प्रविविक्तभुक्तैजसो द्वितीयः पादः ॥

End :

सर्वस्य प्रणवो ह्यादिर्मध्यमन्तस्तथैव च ।

एवं हि प्रणवं ज्ञात्वा व्यश्रुते तदनन्तरम् ॥

प्रणवं हीश्वरं विद्यात् सर्वस्य हृदये स्थितम् ।
 सर्वव्यापिनमोङ्कारं मत्वा धीरो न शोचति ॥
 अमात्रोऽनन्तमात्रश्च प्रपञ्चोपशमदिशवम् ।
 ओङ्कारो विदितो येन स मुनिर्नेतरो जनः ॥

Colophon :—इति माण्डूक्योपनिषत्समाप्ता ॥

No. 695. माण्डूक्योपनिषत्.

MĀNDŪKYĪPANĪṢAD.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 25a of the MS. described under No. 292.

Complete.

This codex gives the Upaniṣad alone, and the final passage is as given below :—

End :

अमात्रश्चतुर्थो व्यवहार्यप्रपञ्चोपशमः शिवोऽद्वैतमोङ्कार आत्मैव
 संविशति । आत्मनात्मानं य एवं वेदेत्युपनिषत्.

There is another copy of the Upaniṣad on fol. (38a) extending over two pages ; and on fol. (39a) the Kārikā of Gauḍapāda containing only the Āgamaprakaraṇa is found.

No. 696. माण्डूक्योपनिषत्.

MĀNDŪKYĪPANĪṢAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fols. 16a and 8a of the MS. described under No. 300.

Complete.

Another copy of the preceding.

No. 697. माण्डूक्योपनिषत्.

MĀNDŪKYŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 140a of the MS. described under No. 302.

Complete.

Another copy. There is yet another copy of this work herein beginning on fol. 141a and extending over two pages.

No. 698. माण्डूक्योपनिषत्.

MĀNDŪKYŌPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 20a of the MS. described under No. 116.

Complete.

Another copy.

No. 699. माण्डूक्योपनिषत्.

MĀNDŪKYŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 55b of the MS. described under No. 276.

Complete.

Another copy. The Śānti is herein given as भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

No. 700. माण्डूक्योपनिषत्.

MĀNDŪKYŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 114b of the MS. described under No. 180.

Complete.

Another copy like the one described under No. 694.

No. 701. माण्डूक्योपनिषत्.

MĀṆḌŪKYŌPANIṢAD.

Pages, 7. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 32*b* of the MS. described under No. 284.

Complete.

Another copy like the preceding.

No. 702. माण्डूक्योपनिषत्.

MĀṆḌŪKYŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 18*b* of the MS. described under No. 256.

Complete.

There is another copy of the same work herein beginning on fol. (20*a*) of the MS. : it is in Grantha characters and extends over four pages ; it is like the one described under No. 694.

No. 703. माण्डूक्योपनिषत्.

MĀṆḌŪKYŌPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 22*a* of the MS. described under No. 309.

Complete. Same as the one described under No. 694.

✓ No. 704. माण्डूक्योपनिषद्भाष्यम्.

MĀṆḌŪKYŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 111. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 142*a* of the MS. described under No. 302.

Complete.

This commentary by Śaṅkarācārya is on the Upaniṣad as well as on the Gauḍapāda-kārikā.

Beginning :

प्रज्ञानांशुप्रतानैः स्थिरचरनिकरव्यापिभिर्व्याप्य लोकान्
 भुक्त्वा भोगान् स्थविष्ठान् पुनरपि धिषणोद्भासितान् कामजन्यान् ।
 पीत्वा सर्वान् विशेषान् स्वपिति मधुरमुष्मायया मोहयन्नो
 मायासङ्घचातुरीयं परममृतमजं ब्रह्म यत्तन्नतोऽस्मि ॥
 यो विश्वात्मा विधिजविषयान् प्राश्य भोगांस्थविष्ठान्
 पश्चाच्चान्यान्स्वमतिविभवान् ज्योतिषा स्वेन सूक्ष्मान् ।
 सर्वानेतान् पुनरपि शनैः स्वात्मनि स्थापयित्वा
 खात्वा सर्वान् विशेषान् विगतगुणगणः पात्वसौ नस्तुरीयः ॥

ओमित्येतदक्षरमिदं सर्वं तस्योपव्याख्यानं वेदान्तार्थसारसङ्ग्रहभूत-
 मिदं प्रकरणचतुष्टयमोमित्येतदक्षरमित्याद्यारभ्यते । अत एव न पृथक्
 संबन्धाभिधेयप्रयोजनानि वक्तव्यानि । यान्येव तु वेदान्ते संबन्धाभिधेय-
 प्रयोजनानि तान्येवेह भवितुमर्हन्ति तथापि प्रकरणव्याचिख्यासुना संक्षेपतो
 वक्तव्यानीति मन्यन्ते व्याख्यातारः . . .

ब्रह्माविद्याप्रकाशनायास्यारम्भः क्रियते । यत्र हि द्वैतमिव भवति यत्रान्य-
 दिव स्यात् तत्रान्योऽन्यत्पश्येदन्योऽन्याद्विजानीयादिति । यत्र त्वस्य सर्वमात्मै-
 वाभूत्तत्केन कं पश्येत्तत्केन कं विजानीयादित्यादिश्रुतिभ्योऽस्यार्थस्य सिद्धिः ।
 तत्र तावदोङ्कारनिर्णयाय प्रथमम्प्रकरणम् आगमप्रधानमात्मतत्त्वप्रतिपत्त्युपाय-
 भूतम् । यस्य द्वैतप्रपञ्चोपशमे अद्वैतप्रतिपत्तिः रज्ज्वामिव सर्पादिविकल्पोपशमे
 रज्जुतत्त्वप्रतिपत्तिः तस्य द्वैतस्य हेतुतो वैतथ्यप्रतिपादनाय द्वितीयं प्रकरणम् ।
 तथा अद्वैतस्यापि वैतथ्यप्रसङ्गप्राप्तौ युक्तितः तथात्वप्रदर्शनाय तृतीयं प्रकर-
 णम् । अद्वैतस्य तथात्वप्रतिपत्तेः प्रतिपक्षभूतानि यानि वादान्तराण्यवैदिकानि
 तेषामन्योन्यविरोधित्वादतथार्थत्वेन तदुपपत्तिभिरेव निराकरणाय चतुर्थं प्रकर-
 णम् । कथं पुनरोङ्कारनिर्णयमात्मतत्त्वप्रतिपत्त्युपायत्वं प्रतिपद्यत इत्युच्यते ।
 ओमित्येतदालम्बनमेतद्वै सत्यकाम ओमित्यात्मानं युञ्जीत ओमिति ब्रह्म
 ओङ्कार एवेदं सर्वमित्यादिश्रुतिभ्यः रज्ज्वादिरिव सर्पादिविकल्पस्यास्पदः(म्) ।

End :

अव्यवहार्यमपि व्यवहारगोचरमापाद्य यथाबलं यथाशक्त्यर्थः ॥

अजमपि जनियोगं प्रापदैश्वर्ययोगात्

अगति च गतिमत्तां प्रापदेकं ह्यनेकम् ।

विविधविषयधर्मग्राहिमुग्धेक्षणानां

प्रणतभयविहन्तृ ब्रह्म यत्तन्नतोऽस्मि ॥

प्रज्ञावैशाखवेधक्षुभितजलनिधेर्वेदनाम्नोऽन्तरस्थं

भूतान्यालोक्य मग्नान्यविरतजननग्राहघोरे समुद्रे ।

कारुण्यादुद्दधारामृतमिदममरैर्दुर्लभं भूतेहेतोः

यस्तं पूज्याभिपूज्यं परमगुरुममुं पादपातैर्नतोऽस्मि ॥

यत्प्रजालोकभासा प्रतिहतिमगमत्स्वान्तमोहान्धकारो

मज्जन्मज्जंश्च घोरे ह्यसकृदपि जनोदन्वति त्रम्यतो ये ।

यत्तादावाश्रितानां श्रुतिशश(त)विनयप्राप्तिरग्राह्यमोघा

तत्पादौ पा(भा)वनीयो(यौ) भवभयविनुदौ सर्वभावनमस्ये ॥

Colophon :

इति श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादाशिष्यस्य शङ्करभगवतः कृतौ आगम-
शास्त्रविवरणे अलातशान्त्याख्यं चतुर्थं प्रकरणं समाप्तम् ॥ समाप्तोऽयं
ग्रन्थः ॥

राम त्वत्पादकमलं न त्यक्ष्यामि कदाचन ।

यथार्थमर्थप्रवरं तस्मान्मां पाहि राघव ॥

✓

No. 705. माण्डूक्योपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

MĀNDŪKYŪPANIṢADBHĀṢYATIPPANAM.

Pages, 77. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 316.

To the end of Prakaraṇa I.

This is a gloss by Ānandatman on Śaṅkarācārya's commentary on the Upaniṣad and on the Kārikā of Gauḍapada.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

परिपूर्णपरिज्ञानपरितृप्तिमते सते ।

विष्णवे जिष्णवे तस्मै कृष्णनामवते नमः ॥

सिद्धानन्दपदाम्भोजद्वन्द्वमद्वन्द्वतास्पदम् ।

नमस्कुर्वे पुरस्कर्तुं तत्त्वज्ञानमहोदयम् ॥

गौडपादीयभाष्यं हि प्रसन्नमिव लक्ष्यते ।

तदर्थतोऽतिगम्भीरं व्याकरिष्ये स्वशक्तितः ॥

पूर्वे यद्यपि विद्वांसो व्याख्यानानीह चक्रिरे ।

तथापि मन्दबुद्धीनामुपकाराय यत्यते ॥

श्रीगौडपादाचार्यस्य[श्री] नारायणप्रसादतः ।

प्रतिपन्नान्माण्डूक्योपनिषदर्थविष्करणपदानिपि श्लोकानाचार्यप्रणीतान् व्याचिख्यासुः भगवान् भाष्यकारः चिकीर्षितस्य भाष्यस्याविन्नपरिसमाप्त्या-
दिसिद्धये परदेवतातत्त्वानुस्मरणपूर्वकं नमस्काररूपं मङ्गलाचरणं शिष्टाचार-
प्रमाणकं मुखतः समाचरन्नर्थादपेक्षितं अभिधेयानुबन्धमपि सूचयति प्रजा-
नेत्यादिना ।

Colophon :

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यशुद्धानन्दपूज्यपादशिष्यश्रीमदानन्दा-
त्मकृतौ माण्डूक्यभाष्यटीकायां प्रथमं प्रकरणं समाप्तम् ॥

No 706. माण्डूक्योपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

MĀNDŪKYŪPANISADBHĀṢYATIPPANAM.

Pages, 277. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 198a of the MS. described under No. 302.

Another copy ; this contains the first three Prakaraṇas com-
pletely while the fourth is incomplete. The various colophons are :—

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यशुद्धानन्दपूज्यपादशिष्यश्रीमदानन्दा-
त्मकृतौ माण्डूक्यभाष्यानन्दगिरीयः समाप्तः ॥

इति श्रीमदानन्दपूज्यपादशिष्यभगवदानन्दविरचितायां गौडपादभाष्य-
टीकायां द्वितीयं प्रकरणं समाप्तम् ॥

इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीशुद्धानन्दपूज्यपादशिष्यभगवदानन्द-
जानविरचितायां गौडपादभाष्यटीकायां तृतीयं प्रकरणं समाप्तम् ॥

End:

प्रतिष्ठिता सिद्धयति यस्मादमोघा सकला श्रवणादीनां प्रातिस्तस्मा-
दध्यत्वं तस्यां सम्भाव्यते तदेवमाचार्यप्रसादादात्मनोऽन्येषां च बहूनां पुरु-
षार्थपरिसमा . . .

No. 707. माण्डूक्योपनिषद्दीपिका.

MĀNDŪKYĀPANISADDĪPIKĀ.

Pages. 9. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 34a of the MS. described under No. 292.

Complete.

This is a commentary by Śaṅkarānanda on the Upaniṣad.

Beginning:

माण्डूक्योपनिषद्वाक्यां करिष्ये पदचारिणीम् ।

ओमात्माभेदसंबोधादानन्दात्मप्रकाशिनीम् ॥

नामनामिनोर्लोके भेदस्य प्रसिद्धत्वात्प्रस्तुतश्चो(स्यो)ङ्कारस्य ब्रह्मविवर्तत्वान्
विवर्तस्य विवर्ताधिष्ठानेन भेदशून्यत्वान् अत ओङ्कारं ब्रह्मनामधेयं ब्रह्मह-
ष्ट्याह ओमिति ब्रह्मबुद्ध्या दृष्टो द्रष्टृन् इति ओमिति ओङ्कारानुकरणार्थः .

End:

एवमुक्तेन प्रकारेण ओङ्कारात्मनोः तादात्म्यं वेद जानाति तस्य ओङ्का-
ररूपानन्दात्मप्राप्तिफलमर्थसिद्ध ॥

Colophon:—आनन्दात्मपूज्यपदिशिष्यश्रीशङ्करानन्दभगवतः कृतिः माण्डू-
क्योपनिषद्दीपिका समाप्ता ॥

No. 708. माण्डूक्योपनिषद्भाष्यम्.

MĀNDŪKYĪPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 13. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 166 of the MS. described under No. 31.

Complete.

This commentary is by Ānandatīrtha.

Beginning :

पूर्णानन्दज्ञानशक्तिस्वरूपं नित्यमव्ययम् ।

चतुर्थो सर्वभोक्तारं वन्दे विष्णुं परं पदम् ॥

मण्डूकरूपी(पि) [वरु]णा वरुणेन चतूरूपो नारायणस्तूयते ।

ध्यायेन्नारायणं देवं प्रणवेन समाहितः ।

मण्डूकरूपी वरुणस्तुष्टाव हरिमव्ययम् ॥ इति पात्रे ॥

ओमित्युक्तं तु यद्ब्रह्म तदक्षरमुदाहृतम् ।

ओं नमस्त्रिजगद्यस्मादों तस्माद्भगवान् हरिः ॥

तदिदं गुणपूर्त्यैव सर्वमित्येव शब्दितम् ।

भाविभूतभवत्कालेष्वेकरूपतया हरिः ॥

सर्वदा नित्य इत्येषा व्याख्योक्कारस्य कीर्तिता ।

इति बृहत्संहितायाम् ॥

ओमित्याक्रियते यस्मादोक्कारोऽसावतः परः ।

सर्वत्वमिति पूर्णत्वं तन्नान्यस्य हरेः क्वचित् ॥ इति नैर्गुण्ये ।

सर्वभोक्कार एवेत्यन्यस्य पूर्णत्वनिराकरणम् । त्रिकालातीतत्वं च तस्यैव प्रकृतेऽपि त्रिकालातीतत्वं विद्यत इति अन्यदिति विशेषणम् । परमं यो महद्ब्रह्म परमं कवीनां पूर्णमदः पूर्णमित्यादिषु प्रसिद्धं च ब्रह्मणः पूर्णत्वमित्याह सर्वं ब्रह्मेति । श्रीब्रह्मादिसकलदेहेषु स्थित्वा आदानादिकर्ता योऽयं कश्चित्प्रतीयते जीवानामस्वातन्त्र्यदर्शनात् सोऽपि स एवेति दर्शयति अयमात्मा ब्रह्मेति

End :

ओमित्याक्रियमाणत्वादोङ्कारस्संप्रकीर्तितः ।
 आदिमत्वादयो ह्यर्था ओमित्यस्य श्रुतौ श्रुताः ॥
 अपूर्वकरणाभावात् नाशाभावादनन्तरः ।
 परार्थीनस्थित्यभावादनपार उदाहृतः ॥
 सर्वाङ्गत्वादबाह्यश्च तं ज्ञात्वा विप्रमुच्यते । इति च ।
 परत्वमपरत्वं च विष्णो(रे)कस्य वै यदा ।
 श्रूयते न तु सामर्थ्यभेदस्तत्र कथंचन ॥
 अवतारस्य पूर्वत्वात् पौर्वापर्यमुदाहृतम् । इति ब्रह्मतर्के ।
 पूर्वावतारे पश्चिमावतारोऽपि पूर्ण एवेति प्रणवो ह्यपरं ब्रह्मेत्यादेरर्थः ।
 एकोऽपि निर्विशेषोऽपि चतुर्था व्यवहारभाक् ।
 यस्तं वन्दे चिदानन्दं विष्णुं विश्वादिरूपिणम् ॥

Colophon :

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादविरचितं माण्डूक्योपनिषद्भाष्यं समा-
 प्तम् ॥

No. 709. माण्डूक्योपनिषद्भाष्यम्.

MĀNDŪKYŪPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 14. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 15*b*. of the MS. described under No. 309.

Complete. Same as the last.

No. 710. मुक्तिकोपनिषत्.

MUKTIKŪPANIṢAD.

Pages, 18. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 200*a* of the MS. described under No. 246.

Complete.

In this Upaniṣad Rāma teaches Hanūmat the names of the 108 Upaniṣads, assigning each of them to the particular Vēda to which it belongs and mentioning the Śānti-prayer which is associated with each of them. There are also two different kinds of Mukti or liberation mentioned and explained herein.

Beginning :

पूर्णमद इति शान्तिः ।

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नमण्डपमध्यके ।

सीताभरतसौमित्रिशत्रुघ्नाद्यैः समन्वितम् ॥

* * *
भक्त्या शुश्रूषया रामं स्तुवन्प्रच्छ मारुतिः ॥
त्वद्रूपं ज्ञातुमिच्छामि तत्त्वतो राम मुक्तये ।
अनायासेन येनाहं मुच्येयं भवबन्धनात् ॥

* * *
राम वेदाः कतिविधाः तेषां शाखाश्च राघव ।
तासूपनिषदः कास्त्युः कृपया वद तत्त्वतः ॥
ऋग्वेदादिविभागेन वेदाश्चत्वार ईरिताः ।
तेषां शाखा ह्यनेकाः स्युः तासूपनिषदः तथा ॥
ऋग्वेदस्य तु शाखाः स्युरेकविंशतिसङ्ख्यया ।
नवाधिकशतं शाखा यजुषो मारुतात्मज ॥
सहस्रसङ्ख्यया जाताः शाखास्साम्नः परंतप ।
अथर्वणस्य शाखाः स्युः पञ्चाशद्भेदतो हरे ॥
एकैकस्यास्तु शाखायाः एकैकोपनिषन्मता ।

* * *
इदं कैवल्यमुक्तिस्तु केनोपायेन लभ्यते ।
माण्डूक्यमेकमेवालं मुमुक्षूणां विमुक्तये ॥

तथाप्यसिद्धं चेज्जानं दशोपनिषदं पठ ।
 ज्ञानं लब्ध्वाचिरादेव मामकं धाम यास्यसि ॥
 तंथापि दृढता नो चेद्विज्ञानस्याञ्जनासुत ।
 द्वात्रिंशाख्योपनिषदं समभ्यस्य निवर्तय ॥
 विदेहमुक्ताविच्छा चेदष्टोत्तरशतं पठ ।
 तासां क्रमं सशान्तिं च शृणु वक्ष्यामि तत्त्वतः ॥
 ईशकेनकठप्रश्नमुण्डमाण्डूक्यतित्तिरिः ।
 ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं तथा ॥
 ब्रह्मकैवल्यजाबालश्चेताश्चा हंस आरुणिः ।
 गर्भो नारायणो हंसः विन्दुनादशिरःशिखाः ॥
 मैत्रायणी कौषीतकी बृहज्जाबालतापिनी ।
 कालाग्निरुद्रमैत्रेयीसुबालक्षुरिमग्निका ॥
 सर्वसारं निरालम्बं रहस्यं वज्रसूचिकम् ।
 तेजोनादध्यानविद्यायोगतत्त्वावबोधकम् ॥
 परिव्राट् त्रिशिखी सीता चूडा निर्वाणमण्डलम् ।
 दक्षिणां शरभं स्कन्दं महानारायणाद्वयम् ॥
 रहस्यं रामतपनं वासुदेवं च मुद्गलम् ।
 शाण्डिल्यं पैङ्गलं भिक्षुर्महच्छारीरकं शिखा ॥
 तुरीयातीतसन्न्यासपरिव्राजाक्षमालिका ।
 अव्यक्तैकाक्षरं पूर्णा सूर्याक्ष्यध्यात्मकुण्डिका ॥
 सावित्र्यात्मा पाशुपतं परब्रह्मावधूतकम् ।
 तिपुरातपनं देवी तिपुरा कठभावना ॥
 हृदयं कुण्डली भस्मरुद्राक्षगणदर्शनम् ।
 तारसारमहावाक्यपञ्चब्रह्माभिहोत्रकम् ॥

गोपालतपनं कृष्णं याज्ञवल्क्यं बराहकम् ।
 शाठ्यायनीं हयग्रीवं दत्तात्रेयं च गारुडम् ॥
 कलिजाबालिसौभाग्यरहस्यऋचमुक्तिकाः ।
 एवमष्टोत्तरशतं भावनात्रयनाशनम् ।
 जानवैराग्यदं पुंसां वासनात्रयनाशनम् ॥

*

*

*

अथ हैनं श्रीरामचन्द्रं मारुतिः पप्रच्छ ऋग्वेदादिविभागेन पृथक्च्छा-
 तिमनुब्रूहीति ।

स होवाच श्रीरामः ।

- | | |
|---------------|----------------|
| 1. ऐतरेय | 6. मुद्गल |
| 2. कौषीतकी | 7. अक्षमालिका |
| 3. नादबिन्दु | 8. त्रिपुरा |
| 4. आत्मप्रबोध | 9. सौभाग्य |
| 5. निर्वाण | 10. बह्वचानाम् |

ऋग्वेदगतानां दशसङ्ख्याकानामुपनिषदां वाञ्छे मनसीति शान्तिः ॥

- | | |
|---------------------|-----------------|
| 1. ईशावास्य | 11. अद्वयतारक |
| 2. बृहदारण्यक | 12. पैङ्ग |
| 3. जाबाल | 13. भिक्षु |
| 4. हंस | 14. तुरीयातीत |
| 5. परमहंस | 15. अध्यात्म |
| 6. सुबाल | 16. तारसार |
| 7. मन्त्रिका | 17. याज्ञवल्क्य |
| 8. निरालम्ब | 18. शाठ्यायनी |
| 9. त्रिशिखीब्राह्मण | 19. मुक्तिकानां |
| 10. मण्डलब्राह्मण | |

शुक्लयजुर्वेदगतानामेकोनविंशतिसङ्ख्याकानामुपनिषदां पूर्णमद इति शान्तिः ॥

- | | |
|------------------|----------------------|
| 1. कठवल्ली | 17. योगतत्त्व |
| 2. तैत्तिरीयक | 18. दक्षिणामूर्ति |
| 3. ब्रह्म | 19. स्कन्द |
| 4. कैवल्य | 20. शारीरक |
| 5. श्वेताश्वतर | 21. योगशिखा |
| 6. गर्भ | 22. एकाक्षर |
| 7. नारायण | 23. अक्षि |
| 8. अमृतबिन्दु | 24. अवधूत |
| 9. अमृतनाद | 25. कठ |
| 10. कालामिरुद्र | 26. रुद्रहृदय |
| 11. क्षुरिका | 27. योगकुण्डलिनी |
| 12. सर्वसार | 28. पञ्चब्रह्म |
| 13. शुकरहय | 29. प्राणामिहोत्र |
| 14. तेजोबिन्दु | 30. वराह |
| 15. ध्यानबिन्दु | 31. कलिसन्तारण |
| 16. ब्रह्मविद्या | 32. सरस्वतीरहस्यानां |

कृष्णयजुर्वेदगतानामुपनिषदां द्वात्रिंशत्सङ्ख्याकानां सद् नाववतिवति शान्तिः ॥

- | | |
|---------------|--------------------|
| 1. केन | 9. मह |
| 2. छान्दोग्य | 10. सन्न्यास |
| 3. आरुणि | 11. अव्यक्त |
| 4. मैत्रायणी | 12. कुण्डिका |
| 5. मैत्रेयी | 13. सावित्री |
| 6. वज्रसूचिक | 14. रुद्राक्षजाबाल |
| 7. योगचूडामणि | 15. दर्शन |
| 8. वासुदेव | 16. जाबालीनां |

सामगदानां षोडशसङ्ख्याकानामुपनिषदामाप्यायन्त्विति शान्तिः ॥

- | | |
|---------------------|------------------|
| 1. प्रश्न | 17. सूर्य |
| 2. मुण्डक | 18. आत्मा |
| 3. माण्डूक्य | 19. पाशुपत |
| 4. अथर्वशिरस् | 20. परं ब्रह्म |
| 5. अथर्वशिखा | 21. त्रिपुरातापन |
| 6. बृहज्जाबाल | 22. देवी |
| 7. नृसिंहतापिनी | 23. भावना |
| 8. नारदपरिव्राजक | 24. भस्मजाबाल |
| 9. सीता | 25. गणपति |
| 10. शरभ | 26. महावाक्य |
| 11. महानारायण | 27. गोपालतपन |
| 12. रामरहस्य | 28. कृष्ण |
| 13. रामतापिनी | 29. हयग्रीव |
| 14. शाण्डिल्य | 30. दत्तात्रेय |
| 15. परमहंसपरिव्राजक | 31. गारुडानाम् |
| 16. अन्नपूर्ण | |

अथर्ववेदगतानामेकत्रिंशत्सङ्ख्याकानामुपनिषदां भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

End :

जीवन्मुक्तपदं त्यक्त्वा स्वदेहे कालसात्कृते ।

विशत्यदेहमुक्तत्वं पवनोऽस्पन्दतामिव ॥

तदेतदृचाभ्युक्तम् । तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसस्सामिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् । ओं सत्यमित्युपनिषत् ॥

Colophon :— मुक्तिकोपनिषत् समाप्ता ॥ हरिःओम् ॥

No. 711. मुक्तिकोपनिषत्.

MUKTIKÔPANISAD.

Pages, 7. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 188b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 712. मुक्तिकोपनिषत्.

MUKTIKÔPANISAD.

Pages, 30. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 4a of the MS. described under No. 383.

Complete.

Another copy.

No. 713. मुण्डकोपनिषत्.

MUNDAKÔPANISAD.

Pages, 7. Lines, 16 on a page.

Begins on fol. 112a of the MS. described under No. 302.

Complete.

After teaching that the wisdom acquired by the study of the Vêdas and the Śāstras is lower and that the other wisdom which results from the knowledge of the Immortal One is higher, and that Karma associated with wisdom leads to bondage, while Karma associated with wisdom leads to the salvation of Mōkṣa, this Upaniṣad treats of the characteristics of the Supreme Being as well as of the nature and the origin of the universe. It enjoins renunciation and asceticism and Yōgic meditation as the means of attaining the higher wisdom, and almost discards the Vêdic religion of rituals.

Beginning :

ओं भद्रं कर्णेभिः . . . दधातु । ओं शान्तिः ।

ओं ब्रह्मा देवानां प्रथमस्संबभूव । विश्वस्य कर्ता भुवनस्य गोप्ता । स ब्रह्मविद्यां सर्वविद्याप्रतिष्ठामथर्वाय ज्येष्ठपुत्राय प्राह । आथर्वणेयीं प्रवदेत ब्रह्मा-
थर्वा तां पुरोवाचाङ्गिरे ब्रह्मविद्याम् । स भारद्वाजाय सत्यवहाय प्राह । भारद्वाजोऽ-
ङ्गिरसे परावराम् । शौनको ह वै महाशालोऽङ्गिरसं विधिवदुपपन्नः पप्रच्छ
कस्मिन् भगवो विजाते सर्वमिदं विजातं भवतीति । तस्मै स होवाच द्वे विद्ये
वेदितव्ये इति ह स्म यद्ब्रह्मविदो वदन्ति । परा चैवापरा च

End :

क्रियावन्तः श्रोत्रिया ब्रह्मनिष्ठाः स्वयं जुह्वत एकऋषिं श्रद्धयन्तः ।
तेषामेवैतां ब्रह्मविद्यां वदेत शिरोव्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णम् । तदेतत् सत्यम्
ऋषिरङ्गिराः पुरोवाच नैतदचीर्णव्रतोऽधीते । नमः परमऋषिभ्यो नमः परम-
ऋषिभ्यः । ओं भद्रं कर्णेभिः . . . दधातु । ओं शान्तिश्शान्तिः शान्तिः ॥
ओं तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ।

Colophon :—मुण्डकोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 714 मुण्डकोपनिषत्.

MUNDAKÔPANISAD.

Pages, 16. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 322.

Complete.

Another copy.

The Śanti is herein omitted.

No. 715. मुण्डकोपनिषत्.
MUNDAKÔPANISAD.

Pages, 12. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 111a of the MS. described under No. 180.

Complete.

Another copy.

No. 716. मुण्डकोपनिषत्.
MUNDAKÔPANISAD.

Pages, 9. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 68b of the MS. described under No. 276.

Complete.

Another copy.

No. 717. मुण्डकोपनिषत्.
MUNDAKÔPANISAD.

Pages, 5. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 111a of the MS. described under No. 304.

Complete.

Another copy.

No. 718. मुण्डकोपनिषत्.
MUNDAKÔPANISAD.

Pages, 13. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 32a of the MS. described under No. 309.

Complete. Same as the last.

The colophon in this MS. runs thus:— इत्याथर्वणोपनिषत्समाप्तः

No. 719. मुण्डकोपनिषद्भाष्यम्.
MUNDAKÔPANISÂDBHÂŠYAM.

Pages, 59. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 126b of the MS. described under No. 312.

Complete.

This is a commentary by Śaṅkarācārya on the Upaniṣad.

Beginning:

ब्रह्मा देवानामित्याद्याथर्वणोपनिषदस्याश्च विद्यासंप्रदायपारम्पर्यलक्षणं संबन्धमादवेवाह स्वयमेव स्तुत्यर्थम् एवं हि महद्भिः परमपुरुषार्थसाधनत्वेन गुरुणायासेन लब्धा विद्येति श्रोतृबुद्धिप्ररोचनाय विद्यामङ्गीकरोतीति स्तुत्या प्ररोचितायां विद्यायां सादराः प्रवर्तेयुरिति । प्रयोजनेन तु विद्यायाः साध्य-
साधनलक्षणं सम्बन्धमुत्तरत्र वक्ष्यति भिद्यते हृदयग्रन्थिरित्यादिना ।

End:

यया विद्यया परया अक्षरमद्रेऽर्थादिविशेषणं तदेवाक्षरं पुरुषशब्द-
वाच्यं पूर्णत्वात्पुरि शयनाच्च सत्यं तदेव परमार्थस्वभावादव्ययमक्षरं चाक्ष-
राणामक्षरत्वाच्च . . . आचार्यस्याप्ययमेव न्यायः प्राप्तशिष्य-
निस्तारणमविद्यामहोदधेः ।

अथर्वणमन्त्रोपनिषद्विवरणे प्रथममुण्डकस्समाप्तः ॥

नैतद्ब्रह्मरूपमचीर्णव्रतोऽचरितव्रतो नाप्यधीते न पठति चीर्ण-
व्रतस्य हि विद्या फलाय संस्कृता भवतीति समाप्ता ब्रह्मविद्या । सा येभ्यो
ब्रह्मादिभ्यः पारम्पर्यक्रमेण संप्राप्ता तेभ्यो नमः परमऋषिभ्यः । परं ब्रह्म
साक्षाद्दृष्टवन्तो ये ब्रह्मादयोऽवगतवन्तश्च ते परमर्षयः तेभ्यो भूयोऽपि
नमः । द्विर्वचनमत्यन्तादरार्थं मुण्डकसमाप्त्यर्थं च ॥

Colophon:

श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्री-
मच्छंकरभगवतः कृतौ अथर्वणोपनिषद्विवरणं समाप्तम् ॥

No. 720. मुण्डकोपनिषद्भाष्यम्.

MUNDAKÔPANISADBHĀṢYAM.

Pages, 47. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 116a of the MS. described under No. 302.

Complete.

Another copy of the commentary by Śaṅkarācārya.

No. 721. मुण्डकोपनिषद्भाष्यम्.

MUNDAKÔPANISADBHĀṢYAM.

Pages, 34 Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 73a of the MS. described under No. 311.

Complete. Same as the last.

No. 722. मुण्डकोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

MUNDAKÔPANISADBHĀṢYATIPPANAM.

Pages, 32. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 71a of the MS. described under No. 312.

Complete.

This is a gloss by Śivānandayatiśa on Śaṅkarācārya's commentary, as made out from the colophon found in the copy described under the next number.

Beginning :

पाशकृतात्मसंसृतिराशिच्छेदप्रवृत्तचित्तानाम् ।

कोशकृतसुकृतानां काशीप्राप्तिर्भवेन्नृणां लोके ॥

यदक्षरं परं ब्रह्म विद्यागम्यमितीरितम् ।

यस्मिन् जाते भवन् जातं सर्वं तन् स्यामसंशयम् ॥

ब्रह्मोपनिषद्भोपनिषदाद्या अथर्ववेदस्य बह्व उपनिषदस्सति । तासां शरीरके अनुयोगित्वेन अव्याचिख्यासितत्वात् अदृश्यत्वादिगुणको धर्मोक्ते-
रित्याद्यधिकरणोपयोगितया मुण्डकस्य व्याचिख्यासितस्य प्रतीकमादत्ते ब्रह्म
देवानामित्याद्याथर्वणोपनिषद्याचिख्यासितेति ॥

End :

तत्सर्वं ब्रह्मैव संपद्यत इत्याह यानि चेत्यादिना । एतद्ग्रन्थद्वारकविद्या-
प्रदाने अयं विधिराथर्वणिकानामिति प्रकृतपरामर्शकादेतच्छब्दादवगम्यते ।
ग्रन्थद्वारेणैव विद्यायाः प्रकृतत्वसंभवान्न सर्वत्र ब्रह्मविद्याप्रदान इ(मि)ति
सूचयन्नाह एतां ब्रह्मविद्यां वदेतेति ।

Colophon :—इति मुण्डकभाष्यटिप्पणमिदं समाप्तम् ॥

No. 723. मुण्डकोपनिषद्भाष्यटिप्पणम्.

MUNDAKÔPANISADBHÂṢYATIPPANAM.

Pages, 36. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 67a of the MS. described under No. 315.

Complete. Same as the last.

The colophon in this MS. is— इति मुण्डकभाष्यस्य टिप्पणम् ।

चिदानन्दैरिदं काश्यां लिखित्वा प्रेषितं मुदा ।

चोलदेशस्थभिक्षूणामुपकाराय केवलम् ॥

भगवत्पादभाष्यस्य भावगाम्भीर्यवेदिना ।

शिवानन्दयतीशेन टिप्पणं कृतमादरात् ॥

No. 724. मुण्डकोपनिषद्भाष्यम्.

MUNDAKÔPANISADBHÂṢYAM.

Pages, 14. Lines, 10 on a page.

Complete.

Begins on fol. 246 of the MS. described under No. 309.

This commentary is by Ānandatīrtha.

Beginning :

आनन्दमजरं नित्यमजमक्षयमच्युतम् ।
 अनन्तशक्तिं सर्वज्ञं नमस्ये पुरुषोत्तमम् ॥
 मनोर्वैवस्वतस्यादावथर्वा ब्रह्मणोऽजनि ।
 मित्रश्च वरुणश्चाथो प्रहेतिर्हेतिरेव च ॥
 ब्रह्मणः प्रथमे कल्पे शिवः प्रथमजः स्मृतः ।
 सनकाद्यास्तु वाराहे ब्रह्मा विष्णोस्तुतोऽग्रजः ॥
 इति ब्रह्माण्डे ॥
 ऋगाद्या अपरा विद्या यदा विष्णोर्न वाचकाः ।
 ता एव परमा विद्या यदा विष्णोस्तु वाचकाः ॥
 इति परमसंहितायाम् ॥

*

*

*

वेदैश्च पञ्चरात्रैश्च भक्त्या यज्ञैस्तथैव च ।
 दृश्योऽहं नान्यथा दृश्यो वर्षकोटिशतैरपि ॥

इत्यादि वाराहे ॥

अत्रापि तदेतत् सत्यं मन्त्रेषु कर्माणि कवयो यान्यपश्यन्नित्यादिना
 कर्मविषयामपरविद्यामुक्त्वा येनाक्षरं पुरुषं वेद सत्यं प्रोवाच तां तत्त्वतो
 ब्रह्मविद्यामित्यारभ्य आथर्वणानेव मन्त्रान् परविद्यात्वेनाह । चतुर्वेदसंस्कारव-
 तामेवात्र वेदविद्यायामधिकार उक्तः । तेषामेव तां ब्रह्मविद्यां वदेत शिरो-
 व्रतं विधिवद्यैस्तु चीर्णमिति

End :

ये त्वेतदेवं जानन्ति ते यान्ति परमं हरिम् । इति च ।
 देवानां सन्ततौ जाताः प्रायशो ज्ञानिनः कृते ।
 बलवद्भेतुतश्चान्ये यस्माद्ब्रह्मविदस्सुराः ॥

न सन्ततौ ब्रह्मविदो नराणां ज्ञानिनामपि ।
 प्रायशस्स्युस्सुराणां च नियमोऽयं कृते युगे ॥
 तस्मात् स भगवान् विष्णुः ज्ञेयस्सर्वोत्तमोत्तमः ।
 सदा सर्वगुणैः पूर्णो योऽनन्तः पुरुषोत्तमः ॥ इति च ॥
 प्रीयतां भगवान् मङ्गं प्रेष्ठप्रेष्ठतमस्सदा ।
 मम नित्यं नमाम्येनं परमोदारसद्गुणम् ॥

Colophon :

इति श्रीमदानन्दतीर्थभगवत्पादाविरचितमाथर्वणोपनिषद्भाष्यं समा-
 प्तम् ॥

No. 725. मुण्डकोपनिषद्भाष्यम्.

MUNDAKŌPANIṢADBHĀṢYAM.

Pages, 12. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 40b of the MS. described under No. 31.

Complete. Same as the last.

No. 726. मुद्गलोपनिषत्.

MUDGALŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 267a of the MS. described under No. 250.

Complete.

In the way of giving the contents of the Puruṣasūkta, this Upaniṣad teaches that Nārāyaṇa, the Supreme Being, creates the universe out of a fourth part of Himself and becomes Himself the individual soul by placing limitations upon Himself, and that Mōkṣa is the union of the individual soul with the Supreme Being.

Beginning :

वाङ्मे मनसीति शान्तिः ॥ पुरुषसूक्तार्थनिर्णयं व्याख्यास्यामः । पुरुष-
संहितायां पुरुषसूक्तार्थस्सङ्ग्रहेण प्रोच्यते । सहस्रशीर्षेत्यत्र सशब्दोऽनन्त-
वाचकः ।

अनन्तयोजनं प्राह दशाङ्गुलवचस्तथा
तस्य प्रथमया विष्णोर्देशतो व्याप्तिरीरिता ॥
द्वितीयया चास्य विष्णोः कालतो व्याप्तिरुच्यते ।
विष्णोर्मोक्षप्रदत्वं च कथितन्तु तृतीयया ॥

End :

पुरुषसूक्तं ध्यायन्नृपसन्नाय शिष्याय दक्षिणकर्णे पुरुषसूक्तार्थमुपादिशे-
द्विद्वान् स बहुशो वदेद्यातयामो भवति असकृत्कर्णमुपदिशेदेतत्कुर्वाणो-
ऽध्येताध्यापकश्च इह जन्मनि पुरुषो भवतीत्युपनिषत् ॥

Colophon:— मुद्गलोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 727. मुद्गलोपनिषत्.

MUDGALŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 106a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 728. मैत्रायणीयोपनिषत्.

MAITRĀYAṆĪYŌPANIṢAD.

Pages, 12. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 42a of the MS. described under No. 250.

Complete.

After explaining the importance of Vairāgya or selflessness, this Upaniṣad teaches that the illusion of variety in relation

to the visible universe, and the merit and demerit (पुण्य and पाप), accruing from Karma, are removed by the knowledge of truth and by the wisdom imparted by a worthy preceptor; and then it describes certain forms of worship and meditation as the means whereby such knowledge and wisdom may be acquired with ease.

Beginning :

मैत्रायणी कौषीतकी बृहज्जाबालतापनी ।
कालाग्निरुद्रमैत्रेयी सुबालक्षुरिमन्त्रिका ॥

आप्यायन्त्विति शान्तिः । बृहद्रथो वै नाम राजा राज्ये ज्येष्ठं पुत्रं निधापयित्वेदमशाश्वतं मन्यमानः शरीरं वैराग्यमुपेतोऽरण्यं निर्जगाम । स तत्र परमं तप आस्थायदित्यमीक्षमाण ऊर्ध्वबाहुस्तिष्ठति अन्ते सहस्रस्य मुने- रैतिकमाजगाम । अग्निरिवाधूमकस्तेजसा निर्दहन्निव हात्मवित् भगवान् शाका- यय उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वरं वृणीष्वेति राजानमब्रवीत् । स तस्मै नमस्कृत्योवाच भगवन्नाहमात्मवित्त्वं तत्त्ववित् शृणुमो वयं स त्वन्नो ब्रूहीति । एतद्दत्तं पुरस्ताद- शक्यं मा पृच्छ प्रश्नमैक्ष्वाकान्यान् कामान् वृणीष्वेति । शाकान्यस्य चरणाव- भिमृशमानो राजेमां गाधां जगाद

End :

विष्णुस्स वा एष एकस्त्रिधा भूतोऽष्टधैकादशधा द्वादशधा परिमितः(?) तथा चोद्भूतत्वाद्भूतेषु चरति प्रतिष्ठा सर्वभूतानामधिपतिर्बभूवेत्य- सावात्मान्तर्बहिश्चान्तर्बहिश्च ॥

Colophon :

चतुर्थः प्रपाठकः ॥ मैत्रायणीयोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 729. मैत्रायणीयोपनिषत्.

MAITRĀYANĪYŌPANIṢAD.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 730. मैत्रायणीयोपनिषत्.

MAITRĀYAṆĪYŌPANISAD.

Pages, 12. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 285.

Complete. No Sānti is given.

Another copy.

No. 731. मैत्रेयोपनिषत्.

MAITRĒYŌPANISAD.

Pages, 10. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 78a of the MS. described under No. 250.

Complete.

Mahādēva herein teaches to Maitrēya that the realization of the identity of the individual soul with the Supreme Being is the highest wisdom, and then describes the experiences of the person who has come to be in possession of such wisdom.

Beginning :

The first Khaṇḍa of this coincides with that of the मैत्रायणीयोप-
निषत्, while the other Khaṇḍas are different.

End :

मुक्तिहीनोऽस्मि मुक्तोऽस्मि मोक्षहीनोऽस्म्यहं सदा ।

गन्तव्यदेशहीनोऽस्मि गमनादिविवर्जितः ॥

* सर्वदा समरूपोऽस्मि शान्तोऽस्मि पुरुषोत्तम ।

एवं म्वानुभवो यस्य सोऽहमस्मि न संशयः ॥

यः शृणोति सकृद्वापि ब्रह्मैव भवति स्वयम् ।

इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—मैत्रेयोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 732. मैत्रेयोपनिषत्.

MAITRĒYŌPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 35b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 733. याज्ञवल्क्योपनिषत्.

YĀJÑAVALKYŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 160a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad describes the characteristics of Sannyāsins, and in illustration thereof it gives the names of certain Sannyāsins known to have been characterized by them; it closes with a statement of the various difficulties that beset the life of the householder (गृहस्थ) and are hence calculated to lead one to adopt the life of renunciation and asceticism in preference.

Beginning :

पूर्णमदः इति शान्तिः ॥ अथ जनको ह वैदेहो याज्ञवल्क्यमुपसमेत्यो-
वाच भगवन् सन्न्यासमनुब्रूहीति । कथं सन्न्यासलक्षणम् । स होवाच
याज्ञवल्क्यः ब्रह्मचर्यं समाप्य गृही भवेत् । गृहाद्वनी मृत्वा प्रव्रजेत् ।
यदि वेतरथा ब्रह्मचर्यादेव प्रव्रजेत् ।

End: १

चिदिहास्तीति चिन्मात्रमिदं चिन्मयमेव च ।
चित्त्वं चिदहमेते च लोकाश्चिदिति भावय ॥
यतीनां तदुपादेयं पारहंस्यं परम्पदम् ।
नातः परतराङ्गिश्चिद्विद्यते मुनिपुङ्गव ॥

इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—याज्ञवल्क्योपनिषत्समाप्ता ॥

No. 734. याज्ञवल्क्योपनिषत्.

YĀJÑAVALKYĪOPANISAD.

Pages, 3. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 175b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 735. योगकुण्डल्युपनिषत्.

YŌGAKUNḌALYUPANISAD.

Pages, 19. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 108b of the MS. described under No. 246.

Complete.

After laying down that the control of breath leads to the destruction of the impressed tendencies due to the former conditions of the soul's re-incarnation (वासना), this Upaniṣad describes the practice of Yōga and the manner of death which comes to one who has succeeded in it; it concludes with the statement that Yōga leads to the attainment of Mōkṣa even here, through causing the realization of the identity of the individual self with the Supreme Being.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ॥

हेतुद्वयं हि चित्तस्य वासना च समीरणः ।
 तयोर्विनष्ट एकस्मिंस्तद्वावपि विनश्यतः ॥
 तयोरादौ समीरस्य जयं कुर्यान्नरस्सदा ।
 जिताहारश्चासनञ्च शक्तिचालस्तृतीयकः ॥
 एतेषां लक्षणं वक्ष्ये शृणु गौतम सादरम् ।
 सुस्निग्धमधुराहारश्चतुर्थीशविवर्जितः ॥
 भुज्यते शिवसंप्रीत्यै मिताहारस्स उच्यते ।

End :

घटस्थदीपवच्छ्वदन्तरेव प्रकाशते ॥
 ध्यायन्नास्ते मुनिश्चैव आसुप्तेरामृतेस्तु यः ।
 जीवन्मुक्तस्स विज्ञेयस्स धन्यः कृतकृत्यवान् ॥
 जीवन्मुक्तपदन्यक्त्वा स्वदेहे कालसात्कृते ।
 विशत्यदेहमुक्तत्वं पवनो मन्दतामिव ॥
 अगन्धमस्पर्शमरूपमव्ययं तथारसं नित्यमगधवच्च यत् ।
 अनाद्यनन्तं महतः परं ध्रुवं तदेव शिष्यत्यमलन्निरामयम् ॥
 इत्युपनिषत् ॥

Colophon :— योगकुण्डल्युपनिषत्समाप्ता ॥

No. 736. योगकुण्डल्युपनिषत्.

YÔGAKUNḌALYUPANIṢAD.

Pages, 7. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 155b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 737. योगचूडामण्युपनिषत्.

YÔGACŪDĀMANYUPANISAD.

Pages, 15. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 193a of the MS. described under No. 250.

Complete.

The practice of Yôga is herein explained; and the two Mantras, Hamsa and Pranava, are herein declared to be helpful in enabling one to succeed in the practice of Yôga.

Beginning :

ओम् आप्यायन्त्विति शान्तिः ॥

योगचूडामणिं वक्ष्ये योगिनां हितकाम्यया ।

कैवल्यसिद्धिदङ्गदं सेवितं योगवित्तमैः ॥

आसनम्प्राणसंरोधः प्रत्याहारश्च धारणा ।

ध्यानं समाधिरेतानि योगाङ्गानि भवन्ति षट् ॥

End :

चरताञ्चक्षुरादीनां विषयेषु यथाक्रमम् ।

तत्प्रत्याहरणन्तेषां प्रत्याहारस्स उच्यते ॥

यथा तृतीयकाले तु रविः प्रत्याहरेत्प्रभाम् ।

तृतीयाङ्गस्थितो योगी विकारं मानसं बहिः ॥

ओमित्युपनिषत् ॥

Colophon :— योगचूडामण्युपनिषत्समाप्तः ॥

No. 738. योगचूडामण्युपनिषत्.

YÔGACŪDĀMANYUPANISAD.

Pages, 6. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 78b of the MS. described under No 247.

Complete. Same as the last.

No. 739. योगचूडामण्युपनिषत्.

YÔGACŪDĀMANYUPANIṢAD.

Pages, 17. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 40b of the MS. described under No. 180.

Complete. Same as the last.

No. 740. योगतत्त्वोपनिषत्.

YÔGATATTVÔPANIṢAD.

Pages, 15. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 146b of the MS. described under No. 250.

Complete.

The practice of Yôga is herein explained, and it is taught that it will lead the adept to the attainment of the highest wisdom in the form of self-realization.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

योगतत्त्वं प्रवक्ष्यामि योगिनां हितकाम्ययां ।

यच्छ्रुत्वा च पाठित्वा च सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥

विष्णुर्नाम महायोगी महामूतो महातपाः ।

तत्त्वमार्गे यथा दीपः दृश्यते पुरुषोत्तमः ॥

तमाराध्य जगन्नाथं प्रणिपत्य पितामहः ।

पप्रच्छ योगतत्त्वं मे ब्रूहि चाष्टाङ्गसंयुतम् ॥

तमुवाच हर्षकेशः वक्ष्यामि शृणु तत्त्वतः ।

End :

एवं द्वारेषु सर्वेषु वायुपूरितरोचितः ।

निषिद्धन्तु नवद्वारे ऊर्ध्वं प्राङ्निश्वासस्तदा ॥

घटमध्ये यथा दीपं निवातं कुम्भकं विदुः ।

निषिद्धैर्नवभिर्द्वैः निर्जने निरुपद्रवे ॥

निश्चितन्त्वात्मभूतानामनिष्टं योगसेवया ॥ इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—योगतत्त्वोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 741. योगतत्त्वोपनिषत्.
YÔGATATTVÔPANISAD.

Pages, 6. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 61b of the MS. described under No. 217.

Complete. Same as the last.

No. 742. योगतत्त्वोपनिषत्.
YÔGATATTVÔPANISAD.

Page, 1. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 19b of the MS. described under No. 673.

Complete.

After the first two Ślōkas, this codex differs from the copy described under No. 740. The third verse herein is the 24th verse from the last in that codex.

No. 743. योगतत्त्वोपनिषत्.
YÔGATATTVÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 18a of the MS. described under No. 284.

Complete.

Another copy like the preceding.

No. 744. योगतत्त्वोपनिषत्.
YÔGATATTVÔPANISAD.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 87a of the MS. described under No. 217.

Complete.

Another copy like the preceding.

No. 745. योगतत्त्वोपनिषत्.

YÔGATATTVÔPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, $9\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{4}$ inches. Pages, 2. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 168*b*. The other works herein are : Navākṣari-mantraḥ 1*a*, Pañcamīstavarājaḥ 7*a*, Śrīcakravidiḥ 17*a*, Dēvipūjā-vidhānam 26*a*, Mahāvākyapañcikaraṇam 163*a*, Bhāṣyakāraṣṭakam 166*a*, Haṁsōpaniṣad 167*b*, Nāmapārāyaṇam 170*a*, Vāmapūjā-vidhānam 176*a*.

Complete. Same as the last.

No. 746. योगशिखोपनिषत्.

YÔGAŚIKHÔPANISAD.

Pages, 40. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 2*a* of the MS. described under No. 246.

Complete.

It is herein explained that it is only when the knowledge of the highest wisdom is possessed along with the power to practise Yôga well, that selfishness and all other evil tendencies which stand in the way of man's realizing the true nature of the soul are really destroyed. The practice of Yôga and certain forms of worship and meditation are also accordingly described herein.

Beginning :

ओं सह नावदत्विति शान्तिः ।

सर्वे जीवास्सुखैर्दुःखैर्मायाजालेन मोहिताः ।

तेषां मुक्तिः कथं देव कृपया वद शङ्कर ॥

सर्वसिद्धिकरं मार्गं मायाजालनिकृन्तनम् ।
जन्ममृत्युजराव्यधिनाशनं सुखदं वद ॥ इति
हिरण्यगर्भः पप्रच्छ स होवाच महेश्वरः ।
नानामार्गैस्तु दुष्प्रापं कैवल्यं परमं पदम् ॥
सिद्धिमार्गेण लभते नान्यथा पद्मसंभव ।
पतिताश्शास्त्रजालेषु प्रज्ञया तेन मोहिताः ॥
स्वात्मप्रकाशे रूपं तत् किं शास्त्रेण प्रकाश्यते ।
निष्कलं निर्मलं शान्तं सर्वातीतं निरामयम् ॥
तदेव जीवरूपेण पुण्यपापफलैर्वृतम् ।

End:

यथामिर्दारुमध्यस्थो नोत्तिष्ठेन्मथनं विना ।
विना बाभ्यासयोगेन ज्ञानदीपस्तथा न हि ॥
घटमध्ये यथा दीपो बाह्ये नैव प्रकाशते ।
भिन्ने तस्मिन् घटे चैव दीपज्वाला च भासते ॥
स्वकायं घटमित्युक्तं यथा जीवो हि तत्पदम् ।
गुरुवाक्यसमाभिन्ने ब्रह्मज्ञानं प्रकाशते ॥
कर्णधारं गुरुं प्राप्य तद्वाक्यं श्रवणवद्दृढम् ।
अभ्यासवासनाशक्त्या तरन्ति भवसागरम् ॥

इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—योगशिखोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 747. योगशिखोपनिषत्.

YÔGAŚIKHÔPANISAD.

Pages, 12. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 123b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 748. योगशिखोपनिषत्.

YŌGAŚIKHŌPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 7 or. a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 255.

Complete.

This version of the Upaniṣad is different from the last.

Beginning :

अथ योगशिखां प्रवक्ष्यामि सर्वज्ञानेषु चोत्तमम् ।
 यदा तु ध्यायते मन्त्रं गात्रकम्पोऽथ जायते ॥
 आसनं पद्मकं बद्ध्वा यच्चान्यदपि रोचते ।
 नासिकाग्रे दृष्टिं कुर्यात् हस्तौ पादौ च संयुतौ ॥
 मनस्सर्वत्र संगृह्य औङ्कारं तत्र चिन्तयेत् ।

End :

पुण्यमेतत् समासाद्य संप्राप्य कथितं मया ।
 लब्ध्वा योगोऽथ बुध्येत प्रसन्नं परमेष्ठिनम् ॥
 जन्मान्तरसहस्रेषु यदा क्षीणं तु किल्बिषम् ।
 तदा पश्यति योगेन संसारच्छेदनं महत् ॥

Colophon :—इति योगशिखोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 749. रहस्योपनिषत्.

RAHASYŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 100b of the MS. described under No. 250.

Complete.

Śiva teaches to Śuka the four Mahāvākyas—(1) प्रज्ञानं ब्रह्म (2) अहं ब्रह्मास्मि (3) तत्त्वमासि (4) अयमात्मा ब्रह्म — taken from certain Upaniṣads belonging respectively to the four Vēdas, together with the Śaḍaṅgas required for their Japa or silent meditative repetition, and the Upaniṣad concludes by saying that Śuka became a Jivan-mukta as the result of the teachings so received at the hands of Śiva.

Beginning:

सह नाववत्विति शान्तिः । अथातो रहस्योपनिषदं व्याख्यास्यामः ।
देवर्षयो ब्रह्माणं सम्पूज्य प्रणिपत्य पप्रच्छुर्भगवन्नस्माकं रहस्योपनिषदं
ब्रूहीति । सोऽब्रवीत् ।

पुरा व्यासो महातेजास्सर्ववेदतपोनिधिः ।

प्रणिपत्य शिवं साम्बं कृताञ्जलिरुवाच ह ॥

श्रीवेदव्यास उवाच

देवदेव महाप्राज्ञ पाशछेददृढव्रत ।

शुकस्य मम पुत्रस्य वेदसंस्कारकर्मणि ॥

ब्रह्मोपदेशकालोऽयमिदानीं समुपस्थितः ।

ब्रह्मोपदेशः कर्तव्यो भवताद्य जगद्गुरौ ॥

End:

प्रव्रजन्तन्तमालोक्य कृष्णद्वैपायनो मुनिः ।

अनुव्रजन्नाजुहाव पुत्रविश्लेषकातरः ॥

प्रतिनेदुस्तथा सर्वे जगत्स्थावरजङ्गमम् ।

तच्छ्रुत्वा सकलाकारो व्यासस्सत्यवतीसुतः ॥

पुत्रेण सहितः प्रीत्या परानन्दमुपेयिवान् ।

यो रहस्योपनिषदमधीते गुर्वनुग्रहात् ।

सर्वपापविनिर्मुक्तस्साक्षात्कैवल्यमश्नुते ॥

साक्षात्कैवल्यमश्नुत इत्युपनिषत् ॥

Colophon:—रहस्योपनिषत्समाप्ता ॥

No. 750. रहस्योपनिषत्.

RAHASYOPANISAD.

Pages, 4. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 444 of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 751. रहस्योपनिषत्.

RAHASYÔPANISAD.

Pages, 7. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 7a of the MS. described under No. 284.

Complete.

Another copy of the preceding. A verse is given in the beginning of this codex, which is not found in the previous copy.

परमाद्वैतसत्यात्मप्रज्ञानाद्वैतचिद्धनम् ।
आश्रये ॥क्षिणामूर्तिमवाब्जनसगोचरम् ॥

No. 752. रहस्योपनिषत्.

RAHASYÔPANISAD.

Pages, 6. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 81a of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.

No. 753. रामतापिन्युपनिषत्.

RĀMATĀPINYUPANISAD.

Pages, 20. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 254a of the MS. described under No. 250.

Complete.

In the Pūrvatāpinī or the first part, it is taught that Rāma is the Supreme Being, a Mantra and a Yantra are both described for conducting his worship, and the story of the Rāmāyaṇa is also briefly given. In the Uttaratāpinī or the second part, the component parts of the Praṇava are identified with Rāma and his brothers, while Sīta is identified with Prakṛti or primordial matter; and the identification of the individual soul with Rāma is then taught to constitute the goal of salvation; and lastly Śiva is authorized by Rāma to teach at Benares the Tāraka-Mantra relating unto himself.

Beginning of Pūrvatāpinī :

ओं भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

चिन्मयेऽस्मिन्महाविष्णौ जाते दाशरथे हरौ ।

रथोः कुलेऽखिलं राति राजते यो महीस्थितः ॥

स राम इति लोकेषु विद्वद्भिः प्रकटीकृतः ।

राक्षसा येन मरणं यान्ति सोद्रेकतोऽथ वा ॥

रामनाम भुवि ख्यातमभिरामेण वा पुनः ।

राक्षसा मर्त्यरूपेण राहुर्मनसिजं यथा ॥

* * * *

रमन्ते योगिनोऽनन्ते नित्यानन्दचिदात्मनि ।

इति रामपदेनासौ परं ब्रह्माभिधीयते ॥

End :

विश्वव्यापी राघवो यस्तदानीमन्तर्दधे शङ्खं चक्रं गदाब्जे ।

धृत्वा रमारहितस्सानुजश्च सपत्तनस्सानुजस्सर्वलोकी ॥

तद्भक्ता ये लब्धकामाश्च मुक्ता तथा पदं परमं यान्ति ते च ।

इमा ऋचस्सर्वकामार्थदाश्च ये ते पठन्त्यमला यान्ति मोक्षम् ॥

चिन्मयेऽस्मिन् त्रयोदश । स्वभूर्ज्योतिस्तिष्ठः । सीतारामावेका ।

जीववाचि षट्षष्टिः । भूतादेकादश । पञ्चस्वण्डेषु त्रिणवतिः ॥

Beginning of Uttaratāpinī :

ओं बृहस्पतिरुवाच याज्ञवल्क्यं यदनुकूल(कुरु) क्षेत्रं देवानां देवयजनं
सर्वेषां भूतानां ब्रह्मसदन(म)विमुक्तं वै कुरुक्षेत्रं देवानां देवयजनं सर्वेषाम्भू-
तानां ब्रह्मसदनं तस्माद्यत्र कच्चन गच्छति ॥

End :

ऋचो अक्षरे परमे व्योमन् यस्मिन् देवा अश्विर्विश्वे निषेदुः ।
यस्तन्न वेद किमृचा करिष्यति । य इत्तद्विदुस्त इमे समासते । तद्विष्णोः

परमम्पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । द्विवीच चक्षुराततम् । तद्विप्रासो विषन्यवो
जागृवांसस्समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ ओं सत्यमित्युपनिषत् ॥

Colophon:—श्रीरामोत्तरतापिन्युपनिषत्समाप्ता ॥

No. 754. रामतापिन्युपनिषत्.

RĀMATĀPINYUPANISAD.

Pages, 8. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 101b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 755. रामतापिन्युपनिषत्.

RĀMATĀPINYUPANISAD.

Pages, 24. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 139.

Complete.

The Upaniṣad seems to have had its beginning on a leaf which is lost; and a leaf numbered as 4 gives the colophon of the first part of the Upaniṣad as follows:—

इत्यथर्वणरहस्ये श्रीरामपूर्वतापनीये प्रथमोपनिषत् ।

The work is otherwise complete and gives the Śānti as—
सह नावबतु.

In the Uttaratāpinī, the colophons of the first and the third Khandaṣ give the subject-matter as follows:—

I. तारकस्वरूपनिरूपणम् ।

III. उपदेशक्रमः ।

The Uttaratāpinī, according to the MS. described under No. 753, contains six Khandaṣ; but this codex, while containing

the whole, counts only five Khaṇḍas by including both the first and the second under the first Khaṇḍa.

No. 756. रामतापिन्युपनिषत्.

RĀMATĀPINYUPANIṢAD.

Pages, 8. Lines, 10 on a page.

Begins on fol. 53a of the MS. described under No. 560.

Complete.

This MS. like the preceding, counts only five Khaṇḍas in the Uttarātāpinī. It contains the following Śānti and also certain verses at the beginning which are not found in the MS. described under No. 753.

शन्नो मित्रः शं वरुण इति शान्तिः ।

नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशऋषिभ्यो नमो गुरु-
भ्यः । सर्वोपप्लवरहितः प्रज्ञानघनः प्रत्यगर्थो ब्रह्मैवाहमस्मि । ओं तत्सत् ॥

अखण्डसच्चिदानन्दमवाङ्मनसगोचरम् ।

आत्मानमखिलाधारमाश्रयेऽभीष्टसिद्धये ॥

The Colophon is :—

इत्यथर्वणरहस्ये शौनकसंहितायां रामोत्तरतापनीयोपनिषदि पञ्चम-
खण्डः ॥ . . . सह नाववतु . . . शान्तिः ।

No. 757. रामतापिन्युपनिषत्.

RĀMATĀPINYUPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 16 × 1½ inches. Pages, 27. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 38a. The other works herein are Rāmamānasa-pūjāvidhiḥ 1a, Rāmakavacaḥ 5a, Rāmastavarājaḥ 7a, Rāmā-ṣṭōttaraśatanāmastōtram 11a, Rāmānuemṛtiḥ 13a, Dēvarṣipitr-tarpanaprayōgaḥ 14a, Nārāyaṇatīrthastavaḥ 14b, Rāmadurgām

15a, Rāmamantrakavacaḥ 16a, Rāmamalāmantram 17b, Rāmakilakam 18a, Viṣṇusahasranāmastōtram 19a, Viṣṇusahasranāmavalih 27a, Trailōkyamūhanakavacaḥ 36a, Tattvaviṣayakagranthaḥ 58a, Viṣṇustōtram 59a, Tulasistōtram 60a, Gaṅgāṣṭakam 62a, Lakṣmīstutih 63a, Kaupīnapañcakam 64a, Vyāsāṣṭakam 65a, Gāruḍōpaniṣad 66a, Trivēṇīdaśakam 68a, Viṣṇunāmasaṅkīrtanam 69a, Kaupīnapañcakam 69b, Maṇīśāpañcakam 70a, Siddhārikōṣṭhaprakaraṇam 71a, Brahmāpārastōtram 72a, Mānasikasnānavidhiḥ 72b, Rāmākavacapañjaram 74a, Rāmabrahmastutih 77a, Annapūrṇōśvaryaṣṭakam 79a.

Complete.

On fol. 52a begins another copy of Uttaratāpinī extending over 8 pages.

The Śānti given is भद्रं कर्णेभिः ।

No. 758. रामतापिन्युपनिषत्.

RĀMATĀPINYUPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, 17½ × 1½ inches. Pages, 15. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, injured. Appearance, old.

Begins on fol. 1a. The other work herein is Rāmātāpinyupaniṣadvyakhya, 86.

Complete.

This MS. counts six Khaṇḍas in the Uttaratāpinī. At the end the following verse is added :—

मुक्ताभरणसप्तम्यां पिङ्गलाब्दे रवौ(वेः) दिने ।

पूर्वापरौ तापनीयावलिखद्रामगोचरौ ॥

No. 759. रामतापिन्युपनिषत्.

RĀMATĀPINYUPANISAD.

Substance, palm-leaf. Size, 8½ × 1½ inches. Pages, 26. Lines, 4 on a page. Character, Kanarese. Condition, very much injured.

This copy is very imperfect.

Uttaratāpinī ; complete.

No. 760. रामतापिन्युपनिषत्.

RĀMATĀPINYUPANISAD.

Pages, 10. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 85b of the MS. described under No. 306.

This MS. counts six Khandas.

Uttaratāpinī; complete.

No. 761. रामतापिन्युपनिषत्.

RĀMATĀPINYUPANISAD.

Pages, 20. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 307.

Complete. Same as the last.

No. 762. रामतापिन्युपनिषद्वाख्या.

RĀMATĀPINYUPANISADVYĀKHYĀ.

Pages, 54. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 24a of the MS. described under No. 560.

Complete.

The commentary on the first part is by Viśvśvara, and that on the second, named Sudhā, by Bhaṭṭa Mudgalasūri.

Beginning of Pūrvatāpinī :

ओं नमो भगवते रामचन्द्राय । मातृसहस्रदयावती श्रीरामतापनयोप-
निषत् मध्यमोत्तमाधिकारितारतम्यात्सगुणनिर्गुणोपासनप्रकारपूर्वोत्तरभागाम्यां
प्रवर्तते* । तत्र मन्दाधिकारिसगुणोपासनयैव निर्गुणस्योपादेयत्वात् पञ्चभिः
श्लोकैरादौ रामनाम्नो निरुक्तिं सगुणपरतया कृत्वा षष्ठश्लोकेन निर्गु-
णपरतया निरुक्तिमाह चिन्मय इत्यादिना । अत्रायमन्वयः रघोः
कुले दशरथे विषये चिन्मयेऽस्मिन् महाविष्णौ हरौ जाते सति

वैशेषिकादिमतं निराकृतम् । अस्मिन् प्रत्यक्ष इत्यर्थः । अयमहमस्मीति
 पामराणामप्यनुभवात् । वेवेष्टीति विष्णुः विष्णौ विष्णुव्यासावित्यस्माद्धातोः
 नुप्रत्ययान्तस्य रूपं सर्वमूर्तसंयोगित्वं व्यापकत्वं गगनादावपीति तद्व्यावृत्त्यर्थं
 महाविष्णावित्युक्तम् । तथा च परिच्छेदत्रयशून्यत्वं महाविष्णुशब्दार्थः ।
 आत्मा न देशतः परिच्छिन्नः सर्वत्र सत्त्वात् न कालतः परिच्छिन्नः सर्व-
 दैव सत्त्वात् न वस्तुतः परिच्छिन्नः तद्व्यतिरेकेण वस्त्वन्तरस्याभावात् . . .

Colophon :

इति श्रीमद्विश्वेश्वरविरचितायां रामपूर्वतापनीटीकायां पञ्चमोपनिषत्
 समाप्ता ॥

ओं शन्नो मित्रशं वरुणः । शन्नो भवत्वर्यमा । ओं शान्तिश्शान्ति-
 शान्तिः ॥

निर्गुणासिकरीत्यादौ सगुणोपास्तिरीरिता ।
 तस्याश्च मन्त्रसाध्यत्वाद्विहितस्तज्जपः पुरा ॥
 मन्त्रार्थं तु द्वितीयस्यां तृतीयोपनिषद्यपि ।
 तुर्यायां कथितं मन्त्रं पञ्चम्यां तु प्रपूजनम् ॥
 तद्व्याख्यानान्मया रामः पूजितः प्रीयतां सदा ॥

Beginning of Uttaratāpinī:

रामोत्तरतापिनीयव्याख्यानम् ।

अन्तर्यामिणमात्मानममृतं ब्रह्म निर्मलम् ।

यत्साक्षादपरोक्षाच्च तं श्रीरामं भजेऽञ्जसा ॥

बृहस्पतिरुवाच याज्ञवल्क्यमित्याद्याथर्वणरहस्यस्था श्रीरामतापनीयोपनि-
 षत् तस्या इयमल्पाक्षरव्याख्या प्रस्तूयते ॥

End :

श्रीरामचन्द्रेणोक्तमिति अत एव तत्क्षेत्रोपासनेन तवावश्यमात्मज्ञानं
 भविष्यतीति यदुक्तं मया तत्र विश्वासः कार्यः इति भावः । इदानीमत्रेः
 क्षेत्रोपासनार्थं प्रवृत्तये क्षेत्रं स्तौति यो विमुक्त इति एतत्क्षेत्रदर्शनेनापि

यदा जन्मान्तरिता इति जन्मभिरन्तरिताः अनेकजन्मकृता दोषा न स्पृशन्ति तदा किं वक्तव्यमुपासनायां कृतायामिति इतिशब्दो ब्रह्मज्ञानोपदेशसमाप्तौ ॥

यद्याख्यातं मया किं चित् स्वीयबोधानुसारतः ।

तत् क्षन्तव्यं बुधैश्शुद्धैः एष बद्धोऽञ्जलिर्मया ॥

Colophon :

इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारपारीणविद्वद्भैरेयश्रीरामचरणसरोज-
चञ्चरीकहृदयश्रीमद्भगवद्भट्टमुद्गलसूरिविरचितायां सुधाख्यायां चतुर्थखण्डिका
समाप्ता ॥

The 5th Khaṇḍikā is incomplete.

No. 763. रामतापिन्युपनिषद्वाख्या.
RĀMATĀPINYUPANIṢADVYĀKHYĀ.

Pages, 45. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 8b of the MS. described under No. 758.

Incomplete.

By Nāgēśvarasūri, a descendant of Timmarāja of Sāraṅga family.

Beginning of Pūrvatāpini :

प्रणमदमरमौलिप्रोतमाणिक्यराश्मि-

च्छुरितनखदलाग्रं पादपद्मं मुरारेः ।

मनसि निविशमानं मामकं तापजालं

शमयतु वितरत्वामोदमश्रान्तमन्तः ॥

सं रामं राममाराममसङ्ख्यगुणशालिनम् ।

क्लेशकर्मविपाकादेर्विराममभिराधये ॥

योगिध्येयमनन्तमष्टगुणितां भूर्तिं व्यतीत्यास्थितं

सान्द्रानन्दमुपाश्रितेह परमं विष्णोः पदं सर्वगम् ।

संसारार्ककरप्रतप्तमनसां श्वश्रेयसं तन्वती
 श्रीरामोपनिषच्चिराय जयताच्छास्त्रेव काल्पद्रुमी ॥
 अस्ति स्वरत्ययनीयशीलसुभगस्सौजन्यधन्यस्सुधीः
 सारङ्गावयवार्धिशीतकिरणः श्रीतिम्मराजान्वयः ।
 तन्वानेन वियन्नर्दाविजयिनीं दानाम्बुधारापगां
 श्रीरामाङ्घ्रिसरोजभृङ्गमनसा तेनाहमध्येषितः ॥
 पदवाक्यप्रमाणाब्धिमन्थानमतिमन्दरः ।
 रामोपनिषदो वृत्तिं कुर्वे नागेश्वरः कृती ॥
 श्रीरामोपनिषत्सेयं यथामति यथाश्रुतम् ।
 व्याख्यायते मुमुक्षूणां रामात्ममतिजन्मने ॥

इह हि मुमुक्षवोऽधिकारिणो मोक्षः प्रयोजनं रामात्मावगातिरवान्तर-
 प्रयोजनं सम्बन्धः पुनर्मोक्षावगतिभ्यां सहोपनिषदः कार्यकारणभावः ।

* * * *

चिन्मये चिद्रूपे प्रयोगे प्राचुर्यात् स्वार्थं . . . गत्वा गतविकारावयवेषु(?)
 प्रकृते मयडुच्यते अद्वितीयचिदात्मकस्य रामस्य विष्णोश्चितो विश्लेषा-
 संभवात् । अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराण इत्यादिश्रुतिभिस्तस्योत्पत्तिनिरासात्
 निष्कलं निष्क्रियं शान्तं निरवद्यं निरञ्जनमिति श्रुत्या निरवयवतो-
 क्तेश्च ॥

Colophon :

इति श्रीमत्पदवाक्यप्रमाणपारावारपारीणमहोपाध्यायनागदेवसूरिविरचि-
 तायां श्रीरामोपनिषद्भूतौ पूर्वतापिनीयं समाप्तम् ।

Beginning of Uttarātāpini :

रामब्रह्मात्मविद्यायां प्रागारादुपकारकः ।
 अव्यधाय्यधुना हेतुरुच्यते सामवायिकः ॥
 उच्छासादोत्तमात् काशीवासः प्रथमस्वण्डके ।
 अध्यात्मकाविमुक्तस्थचिन्तनं तु तृतीयके ॥

अतो न पुनरुक्तिः तत्र बृहस्पतियाज्ञवल्क्यसंवादाख्यायिकामुखेन
ब्रह्मविद्यायां सामवायिकं प्रथमं हेतुमाह बृहस्पतिरुवाचेत्यादिना । बृहस्पतिर्देव-
गुरुर्याज्ञवल्क्यमनेकान् ब्रह्मवादिनो जितवन्तमिति गम्यते

End :

यन्निष्ठा यन्निरूपिता व्यासिर्येन विशेषणेन विना गृहीतुं न शक्यते
तस्यैव सार्थकत्वात्

No. 764. रामतापिन्युपनिषद्वाख्या (पदयोजिका).

RĀMATĀPINYUPANIṢADVYĀKHYĀ (PADAYŌJIKĀ).

Substance, palm-leaf. Size, 16½ × 1½ inches. Pages, 28 Lines, 9
on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

The author of this commentary is Rāmayati, pupil of Gōvindā-
nanda.

Begins on fol. 1a. The other works herein are—Śivanāmāvaliḥ
14a, Śivakavacaḥ 16a, Āsanamantraḥ 22a, Vibhūtiśānamantraḥ
22a, Ṣaṣṭhalanirṇayaḥ 23a, Liṅgadhāraṇalakṣaṇam 23b,
Pādatīrthamāhātmyam 24a, Prātaḥkālasmaranīyapañcaratnam,
24a, Mitrakāśivagāthā 24b, Mallikēśvaragadyam 25a, Ṣaḍvarṇa-
mantrāṣṭakam 35b, Nigrahāṣṭakam 26a, Aparādhastavaḥ 26b,
Agastyāṣṭakam 27a, Pañcākṣaryāṣṭakam 27b, Śivāṣṭakam 28a,
Namaśśivāyāṣṭakam 29a, Vināyakaṣṭakam 29a, Śivaśaṅkarāṣṭa-
kam 30a, Nṛsimhamālāmantraḥ 31a, Malhaṇastavaḥ 32a, Vṛṣabha-
kavacaḥ 36a, Indrākṣitōtram 38a, Nigamāgamatīrthātināmāvaliḥ
42a, Namōntāṣṭāvimsatyuttaraśātanāmāvaliḥ 50a, Liṅgayōgyāṣṭa-
kam 55a, Āndhramantraḥ 56a, Pañcāṅgam 57a.

Beginning of Pūrvatāpinī :

श्रीरामोपनिषद्भूतिं विधास्ये रामकाशिकाम् ।

रामभक्त्या प्रयुक्तोऽहमानन्दोत्पन्नसंजिकः ॥

इह खलु सुखदुःखलाभालाभयोरनन्तरस्य पुरुषार्थत्वात् निखिलाधार-
संसाराटवीपर्यटनपरिश्रान्तानामुभयविधसाध्यसुलभात्मकरुणया ब्रह्मविद्या

मुपजनयितुमथर्वणशौनकशाखायां चिन्मयेत्याद्या स देवं पश्यति सोऽमृतत्वं गच्छतीत्यन्तं रामोपनिषत् पूर्वोत्तरसगुणनिर्गुणोपासनाभेदेन अधिकारितारतम्यात् प्रवृत्ता । तत्र चिन्मयेऽस्मिन्नित्यादिभिः षड्भिः श्लोकैः रामनाम निर्वक्ति ॥

End :

चिन्मय इत्यवाद्या ऋचो मुमुक्षूणामवश्यं पठनीया इत्याह इमा इति । येपठन्ति त इत्यर्थः ये जनाः ।

Colophon :

इति पञ्चमोपनिषत् समाप्ता ॥ इति श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीगोविन्दानन्दसरस्वतीयतिभगवत्पूज्यपादशिष्यश्रीरामनामयतिविरचितायां रामोपनिषत्पदयोजनायां पूर्वतापिनीयं समाप्तम् ॥

विकृतीवत्सरे चैव श्रावण्यां शुक्लपक्षयोः ।
तृतीयां भृगुवारे च घट्टरायप्पलिख्यते ॥
पूर्वतापिनीव्याख्येयं रामचन्द्रप्रसादतः ।
गणनाथसरस्वत्यां घट्टरायप्पलिख्यते ॥

Beginning of Uttaratāpini :—

एवं चिन्मय इत्यादिपञ्चोपनिषद्भिः मन्दाधिकारिणां सगुणोपासनं प्रपञ्चितम् । तेन शुद्धसत्त्वानां सांसारिकफलविरक्तानां त्यक्तसकलकर्मणां मुमुक्षूणां कृते निर्गुणब्रह्मप्रधानोत्तरतापनीयोपनिषदधुना प्रस्तूयते । बृहस्पतिरुवाच याज्ञवल्क्यं जनकसभायामासीनं यत् प्रसिद्धमनु पश्चात् सर्वोत्कृष्टमिति यावत् कुरुक्षेत्रं येन दुःखितस्सन् करोतीति तत्कुरु पापं कर्म तत्क्षेपणात् त्रायत आत्मानमिति कुरुक्षेत्रम् ।

End :

एष सर्वज्ञः अविद्यानिवृत्त्या सर्वज्ञानातीति एषोऽन्तर्यामी सर्वेषामन्तर्नीयते । तत्र हेतुः एष योनिः कारणं सर्वस्य जगतः

No. 765. रामतापिन्युपनिषद्वाख्या (पदयोजनिका.)

RĀMATĀPINYUPANISADVYĀKHYĀ
(PADAYŌJANIKĀ.)

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{2} \times 1$ inches. Pages, 61. Lines, 5 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, new. Complete. Same as the last.

Beginning :

श्रीरामतापिनीयेऽस्मिन् अज्ञातार्थपदाश्रया ।

व्याख्या प्रक्रियतेऽत्यल्पा कल्पनातीतसिद्धये ॥

चिन्मय इत्याद्या देवं स्तौति स देवं पश्यति सोऽमृतत्वञ्छतीत्यन्ता
आथर्वणी शौनकशाखायां रामोपनिषत् । तस्या इयम् अल्पग्रन्थापदवृ-
त्तिरारभ्यते । ओं चिन्मय इत्यादिभिः षड्भिः श्लोकमन्त्रैः श्रीरामनाम निर्वक्ति ।

End :

तेषामेवानुकम्पार्थमित्याद्या स्मृतिरपि समुच्चीयते ।

तस्मात्सर्वात्मना रामं भजेऽहं करुणाकरम् ।

सदा रामोऽहमस्मीति दृढबोधप्रसिद्धये ॥

Colophon :

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमद्भोविन्दसरस्वतीभगवत्पूज्यपाद-
शिष्यश्रीरामयतिप्रकाशितायां श्रीरामोपनिषत्पदयोजनिकायामथर्वणरहस्ये
उत्तरतापिनीयं समाप्तम् ॥

No. 766. रामरहस्योपनिषत्.

RĀMARAHASYŌPANISAD.

Pages, 20. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 245a of the MS. described under No. 250.

Complete.

Hanumat teaches in this Upaniṣad that Rāma is the Supreme Being, that other deities like Gaṇapati, &c., are merely his limbs,

that the meaning of the Rāma-Mantra is identical with that of the Mahāvākyas found in the Upaniṣads, and that the repetition of the Rāma-Mantra is calculated to lead one to salvation. More than one Rāma-Mantra is mentioned herein to allow room for choice on the part of the devotee.

Beginning :

ओं भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

रहस्यं रामतपनं वासुदेवश्च मुद्गलम् ।

शाण्डिल्यं पैङ्गलं भिक्षु महच्छारीरकं शिखा ॥

सनकाद्या योगिवर्या अन्ये च ऋषयस्तथा ।

प्रह्लादाद्या विष्णुभक्ता हनूमन्तमथाब्रुवन् ॥

वायुपुत्र महाबाहो किन्तत्त्वं ब्रह्मवादिनाम् ।

पुराणेष्वष्टादशसु स्मृतिष्वष्टादशस्वपि ॥

चतुर्वेदेषु शास्त्रेषु विद्यास्वाध्यात्मिकेऽपि(कासु) च ।

सर्वेषु विद्यादानेषु विष्णुसूर्येशशक्तिषु ॥

एतेषु मध्ये किं तत्त्वं कथय त्वं महाबल ।

End :

यदा रामोऽहमस्मीति तत्त्वतः प्रवदन्ति ये ।

न ते संसारिणो नूनं राम एव न संशयः ॥

ओं सत्यमित्युपनिषत् ॥

Colophon :—श्रीरामरहस्योपनिषत्समाप्ता ॥

No. 767. रामरहस्योपनिषत्.

RĀMARAHASYŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 97b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 768. रुद्रहृदयोपनिषत्.

RUDRAHRDAYÓPANISAD.

Pages, 6. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 1056 of the MS. described under No. 246.
Complete.

This Upaniṣad teaches that all the gods and all the animate and inanimate objects of creation are only manifestations of Mahēśvara and Umā, and explains by means of reasoning and authority the identity of the individual soul with the Supreme Being.

Beginning:

सह नाववत्विति शान्तिः ।

हृदय(यं) कुण्डली भस्मरुद्राक्षगणदर्शनम् ।

तारसारमहावाक्यपञ्चब्रह्मामिहोत्रकम् ॥

प्रणम्य शिरसा पादौ शुको व्यासमुवाच ह ।

को देवस्सर्वदेवेषु कस्मिन्देवाश्च सर्वशः ॥

कस्य शुश्रूषणं(णात्) नित्यं प्रीता देवा भवन्तु मे ।

तस्य तद्वचनं श्रुत्वा प्रत्युवाच पिता शुक्रः(म्) ॥

श्रीवेदव्यास उवाच । सर्वदेवात्मको रुद्रः सर्वदेवाः शिवात्मकाः ।

रुद्रस्य दक्षिणे पार्श्वे रविर्ब्रह्मा त्रयोऽमयः ॥

End:

तद्वत्स्वात्मपरिजानी कुत्रचिन्नैव गच्छति ।

स यो ह वै तत्परमं ब्रह्म यो वेद वै मुनिः ॥

ब्रह्मैव भवति स्वस्थसच्चिदानन्दमात्रकः ।

इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—श्रीरुद्रहृदयोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 769. रुद्रहृदयोपनिषत्.

RUDRAHṚDAYĪPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 154b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 770. रुद्राक्षजाबालोपनिषत्.

RUDRĀKṢAJĀBĀLĪPANIṢAD.

Pages, 8. Lines, 18 on a page.

Begins on fol. 124b of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad explains the origin of the Rudrākṣa-bead, its varieties and their characteristics ; it also explains in what manner it should be obtained by one, how and when it should be worn, and what benefits it confers on the wearer.

Beginning :

आप्यायन्त्विति शान्तिः ।

अथ हैनं कालाग्निरुद्रो(द्रं) भुसुण्डः पप्रच्छ कथं रुद्राक्षोत्पत्तिस्तद्धारणात् किम्फलमिति । तं होवाच भगवान् कालाग्निरुद्रः । त्रिपुरवधार्थमहं निमीलिताक्षोऽभवं तेभ्यो जलबिन्दवो भूमौ पतितास्ते रुद्राक्षा जातास्सर्वानुग्रहार्थाय । तेषां नामोच्चारणमात्रेण दशगोप्रदानफल(लं)दर्शनसंस्पर्शनाभ्यां द्विगुणफलमत ऊर्ध्वं वक्तुं न शक्नोमि ॥

End :

अथ सदाशिवस्संहारकाले संहारं कृत्वा संहाराक्षं मुकुलीकरोति । तन्नयनाज्जाता रुद्राक्षा इति होवाच तस्माद्रुद्राक्षत्वमिति कालाग्निरुद्रः प्रोवाच ।

*

*

*

*

य इमामुपनिषदं ब्राह्मणस्सायमधीयानो दिवसकृतं पापं नाशयति ।

*

*

*

*

शिवसायुज्यमवाप्नोति न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तत इति ॥
ओं सत्य मित्युपनिषत् ।

Colophon :— रुद्राक्षजाबालोपनिषत् समाप्ता ।

No. 771. रुद्राक्षजाबालोपनिषत्.

RUDRĀKṢAJĀBĀLÓPANISAD.

Pages, 4. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 161a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 772. रुद्राक्षजाबालोपनिषत्.

RUDRĀKṢAJĀBĀLÓPANISAD.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 74b of the MS. described under No. 217.

Complete.

The beginning is the same so far as it is extracted under No 770 ; but, after that, this goes on to say :—

कुमार ततो जपमन्त्रकधारणविधिं कथयामि ।

There is no Śānti and the ऋषि who questions the god कालामिरुद्र is here सनत्कुमार but not भुसुण्ड.

The extracts from the end differ from those given under No 770.

End :

प्राणानायभ्य समस्तपापक्षयार्थं शिवज्ञानावाप्त्यर्थं समस्त-
मन्त्रैस्सह रुद्राक्षधारणङ्करिष्ये इत्येवं विद्वान् ब्रह्मचारी गृहस्थो वानप्रस्थो
यतिर्वा धारयेत् । पदे पदेऽश्वमेधफलमाप्नोति इत्याह भगवान् कालामि-
रुद्रः । एतद्येनार्थीतं सोऽहमेव भवत्यो सत्यमित्युपनिषत् ॥

No. 773. रुद्राक्षजाबालोपनिषत्.

RUDRĀKṢAJĀBĀLŌPANIṢAD. .

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

• Begins on fol. 64b of the MS. described under No. 285.

This forms the last portion of the Upaniṣad.

Beginning :

अथ कालाग्निरुद्रं भगवन्तं सनत्कुमारः पप्रच्छ अधीहि भगवन् रुद्राक्षधारणविधिम्[मनुब्रूहीति होवाच] । तस्मिन् समये ऋभुनिदाघकात्यायन-दत्तात्रेयभारद्वाजकपिलवसिष्ठपैलामी(पलादाः) कालाग्निरुद्रं परिसमेत्योवाच (चुः) । अथ कालाग्निरुद्रः किमर्थं भवतामागमनमिति होवाच । रुद्राक्षधारणविधिं सर्वे श्रोतुमिच्छाम इति । अथ कालाग्निः प्रोवाच । रुद्रस्य नयनादुत्पन्ना रुद्राक्षीति ख्यायते तस्माद्रुद्राक्षित्वमिति । अथ कालाग्निरुद्रः प्रोवाच तद्रुद्राक्षिं वाग्विषयं कृते दशगोप्रदाने यत्फलमवाप्नोति तत्फलमश्नुते । स एष ज्योतिरुद्राक्षीति होवाच । तद्रुद्राक्षिं करैः स्पृष्टुमिच्छन्(तः) शतगोप्रदानफलं भवति

End :

अथ कालाग्निरुद्रः प्रोवाच । योगध्यानानां शिव एको ध्येयश्चिवङ्करः सर्वमन्यत्परित्यज्यैतामधीत्य द्विजो वा क्षत्रियो वार्धते गर्भवासा मुच्यत इत्यो सत्यम् । अथ कालाग्निरुद्रः प्रोवाच । स कृज्जप्त्वैव शुचिः पूतः कर्मण्यो भवति द्वितीयं जप्त्वा गाणपत्यमवाप्नोति तृतीयं जप्त्वा देवमेवानुप्रविश्यो सत्यमो सत्यमित्युपनिषत् ॥

Colophon :—इत्यथर्वणे रुद्राक्षजाबालोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 774. लिङ्गधारणोपनिषत्.

LIṄGADHĀRAṆŌPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 75b of the MS. described under No. 217.

Complete.

This Upaniṣad teaches that all beings should wear the Liṅga, and explains how it should be worn and what benefits accrue to one by wearing it.

Beginning :

ओं धर्मविज्ञानसाज्ञानबुद्धिश्च ज्ञानान्मोक्षात्कारणम्भोक्षान्मुक्तिस्वरूपः ।
ब्रह्मज्ञानाज्ञानबुद्धिश्च लिङ्गैक्यं देहदेहिलिङ्गभेदेन अज्ञानज्ञानबुद्धिश्च
चातुर्वर्णानाधारणकुर्यात् । पशुपक्षिमृगकीटकलिङ्गधारणमुच्यते । पञ्च-
बन्धस्वरूपेण पञ्चबन्धाज्ञानस्वरूपं पिण्डाज्जननं तज्जननकाले धारणमुच्यते ।
सर्वलिङ्गस्थापयेति पाणिमन्त्रम् । अयम्मे हस्तो भगवानिति धारयेत् ।

End :

ततो धारयन्तीन्द्रः पूषा वरुणो मित्र अग्निर्यममादित्या एत विश्वे च
देवाः उत्तरास्मिन्ज्योतिषु धारयेत् । सति संयुक्तं लिङ्गं मोक्षमेव धारणं
लिङ्गं विद्यादेवम् (?) तिवमादतं कुर्याज्जं तत्सर्वितुर्वरेति लिङ्गोपनिषत्स-
माप्ता ॥

(२) इत्येवं वेदेत्युपनिषत् सदा लिङ्गसन्निहिता भक्तिः शान्तिशिष्टः
प्रसिद्धः असा.

No. 775. वज्रपञ्जरोपनिषत्.

VAJRAPAÑJARŌPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 15½ × 1¼ inches. Pages, 5. Lines, 4 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete.

This is not included in the 108 Upaniṣads mentioned in the Muktikōpaniṣad. It gives certain Mantras to be used when smearing the various parts of the body with Vibhūti or the sacred ashes.

Begins on fol. 8a. The other works herein are : A Telugu work 1a Praṇavaśvarūpavivaraṇam 2a, Nṛsiṃhamantraḥ 11a, Śūlinīmantraḥ

12a, Śūlinistavaḥ 18a, Tripurasundaristōtram 19a, Pañcavaktra-
hanūmanmantraḥ 21a, Śrividyaśōḍaśākṣarimantraḥ 23a, Mantra-
saṅgrahaḥ 24a, Mantraprayōgaḥ 30a.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

वज्रपञ्जरेण भस्मोद्धारणं कुर्यात् वामकरे भस्म गृहीत्वा सद्योजात-
मिति पञ्चब्रह्ममन्त्रः लियम्बकं जातवेदसे गायत्र्या मानस्तोकैरभिमन्त्र्य
श्रीविद्यया शिरसि एवं वद वद वाग्वादिनि ॥

End :

त्रिपुण्ड्रतानि कथितानि ललाटे . . . दैवलिखितानि दुरक्षराणि ।
सह नाववतु ओं शान्तिः ॥

एतानि तानि शिवमन्त्रपवित्रितानि
भस्मानि कामदहनाङ्गविभूषणानि ।
त्रैपुण्ड्रतानि कथितानि ललाटपट्टे
लुप्यन्ति दैवलिखितानि दुरक्षराणि ॥

No. 776. वज्रसूच्युपनिषत्.
VAJRASŪCYUPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 104b of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad enquires into the meaning of the word Brah-
maṇa and establishes that it is applicable as a title to all those
who are in possession of the knowledge of the Supreme Being,
irrespective of the caste to which they belong by birth.

Beginning :

आप्यायन्त्विति शान्तिः ।

वज्रसूचीं प्रवक्ष्यामि शास्त्रमज्ञानभेदनम् ।
दूषणं ज्ञानहीनानां भूषणं ज्ञानचक्षुषाम् ॥

ब्रह्मक्षत्रियवैश्यशूद्राश्चत्वारो वर्णास्तेषां वर्णानां ब्राह्मण एव प्रधान इ
वेदवचनानुरूपं स्मृतिभिरप्युक्तं तत् चोद्यमस्ति । को वा ब्राह्मणो न
किं जीवः किं देहः किं जातिः किं ज्ञानं किं कर्म को धार्मिक इति ॥

End :

अन्यथा ब्राह्मणत्वसिद्धिर्नास्त्येव । सच्चिदानन्दमात्मानमद्वितीयं इ
भावयेदात्मानं सच्चिदानन्दं ब्रह्म भावयेदित्युपनिषत् ॥

Colophon :—वज्रसूच्युपनिषत्समाप्ता ॥

No. 777. वज्रसूच्युपनिषत्.
VAJRASŪCYUPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 46a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 778. वज्रसूच्युपनिषत्.
VAJRASŪCYUPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 10b of the MS. described under No. 217.

Complete. Same as the last.

No. 779. वज्रसूच्युपनिषत्.
VAJRASŪCYUPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 15a of the MS. described under No. 300.

Complete. Same as the last.

No Śānti is given.

No. 780. वज्रसूच्युपनिषत्.
VAJRASŪCYUPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 14b of the MS. described under No. 284.

Complete. Same as the last.

No. 781. वज्रसूच्युपनिषत्.

VAJRASŪCYUPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, $15\frac{1}{2} \times 1\frac{1}{2}$ inches. Pages, 2. Lines, 7 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Begins on fol. 168a.

Complete.

The other works herein are:—

| | Fol. | | Fol. |
|--------------------------|------|--------------------------|------|
| Śivāṣṭakam | 1a | Śivasandhyāmantraḥ .. | 93a |
| Pārvatisāṣṭakam .. | 2a | Aparādhastavaḥ .. | 99a |
| Sālaṅkēśvaraṣṭakam .. | 3a | Śaḍgururagaḍa .. | 103a |
| Śaḍakṣarīmantrāṣṭakam .. | 4a | Mṛtyuñjayamānasapūjā. | 108a |
| Bhujāṅgaprayāṭastavaḥ. | 6a | Śivapūjāvidhiḥ .. | 119a |
| Śivasahasranāmastōtram. | 8a | Namaśśivāyaraḍa .. | 127a |
| Śivalhujāṅgastavaḥ .. | 15a | Vināvakapūjavidhiḥ .. | 130a |
| Rāvaṇapañcācāmarastōtr- | | Udāharaṇagadyam .. | 132a |
| am | 27a | Vṛsabhaṣṭakam .. | 135a |
| Tāṇḍavastavaḥ .. | 29a | Pañcaprakāragadyam .. | 136a |
| Paṭṭasāilapatyaṣṭakam .. | 30b | Namaskāragadyam .. | 138b |
| Virabhadraṣṭakam .. | 31b | Muktapadagraṣṭastutiḥ .. | 140b |
| Do. .. | 32a | Akṣaramālāgadyam .. | 141b |
| Pañcaratnam | 32b | Bhuvanēśvaristōtram .. | 146a |
| Gaṅgāṣṭakam | 33a | Nilakaṇṭhastōtram .. | 147a |
| Candraśekharaṣṭakam .. | 35b | Rudrakavacam .. | 148a |
| Kāśīpuryaṣṭakam (Vyāsa- | | Prāsādapancākṣarīmantraḥ | 149a |
| ṣṭakam) | 38a | Śarabhasāluvaṇtraḥ .. | 149b |
| Bāṇāṣṭakam | 38b | Virabhadrakavacastōtram. | 149b |
| Ādityahr̥dayam | 40a | Mārkaṇḍeyastōtram .. | 154b |
| Ādityakavacam | 44a | Śivarātrivrataphalam .. | 156a |
| Ādityamālāmantraḥ .. | 45a | Ūrdhvaṇḍradhārāṇa- | |
| Śyāmalādaṇḍakam .. | 46a | dūṣaṇam. .. | 164a |
| Śivādhyānam | 71a | Śivapūjāvidhiḥ .. | 165a |
| Gurubasavalīṅgapūjā .. | 89a | Do. .. | 169a |

The Śānti is not mentioned in the beginning; but at the end the **Colophon** runs thus—इति वज्रसूच्याथर्वणवेदे वज्रसूची समाप्ता ॥

No 782. वज्रसूच्युपनिषत्.
VAJRASŪCYUPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 120a of the Ms. described under No. 365.

Complete. Neither the Śānti-pāṭha nor the colophon is given.

No. 783. वराहोपनिषत्.
VARĀHOPANIṢAD.

Pages, 30. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 163a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad, after explaining the primary principles, as consisting of 24, 36 or 96 Tattvas, according as they are considered more or less comprehensively, describes the characteristics of one who is fit to learn the Brahma-Vidyā; it emphasises the difficulty which is necessarily found in association with the inadequate language of man, when it is used in describing the nature of the highest knowledge about the Brahman; and it concludes with a discourse on the value and purpose of Yōga.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

अथ कुहुर्वै महामुनिर्देवमानेन द्वादशवत्सरं तपश्चचार । तदासने
वराहरूपी भगवान् प्रादुरभूत् । स होवाचोत्तिष्ठोत्तिष्ठ वरं वृणीष्वेति ।
स उदतिष्ठत् । तस्मै नमस्कृत्योवाच भगवान् . . .

कामिभिर्यत्कामितं तत्तत्त्वत्सकाशात्स्वप्नेऽपि समस्तवेदशास्त्रेतिहास-
पुराणानि समस्तविद्याजालानि ब्रह्मादयस्सुरास्सर्वे त्वद्रूपज्ञानान्मुक्तिमाहुर-
तस्त्वद्रूपप्रतिपादिकां ब्रह्मविद्यां ब्रूहीति होवाच ॥

End :

एतदुपनिषदं योऽधीते सोऽमिषूतो भवति । स वायुपूतो भवति । सुरापा-
नात्पूतो भवति । स्वर्णस्तेयात्पूतो भवति । स जीवन्मुक्तो भवति । तदेतदृचाभ्यु-
क्तम् । तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ।
तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसस्समिन्धते । विष्णोर्यत्परमम्यदम् ॥

हरिः ओम् ॥ इति पञ्चमोऽध्यायः

Colophon :—वराहोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 784. वराहोपनिषत्.

VARĀHĪPANIṢAD.

Pages, 12. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 176b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 785. वराहोपनिषत्.

VARĀHĪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 41a of the MS. described under No. 139.

Complete.

Beginning :

वराहोपनिषत्

अथ श्रीवराहरूपिणं भगवन्तं प्रणम्य सनत्कुमारः पप्रच्छ अधीहि
भगवन् ऊर्ध्वपुण्ड्रविधिं किं द्रव्यं किं स्थानं का रेखा का मुद्रा कः कर्ता किं
फलमिति च । तं होवाच क्षीराब्धिश्चेतद्वीपे क्षीरखण्डानानीय सटाभिर्विदलनात्
श्चेतमृत्तिका स्याता ॥

End :

सुज्ञानं लब्ध्वा तद्विष्णोः परमं पदमवाप्नोति न च पुनरावर्तत इति
भगवान् वराहरूपी य एवं वेदेत्युपनिषत् ॥

No. 786. वराहोपनिषत्.

VARĀHĪPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 192a of the MS. described under No. 29.

Incomplete.

Another copy like the preceding.

No. 787. वासुदेवोपनिषत्.

VĀSUDEVĪPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 22 on a page

Begins on fol. 265a of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad explains how all the Brahmins should wear the Ūrdhva-Pundra mark on the forehead with Gōpicandana and what benefit accrues to them therefrom.

Beginning :

ओम् आप्यायन्त्विति शान्तिः ॥

ओं नमस्कृत्य भगवान् नारदस्सर्वेश्वरं वासुदेवं प्रपच्छ अधीहि
भगवन् पुण्ड्रविधिम् । द्रव्यमन्त्रस्थानादिविधिं मे ब्रूहीति । तं होवाच
भगवान् वासुदेवः वैकुण्ठस्थानादुत्पन्नं मम प्रीतिकरं मङ्गलं ब्रह्मादिभिर्धो-
रितं विष्णुचन्दनं ममाङ्गे प्रतिदिनमालिप्तं गोपीभिः प्रक्षालनाद्गोपीचन्दनम् ।

End :

एवं विधिना गोपीचन्दनन्धारयेत् । यस्त्वधीते वा सर्वपातकेभ्यः
पूतो भवति । पापबुद्धिस्तस्य न जायते । स सर्वेषु तीर्थेषु स्नातो भवति ।
स सर्वैर्देवैर्गोपिजितो भवति । स सर्वैर्देवैः पूजितो भवति । श्रीमन्नारायणे मय्य-

चञ्चला भक्तिश्च भवति । स सम्यक् ज्ञानञ्च लब्ध्वा विष्णुसायुज्यमवाप्नोति ।
न च पुनरावर्तते न च पुनरावर्तते इत्याह भगवान् वासुदेवः । यस्त्वेतद्वा-
धीते सोऽप्येवमेव भवतीत्यो सत्यमित्युपनिषत् ॥

Colophon :—वासुदेवोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 788. वासुदेवोपनिषत्.

VĀSUDEVĪPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 105a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 789. वासुदेवोपनिषत्.

VĀSUDEVĪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 285.

Complete.

There is no Śānti given.

No. 790. वासुदेवोपनिषत्.

VĀSUDEVĪPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 84a of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.

No. 791. शरभोपनिषत्.

ŚARABHĪPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 209a of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad establishes the superiority of Rudra to Viṣṇu by explaining how Rudra, incarnating himself as Śarabha, destroyed the man-lion incarnation of Viṣṇu, and then concludes by identifying Śiva with the Supreme Being of the Vēdānta.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ।

अथ हैनं पैप्पलादो ब्रह्माणमुवाच भो भगवन् ब्रह्मविष्णुरुद्राणां
मध्ये को वा अधिकतरो ध्येयस्यात्तत्त्वमेव नो ब्रूहीति ।

तस्मै स होवाच पितामहश्च हे पैप्पलाद श्रु(ति)वाक्यमेतत् ।

बहूनि पुण्यानि कृतानि येन तेनैव लभ्यः परमेश्वरोऽसौ ।

यस्याङ्गजोऽहं हरिरुद्रमुखा भोहान्न जानन्ति सुरेन्द्रमुखाः ।

End :

प्रभुं वरेण्यं पितरं महेशं यो ब्रह्माणं विदधाति तस्मै ॥

शिवभक्ताय दातव्यं ब्रह्मकर्मोक्तधीमते ।

* * * *

स सर्वान्वेदानधीतो भवति । सर्वान् देवान् ध्यातो भवति । स समस्त-
महापातकोपपातकात्पूतो भवति । तस्मादविमुक्तमाश्रितो भवति । स सततं
शिवप्रियो भवति स शिवसायुज्यमेति न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्तत
इत्याह भगवान् ब्रह्मेत्युपनिषत् ॥

Colophon :— शरभोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 792. शरभोपनिषत्.

ŚARABHĪPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 85a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 793. शाठ्यायनीयोपनिषत्.

ŚĀṬYĀYANĪYŌPANIṢAD.

Pages, 8. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 177b of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad enjoins renunciation and asceticism on the ground that the mind is the basis of all happiness; it describes the various classes and characteristics of Sannyāsins and especially of the three - staff order known as Tridandins.

Beginning:

पूर्णमद इति शान्तिः ।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः ।

बन्धाय विषयासक्तं मुक्त्यै निर्विषयं स्मृतम् ॥

समारक्तं यदा चित्तं जन्तोर्विषयगोचरे ।

यदेव ब्रह्मणि स्यात्तत् तेन मुच्येत बन्धनात् ॥

चित्तमेव हि संसारस्तत् प्रयत्नेन शोधयेत् ।

End :

यथैव तेन गुरुर्भावनीयस्तथैव सान्नं न भुनक्ति श्रुतं तत् ॥

गुरुरेव परो धर्मो गुरुरेव परा गतिः ।

एकाक्षरप्रदातारं यो गुरुं नाभिवन्दति ॥

तस्य श्रुतं तपो ज्ञानं स्रवत्यामघटाम्बुवत् ।

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ॥

स ब्रह्मवित् परं प्रेयादिति वेदानुशासनम् ।

इत्युपनिषत् ।

Colophon:—शाठ्यायनीयोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 794. शाट्यायनीयोपनिषत्.
ŚĀTYĀYANĪYŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 182a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 795. शाण्डिल्योपनिषत्.
ŚĀNDILYŌPANIṢAD.

Pages, 25. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 269b of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad teaches the practice of Yōga as a means of coming into the possession of Brahma-Vidyā, and explains the nature and characteristics of the Brahman, and explains also the manifestation of the universe in the Brahman.

Beginning :

भद्रङ्कर्णेभिरिति शान्तिः ।

शाण्डिल्यो ह वाथर्वाणाम्प्रच्छात्मलाभोपायमूतमष्टाङ्गयोगमनु-
ब्रूहीति । स होवाचाथर्वा यमनियमासनप्राणायामप्रत्याहारधारणाध्यान-
समाधयोऽष्टाङ्गानि । तत्र दश यमाः । तथा नियमाः । आसनान्यष्टौ । त्रिः
प्राणायामः । पञ्च प्रत्याहारः । तथा धारणाः । द्विप्रकारन्ध्यानं समाधिस्त्वेक-
रूपः ॥

End :

अथ कस्मादुच्यते महेश्वर इति यस्मान्महत ईशशब्दध्वन्या चात्म-
शक्त्या तस्मादुच्यते महेश्वर इति ।

अथ योऽस्य निरुक्तानि वेद स सर्व वेद । अथ यो ह वै विद्यै-
नं परममुपास्ते सोऽहमिति स ब्रह्मविद्भवति ।

एवं यस्सततन्ध्यायेद्देवदेवं सनातनम् ।

स मुक्तमूर्ध्वपापेभ्यो निःश्रेयसमवाप्नुयात् ॥

इत्यो सत्यमित्युपनिषत् ॥ तृतीयोऽध्यायः ॥

Colophon :— शाण्डिल्योपनिषत्समाप्ता ॥

No. 796. शाण्डिल्योपनिषत्.

ŚĀṆḌILYŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 107a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 797. शरीरकोपनिषत्.

ŚĀRĪRAKŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 1a of the MS. described under No. 246.

Complete.

In this Upaniṣad are described the characteristics of the five Bhūtas or elements, the origin of the senses, the composition of the various parts of the body as made up of the Bhūtas, the four states of consciousness and the 25 principles or Tattvas. The whole seems to be related to the Sāṅkhya system of Hindu philosophy.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

अथातः पृथिव्यादिमहाभूतानां समवायं(ः) शरीरं यत्कठिनं सा पृथिवी यद्दृवन्तदापो यदुष्णन्तत्तेजो यत्सञ्चरति स वायुर्यत्सुषिरन्तदाकाशं श्रोत्रादीनि ज्ञानेन्द्रियाणि श्रोत्रमाकाशे वायौ त्वक् ग्लौ(अमौ)चक्षुरप्सु जिह्वा पृथिव्याङ्गाणमिति । एवमिन्द्रियाणां यथाक्रमेण शब्दस्पर्शरूपरस-गन्धाश्चैते विषयाः पृथिव्यादिमहाभूतेषु क्रमेणोत्पन्नाः वाक्पाणिपादपायू-पस्थानि कर्मेन्द्रियाणि । तेषाङ्क्रमेण वचनादानगमनविसर्गान्दाश्चैते विषयाः ॥

End:

जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिपुरीयमिति चतुर्विधावस्थाः । ज्ञानेन्द्रियकर्मेन्द्रियान्तः-
करणचतुष्टयं चतुर्दशकरणयुक्तं जाग्रत् । अन्तःकरणचतुष्टयैरेव संयुक्तः
स्वप्नः । चित्तैककरणा सुषुप्तिः । केवलजीवयुक्तमेव तुरीयमिति । उन्मीलित-
निमीलितमध्यस्थजीवपरमात्मनोर्मध्ये जीवात्मा क्षेत्रज्ञ इति विज्ञायते ॥

बुद्धिकर्मेन्द्रियप्राणपञ्चकैर्मनसा धिया ।

शरीरं सप्तदशभिः सूक्ष्मन्तल्लिङ्गमुच्यते ॥

मनो बुद्धिरहङ्कारः स्वानिलाग्निर्जलानि भूः ।

एताः प्रकृतयस्त्वष्ट्रौ विकाराण्णोडशाः परे ॥

श्रोत्रं त्वक्चक्षुर्जिह्वी जिह्वा प्राणश्चैव तु पञ्चमम् ।

पायूपस्थौ करौ पादौ वाक् चैव दशमी मता ॥

शब्दस्पर्शश्च रूपश्च रसो गन्धस्तथैव च ।

त्रयोविंशतिरेतानि तत्त्वानि प्रकृतानि तु ॥

चतुर्विंशतिरव्यक्तं प्रधानम्पुरुषः परः ।

इत्युपनिषत् ॥

Colophon :— शारीरोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 798. शारीरकोपनिषत्.

ŚĀRĪRAKŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 123a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 799. शारीरकोपनिषत्.

ŚĀRĪRAKŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 8b of the MS. described under No. 300.

Complete.

Another copy.

No. 800. शरीरकोपनिषत्.

ŚĀRĪRAKŌPANĪṢAD.

Pages, 4. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 16a of the MS. described under No. 284.

Another copy. Complete.

No. 801. शरीरकोपनिषत्.

ŚĀRĪRAKŌPANĪṢAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 12b of the MS. described under No. 116.

Complete.

Another copy.

No. 802. शरीरकोपनिषत्.

ŚĀRĪRAKŌPANĪṢAD.

Pages, 2. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 117b of the MS. described under No. 361.

Complete.

No Śānti is given.

No. 803. शरीरकोपनिषत्.

ŚĀRĪRAKŌPANĪṢAD

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 80a of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.

No. 804. श्वेताश्वतरोपनिषत्.
ŚVĒTĀŚVATAROPANIṢAD.

Pages, 14. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad explains the characteristics of the Supreme Being and of the individual soul, and teaches meditation and worship by means of the Pranava, the Supreme Person being herein identified with Rudra as the bestower of salvation.

Beginning :

सह नाववत्विति शान्तिः ।

ब्रह्मवादिनो वदन्ति ।

किं कारणं ब्रह्म कुतः स्म जाताः जीवाः केन क च संप्रतिष्ठाः ।

अधिष्ठिताः केन सुखेतरेषु वर्तमानहे ब्रह्मविदो व्यवस्थाम् ॥

कालः स्वभावो नियतिर्यदृच्छा भूतानि योनिः पुरुष इति चिन्त्यम् ।

संयोग एषां न त्वात्मभावादात्मा ह्यनीशः सुखदुःखहेतोः ॥

End :

तपःप्रभावाद्देवप्रसादाच्च ब्रह्म ह श्वेताश्वतरोऽथ विद्वान् ।

अत्याश्रमिभ्यः परमः पवित्रं प्रोवाच सम्यगृषिसङ्गजुष्टम् ॥

वेदान्ते परमं गुह्यं पुरा कर्मप्रबोधितम् ।

नाप्रशान्ताय दातव्यं नापुत्रायाशिष्याय वै पुनः ॥

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ।

तस्मै ते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥

प्रकाशन्ते महात्मन इत्युपनिषत् ॥ षष्ठोऽध्यायः ॥

Colophon :—श्वेताश्वतरोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 805. श्वेताश्वतरोपनिषत्.

ŚVĒTĀŚVATARÔPANIṢAD.

Pages, 7. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 3a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 806. श्वेताश्वतरोपनिषत्.

ŚVĒTĀŚVATARÔPANIṢAD.

Pages, 13. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 35b of the MS. described under No. 254.

Another copy. Complete.

No. 807. श्वेताश्वतरोपनिषत्.

ŚVĒTĀŚVATARÔPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 93b of the MS. described under No. 276.

Another copy. Incomplete.

No. 808. श्वेताश्वतरोपनिषत्.

ŚVĒTĀŚVATARÔPANIṢAD.

Pages, 21. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 125b of the MS. described under No. 180.

Complete.

The śānti herein given is भद्रं कर्णेभिः.

No. 809. श्वेताश्वतरोपनिषत्.

ŚVĒTĀŚVATARŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 63⁶ of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.



No. 810. श्वेताश्वतरोपनिषद्दीपिका.

ŚVĒTĀŚVATARŌPANIṢADDĪPIKĀ.

Pages, 158. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 101a of the MS. described under No. 316.

Complete.

This is a commentary on Śvĕtāśvatarŏpaniṣad by Vijñānŏttama, pupil of Jñānŏttama and is according to the Advaita school.

Beginning :

* * * *

निगमान्तप्रदीपाय निस्सङ्गसुखसंविदे ।

संसारतापनोदाय विद्याश्रीपतये नमः ॥

* * * *

विज्ञानोत्तममुनीन्द्राय नमः प्रत्यक्सुखात्मने ॥

नमः परमऋषिभ्यो नमो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यः । ब्रह्मवादिनो वदन्तीतिदं ब्राह्मणवाक्यं वादिनो वादशीलाः विज्ञानात्तेषूर्ध्वमसम्भावना-
विपरीतभावजोत्पादका विघ्नाः परिहीयन्ते

End :

यस्मात्तस्माद्विद्यार्थिभिर्देवतागुरुविषया निरुपाधिकभक्तिः कर्तव्येत्यभि-
प्रायः । द्विर्वचनमध्यायपरिसमाप्तिद्योतनार्थमादरार्थश्च ॥

Colophon :

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीमज्ज्ञानोत्तमपूज्यपादशिष्यस्य श्रीम-
द्विज्ञानोत्तमभगवतः कृतौ श्वेताश्वतरोपनिषद्विवरणे षष्ठोऽध्यायः समाप्तः ।
समाप्ता चेयमुपनिषत् । हरिः ओम् ॥

No. 811. सन्न्यासोपनिषत्.
SANNYĀSOPANIṢAD.

Pages, 16. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 23a of the MS. described under No. 246.

Complete

This Upaniṣad explains how the order of Sannyāsins is entered into, who are fit to enter the order and what the characteristics and the duties of the six classes of Sannyāsins are.

Beginning :

आप्यायन्त्विति शान्तिः ।

अथातस्सन्न्यासोपनिषदं व्याख्यास्यामः । योऽनुक्रमेण सन्न्यस्यति स सन्न्य-
स्तो भवति । कोऽयं सन्न्यास उच्यते कथं सन्न्यस्तो भवति । य आत्मानं
क्रियाभिर्गुप्तं करोति मातरं पितरं भार्यां पुत्रान् बन्धून्नुमोदयित्वा ये
चास्यत्विजस्तान् सर्वांश्च पूर्ववद्वृणीत्वा वैश्वानरोष्टिं निर्वपेत् ॥

End :

नापृष्टः कस्यचिद्भूयात् न चान्यायेन पृच्छतः ।

जानन्नपि हि मेधावी जडवल्लोकमाचरेत् ॥

सर्वेषामेव पापानां सङ्घाते समुपस्थिते ।

तारं द्वादशसाहस्रमभ्यसेच्छेदनं हि तत् ॥

यस्तु द्वादशसाहस्रं प्रणवं जपतेऽन्वहम् ।

तस्य द्वादशभिर्मासैः परं ब्रह्म प्रकाशते ॥

इत्युपनिषत् ।

Colophon :—सन्न्यासोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 812. सन्यासोपनिषत्.
SANNYĀSŌPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 3 on a page.

Begins on fol. 129*b* of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 813. सन्यासोपनिषत्.
SANNYĀSŌPANIṢAD.

Pages, 16. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 10*a* of the MS. described under No. 482.

Complete.

Another copy.

No. 814. सरस्वतीरहस्योपनिषत्.
SARASVATĪRAHASYŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 195*a* of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad teaches the worship of Sarasvatī, the goddess of learning, by means of ten Rks in the Vedic style and ten stanzas in the Ślōka style: and explains the Ṛṣi, Chandas, Dēvatā, Prayōga, Nyāsa, &c., in relation to those Rks for conducting her worship.

Beginning:

ओं सह नाववत्विति शान्तिः ।

ऋषयो ह वै भगवन्तमाश्वत्थयनं सम्पूज्य पप्रच्छुः ।

केनोपायेन तज्ज्ञानं तत्पदार्थावभासकम् ।

यदुपासनया तत्त्वज्ञानासि भगवन्ब्रह्म ॥

सरस्वतीन्दशश्लोक्या सङ्गचा बीजमिश्रया ।
 स्तुत्वा जप्त्वा परां सिद्धिमलभम्मुनिपुङ्गवाः ॥
 ऋषय ऊचुः ।
 कथं सारस्वतप्राप्तिः केन ध्यानेन सुव्रत ।
 महासरस्वती येन तुष्टा भगवती वद ॥
 स होवाचाश्वलायनः ।

End:

देहाभिमाने गलिते विज्ञाते परमात्मानि ।
 यत्र यत्र मनो याति तत्र तत्र परामृतम् ॥
 भिद्यते हृदयग्रन्थिश्लिद्यन्ते सर्वसंशयाः ।
 क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे ॥
 मयि जीवत्वमीशत्वं कल्पितं वस्तुतो न हि ।
 इति यस्तु विजानाति स मुक्तो नात्र संशयः ॥
 इत्युपनिषत् ॥

Colophon:—सरस्वत्युपनिषत्समाप्ता ॥

No. 815. सरस्वतीरहस्योपनिषत्.
 SARASVATĪRAHASYŪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 15 on a page.

Begins on fol. 187a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 816. सर्वसारोपनिषत्.
 SARVASĀRŪPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 95b of the MS. described under No. 250.

Complete.

In this Upaniṣad questions regarding bondage and salvation, true and false knowledge, the various states of consciousness, the

nature of the soul as determined by its functions in the body, the individual soul and Supreme Soul, and the various states of the Supreme Soul, are all briefly dealt with; and the whole of the Vedānta is thus summarised.

Beginning :

सर्वसारनिरालम्बं रहस्यं वज्रसूचिकम् ।

तेजोनादध्यानविद्यायोगतत्त्वात्मबोधकम् ॥

ओं सह नाववत्विति शान्तिः ।

कथं बन्धः कथं मोक्षः काविद्या का विद्येति जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तितुर्यञ्च कथम् । अन्नमयप्राणमयमनोमयविज्ञानमयानन्दमयकोशाः कथम् । 'कर्ता जीवः पञ्चवर्गः क्षेत्रज्ञः साक्षी कूटस्थोऽन्तर्यामी कथम् । प्रत्यगात्मा परमात्मा माया चेति कथम् ॥

End :

स्थाणुर्नित्यस्सदानन्दः शुद्धो ज्ञानमयोऽमलः ।

आत्माहं सर्वभूतानां विभुस्साक्षी न संशयः ॥

ब्रह्मैवाहं सर्ववेदान्तवेद्यं नाहं वेद्यं व्योमवातादिरूपम् ।

रूपत्राहन्नाम नाहन्न कर्म ब्रह्मैवाहं सच्चिदानन्दरूपम् ॥

नाहन्देहो जन्ममृत्यू कुतो मे नाहङ्कारः क्षुत्पिपासे कुतो मे ।

नाहञ्चेतश्शोकमोहौ कुतो मे नाहङ्कर्ता बन्धमोक्षौ कुतो मे ॥

इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—सर्वसारोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 817. सर्वसारोपनिषत्.

SARVASĀRĪPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 42b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 818. सर्वसारोपनिषत्.
SARVASĀRĪPANIṢAD.

Pages, 6. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 36a of the MS. described under No. 284.

Incomplete. Another copy.

In this same codex there is another copy of the work on five pages of six lines each, on fol. 10a.

No. 819. सर्वसारोपनिषत्.
SARVASĀRĪPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 8 on a page.

• Begins on fol. 59a of the MS. described under No. 276.

Incomplete.

No. 820. सर्वसारोपनिषत्.
SARVASĀRĪPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 78b of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.

No. 821. सामरहस्योपनिषत्.
SĀMARAHASYĪPANIṢAD.

Substance, paper. Size, $8\frac{1}{2} \times 6\frac{1}{2}$ inches. Pages, 101. Lines, 14 on a page. Character, Dēvanāgarī. Condition, good. Appearance, new.

Complete.

This Upaniṣad is not one of the commonly accepted 108 Upaniṣads as given in the Muktikōpaniṣad. It appears to be a sectarian Upaniṣad detailing the doctrines of the Dvaita-Vēdānta, and lays partiular stress on Bhakti, or love and devotion to God, as the surest means of attaining salvation.

Beginning :

एकदा ब्रह्मणः पुत्रास्सनकादयस्तत्त्वविवक्षया पितामहं पप्रच्छुः प्रणि-
पातपुरस्सरम् अहो पिता निरन्तरं वैकुण्ठाय लीलां ध्यायमानां निर(न्तरं)
चिदानन्देन सह संप्रोक्ष्य वदामि यदि रुचिरापद्यतः। चिदानन्दरसं ब्रह्म
किं वदन्ति व्यापकतया जगत् व्याप्य तिष्ठति तत् ब्रह्मणः वदन्तितराम्।
आपद्यमानौ प्रकृतिपुरुषौ कस्मात् प्रकृतियोज्यता भवति ? जीवाः कीदृग्विधाः
कस्मात्समुत्पन्ना भवन्ति ? तेषां लोका अलोकाः कियत्प्रमाणा यं वदन्ति
पुराविदः ? पितामह उवाच नारायणमुखाच्छ्रुतोऽयं धर्मः शृणुत सर्वा यैषा
सृष्टिस्समुत्पद्यति क्षराक्षराभ्यामाधिकः पुरुषोत्तमसांजितः भाक्तेगम्यः आनन्द-
मयो लोकः।

End :

अहो रसमार्गं प्राप्यमानोऽयं जीवसङ्घ आत्मानं तन्मयतया वास-
नात्मकं लिङ्गं विधूय आत्मभावमभ्यस्यतां वा या तन्मयतां प्राप्तवानिति ।
यां यां वासनाम् आत्मा लीयमानो भवाते तत्तद्भावेन तं लिङ्गं चोत्पद्यमान
आसेदिवानिति । अत्यन्तासक्ततया मार्गोऽयं लिङ्गं विधूय पाप्माभावापत्तौ
भवेत् य एषोऽयं मार्गस्ते तव काथितः अयं मार्गो देवादिना न जातः रुद्रा-
दिना न जातः । यं मण्डलमुपास्यमानस्तन्मयतां प्रोप्यमाण इदं रहस्यं
काथितं न वाचनीयं कस्याचेत् त्वया स्वेष्टं हृदि ध्यात्वा तद्भावेन प्रलीयते
अहो लक्ष्मीः इमं मार्गं समाश्रित्य भक्ता शरीरसोपाधिधर्मा तद्रुणतां प्राप्यत
इति सामगा निरन्तरं रहासि सङ्गीयमाना भवन्ति ॥

Colophon :

समाप्तमेतत्सामरहस्योपनिषदं शुभं भवतु ॥

यदक्षरपरिभ्रष्टं मात्राहीनं तु यद्भवेत् ।

तत्सर्वं क्षम्यतां राधे प्रसीद हरिवल्लभे ॥

No. 822. सावित्र्युपनिषत्.

SĀVITRYUPANIṢAD.

Pages, 4. Lines, 19 on a page.

Complete.

Begins on fol. 72a of the MS. described under No. 246.

This Upaniṣad teaches the Sāvitrī-Vidyā, describes the various objects in the universe as manifestations of Savitr and Sāvitrī, explains the meaning of Gāyatrī, and gives two Mantras—Balā and Atibalā—as a part of this Vidyā, and concludes with the statement that those who conduct religious worship with the aid of this Vidyā reach the world of the sun and thus become saved.

Beginning :

सावित्र्यात्मा पाशुपतं स्वयं ब्रह्मावधूतकम् ।

त्रिपुरातपनं देवि त्रिपुराकठभावना ॥

आप्यायन्त्विति शान्तिः ।

कस्सविता का सावित्री । अमिरेव सविता पृथिवी सावित्री स यत्रामि-
स्तत्पृथिवी ते द्वे योनिस्तदेकं मिथुनम् । कस्सविता का सावित्री । वरुण एवं
सवितापस्सावित्री स यत् वरुणस्तदापो यत् वा आपस्तद्वरुणस्ते द्वे
योनिः तदेकं मिथुनम्.

End :

सर्वदयामूर्त्ते बले सर्वक्षुच्छमोपनाशिनि धीमहि धियो यो नर्जाते
प्रचुर्यः प्रचोदयात्मिके प्रणवाशिरस्कात्मके हुंफद् स्वाहा । एवं विद्वान्
कृतकृत्यो भवति ।

सावित्र्या एव सलोकतां जयतीत्युपनिषत् ॥

Colophon.—सावित्र्युपनिषत् समाप्ता ॥

No. 823. सावित्र्युपनिषत्.

SAVITRYUPANIṢAD.

Page, 1. Lines, 13 on a page.

Begins on fol. 144a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 824. सीतोपनिषत्.

SĪTŪPANIṢAD.

Pages, 7. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 190a of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad identifies Sītā with the primordial matter, Prakṛti, and mentions that all the things in the universe have proceeded from her.

Beginning :

भद्रं कर्णेभिरेरिते शान्तिः ।

देवा ह वै प्रजापतिमब्रुवन् का सीता किं रूपमिति । स होवाच
प्रजापतिः सा सीता इति । मूलप्रकृतिरूपत्वात्सा सीता प्रकृतिस्मृता ।
प्रणवप्रकृतिरूपत्वात्सा सीता प्रकृतिरित्युच्यते ॥

End :

कामधेनुना स्तूयमाना वेदशास्त्रादिभिः स्तूयमाना जयाद्यप्सरस्स्त्रीभिः
परिचर्यमाणा आदित्यसोमाभ्यां दीपाभिः(भ्यां) प्रकाशिष्यमाणा तुम्बुरुनार
दादिभिर्गीयमाना राकासिनीवालीभ्यां छत्रेण ह्लादिनीयमा(माया)भ्यां चामरेण
स्वाहास्वधाभ्यां व्यजनेन भृगुपुण्यादिभिरभ्यर्च्यमाना देवी दिव्यसिंहासं
पद(च्च)ासनारूढा सकलकारणकार(र्य)करी लक्ष्मीर्देवस्य पृथग्भवनकल्पन

अलंकार स्थिरा प्रसन्नरो(न्नलो)चना सर्वदैवतैः पूज्यमाना वीरलक्ष्मीरिति
विज्ञायत इत्युपनिषत् । भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

Colophon.— इति सीतोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 825. सीतोपनिषत्.

SITÔPANISAD.

Pages, 3. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 77b of the MS. described under No. 247

Complete. Same as the last.

No. 826. सुदर्शनोपनिषत्.

SUDARŚANÔPANISAD.

Pages, 5. Lines, 4 on a page.

Begins on fol. 29a of the MS. described under No. 139.

Complete.

This is not one of the 108 Upanisads mentioned in the Mukti-kôpanisad. It deals with five important doctrinal elements of the Śri-vaiṣṇavas who are, in religion, the followers of Rāmānuja.

Beginning :

यजोपस्ती कृतचक्रधारी यो ब्राह्मणो ब्रह्मवित् ब्रह्मविदो मनीषाम् ।
हिरण्यमादाय सुदर्शनं कृत्वा बन्धिसंयुक्तः स्त्रीशूद्राभ्यां बाहू धारयेत्
तस्मात् गर्भे[ण](न) जायते । ब्राह्मणस्य शरीरं जायते श्रीविष्णुलोकं
भजन्ति । नासादिकेशपर्यन्तमूर्ध्वपुण्ड्रं तु धारयेत् ॥

End :

अयमूर्ध्वपुण्ड्रविधिः । एवं विदित्वा धारयति स वैदिको भवति । स
कर्माहो भवति । अनेन तेजस्वी यशस्वी ब्रह्मवर्चस्वी भवति । अनेन

कायिकवाचिकमानसपातकृत्यूतो भवति । विष्णुसायुज्यमवाप्नोति श्रीविष्णु
सायुज्यमवाप्नोति य एवं वेदेत्युपनिषत् ॥

No. 827. सुबालोपनिषत्.

SUBĀLŌPANISAD.

Pages, 20. Lines, 19 on a page.

Begins on fol. 83b of the MS. described under No. 280.

Complete.

After identifying the Supreme Being of the Vedānta with Nārāyaṇa, this Upaniṣad proceeds to describe the evolution and involution of the universe, describes His attributeless nature, and explains the Daharavidyā.

Beginning:

पूर्णमद इति शान्तिः ।

किन्तदासीत् । तस्मै स होवाच न सन्नासन्न सदसदिति । तस्मात्स (त्त) मम्स-
ञ्जायते । तमसो भूताविर्भूतादेराकाशमाकाशाद्वायुर्वायोराम्रमेराप अद्य
पृथिवी । तदण्डं समभवत्तत्संवत्सरमात्रमुषित्वा द्विधाकरोत् ॥

End:

अथ हैनं रैकः पप्रच्छ भगवन् योऽयं विज्ञानघन उक्तामन् स
केन कतरद्वावस्थानं दहतीति । तस्मै स होवाच योऽयं विज्ञानघन उक्ता-
मन् प्राणन्दहत्यपानं व्यानमुदानं समानं वैरम्भं मुख्यमन्तर्यामं प्रभञ्ज-
नङ्कुमारं श्येनं श्वेतङ्कृष्णं नागन्दहति । पृथिव्यापस्तेजो वायुराकाशं दहति ।
जागरितं स्वप्नं सुषुप्तं तुरीयं च महतश्च लोकम्परश्च लोकन्दहति ।
लोकालोकं दहति धर्माधर्मं दहति । अमास्करममर्यादं निरालोकमतः परन्द-
हति । महान्तन्दहत्यव्यक्तन्दहति अक्षरन्दहति । मृत्युर्वै परो देव एकी-

भवति इति । परस्तान्न सन्नासन्न सदसदित्येतन्निर्वाणानुशासनमिति वेदानु-
शासनमिति वेदानुशासनम् । सुबालबीजब्रह्मोपनिषत् सा नाप्रशान्ताय दातव्या
नापुत्राय नाशिष्याय नासंवत्सररात्रोषिताय नापरिजातकुलशीलाय न दातव्या
नैव च प्रवक्तव्या ॥

यस्य देवे परा भक्तिर्यथा देवे तथा गुरौ ।

तस्यैते कथिता ह्यर्थाः प्रकाशन्ते महात्मनः ॥

इत्येतन्निर्वाणानुशासनमिति वेदानुशासनमिति
वेदानुशासनम् ॥

Colophon—सुबालोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 828. सुबालोपनिषत्.

SUBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 9. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 37b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 829. सुबालोपनिषत्.

SUBĀLŌPANIṢAD.

Pages, 18. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 37a of the MS. described under No. 285.

Complete.

Another copy.

No 830. सुबालोपनिषद्वाक्या.

SUBĀLŌPANIṢADVYĀKHYĀ.

Substance, palm-leaf. Size, 17½ × 1½ inches. Pages, 55. Lines, 6
on a page. Character, Grantha. Condition, slightly injured.
Appearance, not old.

Complete.

A commentary on the Subālōpaniṣad by Sudarśanācārya, son of Vāgviṣayin of Hārītagōtra ; it is in accordance with the Viśiṣṭādvaita school.

Beginning :

ओं श्रुतप्रकाशिकावक्त्रे व्यासायास्तु नमस्क्रिया ।

यस्सङ्ग्रहाय दयया श्रुतदीपमदीपयत् ॥

विशुद्धविज्ञानविशेषकारणं रजस्तमःकल्मषदोषनाशनम् ।

सदैव रामानुजपादपङ्कजं स्मरामि नौमि प्रणमामि चादरात् ॥

सौबालोपनिषद्भृदि विनिहितमर्थं सुपुष्कलं गहनम् ।

अनुसन्दधीमहे वयमाक्लिष्टमृजोपपन्नञ्च ॥

तदाहुरिति तत् वक्ष्यमाणं वाक्यजातम् अध्येतारोऽधीयत इत्यर्थः ।

यद्वा शिष्याचार्यभावेन स्थिताः प्रष्टारः प्रतिवक्तारश्च ब्रह्मवादिन आहुरित्यर्थः । तत्र कस्यचिच्छिष्यस्य प्रश्नवचनं दर्शयति किं तदासीदिति । तदा सृष्टेः पूर्वं किं जगत्कारणत्वेन स्थितमासीदित्यर्थः ॥

End:

इति वेदानुशासनम् । वेदपुरुषस्योपदेशः । अभ्यासः समाप्तिद्योतकः आदरकृतो वा ॥

Colophon :

इति हारि(री)तकुलतिलकश्रीमद्वाग्विजयिसूनोः श्रीरङ्गराजदिव्याज्ञालब्धवेदव्यासापरनामधेयस्य श्रीसुदर्शनाचार्यस्य कृतौ सुबालोपनिषद्व्याख्यानं पञ्चमः खण्डः ॥

सुबालोपनिषद्व्याख्यानं समाप्तम् ॥

रक्ताक्षिसंवत्सरधनुर्मासे पूर्वपक्षप्रथमतिथीन्दुवारे मतोद्धारणस्वामिनक्षत्रयुक्तादिने कौण्डिन्यवंशतिलकेन वेङ्कटाचार्यसूनुना श्रीराघवदासेन सुबालोपनिषद्व्याख्यानं लिखितम् ॥

No. 831. सूर्यतापिन्युपनिषत्.
SŪRYATĀPINYUPANIṢAD.

Substance, palm-leaf. Size, 15 × 1½ inches. Pages, 11. Lines, 6 on a page. Character, Telugu. Condition, good. Appearance, old.

Complete in six Paṭalas.

Begins on fol. 16a. The other works herein are : Virāgama-
rahasyam 1a, Gurumāhātmyam 4a, Bhuvanēśvaristōtram 7a,
Gurustōtram 9a, Namaśśivāyāṣṭakam 9b, Ṣaṭphalanirṇayaḥ
10a, Pañcamukhaśarabhasāḷuvamantraḥ 12a, Rāmakavacaḥ
13a, Sūryakavacam 21a, Trailōkyamaṅgaḷakavacaḥ 22a,
Nārāyaṇākṣarimantraḥ 24a, Indrākṣistōtram 25a, Dakṣiṇā-
mūrtipañjaram 31a.

* This Upaniṣad, after explaining the greatness of Sūrya by
identifying Him with all the chief gods, describes the Mantra
and Yantra to be used in conducting His worship.

Beginning :

हरिः ओम् । अथ भगवन्तं कमलासनं चतुर्मुखं पितरं ब्रह्माणं सनत्कु-
मोर उपससार । प्रणनामाहं भो इति । अधीहि भो इति पप्रच्छ ।
को मनुर्दिव्यङ्गिन्ध्येयं यज्जपात्सर्वेनोनिवृत्तिः यद्धचानात्सारूप्यसिद्धिः
• तद्ब्रवीतु भगवान् लोकानुग्रहायेति । तच्छ्रुत्वा पितामह आह । शृणोतु
भवानेकमनाः सर्वदा यमामनन्ति यन्नमस्यन्ति देवाः स ब्रह्मा स
शिवः स हरिस्सेन्द्रः सोऽक्षरः परमस्वराद् स सूर्यो भगवान् सह-
सांशुः ॥

End :

प्रत्यक्षदैवतं सूर्यः परोक्षं सर्वदेवताः ।
सूर्यस्योपासनङ्कार्यङ्गच्छेत्सूर्यसूक्तम् ॥
गच्छेत् सूर्यसूक्तं सूक्तं सदांमातं ॥

Colophon :— इत्यथर्वशिरसि सूर्यतापनीये षष्ठः पटलः ॥

No. 832. सूर्योपनिषत्.

SŪRYŌPANISAD.

Pages, 4. Lines, 20 on a page.

Begins on fol. 61a of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad explains how the universe has proceeded from the Sun-god and how He is thus a worthy object of worship.

Beginning :

ओं भद्रङ्कणेभिरिति शान्तिः ॥

अथ सूर्यार्थवार्ज्जरसं व्याख्यास्यामः । ब्रह्म ऋषिः । गायत्री छन्दः ।
आदित्यो देवता । हंसस्सोऽहमभिनारायणयुक्तं बीजम् । ह्रस्वा शक्तिः ।
वियदादिस्वर्गसंयुक्तङ्गीलकम् । चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।
षट्स्वरारूढेन बीजेन षडङ्गं रत्नाम्बुजसंस्थितं सप्ताश्वरथिनं हिरण्यवर्णं
चतुर्भुजं पदमद्वयाभयवरदहस्तं कालचक्रप्रणेतारं श्रीसूर्यनारायणं य एवं
वेद ॥

End :

आदित्याय विद्महे सहस्रकिरणाय धीमाहि । तन्नस्सूर्यः प्रचोदयात् ॥
सविता पुरस्तात्सविता पश्चात्तात्सवितोत्तरात्तात्सविताधरात्तात् ।
सविता नस्सुवतु सर्वं तातिं सविता नो रासतान्दीर्घमायुः ॥
ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म । घृणिरिति द्वे अक्षरे । सूर्य इत्यक्षरद्वयम् ।
आदित्य इति त्रीण्यक्षराणि ।

एतद्वै सूर्यस्याष्टाक्षरो मनुः । यस्सदाहरहर्जपति स वै ब्राह्मणो भवति ॥

* * * *

यस्त्वादित्ये जपति । स महामृत्युन्तरति स महामृत्युन्तरति य एवं
वेद ॥ इत्युपनिषत् ॥

Colophon :—सूर्योपनिषत् समाप्ता ॥

No. 833. सूर्योपनिषत्.

SŪRYŌPANISAD.

Pages, 2. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 141a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 834. सूर्योपनिषत्.

SŪRYŌPANISAD.

Pages, 2. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 46a of the MS. described under No. 254.

Complete.

The Śānti mentioned here is unlike that in the MS. described under No. 832. It is given as—

सह नाववात्त्विति शान्तिः.

No. 835. सौभाग्यलक्ष्म्युपनिषत्.

SAUBHĀGYALAKṢMYUPANISAD.

Pages, 8. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 191b of the MS. described under No. 246.

Complete.

This Upaniṣad describes the worship of Dēvī by means of the Śrīsūkta, the manner of meditating upon Her, and the characteristics of the Navacakra to be used in connection with Her worship.

Beginning :

वाङ्मे मनसीति शान्तिः ।

अथ भगवन्तं देवा ऊचुर्हे भगवन्नः कथय सौभाग्यलक्ष्मीविद्याम् । तथे-
त्यवोचत् भगवानादिनारायणः सर्वे देवा यूयं सावधानमनसो भूत्वा शृ-
णुत । तुरीयरूपां तुरीयातीतां सर्वोत्कटां सर्वमन्त्रासनगतां पीठोपपीठदेव-
तापरिवृतां चतुर्भुजां श्रियं हिरण्यवर्णामिति पञ्चदशभिर्ध्यायथ ॥

End :

तत्रैव पूर्णगिरिपीठं सर्वेच्छासिद्धिसाधनं भवति । य एवं वेदैत्युपनिषत् । सौभाग्यलक्ष्म्युपनिषदं नित्यमधीते सोऽग्निपूतो भवति स वायुपूतो भवति स सकलधनधान्यसत्पुत्रकलत्रहयभूगजपशुमाहिषीदासीदासयोगज्ञानवान्भवति । न पुनरावर्तत इत्युपनिषत् ॥

ओं वाङ्मे मनसीति शान्तिः ॥

Colophon :—सौभाग्यलक्ष्म्युपनिषत् समाप्ता ॥

No. 836. सौभाग्यलक्ष्म्युपनिषत्.

SAUBHĀGYALAKṢMYUPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 14 on a page.

Begins on fol. 186a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 837. स्कन्दोपनिषत्.

SKANDOPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 2 on a page.

Begins on fol. 211b of the MS. described under No. 250.

Complete.

This Upaniṣad teaches chiefly that the Supreme Being should be meditated upon in a manner in which the mind makes no difference between Viṣṇu and Śiva.

Beginning :

ओं सह नाववत्विति शान्तिः ।

अच्युतोऽस्मि महादेव तव कारुण्यलेशतः ।

विज्ञानघन एवास्मि शिवोऽस्मि किमतः परम् ॥

न निजं निजवद्भात्यन्तःकरणजृम्भणात् ।
 अन्तःकरणनाशेन संविन्मात्रस्थितो हरिः ॥
 संविन्मात्रस्थितश्चाहमजोऽस्मि किमतः परम् ।
 व्यतिरिक्तं जडं सर्वं स्वप्नवच्च विनश्यति ॥
 चिज्जडानां तु यो द्रष्टा सोऽच्युतो ज्ञानविग्रहः ।

End :

विरिञ्चिनारायणशङ्करात्मकं नृसिंह देवेश तव प्रसादतः ।
 अचिन्त्यमव्यक्तमनन्तमव्ययं वेदात्मकं ब्रह्म निजं विजानते ॥

*तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । दिवीव चक्षुराततम् ।
 तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसस्समिन्धते । विष्णोर्यत्परमं पदम् । इत्येव-
 ऋर्वाणानुशासनं वेदानुशासनं वेदानुशासनमित्युपनिषत्.

Colophon :— स्कन्दोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 838. स्कन्दोपनिषत्.

SKANDÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 85b of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 839. स्कन्दोपनिषत्.

SKANDÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 43a of the MS. described under No. 254.

Complete.

Another copy.

No. 840. स्कन्दोपनिषत्.
SKANDÔPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 78a of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.

No. 841. हंसोपनिषत्.
HAMSÔPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 22 on a page.

Begins on fol. 13a of the MS. described under No. 240.

Complete.

This Upaniṣad teaches that the Supreme Being is to be identified with Hamsa and is to be conceived as immanent in the human body. He has to be meditated upon and worshipped by means of the Hamsa-Mantra.

Beginning :

ओं पूर्णमद इति शान्तिः ॥

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वशास्त्रविशारद ।

ब्रह्मविद्याप्रबोधो हि येनोपायेन जायते ॥

सनत्कुमार उवाच । विचार्य सर्वधर्मेषु मतं ज्ञात्वा पिनाकिनः ।

पार्वत्या कथितन्तत्त्वं शृणु गौतम तन्मतम् ॥

अनाख्येयमिदं गुह्यं योगिने कोशसन्निभम् ।

हंसम्याकृतिविस्तारं मुक्तिमुक्तिफलप्रदम् ॥

अथ हंसपरमहंसनिर्णयं व्याख्यास्यामः ।

ब्रह्मचारिणे दान्ताय हंसहंसेति सदा ध्यायन् सर्वेषु देहेषु व्याप्य वर्तते । यथा ह्यग्निः काष्ठेषु तिलेषु तैलमिव तं विदित्वा न मृत्युमेति । शुद्धमवष्टभ्याधाराद्वायुमुत्थाप्य स्वाधिष्ठानं त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य माणिपूरं गत्वा अनाहतमातिक्रम्य विशुद्धे

End :

अदृश्यन्नवमे देहं दिव्यक्षुस्तथामलम् ।

दशमञ्च परं ब्रह्म भवेत् ब्रह्मात्मसन्निधौ ॥

तस्मान्मनो विलीने मनसि गते सङ्कल्पविकल्पदग्धे पुण्यपापे सदाशिवोक्तचा-
त्मा सर्वत्रावस्थितः स्वयञ्ज्योतिश्शुद्धो नित्यो निरञ्जनः शान्ततमः प्रकाश-
यतीति वेदानुवचनं भवतीत्युपनिषत् ॥

Colophon :— हंसोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 842. हंसोपनिषत्.

HAMSÔPANISAD.

Pages, 2. Lines, 11 on a page.

Begins on fol. 6a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

No. 843. हंसोपनिषत्.

HAMSÔPANISAD.

Pages, 3. Lines, 6 on a page.

Begins on fol. 14a of the MS. described under No. 217.

The Śānti given is भद्रं कर्णेभिः, &c. The first three verses, as found in the copy described under No. 841 are here omitted, and this begins with अथ हंसपरमहंसनिर्णयं व्याख्यास्यामः । A few passages in the end are also wanting as this is concluded with मनसि गते सङ्कल्प(वि) कल्पे दग्धे पुण्यपापे सदाशिवोम् ॥

Complete.

There is another copy of the work in this codex beginning on fol. 54b and extending over four pages of five lines each. It has सह नाववतु for its Śānti, and is incomplete ; but it is, like the one noticed above, wanting in the three verses in the beginning.

No. 844. हंसोपनिषत्.

HAMSŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 44a of the MS. described under No. 254.

Complete.

Another copy like the preceding. The Śānti is given as
सह नाववतु, &c.

No. 845. हंसोपनिषत्.

HAMSŌPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 5 on a page.

Begins on fol. 39a of the MS. described under No. 254.

Complete.

This is like the one described under No. 843, but has no Śānti.

The colophon at the end says: इ(त्य)थर्वणरहस्ये हंसोपनिषत्समाप्ता ॥

No. 846. हंसोपनिषत्.

HAMSŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 12a of the MS. described under No. 116.

Complete.

There is no Śānti given ; the beginning is अथ हंसपरमहंसनिर्णयं
व्याख्यास्यामः ।

The end is as follows ;— सङ्कल्पे विकल्पे दग्धे पुण्यपापे मनीषिणां
सर्वत्रावास्थितः शक्त्यात्म इति वेदवचनमिति । ओं विदिति हंसोप-
निषत्समाप्ता ।

No. 847. हंसोपनिषत्.
HAMSŌPANIṢAD.

Page, 2. Lines, 9 on a page.

Begins on fol. 41a of the MS. described under No. 534.

Complete.

This is like the preceding.

No. 848. हंसोपनिषत्.
HAMSŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 167b of the MS. described under No. 745.

Complete.

This is like the preceding.

No. 849. हंसोपनिषत्.
HAMSŌPANIṢAD.

Pages, 3. Lines, 8 on a page.

Begins on fol. 129a of the MS. described under No. 365.

Complete. Same as the last.

No. 850. हंसोपनिषत्.
HAMSŌPANIṢAD.

Pages, 2. Lines, 7 on a page.

Begins on fol. 73a of the MS. described under No. 256.

Complete. Same as the last.

No. 851. हयग्रीवोपनिषत्.
HAYAGRĪVŌPANIṢAD.

Pages, 5. Lines, 21 on a page.

Begins on fol. 181a of the MS described under No. 246:

Complete.

A number of Hayagriva - Mantras are herein taught for enabling one to accomplish the attainment of the knowledge regarding the nature of the Supreme Being.

Beginning :

ओं भद्रं कर्णेभिरिति शान्तिः ॥

नारदो ब्रह्माणमुपसमेत्योवाच अधीहि भगवन् ब्रह्माविद्यां वरिष्ठां यथा-
चिरात्सर्वपापं व्यपोह्य ब्रह्माविद्यां लब्ध्वा ऐश्वर्यवान् भवति । ब्रह्मोवाच
हयग्रीवद्वैवत्यान्मन्त्रान्यो वेद स श्रुतिस्मृतीतिहासपुराणानि वेद स सर्वै-
श्वर्यवान् भवति । तदेते मन्त्राः ।

विश्वोत्तीर्णस्वरूपाय चिन्मयानन्दरूपिणे ।

तुभ्यं नमो हयग्रीवविद्याराजाय विष्णवे स्वाहा स्वाहा नमः

End :

य इमां ब्रह्माविद्यामेकादश्यां पठेत् हयग्रीवप्रभावेन महापुरुषो
भवति । स जीवन्मुक्तो भवति । ओन्नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्त्वनिरा-
करणं धारयिता भूयासं कर्णयोः श्रुतं मा च्योध्वं ममायुषमित्युपनिषत् ॥

Colophon :— हयग्रीवोपनिषत् समाप्ता ॥

No. 852. हयग्रीवोपनिषत्.

HAYAGRĪVOPANĪṢAD.

Pages, 2. Lines, 12 on a page.

Begins on fol. 183a of the MS. described under No. 247.

Complete. Same as the last.

INDEX.

[NOTE.—The names printed in *italics* are those of the works described.]

| | PAGE | | PAGE |
|--------------------------|---|------------------------|--|
| Ābharanādēvatāstutiḥ ... | 359 | Akṣyupaniṣad ... | 267, 270, 271, 510, 512 |
| Abhiśekakalpaḥ ... | 490 | Ālavandarstōtram ... | 393 |
| Ācamanaavidhiḥ ... | 363 | Āmnāyastavaḥ ... | 360 |
| Accannasūri ... | 403, 404 | Āmnāyōpaniṣad ... | 463 |
| Acyutakṛpānandatīrtha. | 397, 398 | Amṛtabindūpaniṣad ... | 269, 272, 275, 284, 285, 286, 335, 510, 512 |
| Adhyatmōpaniṣad ... | 267, 270, 270, 280, 510, 511 | Amṛtanāḍōpaniṣad ... | 269, 272, 275, 282, 283, 512 |
| Ādityahrdayam ... | 334, 369, 394, 555 | Amṛtōpaniṣad ... | 284 |
| • Ādityakavacam ... | 555 | Ānandagiriya ... | 506 |
| Ādityamālamantrah ... | 555 | Ānandajñāna ... | 476, 477, 506 |
| Advayaśārāṅkōpaniṣad ... | 269, 273, 278, 279, 510, 511 | Ānandāśrama ... | 353 |
| Āgamamṛtam ... | 403 | Ānandatīrtha ... | 307, 318, 320, 325, 327, 346, 347, 379, 407, 408, 464, 465, 478, 479, 507, 508, 520, 521 |
| Agastyāṣṭakam ... | 364, 544 | Ānandātman ... | 305, 306, 399, 400, 446, 447, 485, 486, 504, 505, 506 |
| Aghōraṇuṣṭhānavidhiḥ ... | 360 | Anaṅgaraṅgam ... | 369 |
| Agnimukha ... | 364 | Anantaguru ... | 379 |
| Āurayanasthālipakaḥ ... | 365 | Āndhramantrah ... | 544 |
| Aitarēyaśanyaka ... | 313 | Annapūrṇastavaḥ ... | 365 |
| Aitarēyōpaniṣad ... | 286, 299, 300, 311, 312, 313, 314, 315, 317, 510, 511 | Annapūrṇēśvaryaṣṭakam. | 539 |
| Aitarēyōpaniṣadbhāṣyam. | 311, 314, 315, 318 | Annapūrṇōpaniṣad ... | 267, 270, 281, 282, 510, 513 |
| Aitarēyōpaniṣadbhāṣyaṭi- | | Antarmātrkābahirmātr- | |
| paṇam ... | 317, 318 | kānyāsaḥ ... | 369 |
| Aitarēyōpaniṣadvivarana. | 516 | Aparādhaastavaḥ ... | 544, 555 |
| Ajapagāyatri ... | 490 | Āpastambadharmasūtram. | 389 |
| Ākarṣanahanūmatman- | | Aparōkṣanubhūtiḥ ... | 353, 420 |
| īraḥ ... | 360 | | |
| Akṣamālāprakaraḥ ... | 334 | | |
| Akṣamālīkōpaniṣad ... | 267, 268, 269, 510, 511 | | |
| Akṣaramalagadyam ... | 555 | | |
| Akṣaranyāsaḥ ... | 334 | | |

| | PAGE | | PAGE |
|----------------------------------|--------------------|-------------------------------------|----------------|
| Āranyaka | 311, 313 | <i>Atharvasikhōpaniṣad</i> ... | 269, 272, 273, |
| <i>Aruṇikōpaniṣad</i> | 269, 272, 275, | | 274, 275, 336, |
| | 286, 290, 291, | | 510, 513 |
| | 292, 293, 294, | <i>Atharvasīra-upaniṣad</i> ... | 269, 272, 275, |
| | 295, 296, 510, | | 276, 277, 278, |
| | 512 | | 336, 365, 510, |
| <i>Aruṇōpaniṣad</i> | 335 | | 513 |
| <i>Asaṅgātmanirasanam</i> .. | 444 | <i>Atharvasīra-upaniṣaddīpikā</i> . | 305 |
| <i>Āsaucamantrah</i> | 544 | <i>Atharva Vēda</i> | 513 |
| <i>Āścaryāstōttarasātanāma-</i> | | <i>Āturasannyāsavidhiḥ</i> .. | 311 |
| <i>stōtram</i> | 360 | <i>Avadhūtōpaniṣad</i> .. | 267, 270, 286, |
| <i>Āsirvadaḥ</i> | 364 | | 287, 510, 512 |
| <i>Aṣṭak-ārimantrah</i> ... | 350 | <i>Āvāhantikalpaḥ</i> | 369 |
| <i>Aṣṭamahī-nyāsah</i> ... | 359 | <i>Āvāhitaṇṣiṇhōpaniṣad</i> . | 288 |
| <i>Aṣṭarūṣatkuḷānyāsah</i> ... | 499 | <i>Āpaktōpaniṣad</i> | 267, 270, 287, |
| <i>Astrōpasamharanamān-</i> | | | 288, 510, 512 |
| <i>trah</i> | 352 | <i>Āyuyahomaprayōgaḥ</i> .. | 364 |
| <i>Āśvalāyana</i> | 318, 353 | <i>Bagalācakraḍḍhārah</i> .. | 491 |
| <i>Āśvalāyanabrahmayajña-</i> | | <i>Bagalāmukhisahasraṇā-</i> | |
| <i>pranyogaḥ</i> | 352 | <i>maṣṭōtram</i> | 412 |
| <i>Ātmabōdhaḥ</i> | 275 | <i>Bahvrečōpaniṣad</i> | 268, 270, 313, |
| <i>Ātmabōdhaprakaranam</i> . | 350, 367 | | 467, 468, 511 |
| <i>Ātmaprabhōdhōpaniṣad</i> ... | 269, 272, 288, | <i>Bahvrečabrahmanōpani-</i> | |
| | 289, 290, 291, | <i>sadbhāṣyam</i> | 315, 317 |
| | 510, 511 | <i>Balācakraḍḍhiyānam</i> .. | 490 |
| <i>Ātmōpaniṣad</i> * | 267, 270, 291, | <i>Balāhriḍayam</i> | 360 |
| | 292, 510, 513 | <i>Balākavacaḥ</i> | 360 |
| <i>Atharva</i> | 347 | <i>Balāmālā</i> | 360 |
| <i>Atharvana</i> | 421, 422 | <i>Balānyāśapaddhatih</i> .. | 360 |
| <i>Atharvanapūrvatāpaniyō-</i> | | <i>Balāpaddhatih</i> | 360 |
| <i>paniṣadbhāṣya</i> | 442 | <i>Balānāmāyānam</i> | 350 |
| <i>Atharvanaparāhasya</i> ... | 364, 371, 433, | <i>Balastavaḥ</i> | 360 |
| | 537, 538, 546, 588 | <i>Bālātripuravāgīśvara-</i> | |
| <i>Atharvapātapānīyōpaniṣad-</i> | | <i>mantrah</i> | 334 |
| <i>bhāṣya</i> | 441, 445 | <i>Bānāstakam</i> | 555 |
| <i>Atharvanaveda</i> | 364 | <i>Bandī-ekāk-āripāka-</i> | |
| <i>Atharvanōpaniṣad</i> | 516 | <i>raṇam</i> | 360 |
| <i>Atharvanōpaniṣadbhā-</i> | | <i>Bhagavadgītā</i> | 336 |
| <i>ṣyam</i> | 521 | <i>Bhāgavatadharmah</i> .. | 311 |
| <i>Ātharvanōpaniṣadbhāṣya-</i> | | <i>Bhāgavataṇṇam</i> | 311 |
| <i>vivaraṇam</i> | 448 | <i>Bhāiravamaṇṭrah</i> .. | 360 |
| <i>Ātharvanōpaniṣadvivara-</i> | | <i>Bhāratam</i> | 347 |
| <i>ṇam</i> | 517 | | |

| | PAGE | | PAGE |
|---|----------------|--|---------------------|
| Bhartṛvyaśyādhiprayōgaḥ. | 363 | <i>Brahmōpaniṣaddīpikā</i> | 305, |
| Bhāskaracārya | 415 | | 354, 485, 486 |
| <i>Bhasmajābālōpaniṣad</i> ... 268, 270, 291, | | <i>Bṛhadāranyakaṭika</i> ' ... | 476 |
| 486, 487, 488, | | <i>Bṛhadāranyōpaniṣad</i> ... 275, 286, 294, | |
| 510, 513 | | | 300, 375, 470, |
| Bhāsyakaraṣṭakam ... | 531 | | 471, 472, 473, |
| Bhaṭṭa Mudgala Sūri ... | 510, 512 | | 474, 510, 511 |
| Bhavānibhujāṅgapraya- | | <i>Bṛhadāranyakōpaniṣad-</i> | |
| tastōtram | 365 | <i>bhāṣyam</i> ... | 473, 474, 478, 479 |
| Bhavanimānasastōtram. | 336 | <i>Bṛhadāranyakōpaniṣad-</i> | |
| <i>Bhāvanōpaniṣad</i> ... | 403, 488, 489, | <i>bhā-yaṭikā</i> ... | 473, 476, 477 |
| 490, 491, 513 | | <i>Bṛhadāranyakōpaniṣad-</i> | |
| <i>Bhāvanōpaniṣadbhāṣyam.</i> | 415 | <i>vyākhyā</i> | 477 |
| <i>Bhāvōpaniṣad</i> | 268, | <i>Bṛhajjābālōpaniṣad</i> ... 289, 272, 291, | |
| 270, 489, 510 | | | 468, 469, 470, |
| <i>Bhīkṣukōpaniṣad</i> ... | 270, 273, 286, | | 510, 513 |
| 492, 510, 511 | | Bukka | 401 |
| • Bhujāṅgaprayātastavah. | 555 | | |
| Bhuvananyāsah | 490 | Cakranyāsakavacah ... | 490 |
| Bhuvanēśvarikalpah ... | 441 | Cakrastavah | 190 |
| Bhuvanēśvarimantrah ... | 334 | Cakrāvalistōtram ... | 359 |
| Bhuvanēśvaristōtram ... | 555 | Cakravidyā | 490 |
| Bijakṣanam | 360 | Candraśekhara (Majēti). | 392 |
| Bijanirṇayah | 490 | Candraśekharāṣṭakam ... | 555 |
| Bōdhāryā | 286 | Caturvīṃśatimahārājōpa- | |
| <i>Brahmabūdōpaniṣad</i> ... 311, 480, 482 | | <i>cārāḥ</i> | 334 |
| Brāhmanuhūrtavidhiḥ ... | 334 | Cāṭuṣlōkah | 352 |
| Brahmāṇḍa | 520 | <i>Chāndōgyōpaniṣad</i> ... 275, 294, 298, | |
| Brahmapārasastōtram ... | 539 | | 300, 372, 373, 374, |
| Brahmāstram | 335 | | 375, 376, 379, 484, |
| Brahmasūtram | 374, 420 | | 510, 512 |
| Brahmasūtrabhāṣyavya- | | <i>Chāndōgyōpaniṣad-</i> | |
| khyā | 315 | <i>bhāṣyam</i> | 301, 374, 376, |
| Brahmūtarka | 179, 508 | | 377, 378, 379 |
| Brahmavāgīśvarimantrah. | 331 | <i>Chāndōgyōpaniṣadvyākhyā.</i> | 379 |
| <i>Brahmavidyōpaniṣad</i> ... 269, 270, 480, | | <i>Chāndōgyōpaniṣatprakāśikā.</i> | 378, 379 |
| 481, 482, 510, 512 | | Chandōvicitisōtram ... | 337 |
| Brahmavillakṣanam ... | 335 | Chāyāpurasalakṣaṇam ... | 490 |
| Brahmayājñaprayōgaḥ ... | 363 | Chinnamastākālpah ... | 441 |
| <i>Brahmōpaniṣad</i> | 269, 272, 275, | Cidambaranātanasastōtram. | 336 |
| 286, 298, 335, 350, | | Cintamānimantrah ... | 334, 490 |
| 420, 483, 484, 485, | | Citrabalih | 364 |
| 510, 512 | | | |

| | AGE | | PAGE |
|----------------------------------|----------------|-------------------------------|--------------------|
| Dadhivāmanastōtram ... | 471 | <i>Dēvyupaniṣad</i> ... | 267, 270, |
| Dadhyañjalihōmah ... | 364 | | 403, 424, 425, |
| Dakṣiṇāmūrtikavacan ... | 352 | | 510, 513 |
| Dakṣiṇāmūrtipañjaram. | 581 | Dharmagōpalavidhipra- | |
| Dakṣiṇāmūrtisahasranāma- | | kriyā ... | 359 |
| stōtram ... | 360 | Dhōmāvatīmantraḥ ... | 491 |
| Dakṣiṇāmūrtistavaḥ ... | 360 | <i>Dhyānabindūpaniṣad</i> ... | 269, 272, 291, |
| Dakṣiṇāmūrtistavavyā- | | | 426, 427, 428, |
| khyā ... | 365 | | 510, 512 |
| Dakṣiṇāmūrtistōtram ... | 305 | Dhyānakramah ... | 311 |
| <i>Dakṣiṇāmūrtiyupaniṣad</i> ... | 269, | Dikṣāprakarāṇam ... | 361 |
| | 273, 420, 421, | Divyamangalādhyānam. | 361 |
| | 510, 512 | Drgdrāyavivēka ... | 275 |
| <i>Darśanōpaniṣad</i> ... | 268, 270, | Dūtīyajānamantraḥ ... | 491 |
| | 423, 510, 512 | Dvādasārgghyam ... | 364 |
| Darśapūrnāmāsasthāli- | | Dvādasāryastōtram ... | 359, 369 |
| pakah ... | 364 | Dvayōpaniṣad ... | 300, 425, 426 |
| Darśasthālipākavidhiḥ ... | 350 | Dvibhāryāgnisandhānam. | 364 |
| Darśatarpaṇam ... | 365 | | |
| Daśaśloki ... | 286 | <i>Ekākṣarōpaniṣad</i> ... | 267, 270, |
| Daśaślokiśyākhyā ... | 420 | | 310, 311, 510, 512 |
| <i>Dattātrēyōpaniṣad</i> ... | 268, 270, | Ekāślokaśyākhyā ... | 365 |
| | 422, 511, 513 | | |
| Dēśikōpaniṣad ... | 360 | <i>Guṇapatyupaniṣad</i> ... | 268, 270, 275, |
| Dēvāñjanaavidyā ... | 360 | | 358, 359, 361, |
| Dēvarsipitrṭapāṇaprayō- | | | 362, 510, 513 |
| gaḥ ... | 538 | Gaṇḍūśāvidhi ... | 363 |
| Dēvatānyāsaḥ ... | 490 | Gaṇḍśakavacaḥ ... | 361 |
| Dēvcatuṣṣastipūjāvidhā- | | Gaṇḍśamālāmantraḥ ... | 361 |
| naḥ ... | 432 | Gaṇḍśamantrakṣaristōtram. | 361 |
| Dēvīhrdayam ... | 363 | Gaṇḍśaratnamālā ... | 361 |
| Dēvikavāca ... | 363 | Gaṇḍśastōttaraśāntanā- | |
| Dēvinānasapūjā ... | 490 | māvalih ... | 361 |
| Dēvinantranāyāsaḥ ... | 360 | Gaṇḍśōpaniṣad ... | 361 |
| Dēvinānasāraṣṭavaḥ ... | 490 | Gaṇḍśastakam ... | 365, 539, 555 |
| Dēvipujāvidhiḥ ... | 334 | Gaṇḍśastōtram ... | 352 |
| Dēvipujāvidhānam ... | 531 | Garbhagītā ... | 334 |
| Dēvisahasranāmastuti- | | <i>Garbhōpaniṣad</i> ... | 269, 272, 275, |
| mantraḥ ... | 359 | | 286, 290, 298, |
| Dēvisandhyāvidhin ... | 360 | | 335, 366, 367, |
| Dēvistōtram ... | 352 | | 368, 510, 512 |
| Dēvyākṣaranyāsaḥ ... | 360 | Garudadaṇḍakam ... | 363 |
| <i>Dēvyatharvaśira-upaniṣad.</i> | 425 | | |

| | PAGE | | PAGE |
|---------------------------|---------------------|----------------------------|----------------|
| <i>Garuḍōpaniṣad</i> ... | 268, 270, 362 | Gōvindānanda .. | 544, 545 |
| | 363, 364, 365, | Gōvindasarasvatī ... | 540 |
| | 511, 513, 539 | Gōvindaśṭakam ... | 305, 352 |
| Gauḍapāḍabhāṣyam ... | 505 | Gōvindaśṭakaṭika ... | 305, 354 |
| Gauḍapāḍabhāṣyaṭika ... | 506 | Grahanirmāṇavidhiḥ .. | 363 |
| Gauḍapāḍakarikabhāṣya- | | Grahanyāsaḥ ... | 490 |
| ṭika ... | 299 | Grahapravēṣaprayōgaḥ ... | 363 |
| Gauḍapāḍakārika ... | 499, | Grahayajñavidhiḥ ... | 364 |
| | 500, 502, 504 | Gurubasavalīṅgapūja ... | 555 |
| Gauḍapāḍamūni ... | 443, 444 | Gurukavacam ... | 369 |
| Gayatribhujāṅgaḥ ... | 369 | Gurumāhātmyam ... | 581 |
| Gayatrihrdayam ... | 335, 350, | Gurupāṅktistavaḥ ... | 490 |
| | 361, 369, 491 | Guruparamparāstōtram. | 300 |
| Gayatrijātāmṛtasūkta- | | Gurustavaḥ ... | 432 |
| māntrah ... | 369 | Gurustōtram .. | 360, 581 |
| Gayatrikalpaḥ ... | 369 | | |
| Gayatrikavacaḥ ... | 334 | <i>Haṁsōpaniṣad</i> ... | 269, 272, 275, |
| Gayatrikavacam ... | 369, 491 | | 290, 335, 420, |
| Gayatripañjaram ... | 369 | | 510, 511, 531, |
| Gayatriśāmanāyanaṁ ... | 352 | | 587, 588, 589 |
| Gayatriśaḥaerānāmastō- | | Haṁsaparamahāṁsōpani- | |
| tram .. | 369 | ṣad ... | 275 |
| Gayatriśāvitṛisarasvatī- | | Hanūmanmālāmantrah. | 369 |
| kavacaḥ ... | 471 | Hanūmatkavacam | 334 |
| Gayatri-Śāvitṛi-Sarasvatī | | Haridrāgaṇapatikalpaḥ . | 441 |
| Śāpavimōcānamantrah. | 369 | Haristutivṛyākhyā | 365, 470 |
| Gayatriśāvarājah .. | 369 | Hastāmalaślokaḥ ... | 286 |
| Gayatriśtōtram ... | 335 | Hastāmalaślokaḥ ... | 294 |
| Gayatṛyaśtōttaraśātanā- | | <i>Hayagrivōpaniṣad</i> .. | 268, 270, 300, |
| mastōtram ... | 369 | | 511, 513, 589, |
| Gayatṛyupaniṣad ... | 369 | | 590 |
| Ghatikāparāyapaḍvidhiḥ. | 335 | | |
| Ghaṭṭarāya ... | 545 | Indrākṣikavacaḥ ... | 490 |
| Gītāgōvindam ... | 350 | Indrākṣistōtrakalpaḥ ... | 369 |
| Gītāsārah ... | 457, 491 | Indrākṣistōtram ... | 365, 544, 581 |
| Gōpālātāpiniyōpaniṣad .. | 370, 371, 372 | Īśāvāsyaśtōtram | 275, 286, 294, |
| Gōpālātāpaniṣad ... | 513 | | 298, 299, 300, |
| Gōpālātāpinyupaniṣad ... | 268, 270, 511 | | 301, 302, 303, |
| Gōpālōpaniṣad ... | 359, 372 | | 308, 510, 511 |
| Gōtṛapṛavarakhaṇḍah ... | 364 | Īśāvāsyaśtōpaniṣadbhāṣyam. | 299, 300, 301, |
| Gōvinda ... | 303, 315, 317, | | 303, 306, 307, |
| | 323, 344, 377, 395, | | 308, 309 |
| | 442, 444, 445, 462, | | |
| | 476, 504, 517 | | |

INDEX.

| | PAGE | | PAGE |
|--------------------------------|----------------|-----------------------------------|----------------|
| <i>Īśāvāsyūpaniṣadbhāṣa-</i> | | <i>Kamakalāsūtram</i> ... | 490 |
| <i>tippaṇam</i> | 299, | <i>Kamakṣistōtram</i> ... | 403 |
| | 303, 304, 305 | <i>Kaṇviya</i> | 472 |
| <i>Īśāvāsyūpaniṣadpīkā</i> | 305, 306 | <i>Karaṇanyāsa</i> | 359 |
| <i>Itihāśopaniṣad</i> | 296, 297 | <i>Karaśuddhinyāsaḥ</i> ... | 334 |
| | | <i>Karmibhaktajñānināṃprā-</i> | |
| <i>Jābālōpaniṣad</i> | 269, 272, 275, | <i>yaścittābhavaḥ</i> ... | 286 |
| | 286, 350, 382, | <i>Kārtavīryarjunah</i> .. | 360 |
| | 383, 510, 511 | <i>Kāṣṭhāpuraṣṭakam</i> .. | 555 |
| <i>Jābālōpaniṣadpīkā</i> ... | 305 | <i>Kāthakōpaniṣad</i> | 323 |
| <i>Jābālyupaniṣad</i> | 268, 270, | <i>Kāthakōpaniṣadbhāṣa-</i> | 323, |
| | 384, 511, 512 | | 324, 325, 327 |
| <i>Jaiminibhāratam</i> | 301 | <i>Kāthakōpaniṣadbhāṣa-</i> | |
| <i>Jayantyaṛghyam</i> | 364 | <i>tippaṇam</i> | 395 |
| <i>Jñānāmṛtayaṭi</i> | 317, 318 | <i>Kāthapradīpikā</i> | 409 |
| <i>Jñānārṇavam</i> | 446 | <i>Kāthavallyupaniṣad</i> .. | 275, 286, 298, |
| <i>Jñānavāsisṭhasārasamuc-</i> | | | 299, 300, 301, |
| <i>cayaḥ</i> | 275 | | 320, 321, 322, |
| <i>Jñānēndra</i> | 463, 464 | | 325, 510, 512 |
| <i>Jñānōttama</i> | 568, 569 | <i>Kāthavallyupaniṣadbhā-</i> | |
| <i>Jvarasādhana</i> | 363 | <i>ṣyam</i> | 303, |
| | | | 321, 322, 323 |
| <i>Kaccapēśvaran</i> | 474 | <i>Kāthavallyupaniṣadbhā-</i> | |
| <i>Kadalivivāha</i> | 364 | <i>ṣatippaṇam</i> | 303, 323, 324 |
| <i>Kadāvaśtōtram</i> | 363 | <i>Kāthavallyupaniṣad attika,</i> | 285, 325 |
| <i>Kaivalyendra</i> | 463, 464 | <i>Kāthopaniṣad</i> | 267, 270, 327, |
| <i>Kaivalyōpaniṣad</i> .. | 269, 272, 275, | | 328, 510, 512 |
| | 285, 290, 294, | <i>Kātyāyṇyōpaniṣad</i> .. | 330 |
| | 298, 311, 335, | <i>Kaulōpaniṣad</i> | 354, 355 |
| | 336, 348, 349, | <i>Kaupinapañcakam</i> .. | 539 |
| | 350, 351, 352, | <i>Kauṣṭhika</i> | 421 |
| | 519, 512 | <i>Kauṣṭhikabrāhmaṇopaniṣad,</i> | 291 |
| <i>Kaivalyōpaniṣadpīkā</i> | 305, | <i>Kauṣṭhikyupaniṣad</i> ... | 269, 272, 355, |
| | 352, 353, 354 | | 356, 510, 511 |
| <i>Kāśyapīrudrōpaniṣad</i> | 269, 272, 275, | <i>Kautukayoga</i> | 360 |
| | 286, 290, 301, | <i>Kāvāṭika</i> | 421 |
| | 331, 332, 333, | <i>Keneṭitabhāṣya</i> | 345 |
| | 335, 336, 337, | <i>Kēnōpaniṣad</i> | 286, 290, 294, |
| | 420, 510, 512 | | 298, 299, 300, |
| <i>Kālarātrikalpab</i> | 441 | | 301, 335, 339, |
| <i>Kāṭisantarākōpaniṣad</i> | 268, 270, 329, | | 340, 341, 342 |
| | 330, 511, 512 | | 510, 512 |
| <i>Kamakalāvidhiḥ</i> | 361 | <i>Kēnōpaniṣadbhāṣyam</i> ... | 342, 344 |

| | PAGE | | PAGE |
|--|---|--|---|
| <i>Kēnōpani-adbhā-yaṭippaṇam</i> | 345, 346 | <i>Liṅgayōgyāṣṭakam</i> ... | 544 |
| <i>Kēnōpani-advākyavivara- ṇaṭippaṇam</i> | 305 | <i>Liṅgōpani-ad</i> | 552 |
| <i>Kēnōpani-atpadabhā-ya- ṭippaṇam</i> | 305 | <i>Madanagōpaladvādaśakṣa- ranyāsa</i> | 359 |
| <i>Kōśavādīmātrkānyāsaḥ</i> ... | 490 | <i>Madanagōpālasandhyavi- dhiprakriyā</i> | 359 |
| <i>Kōśavādinyāsa</i> | 359 | <i>Madanagōpālāstōtram</i> ... | 359 |
| <i>Khadgamālāstōtram</i> | 490 | <i>Mādhava</i> | 317 |
| <i>Khadgarāvaṇam</i> | 360 | <i>Mādhaviyā</i> | 402 |
| <i>Khilarcaḥ</i> | 474 | <i>(Madirōṇu) Kṛ-namma</i> ... | 368 |
| <i>Kiṅkiṭastavaḥ</i> | 334 | <i>Mahābhāganyāsaḥ</i> ... | 360 |
| <i>Kṛmasannyāsaavidhiḥ</i> ... | 311 | <i>Mahāgopajatināntrah.</i> | 334 |
| <i>Kṛṣṇācārya</i> | 447, 448 | <i>Mahaitarēyānāṁ ad</i> ... | 313, 320 |
| <i>Kṛṣṇāstōtaraśatanāmasrōtram.</i> | 350 | <i>Mahalakṣmīśrīhama- ntrah</i> | 334 |
| <i>Kṛṣṇa-Yajur-Vēda</i> | 512 | <i>Mahālayavidhiḥ</i> | 364 |
| <i>Kṛṣṇayajurvēdabrahmanam.</i> | 365 | <i>Mahāndrāyagōpani ad</i> | 275, 341, 495, 496, 513 |
| <i>Kṛṣṇayajurvēdāranyaka.</i> | 400, 402 | <i>Mahāśaktinya</i> | 335 |
| <i>Kṛṣṇōpani ad</i> | 268, 270, 338, 339, 511, 513 | <i>Mahāsaṅkalpaḥ</i> | 286, 364 |
| <i>Kṛurikōpani ad</i> | 269, 272, 275, 291, 356, 357, 358, 510, 512 | <i>Mahāsaurāṭkaśrīnāntrah.</i> | 369 |
| <i>Kuṇḍalīnīhōmaprakārah</i> | 180 | <i>Mahāśōḍaśyuddharah</i> | 490 |
| <i>Kuṇḍikōpani ad</i> | 267, 270, 337, 338, 510, 512 | <i>Mahāśōdhānyāsaḥ</i> | 490 |
| <i>Kūṭayōgaḥ</i> | 334 | <i>Mahāsudarśanaprakaraṇam.</i> | 360 |
| <i>Laghucakrapaddhatiḥ</i> | 360 | <i>Mahāvākyapañcīkararām.</i> | 521 |
| <i>Laghudīpikā</i> | 406 | <i>Mahāvākyārthavivaraṇam.</i> | 311 |
| <i>Laghuśyāmalāmantrah</i> | 360 | <i>Mahāvākyōpani ad</i> | 268, 270, 497, 510, 513 |
| <i>Lakṣmanayōgīndra</i> | 379 | <i>Mahōṭam ad</i> | 270, 273, 291, 498, 499, 510, 512 |
| <i>Lakṣmībhrūvanēśvarīmantrah.</i> | 334 | <i>Maitrāyaṇōpani ad</i> | 269 |
| <i>Lakṣmīgopajatināntrah</i> | 334 | <i>Maitrāyaṇuyājanīśad</i> ... | 272, 510, 512 |
| <i>Lakṣmīgānēśāmantrah</i> | 361 | <i>Maitrāyaṇyārthavivaraṇam.</i> | 291 |
| <i>Lakṣmīhṛdayam</i> | 352 | <i>Maitrāyaṇyārthavivaraṇam.</i> | 291 |
| <i>Lakṣmīstūtiḥ</i> | 539 | <i>Mantrāḥ, āgnyōpani ad</i> ... | 522, 523, 524 |
| <i>Lalitāsahasranāmāstōtram.</i> | 490, 491 | <i>Mantrōṇi-pani ad</i> | 269, 272, 510, 524, 525 |
| <i>Lalitāsahasranāmōttaraṇṭhikā.</i> | 445 | <i>Mālāpañcīksarīmantrah.</i> | 334 |
| <i>Lalitātrīśatīstōtram</i> | 360, 491 | <i>Mālātripurasundarīmantrah.</i> | 334 |
| <i>Liṅgadhāraṇapālaksyaṇam</i> ... | 544 | <i>Malhauastavaḥ</i> | 544 |
| <i>Liṅgadhāraṇōpani ad</i> | 551 | | |
| <i>Liṅgāṣṭakam</i> | 335 | | |

| | PAGE | | PAGE |
|--|---|--|---|
| Mallikēśvaragadyam ... | 544 | Mātṛkānyāsaḥ ... | 490 |
| Mānasikāśnānavidhiḥ ... | 539 | Mātṛkāśivagīta ... | 544 |
| Maṇḍalabrāhmaṇōpani- śad | 269, 273, 493, 510, 511 | Maṇṭikōpaniśad ... | 341 |
| Māṇḍūkyōpaniśad ... | 275, 286, 290, 294, 298, 299, 301, 335, 420, 499, 500, 501, 502, 510, 513 | Mitākṣara... .. | 478 |
| Māṇḍūkyōpaniśadbhā- ṣyam | 299, 301, 502, 507, 508 | Mrttikāśnānam ... | 311 |
| Māṇḍūkyōpaniśadbhāṣya- ṭikā | 305 | Mrttikāśnānavidhiḥ .. | 364 |
| Māṇḍūkyōpaniśadbhāṣya- ṭippaṇam ... | 305, 504, 505 | Mrttikaśaucavidhiḥ ... | 363 |
| Māṇḍūkyōpaniśaddīpikā. | 304, 506 | Mṛtyulaṅgūlamantraḥ | 364 |
| Māṇḍūkyōpaniśadvya- khyā | 506 | Mṛtyuñjayamānasapūja. | 555 |
| Māṇḍūkyōpaniśatkārika | 294 | Mṛtyuñjayamānasasatō- tram | 336 |
| Maṅgalahāratislōkaḥ | 335 | Mṛtyuñjayatryambaka- mantraḥ | 369 |
| Maṅgalāstakam ... | 432 | Mudgālōpaniśad ... | 270, 273, 510, 511, 521, 522 |
| Maṇikarpikāstavaḥ .. | 365 | Mudrālakṣaṇam .. | 432 |
| Maṇiśāpañcakam .. | 539 | Muktapadaśrastaśtutih. | 555 |
| Mantrākṣarapramāṇanir- ṇayaḥ | 360 | Muktikōpaniśad ... | 268, 270, 508, 511, 513, 514, 573, 577 |
| Mantramālīkā | 441 | Mūlamantradaśayōjana. | 300 |
| Mantranyāsaḥ | 490 | Mūlasūtram | 335 |
| Mantraprayōgaḥ... .. | 553 | Mūṇḍakōpaniśad ... | 275, 286, 294, 299, 300, 301, 311, 510, 513, 514, 515, 516 |
| Mantrasamputēśtutih .. | 360 | Mūṇḍakōpaniśadbhāṣyam. | 299, 301, 303, 517, 518, 519 |
| Mantrasandhya | 490 | Mūṇḍakōpaniśadbhāṣya- ṭippaṇam | 303, 518, 519 |
| Mantrasaṅgrahaḥ ... | 553 | Mūrtinyāsaḥ | 490 |
| Mantrāvalistōtram ... | 359 | Mūrtipañjaranyāsa ... | 359 |
| Mantrāvalih | 491 | | |
| Mantravidyā | 490 | Nāḍahindūpaniśad | 269, 272, 428, 429, 510, 511 |
| Mantrikōpaniśad ... | 269, 272, 494, 495, 510, 511 | Nagabalih | 364 |
| Mantrōpaniśad | 291 | Nagēśvarasūri | 542, 543 |
| Markandēyasūtram ... | 555 | Nairgunya | 507 |
| Mātaṅgīstōtrapuṣṭāñjalih | 369 | Nakṣatranyāsaḥ ... | 490 |
| Mātṛbhōvēśvarasūtram. | 470 | Nakulibhuvanēśvariman- traḥ | 334 |
| Mātṛkāmantraḥ | 334 | Nakulivāgīśvarimantraḥ. | 334 |

| | PAGE | | PAGE |
|---|---|--|---|
| Nāmapārayanam ... | 531 | Niruktam ... | 448 |
| Namaśāragadyam ... | 555 | Nirvāpadaśakam ... | 365 |
| Namaśśivāyāragada ... | 555 | Nirvāṇōpani ad ... | 269, 272, 438, 439, 510, 511 |
| Namaśśivāyāṣṭakam ... | 544, 581 | Nityānandaśrama ... | 478 |
| Nāmātrayamantrah ... | 334 | Nṛsiṃhamālamantrah ... | 544 |
| Namōntastāviniṣṭyutta- rāsatanamāvaliḥ ... | 544 | Nṛsiṃhamantrah ... | 360, 439, 552 |
| Nandanōdyāyapūja ... | 334 | Nṛsiṃhapūrvatāpinyupa- nisadbhāsyam ... | 432 |
| Nāradapāṇivṛājakūpani- ad ... | 269, 272, 387, 429, 430, 431, 510, 513 | Nṛsiṃhasahasranāma- stōtram ... | 363, 432 |
| Nāradōpani ad ... | 286, 328, 330, 431 | Nṛsiṃhatāpinyupani ad ... | 269, 272, 291, 300, 439, 440, 441, 510, 513 |
| Narasīṃhadaśakam ... | 365 | Nṛsiṃhatāpinyupani ad- bhāsyam ... | 305, 441, 441, 445, 446 |
| Nārāyaṇabhaṭṭa (Yērala) ... | 402 | Nṛsiṃhatāpinyupani ad- dīpikā ... | 446, 447 |
| Nārāyaṇākṣarimantrah ... | 581 | Nṛsiṃhatāpinyupani ad civarāṇam ... | 447 |
| Nārāyaṇamantrah ... | 393 | Nyāsapranava ... | 334 |
| Nārāyaṇāṣṭākṣariman- trah ... | 350 | Ōghatrayam ... | 490 |
| Nārāyaṇatāpinyupani ad ... | 412 | Ōṅkāramantranyāśah ... | 334 |
| Nārāyaṇatīrthastavah ... | 538 | Padacārinī ... | 506 |
| Nārāyaṇōndrasarasvatī ... | 463, 464 | Padatīrthamāhātmyam ... | 544 |
| Nārāyaṇa ... | 401 | Padayōjanikā ... | 516 |
| Nārāyaṇōpanisad ... | 269, 272, 275, 290, 300, 335, 352, 365, 433, 434, 435, 510, 512 | Padayōjika ... | 544 |
| Navadurgapūjavidhanam ... | 369 | Padma ... | 507 |
| Navākṣarimantrah ... | 531 | Padukastōtram ... | 359 |
| Navaratnamalikastōtram ... | 336 | Paṅgalōpani ad ... | 270, 273, 457, 458, 510, 511 |
| Navarātrikalpah ... | 403 | Paippalōdōpani ad ... | 458 |
| Nidhidarśanādījanam ... | 360 | Palāśihōmah ... | 361 |
| Nigamāgamatrisatīnāma- valiḥ ... | 544 | Pañcabrahmōpani ad ... | 268, 270, 449, 450, 510, 512 |
| Nigrahāṣṭakam ... | 544 | Pañcacakramūrdēśah ... | 360 |
| Nilakanṭhabodhanāla- stōtram ... | 369 | Pañendasākṣarimahā i- purasundarimantrārā- jah ... | 334 |
| Nilakanṭhastōtram ... | 555 | | |
| Nirālambōpani ad ... | 269, 272, 294, 438, 437, 510, 511 | | |

INDEX.

| | PAGE | | PAGE |
|---------------------------|----------------|-------------------------------|----------------|
| Pañcadaśibhāṣyam ... | 403 | Parāśahasranāmastōtram. | 491 |
| Pañcadaśīkalyāṇastavaḥ. | 360 | Parāṣṭōttaraśatanāmastō- | |
| Pañcadaśīkavacam ... | 490 | tram | 491 |
| Pañcadaśīmantravyā- | | Parāśurāmasūtram ... | 446 |
| khyāṣam | 490 | Parjanyaḥina | 364 |
| Pañcadaśīmōlamantra- | | Parvatīśaṣṭakam | 555 |
| vyākhyā | 360 | Paryāyamantrasamputa- | |
| Pañcadaśīsarpūttikaraṇa- | | stutiḥ | 360 |
| lakṣaṇam (sūktam) ... | 334 | Pāśupatabrahmōpani. ad. | 267, 270, 456, |
| Pañcakrōśavivēkah ... | 353 | | 457, 510, 513 |
| Pañcakrōśayātramañjarī. | 352 | Paṭṭaśailapadyaṣṭakam ... | 555 |
| Pañcakṣaryaṣṭīkam ... | 544 | Pīṭhanyāsaḥ | 400 |
| Pañcamistavarājah ... | 490, 531 | Prajapatisamhita ... | 465 |
| Pañcamukhaśarabhasaḥu- | | Prāṇāgnihōtrēṣṭiḥ ... | 376 |
| vamantraḥ | 581 | Prāṇāgnihōtrōpani. ad. | 268, 270, 466, |
| Pañcāṅgam | 544 | | 467, 510, 512 |
| Pañcaprakāragadyam ... | 555 | Prāṇapratīṣṭhāmantraḥ... | 369 |
| Pañcaratnam | 555 | Prāṇavamantraḥ ... | 311 |
| Pañcaratnamāla | 490 | Prāṇavasvarōpavivarāṇam. | 552 |
| Pañcasamśkaravidhiḥ ... | 300 | Prāṇavaviśūyāḥ | 444 |
| Pañcavaktrahanumanman- | | Prāṇavōpaniśad | 261, 335, 481 |
| traḥ | 553 | Prapañcamātrkāśaraśvatī- | |
| Pañcikaraṇavārtikam ... | 294 | hijam | 334 |
| Pañcikaraṇavārtikavyākhyā | 294 | Prapañcanyāsaḥ | 490 |
| Pañcikaraṇōpani. ad. | 450, 451 | Prapannalakṣaṇam ... | 387 |
| Parabrahmōpani. ad. | 267, 270, | Prāsādapañcakṣarīmantraḥ. | 555 |
| | 451, 452, 510 | Prāśnōpani. ad. | 275, 287, 298, |
| Parakālamuni | 379 | | 299, 300, 301, |
| Paramahamsaparivrajā- | | | 459, 460, 461, |
| kōpani. ad. | 267, 270, 387, | | 463, 464, 510, |
| | 452, 453, 510, | | 513 |
| | 513 | Prāśnōpani. adbhāyam ... | 299, 301, 303, |
| Paramahamsōpani. ad. | 269, 272, 275, | | 461, 462, 464, |
| | 287, 298, 300, | | 466 |
| | 385, 451, 455, | Prāśnōpani. adbhāyaṣṭipyaṇam. | 462 |
| | 510, 511 | Prāśnōpani. adbhāyavira- | |
| Paramahamsōpani. adbhī- | | raṇam | 463, 464 |
| pikā | 395, 456 | Prātibhāśasmaranīyapñ- | |
| Paramarabhasyaśivata- | | castivam | 544 |
| vidyōpani. ad. | 275 | Prātassmaranīyastōtram. | 471 |
| Paramasamhita | 520 | Pratibhāśasūtram | 337 |
| Paramabrahmōpaniśad ... | 452, 513 | Prayōgakarika | 364 |
| Paramabrahmōpaniśadbhā- | 491 | Puṇḍravanasīmantaprayōgaḥ. | 364 |

| PAGE | | PAGE | |
|-------------------------------|----------------|--------------------------------|----------------|
| Parānadīkṣavidhiḥ ... | 403 | <i>Rāmātāpiny upani ad</i> ... | 270, 273, 301, |
| Puruṣōttamāśrama ... | 478 | | 301, 432, 510, |
| Puṣpañjaliḥ | 360 | | 513, 535, 537, |
| | | | 538, 539, 540 |
| | | <i>Rāmātāpinyup niśuḍvyd-</i> | |
| | | <i>kleśā</i> | 432, 539, 540, |
| | | | 542, 544, 546 |
| Rāghavadāsa ... | 580 | Rāmāyanaṁ | 301, 347 |
| <i>Rahasyōpani ad</i> ... | 269, 272, 275, | Rāmāyati | 544, 545, 546 |
| | 290, 510, 533, | Rāmāyā (Kōḍali) ... | 378, 477 |
| | 534, 535 | Rāmōpaniṣadvṛtti ... | 544 |
| Rājarājēśvarīcakrastutiḥ. | 360 | Rāmōpaniṣatpadayōjana. | 545 |
| Rājarājēśvarīkavacaḥ ... | 360 | Rāmōpaniṣatpadayōjanikā. | 546 |
| Rājarājēśvariṣōḍaśībrah- | | Raṅgarāmānujamuni ... | 378, |
| maṇḍya | 369 | | 378, 402, 403 |
| Rājarājēśvarīstōtram ... | 490 | Rāśinyāsaḥ | 480 |
| Rājarājēśvartiyoganirṇayah | 369 | Rāsmimālāstōtram .. | 339 |
| Rajasvalāsūnavidhiḥ | 446 | Ratirahasyam ... * | 446 |
| Rajasvalāstōtram ... | 360 | Ratnagōpālākrama | 339 |
| Rājayōgāmṛta ... | 437 | Rāvaṇapañcāmarastōtram. | 555 |
| Rāmabhujāṅgastōtram ... | 471 | R̥g(Vēda) | 311, |
| Rāmabrahmastutiḥ ... | 539 | | 347, 488, 511 |
| Rāmācandramantraḥ ... | 334 | R̥gvedāraṇyaka | 315 |
| Rāmādurgam | 538 | R̥syādinyāsaḥ | 334 |
| Rāmādurgastōtram ... | 471 | Rudrah̥ṛdayōpaniṣad ... | 268, 270, 510, |
| Rāmadvādāśunāmastōtram. | 336 | | 512, 548, 549 |
| Rāmākavacaḥ | 336, 538, 561 | Rudrakavacam | 555 |
| Rāmākavacam | 471 | Rudranyāsaḥ | 290 |
| Rāṇakavacupañjaram .. | 539 | Rudrakadhāraṇam ... | 335 |
| Rāmākīlakaṁ | 539 | Rudrakṣaḥarāṇavidhiḥ... | 470 |
| Rāmamālāmantraḥ ... | 539 | Rudrakṣajābālepaniṣad ... | 268, 270, 291, |
| Rāmānāsaṇḍipujavidhiḥ. | 538 | | 510, 512, 549, |
| Rāmānāḥgalastōtram ... | 369 | | 550, 551 |
| Rāmamantrakavacaḥ .. | 539 | | |
| Rāmānuja | 378, 377, 580 | Saccidānandasvarūpavicārah. | 285 |
| Rāmānasmṛti | 471, 538 | Ṣaḍakṣarimantraṣṭakam. | 555 |
| Rāmāpadīhatiḥ | 354 | Ṣaḍāmnāyah | 490 |
| <i>Rāmārahasyōpani ad</i> ... | 270, 273, 510 | Ṣaḍgururagaḍa | 555 |
| | 513, 540, 547 | Ṣaḍvarṇamantraṣṭakam .. | 544 |
| Rāmastavarājaḥ | 538 | Saktināmōmālāmantraḥ. | 334 |
| Rāmastōtram | 362, 365 | Sālagrāmamantra | 294 |
| Rāmāstōtaraśatanāmastōtram | 538 | Sālakeśvaraṣṭakam | 555 |
| Rāmātāpinyōpaniṣad ... | 540, 543 | | |

| | PAGE | | PAGE |
|---------------------------|---------------------|---|----------------|
| Saṁvamantrakalpah ... | 360 | Sarasvatīrahasyōpaniśad. 268, 512, 570, | 571 |
| Sāmarahasyōpaniśad ... | 573, 574 | Sarasvatīstōtram ... | 360 |
| Sāma Vēda | 342, 347, | Sarasvatīyupaniśad .. | 270, 511, 571 |
| | 434, 512, 513 | Śārirakamīmāṃsabhāṣya. | 379 |
| Sāmbabhujāṅgastōtram | 336 | Śārirakōpaniśad | 267, 270, 275, |
| Sāmbadakṣiṇāmūrtimantraḥ. | 360 | | 298, 510, 512, |
| Sāmbaśivastōtram ... | 336 | | 563, 564, 565 |
| Śāmbhava vidyā | 369 | Śātrōpaniśad | 290, 335 |
| Sāmhara bhairavamāntraḥ | 334 | Sarpabaliḥ | 363 |
| Sāmhītōpaniśadvyakhyāna | 404 | Sarvaprāptīpāram ... | 337 |
| Sāmvicēḍlinīmantraḥ ... | 360 | Sarvasārōpaniśad .. | 269, 272, 275, |
| Sāmviddēvīmantraḥ ... | 491 | | 280, 290, 335, |
| Sānaiścarastōtram | 352 | | 510, 512, 571, |
| Sandhyāvandana bhāṣyam, | 365 | | 572, 573 |
| Sandhyavidhiḥ | 335 | Satapathabrahmaṇa | 472 |
| Śāṇḍilyōpaniśad | 270, 273, 510, | Sāthyayanyōpaniśad .. | 512 |
| | 513, 562, 563 | Śatpadiastōtram ... | 275 |
| Sāṅkarācārya | 302, 303, 304, | Śatpāhanīrṇayāḥ .. | 581 |
| | 313, 314, 315, 317, | Śatprasnōpaniśadbhāṣyam | 465 |
| | 322, 323, 324, 325, | Śatsthalanīrṇayāḥ .. | 544 |
| | 343, 344, 345, 377, | Śāthyāganyōpaniśad ... | 268, 270, |
| | 395, 396, 397, 442, | | 511, 561, 562 |
| | 444, 445, 462, 463, | Saubhāgyakavaca .. | 359 |
| | 474, 476, 502, 504, | Saubhāgyalakṣya- nīśad | 268, 270, |
| | 517, 518 | | 511, 583, 584 |
| Sāṅkarānanda | 305, 306, 309, | Saubhāgyōpaniśad .. | 511 |
| | 353, 400, 446, | Sāuzakasaṁhita | 538 |
| | 447, 456, 485, | Saundaryalahari | 491 |
| | 486, 506 | Saundaryalaharīvyakhyā. | 369 |
| Sāṅkaravijayāḥ | 275 | Saṁśaktasartīmantraḥ .. | 337 |
| Sāṁnyāsōpaniśad | 267, 270, 387, | Sāctryōpaniśad | 267, 270, 510, |
| | 510, 512, 569, | | 512, 575, 576 |
| | 570 | Sāyanaācārya | 317, 318, 400, |
| Sāṁnyāsavidhiḥ | 491 | | 402 |
| Sāntanagōpālamāntraḥ ... | 352, 491 | Seshagiri Sastrī. M. ... | 462 |
| Sāntīkalpah | 363 | Sētibandha | 415 |
| Śāntipāṭhaḥ | 334 | Siddhantaśākhānīh .. | 441 |
| Saptāryāstōtram | 369 | Siddharicakram | 480 |
| Śārabhasāṁvamantraḥ ... | 555 | Siddharikōṣṭhanīrṇayāḥ ... | 360 |
| Śārabhōpaniśad | 269, 273, 510, | Siddharikōṣṭhaprakaraṇam. | 539 |
| | 513, 559, 560 | Śīyalakṣaṇam | 365 |
| Sāraṅga | 542, 543 | | |
| Sarasvatīpūjavidhānam ... | 366 | | |

| | | PAGE |
|------------------------------|---|---|
| Sitarāma | 403, 404 | Śrividyaṣṭāntrasūtrataṇḍīyam. 491 |
| Sitarāmayantrōldharah .. | 403 | Śrividyaṣṭāntrasūtram ... 491 |
| Śitōpaniṣad | 269, 272, 510, 513, 576, 577 | Śrividyaṣṭāntrasūtradīpikā 360 |
| Śivabhujāṅgastavah .. | 555 | Śrividyaśōḍaśaksaramantraḥ. 553 |
| Śivādhyānam .. | 555 | Śrividyaṣiṣayakōpanyāsaḥ. 491 |
| Śivakarmāmṛta | 361 | Śrividyaṣiṣayakōpanyāsaḥ ... 360 |
| Śivakavacam | 352, 365, 544 | Śrntabōdham 470 |
| Śivaliṅganirṇayah .. | 334 | Śrntigitāvyaḥyā .. 354 |
| Śivanamaskāratutih .. | 335 | Stōtrapuspastutisambhāgya- hṛdayam 359 |
| Śivanāmavalih .. | 544 | Stōtratrayavyākhyā ... 403 |
| Śivananda .. | 324, 325 | Subālōpaniṣad 269, 272, 291, 510, 511, 578, 579, 580 |
| Śivānandayati | 303, 304, 305, 344, 346 | Subālōpaniṣadvyākhyā ... 579, 580 |
| Śivanandayatisa | 518, 519 | Sudarśanācārya 580 |
| Śivapujavidhiḥ | 335, 555 | Sudarśanamantraḥ .. 334 |
| Śivarātrivrataphalam | 555 | Sudarśanapāñcājanyapra- tiṣṭhavidhiḥ .. 300 |
| Śivaratnyarghyam .. | 364 | Sudārśanācāryaṇiṣad .. 300, 577 |
| Śivasandhyāmantraḥ | 555 | Sudhā 540, 542 |
| Śivasahasranāmastōtram. | 555 | Suddhadevīśāntimantraḥ 360 |
| Śivaśankarā-takam ... | 544 | Suddhananda .. 476, 477, 505, 506 |
| Śivaśakam | 544, 555 | Suddhaśaktimāmantraḥ. 334 |
| Śivaśtutih .. | 364 | Suddhaśivamāmantraḥ... 334 |
| Śivatattvavidyōjanisad | 120 | Sukadevaśāntimantraḥ ... 443, 444 |
| Skandōpaniṣad | 269, 273, 275, 334, 510, 512, 584, 585, 586 | Sukarabhasyōpaniṣad ... 512 |
| Smārādimitrka | 350 | Suklayajurveda .. 472, 512 |
| Śōḍaśanityāmantradhyanam. | 334 | Sūlinimantraḥ .. 562 |
| Śōḍaśīkalpah .. | 190 | Sūlinistavah 553 |
| Śōḍaśyastōttrasaśtanāmāni. | 334 | Surēśvara 476 |
| Śōḍhanyasah | 490 | Sūryakavacam 581 |
| Sōmavarārghyam | 364 | Sūryanārāyanakavacam... 334 |
| Sōmavaravratamāhātmyam. | 301 | Sūryanārāyanapūjā .. 360 |
| Śraddhavidhiḥ .. | 363 | Sūryasahasranāmastōtram. 360 |
| Śrīcakralakṣanam ... | 365 | Sūryatāpnyupaniṣad 581 |
| Śrīcakranyāsaḥ .. | 334 | Sūryōpaniṣad 267, 513, 582, 583 |
| Śrīcakravidihi .. | 581 | Suryōparāgaprāyascitta... 364 |
| Śrīcakravaiṣayakōpanyāsaḥ... | 491 | Svayambhaktasārasatī. 397, 398 |
| Śrīkanthādimitrkanāyasaḥ. | 490 | Svayambhaktasārasatīkalpah. 491 |
| Śrīnīlārya | 379 | Svetaśāntikōpaniṣad ... 311 |
| Śrividyaṣṭāntrasūtraṇiṣad. | 432 | |

| PAGE | PAGE |
|---|---|
| <i>Trisikhībrāhmanōpaniṣad</i> 269, 272, 291, 418, 419, 510, 511 | <i>Varāhōpaniṣad</i> ... 268, 270, 511, 512, 520, 556, 557, 558 |
| Trivēṇīdaśakam ... 539 | Varṇanighaṇṭu ... 360 |
| Tulasīstōtram ... 539 | Varuṇapūjākramah ... 352 |
| <i>Turiyā dīśdvadhūtōpani- ṣad</i> ... 267, 270, 386, 387, 510, 511 | Vasucēvaṃananam ... 353 |
| Tryambakamantrah ... 365 | <i>Vāsudēvōpaniṣad</i> ... 270, 273, 275, 291, 510, 512, 558, 559 |
| Tryambakarudrakavaṇah ... 369 | Vēdaṅgacchandassōtram ... 448 |
| Tryambakastōtram ... 490 | Vēdaṅgajyautiṣam ... 448 |
| • | Vēdaṇṭacārya ... 308, 309 |
| Udāharanagadyam ... 555 | Vēdaṇṭadēśika ... 308 |
| • <i>Ūrdhvaṇṇadadhāraṇa- • ṇṣapam</i> ... 555 | Vēdaṇṭagrantha ... 311 |
| Uttaragītā ... 334 | Vēdaṇṭarāṇamja ... 379 |
| Uttaragītāvyākhyā ... 286 | Vēdaṇṭasamgraha ... 286 |
| | Vēdaṇṭavisayaḥ ... 420 |
| | Vēdārthaprakāśa ... 317, 318, 402 |
| | Vēdatāijasaṃ ... 448 |
| | Vēdavyāsa ... 580 |
| | Vellīṅkya ... 403 |
| | Vēṅkannanāyaka ... 378 |
| Vadhvaṇṇajalīhōmah ... 363 | Vēṅkannanāyaka (Kōṭi) ... 477 |
| Vāgviṇṇayin ... 580 | Vēṅkātacārya ... 580 |
| Vaidikāghōramantrah ... 360 | Vēṅkātānātha ... 308, 369 |
| Vaiśvadevavidhiḥ ... 350 | Vēṅkātasaṃbhaṇṇa ... 373 |
| Vājasaneyā ... 472 | Vibhūtiḍḍhāraṇam ... 335 |
| <i>Vajrapañjaraṇṇiṣad</i> ... 552 | Vibhūtiṇṇāṇaṇṇamantrah ... 544 |
| Vajrasūcikōṇṇiṣad ... 512 | Vidyāṇṇipaya ... 347 |
| <i>Vajrasūcyaṇṇiṣad</i> 269, 272, 290, 298, 335, 510, 553, 554, 555, 556 | Vidyāraṇṇya ... 406 |
| | Vighṇēśastōtaraśatana- māstōtram ... 361 |
| Vakyasandha ... 420 | Vijñāṇēśvarīyam ... 375 |
| Vakyavṛttiḥ ... 275 | Vijñāṇōttama ... 568, 569 |
| Vamācārasiddhantah ... 412 | Vināyakaṇṇapūjavidhiḥ ... 555 |
| Vamācārasiddhantasaṇ- grahaḥ ... 361 | Vināyakaśakam ... 544 |
| Vamācāśvaratantṛam ... 403 | Vīrabhadraśakavācāstōtram ... 555 |
| Vamācāśvarayantra ... 415 | Vīrabhadraśakam ... 555 |
| Vamāpūjavidhānam ... 531 | Vīraṇṇaśarabhaṇṇyam ... 581 |
| Vaṇṇamālā ... 397, 398 | Vīraṇṇāmbā ... 403, 404 |
| Varāhīstōtravidhiḥ ... 359 | Viṣṇumātrkāṇṇyāsaḥ ... 444 |
| | Viṣṇuṇṇāmasaṇṇkīrtanam ... 539 |
| | Viṣṇupāṇṇjaraṇṇyāsaḥ ... 334 |

| | PAGE | | PAGE |
|--------------------------|----------|-----------------------------|---------------------|
| Viṣṇupāramyasamartha- | | Yājñavalkyōpaniṣad ... | 268, 270, |
| nam | 473 | | 511, 525, 526 |
| Viṣṇupūjākārikā | 300 | Yajñīyōpaniṣad | 301 |
| Viṣṇupūjāvidhānam | 334 | Yajñōpavitapratisthāvidhiḥ. | 300 |
| Viṣṇupurāṇa | 470 | Yajur-Vēda | 471 |
| Viṣṇusahasranāmabhā- | | Yajus | 347 |
| ṣyam | 334 | Yōgacūḍāmaṇyupaniṣad. | 269, 272, 510, |
| Viṣṇusahasranāmastōtram. | 539 | | 514, 578, 579 |
| Viṣṇusahasranāmāvalih. | 539 | Yōgakundalyupaniṣad ... | 268, 270, 510, |
| Viṣṇustōtram | 539 | | 511, 526, 527 |
| Viśvanāthastakam | 364 | Yōjasiṁkhōpaniṣad ... | 267, 270, 291, |
| Viśvēśvara | 540, 541 | | 510, 512, 531, |
| Vṛṣabhakavacah | 544 | | 532, 538 |
| Vṛṣabhastakam | 555 | Yōgatattvōpaniṣad ... | 269, 272, 290, |
| Vyāsādādācārya | 320 | | 335, 490, 510, 512, |
| Vyasapūjāvidhiḥ | 311 | | 529, 530, 531 |
| Vyāsasikṣavyakhyānam .. | 449 | Yōgavisaṃsāra | 286 |
| Vyāsastakam | 555 | Yōginivyāsah | 490 |